अहिंसा को जीवनशैली बनायें

अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस 2 अक्टूबर 2024 पर विशेष

-ललित गर्ग

आज चारों तरफ हिंसा का बाहुल्य है। आज के युग तो अनावश्यक हिंसा का युग कहा जा सकता है। बिना मतलब जीवों की और आदमी की भी हिंसा हो रही है। हिंसा करना एक शौक बनता जा रहा है। धीरे-धीरे यह शौक आदमी की जीवनशैली बन रहा है। बिना किसी की हत्या किए आदमी को चैन नहीं मिलता। देश एवं दुनिया में जटिल होते हिंसक हालातों पर नियंत्रण के लिये राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जन्मदिन 2 अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाना हमारे लिये गर्व की बात है। गांधी की अहिंसा ने भारत को गौरवान्वित किया है, भारत ही नहीं, दुनियाभर में अब उनकी जयन्ती को बड़े पैमाने पर अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। गांधी के अनुयायियों एवं उनमें आस्था रखने वाले उन तमाम लोगों को इससे हार्दिक प्रसन्नता हुई है जो बापू के सिद्धान्तों से गहरे रूप में प्रभावित हैं, अहिंसा के प्रचार-प्रसार में निरन्तर प्रयत्नशील हैं। यह बापू की अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकार्यता का बड़ा प्रमाण भी है। यह एक तरह से गांधीजी को दुनिया की एक विनम्र श्रद्धांजलि भी है। यह अहिंसा के प्रति समूची दुनिया की स्वीकृति भी कही जा सकती है।

महात्मा गांधी ने विश्व शांति, अहिंसा एवं आपसी सौहार्द की स्थापना के लिए देश-विदेश के शीर्ष नेताओं से मुलाकातें कीं, अहिंसक प्रयोग किये, भारत को अहिंसा के द्वारा आजादी दिलाई। उन्होंने आदर्श, शांतिपूर्ण एवं अहिंसक समाज के निर्माण के लिये वातावरण बनाया। सबसे पहले ह्यअहिंसा परमो धर्मः का प्रयोग हिन्दुओं के पावन ग्रंथ महाभारत के अनुशासन पर्व में किया गया था। लेकिन इसको अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि दिलवायी महात्मा गांधी ने। गांधी ने अपनी वाणी से और अपने स्वयं के जीवन से इसे वह प्रतिष्ठा दिलाई कि अहिंसा के साथ महात्मा गांधी का नाम ऐसा जुड़ गया कि दोनों को अलग कर ही नहीं सकते। अहिंसा का सीधा-साधा अर्थ करें तो वह होगा कि व्यावहारिक जीवन में हम किसी को कष्ट नहीं पहुंचाएं, किसी प्राणी को अपने स्वार्थ के लिए दुःख न दें। आत्मानः प्रतिकूलानि परेषाम्न समाचरेत इस भावना के अनुसार दूसरे व्यक्तियों से ऐसा व्यवहार करें जैसा कि हम उनसे अपने लिए अपेक्षा करते हैं। इतना ही नहीं सभी जीव-जन्तुओं के प्रति अर्थात् पूरे प्राणी मात्र के प्रति अहिंसा की भावना रखकर किसी प्राणी की अपने स्वार्थ व जीभ के स्वाद आदि के लिए हत्या न तो करें और न ही करवाएं और हत्या से उत्पन्न वस्तुओं का भी उपभोग नहीं करें। हमारे लिये यह सन्तोष का विषय इसलिये है कि अहिंसा का जो प्रयोग भारत की भूमि से शुरू हुआ उसे संसार की सर्वोच्च संस्था ने जीवन के एक मूलभूत सूत्र के रूप में मान्यता दी। हम देशवासियों के लिये अपूर्व प्रसन्नता की बात है कि गांधी की प्रासंगिकता चमत्कारिक ढंग से बढ़ रही है। दुनिया उन्हें नए सिरे से खोज रही है। उनको खोजने का अर्थ है अपनी समस्याओं के समाधान खोजना, हिंसा एवं आतंकवाद की बढ़ती समस्या का समाधान खोजना। शायद इसीलिये कई विश्वविद्यालयों में उनके विचारों को पढ़ाया जा रहा है, उन पर शोध हो रहे हैं। आज भी भारत के लोग गांधी के पदचिन्हों पर चलते हुए अहिंसा का समर्थन करते हैं। पडौसी देश के साथ भी लगातार अहिंसा से पेश आते रहे हैं, लेकिन उन्होंने हमारी अहिंसा को कायरता समझने की भूल की है। हिंसकवृत्ति आदमी को एक दिन कालसौकरिक कसाई बना देती है, कंस बना देती है, रावण बना देती है। एक ऐसा हिंसक समाज बन रहा है, जिसमें कुछ लोगों को दिन भर में जब तक किसी को मार नहीं देते, उन्हें बेचैनी-सी रहती है। इतिहास में ऐसे कुछ विकृत दिमाग के लोग हुए हैं, जिन्हें यातना देकर किसी को मारने में आनंद आता था। अपने शौक को पूरा करने के लिए वे कारागृह में लोगों को भेड़-बकरियों की तरह भरते थे और प्रतिदिन उनमें से कई को वीभत्स तरीके से मारते थे। इसमें उन्हें एक अव्यक्त आनंद की अनुभूति होती थी। सैमुबल बेकेट का मार्मिक कथन है कि आंसू बहना इस दुनिया में कभी नहीं थमता। एक शख्स की आंख में वह थमता है तो कहीं और किसी दूसरे की आंख में बहने लगता है। लेकिन यही बात हंसी पर भी लागू होती है। हिंसा के माहौल में अहिंसा के दीपक भी यत्र-तत्र प्रज्ज्वलित होते ही है। भले ही अहिंसा एवं शांति की लौ धीमी हो, लेकिन यह हिंसा एवं अशांति से कहीं बेहतर एवं कारगर है। अहिंसा दिवस की आयोजना इस मद्धिम होती रोशनी को तीव्र करने की प्रेरणा देती है।

जिनकी जीवनशैली हिंसाप्रधान होती है, उनकी दृष्टि में हिंसा ही हर समस्या का समाधान है। हिंसा एक मिथ्यादर्शन, किन्तु हिंसकवृत्ति के लोगों ने उसे सम्यक्दर्शन बना दिया है। जो जितनी बड़ी हिंसा करता है, उसे उतना ही सफल माना जाने लगा है। राजनीति में तो हिंसा जीत का हथियार बन गयी है। बड़े राष्ट्र इसी तरह की हिंसा के बल पर दुनिया पर अपना आधिपत्य करते हैं। बात शांति की हो, अहिंसा की हो और मार्ग हिंसा एवं अशांति का चुने तो यह कैसे संभव हो सकता है। अहिंसा एवं शांति को चाहने वालों जागरूक होना होगा और इसके लिये महात्मा गांधी के जीवन-दर्शन एवं सिद्धान्तों को सामने रखना होगा। गांधी ने कहा भी है कि अहिंसा ही धर्म है, वही जिन्दगी का एक रास्ता है।

अध्यात्म के आचार्यों ने हिंसा और युद्ध की मनोवृत्ति को बदलने के लिए मनोवैज्ञानिक भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने कहा है- युद्ध करना परम धर्म है, पर सच्चा योद्धा वह है, जो दूसरों से नहीं स्वयं से युद्ध करता है, अपने विकारों और आवेगों पर विजय प्राप्त करता है। जो इस सत्य को आत्मसात कर लेता है, उसके जीवन की सारी दिशाएं बदल जाती हैं। वह अपनी शक्तियों का उपयोग स्व-पर कल्याण के लिए करता है। जबकि एक हिंसक अपनी बुद्धि और शक्ति का उपयोग विनाश और विध्वंस के लिए करता है। पडौसी देश पाकिस्तान ऐसा ही करता रहा है, उसको अपनी अवाम के बारे में सोचना चाहिए। शायद वह कभी भी हिंसा एवं युद्ध नहीं चाहती है।

गांधीजी आज संसार के सबसे लोकप्रिय भारतीय बन गये हैं, जिन्हें कोई हैरत से देख रहा है तो कोई कौतुक से। इन स्थितियों के बावजूद उनका विरोध भी जारी है। उनके व्यक्तित्व के कई अनजान और अंधेरे पहलुओं को उजागर करते हुए उन्हें पतित साबित करने के भी लगातार प्रयास होते रहे हैं, लेकिन वे हर बार ज्यादा निखर कर सामने आए हैं, उनके सिद्धान्तों की चमक और भी बढ़ी है। वैसे यह लम्बे शोध का विषय है कि आज जब हिंसा और शस्त्र की ताकत बढ़ रही है, बड़ी शक्तियां हिंसा को तीक्ष्ण बनाने पर तुली हुई हैं, उस समय अहिंसा की ताकत को भी स्वीकारा जा रहा है। यह बात भी थोड़ी अजीब सी लगती है कि पूंजी केन्द्रित विकास के इस तूफान में एक ऐसा शख्स हमें क्यों महत्वपूर्ण लगता है जो आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की वकालत करता रहा, जो छोटी पूंजी या लघु उत्पादन प्रणाली की बात करता रहा। सवाल यह भी उठता है कि मनुष्यता के पतन की बड़ी-बड़ी दास्तानों के बीच आदमी के हृदय परिवर्तन के प्रति विश्वास का क्या मतलब है? जब हथियार ही व्यवस्थाओं के नियामक बन गये हों तब अहिंसा की आवाज कितना असर डाल पाएगी? एक वैकल्पिक व्यवस्था और जीवन की तलाश में सक्रिय लोगों को गांधीवाद से ज्यादा मदद मिल रही है। मनुष्य, मनुष्यता और दुनिया को बचाने के लिए अहिंसा से बढ़कर कोई उपाय-आश्रय नहीं हो सकता। इस दृष्टि से अहिंसा दिवस सम्पूर्ण विश्व को अहिंसा की ताकत और प्रासंगिकता से अवगत कराने का सशक्त माध्यम है। वस्तुतः अहिंसा मनुष्यता की प्राण-वायु ऑक्सीजन है। प्रकृति, पर्यावरण पृथ्वी, पानी और प्राणिमात्र की रक्षा करने वाली अहिंसा ही है। मानव ने ज्ञान-विज्ञान में आश्चर्यजनक प्रगति की है। परन्तु अपने और औरों के जीवन के प्रति सम्मान में कमी आई है। विचार-क्रान्तियां बहुत हुई, किन्तु आचार-स्तर पर क्रान्तिकारी परिवर्तन कम हुए। शान्ति, अहिंसा और मानवाधिकारों की बातें संसार में बहुत हो रही हैं, किन्तु सम्यक-आचरण का अभाव अखरता है। गांधीजी ने इन स्थितियों को गहराई से समझा और अहिंसा को अपने जीवन का मूल सूत्र बनाया। आज यदि विश्व 2 अक्टूबर को अहिंसा दिवस के रूप में मनाता है, तो इसमें कोई अचंभे वाली बात नहीं है। यह गांधीजी का नहीं बल्कि अहिंसा का सम्मान है। अहिंसा दिवस मनाना तभी सार्थक होगा जब हम उसे अपनी जीवनशैली बनायेंगे।

श्री लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ पहचान

अशोक भाटिया

2 अक्टूबर जिनका आज जन्मदिन है

आज (02 अक्टूबर 2024) महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री की जयंती है। पूरा देश दोनों महापुरुषों को श्रद्धांजलि दे रहा है। दिल्ली में राजघाट और विजय घाट पर दोनों महापुरुषों को श्रद्धांजलि देने नामी हस्तियां पहुंच रही हैं। आज कई सरकारी व निजी कार्यक्रम होंगे। कई राज्?यों में आज स्कूल खुले रहेंगे। 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में मोहनदास करमचंद गांधी का जन्?म हुआ था। दक्षिण अफ्रीका से 1915 में भारत लौटे गांधी ने स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व किया। गांधी के जन्मदिन को देश अब राष्?ट्रीय पर्व के रूप में मनाता है। वहीं, सादगी और ईमानदारी की मिसाल कहे जाने वाले शास्त्री जी का जन्?म 2 अक्टूबर 1904 को बिहार के मुगलसराय में हुआ। वह जवाहरलाल नेहरू के बाद भारत के दूसरे प्रधानमंत्री बने।

जहाँ आज गाँधी जी के जीवन चरित्र के साथ अनेक किस्से जुड़ें रहते है वहीँ लाल बहादुर शास्त्री के जीवन को केवल सादगी और भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ पहचान के रूप में जाना जाता है। आज के दिन गाँधी जी को लेकर समाचार पत्र गाँधी जी को लेकर भरे रहते है और लाल बहादुर शास्त्री जी का जीवन चरित्र नाम नाम मात्र के लिए अखबार के एक कोने में रहता है इसलिए हम आज ज्यादा बात करेंगे श्री लाल बहादुर शास्त्री के बारे व जानेंगे कि उन्हें सादगी व भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ पहचान के रूप में क्यों जाना जाता है।

महात्मा गांधी के साथ अपने जन्मदिन साझा करने वाले शास्त्री पक्के गांधीवादी थे और जीवन भर उन्ही के सिद्धांतों पर चलते रहे। यहां तक भारत के प्रधानमंत्री जैसा पद हासिल करने के बाद भी उन्होंने कभी भी अपने सादगी और विनम्रता नहीं छोड़ी। उनके जीवन में ऐसे बहुत से किस्से सुनने को मिलते हैं जब उन्होंने साबित किया कि वे एक सच्चे देशभक्त और गांधीवादी थे। उनका पूरा जीवन आज के युवाओं से लेकर सभी लोगों के ले एक मिसाल है। लाल बहादुर शास्त्री का जन्म उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में 2 अक्टूबर 1904 को एक भोजपुरी हिंदू कायस्थ परिवार में हुआ था। बचपन में ही उनके पिता का देहांत हो गया था जिसके बाद वे ननिहाल में पले बढ़े। उनका मूल नाम लाल बहादुर वर्मा था, लेकिन वाराणसी के काशी विद्यापीठ से स्नातक होने के बाद उनके नाम में शास्त्री जुड़ गया है वे लाल बहादुर शास्त्री कहलाने लगे। वे इतने मेधावी थे कि मात्र दस साल की उम्र में उन्होंने छठी कक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। आगे की पढ़ाई के लिए वे बनारस आ गए। विद्यार्थी जीवन में ही राष्ट्रभक्तों और शहीदों के बारे में पढ़ते हुए इन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के विषय में विस्तार से जाना। इन्ही दिनों जलियांवाला बाग की घटना के पश्चात छात्र आन्दोलन ने गति पकड़ ली और शास्त्री जी इसका हिस्सा बन गए।

शास्त्री जी महात्मा गांधी से अत्यधिक प्रभावित थे। गांधी जी के नेतृत्व में चल रहे असहयोग आंदोलन में शमिल होने के लिए देशवासियों से आह्वान किया, इस समय इनकी आयु मात्र 16 थी। उन्होंने गांधी जी के आह्वान पर अपनी पढ़ाई छोड़ देने का निर्णय किया और आंदोलन में हिस्सा लिया। जिसके चलते उन्हें 1921 में जेल भी जाना पड़ा। देश को स्वतंत्र कराने के क्रम में उन्हें अपने जीवन के 7 वर्ष कारावास (जेल) में गुजारने

पड़े। आजादी के इन संघर्षों ने इन्हें पूर्णतः परिपक्व बना दिया।

शास्त्री जी ने राजनीति में प्रवेश के माध्यम से देश की दिशा एवं दशा को बदलने का प्रयास किया। वस्तुतः वर्ष 1937 में प्रांतीय विधानसभाओं के चुनावों में उन्होंने उत्तर प्रदेश विधानसभा की सदस्यता प्राप्त की। इसी क्रम में आजादी के पश्चात सत्ता में आई कांग्रेस ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के नेता लाल बहादुर शास्त्री का महत्व समझ लिया। परिणामस्वरूप वर्ष 1947 में उन्हें उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल में मंत्री के रूप में शमिल कर लिया गया। वर्ष 1951 में वह पार्टी महासचिव बनें। तद्पश्चात शास्त्री जी को रेलवे एवं यातायात के केंद्रीय मंत्री के रूप में चुना गया। किंतु, इसी समय वर्ष 1955 में दक्षिण भारत के अरियल के समीप रेल दुर्घटना में कई लोग हताहत हुए जिसके लिए स्वयंम को जिम्मेदार मानते हुए उन्होंने रेल मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया। रेल दुर्घटना पर लंबी बहस का जवाब देते हुए उन्होंने कहा-

शायद मेरे लंबाई में छोटे एवं विनम्र होने के कारण लोगों को लगता है कि मैं बहुत दृढ़ नहीं हो पा रहा हूँ यद्यपि शारीरिक रूप से मैं मजबूत नहीं हूँ लेकिन मुझे लगता है कि मैं आतंरिक रूप से इतना कमजोर भी नहीं हूँ। गौरतलब हैं कि 1957 में वह इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र से चुने गए। उन्हें पुनः यातायात विभाग दिया गया और साथ ही साथ उद्योग और वाणिज्य विभागों का मंत्री भी बनाया गया। वर्ष 1961 में उन्हें भारत के गृहमंत्री के रूप में और ह्यभ्रष्टाचार निरोधक समिति के लिए नियुक्त किया गया। इसी समय भारत-चीन युद्ध से सकते में आये नेहरू जी का साथ देने के लिए शास्त्री जी को बिना विभाग के मंत्री के रूप में मंत्रिमंडल में शामिल कर लिया गया। यहाँ शास्त्री जी ने भारत की जनता से अपील करते हुए कहा -जब हमारी स्वतंत्रता और अखंडता खतरे में हो तो पूरी शक्ति से उस चुनौती का मुकाबला करना ही ह्यएकमात्र कर्तव्यह्व होता है। हमें एकजुट होकर किसी भी प्रकार के अपेक्षित बलिदान के दृढ़तापूर्वक तत्पर रहना चाहिए ताकि उस चुनौती का हम बेहतर तरीके से मुकाबला कर सके। शास्त्री जी ने समाज के वंचित वर्गों के लिए भी उल्लेखनीय कार्य किया। वे लालालाजपतराय द्वारा स्थापित ह्यसर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसायटीह्व (लोक सेवा मंडल) के आजीवन सदस्य बने। जहाँ उन्होंने पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए कार्य करना शुरू किया और बाद में वे उस सोसायटी के अध्यक्ष भी बने। इसी तरह उन्होंने किसान एवं युवा वर्ग को देश की आर्थिक एवं सैनिक शक्ति के तौर पर देखा। श्री लाल बहादुर शास्त्री ने जय जवान जय किसान का नारा भी दिया, जो आगे चलकर देशभक्ति का प्रतीक बन गया। शास्त्री जी के इस नारे का मुख्य उद्देश्य एक ओर जहाँ देश की सैनिक शक्ति में वृद्धि करने का था वही दूसरी ओर देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने का रहा। शास्त्री जी ने आनंद (गुजरात) के ह्यअमूल दूध सहकारी समितिह्व का समर्थन और राष्ट्रीय डेयरी विकास का निर्माण करके श्वेत क्रांति को बढ़ावा दिया। जिससे भारत दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में अग्रणी बनकर उभरा। भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान (वर्ष 1965) भारत खाद्य संकट के दौर से गुजर रहा था। इस समस्या का समाधान ह्यहरित क्रांतिह्व के माध्यम से किया गया। नतीजन भारत खाद्यान्न निर्यात करने वाले देशों में शुमार हो गया।

शास्त्री जी, भारत के पड़ोसी देशों के साथ अपने संबंधो में हमेशा शांति एवं संतुलन बनाये रखने का प्रयास करते थे। इसी क्रम में भारत-पकिस्तान युद्ध (1965) के संबंध में ताशकंद (तत्कालीन सोवियत संघ) में सोवियत राष्टपति की मध्यस्थता से भारत तथा पाकिस्तान में सुलह हुई। जिसके तहत 10 जनवरी, 1966 पाकिस्तान के राष्टपति मोहम्मद अयूब खान के साथ युद्ध को समाप्त करने हेतु ताशकंद घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किये गये। 11 जनवरी 1966 को ताशकंद में ही उनका निधन हो गया। शास्त्री जी, ने कई वर्षों तक अपनी निस्वार्थ सेवा भावना, कर्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी एवं करुणा जैसे गुणों के चलते जनता के बीच अपनी अलग पहचान बनायी। विनम्र, दृढ़ इच्छाशक्ति, सहिष्णु एवं जबरदस्त आतंरिक शक्ति के धनी शास्त्री जी लोगों के बीच ऐसे शख्स बनकर उभरे, जिन्होंने लोगों की भावनाओं को समझा। इन्होंने अपने दूरदर्शी दृष्टिकोण के माध्यम से भारत को विश्व पटल पर अलग पहचान दिलवायी। गांधी जी की राजनीतिक शिक्षाओं से प्रेरणा लेते हुए गांधी जी के लहजे में ही एक बार उन्होंने कहा था- मेहनत प्रार्थना करने के समान है। महात्मा गांधी के समान विचार रखने वाले श्री लाल बहादुर शास्त्री सादगी व भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ पहचान हैं। शास्त्री का जीवन ना केवल सादगी भरा रहा, वे हमेशा प्रचार प्रसार से दूर ही रहे। आजादी के आंदोलन में भी उनकी प्रमुख भूमिका थी और आजादी के बाद भी वे भारत के प्रमुख नीति निमार्तों में शामिल रहे। वे देश पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की कैबिनेट का हिस्सा रहे और उन्होंने रेलवे और गृह जैसे बड़े और महकमे संभाले और नेहरू के विश्वस्त बने रहे। नेहरू के निधन के बाद शास्त्री जून 1964 में देश के दूसरे प्रधानमंत्री बने। शास्त्री जी अपने वेतन का काफी हिस्सा गांधीवादी विचारधारा को आगे बढ़ाने और सामाजिक भलाई में खर्च किया करते थे। यही वजह थी कि उन्हें घर की जरूरतों के लिए मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। वे इतने विनम्र थे कि जब भी उनके खाते में तनख्वाह आती थी, तब वे उसे लेकर गन्ने का रस बेचने वाले के पास जाते। शास्त्री जी शान से कहते थे कि आज जेब भरी हुई है। जिसके बाद दोनों पति झ पत्नी जूस वाले के यहाँ ही गन्ने का रस पीते। शास्त्रीजी अपनी ईमानदारी के लिए मशहूर थे। उन्होंने अपने कार्यकाल में भ्रष्टाचार से निपटने के लिए एक समिति बनाई थी। भ्रष्टाचार से जुड़े सवाल पर उन्होंने अपने बेटेके मामले में भी भेदभाव नहीं किया। जब उन्हें पता चला कि उनके बेटे को गलत तरीके से प्रमोशन मिल रहा है। उन्होंने अपने बेटे की ही प्रमोशन रुकवा दी।

शास्त्रीजी की वजह से भारत में सफेद और हरित क्रांति आई। वो हरित आंदोलन के चलते ही उन्होंने अपने घर के लॉन में खेती-बाड़ी शुरू कर दी थी। इसलिए वो किसानों को हरित क्रांति से जोड़ने के लिए खुद अपने लॉन में कृषि कार्य किया करते थे। इतना ही नहीं कार खरीदने के लिए उन्होंने आम लोगें की ही तरह पंजाब नेशनल बैंक से लोन लिया। लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि जो सुविधा उन्हें मिल रही है उतनी ही आम लोगों को भी मिलनी चाहिए। शास्त्री जी खुद कार की जरूरत महसूस नहीं करते थे। सामाजिक कार्यों के खर्चों की वजह से घर में पैसों की किल्लत भी रहती ही थी। प्रधानमंत्री बनने तक उनके पास घर और कार दोनों नहीं थे। घरवालों के कहने पर उन्होंने कार खरीदने के लिए जब अपने बैंक खाते की जानकारी गंवाई तो उन्होंने पता चला कि खाते में केवल 7 हजार हैं जबकि कार 12 हजार की है। वे 5 हजार का बंदोबस्त कर सकते थे, फिर भी उन्होंने लोन लेने का फैसला किया।लोन चुकाने से पहले ही शास्त्रीजी इस दुनिया से विदा हो गए। उनका लोन माफ करने की पेशकश को उनकी पत्नी ललिता शास्त्री ने ठुकरा दिया और वे चार साल तक कार की किस्तें चुकाती रहीं।

गांधी की दुहाई नहीं सियासतदान उनके आदर्शो को अपनाएं

-सुरेश गांधी

भारत की स्वतंत्रता के लिए महात्मा गांधी की उपलब्धियों का सम्मान करने के अलावा, हम गांधी जयंती मनाकर उनके आदर्शों को बनाए रखने का भी संकल्प लेते हैं. गांधी की शिक्षाएं अक्सर कंपनियों, समुदायों और कॉलेजों के माध्यम से आयोजित वातालार्पों और गतिविधियों का विषय होती हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहे. गांधी जयंती इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वास्तविकता, अहिंसा और शांति के महत्व पर जोर देती है. गांधी का संदेश आज भी लागू होता है क्योंकि विभिन्न प्रकार के संघर्ष उठते हैं और उनकी शिक्षाएं संघर्षों के शांतिपूर्ण समाधान का आह्वान करती हैं. इसी तरह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसके महत्व पर जोर देने के लिए, इस दिन को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में भी जाना जाता है. लेकिन उन्होंने भारत में जिस लोकतंत्र और राजनीति का सपना देखा था, सत्ता के खेल में वह पीछे छूटता जा रहा है। जबकि गांधी जी सत्ता ही नहीं साधन की पवित्रता पर भी जोर देते थे। पर सत्ता केंद्रित राजनीति व उसके कद्रदान उनके नाम की दुहाई तो देते है लेकिन वे झूठ व फरेब के सहारे चुनाव जीतने तक ही सिमट गए है। जबकि गांधी जी ने स्वयं कहा है, लोकतंत्र तब तक एक असंभव चीज है जब तक की सत्ता में सभी की हिस्सेदारी ना हो। यहां तक की एक अछूत एक मजदूर की भी। पर जब हमारी राजनीति लगातार परिवारवादी व धनबल, बाहुबल, तष्टिकरण व भ्रष्टाचार केंद्रित होती गई है तब उसमें आम आदमी की हिस्सेदारी सपना सा लगता है।

गांधी जयंती हर साल 2 अक्टूबर को मनाई जाती है. इस साल महात्मा गांधी का 155वां जन्मदिन हैं. यह दिन हमें महात्मा गांधी के जीवन, उपलब्धियों और नैतिक मूल्यों पर विचार करने का मौका देता है, जिनकी अहिंसक सक्रियता आज भी मनाई जाती है. साथ ही, इस दिन को पूरे देश में प्रार्थना सत्र, स्मारक सेवाओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मनाया जाता है. भारत में ह्यराष्ट्रपिताह्व के रूप में जाने जाने वाले महात्मा गांधी पूरे देश में लोगों को प्रेरित करते रहते हैं. बता दें, मोहनदास करमचंद गांधी ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में एक प्रमुख खिलाड़ी थे. उनका जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ था. उन्होंने यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन में कानून की पढ़ाई करने से पहले दक्षिण अफ्रीका में अपना करियर शुरू किया, जहां उन्होंने नस्लीय अन्याय के खिलाफ अभियान चलाया. यह तब था जब सत्याग्रह के नाम से जानी जाने वाली उनकी अहिंसक प्रतिरोध अवधारणा ने आकार लेना शुरू किया. गांधी के अहिंसक प्रतिरोध सिद्धांत, नमक मार्च और अंग्रेजों के साथ असहयोग की मांग ने लाखों लोगों को हिंसा का सहारा लिए बिना स्वतंत्रता की लड़ाई में शामिल होने के लिए प्रेरित किया. गांधी और उनके अनुयायियों के कार्यों ने 15 अगस्त, 1947 को भारत की स्वतंत्रता में योगदान दिया. जनवरी 1948 में गांधी की हत्या के बाद, भारत सरकार ने उनके जीवन और विरासत को याद करने के लिए 2 अक्टूबर को गांधी जयंती, एक राष्ट्रीय अवकाश के रूप में नामित किया.

गांधी जी की नजर में अहिंसा सिर्फ किसी जीवात्मा के खिलाफ हिंसक व्यवहार का परित्याग नहीं था, बल्कि उनकी अहिंसा के दायरे में मन वचन और कर्म तीनों आते थे। उन्होंने कहा अहिंसा केवल आचरण का स्थल नियम नहीं है। बात-बात में गांधी के नाम और उनके विचारों को ताबीज की तरह व्यवहार करने वाले आज की राजनीति को देखिए वह इस सोच के ठीक उलट छोर पर खड़ी नजर आती है। आज के सियासतदान गांधी के विचारों का हवाला देने में कोई कोताही नहीं बरतते, उनके बताएं मार्ग पर चलने व आगे बढ़ने की बात करते है, लेकिन विडंबना यह है कि इससे वह उलट व्यवहार करते नजर आते है। सियासतदानों के बयानों पर गौर करतें तो अपने विरोधियों के खिलाफ हिंसक तरीके से जुबान चलाते है। इन नेताओं के लिए परिवार ही राजनीति है। कांग्रेस जैसे दल तो बार-बार

बेशक, राजनीति में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का वह स्थान है, जो धर्म में मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम या श्रीकृष्ण का। लेकिन अफसोस है राजनीतिक पार्टियां सियासी लाभ के लिए अपनी सुविधानुसार गांधी के नाम का इस्तेमाल करते हैं। समय-समय पर राजनेता गांधी के सिद्धांतों की दुहाई देते हैं। भाषणों में गांधी दर्शन का जिक्र भी करते हैं। लेकिन खुद पालन नहीं करते। कुछ सियासतदान तो उन्हें अपनी जागिर समझते है, लेकिन परिवारवाद, भ्रष्टाचार, जातिवाद व तुष्टिकरण उनके भीतर इस कदर रचा बसा है कि सत्ता के लिए गदर करने जैसे बयान देने से भी बाज नहीं आते। मतलब साफ है वर्तमान हालात को देखते हए समाज के साथ-साथ राजनीति में स्वच्छता अभियान चलाने की जरुरत है। खास यह है कि इसके लिए नेताओं पर निर्भर रहने के बजाय आम जनमानस को आगे आना होगा। ऐसे नेताओं का बहिष्कार करना ही होगा। या यूं कहे जातिवाद, बाहुबल, धनबल, परिवारवाद, तुष्टिकरण जैसी राजनीति में घुस आई गंदगी को साफ करने के लिए जागरूकता की झाड़ू को उठाना ही होगा

गांधी का नाम लेते हैं, गांधी के विचारों की बात का हवाला देते हैं। उनकी अहिंसा और शिष्ट का जिक्र बार-बार करते हैं। लेकिन जैसे ही उनके विरोधी का संदर्भ आता है उनकी जुबान ही नहीं उनका व्यवहार भी हिंसक हो जाता है। भारत तेरे टुकड़े होंगे, इंसा अल्लाह की नारा देने वालों के साथ खड़े नजर आते है। जबकि गांधी ने स्वाधीनता आंदोलन के दौरान कांग्रेस का नेतृत्व किया था। इस देश के कण-कण को विदेशी दासता का विद्रोही बना दिया था। समाजवादी भी बार-बार गांधी लोहिया जयप्रकाश का जिक्र करते हैं लेकिन उनकी बोल भी बिगड़ रहे हैं। वे भूल जाते हैं कि नेहरू के कटू आलोचक होने के बावजूद लोहिया ने उन पर कभी निजी हमले नहीं किया। अभी तो आम धारणा यही बनती जा रही कि ईमानदारी के बलबूते चुनाव जीतना आसान नहीं है। बगैर भ्रष्टाचार, परिवार व जातिवाद के उनकी सियासी दुकान नहीं चल सकतीं। मेरा मतलब है राजनीति में सुधार चाहने वालों के लिए यह समय घर बैठने या वोट देने तक ही नहीं होना चाहिए। राजनीति में नैतिकता को लेकर उतरे सवालों के बीच चुनाव सुधारो की पूरी बातें ही नहीं बल्कि उन पर अमल करने की भी जरूरत है। सबसे बड़ी जिम्मेदारी राजनीतिक पार्टियों की ही है कि वह ठोक बजाकर उम्मीदवारों का चयन करें। चिंता इस बात की है कि जनता ही दागियों को वोट देकर सत्ता में लाती है। इसलिए आमजनमानस को भी राजनीति में स्वच्छता के लिए आगे आना होगा। गांधी के जीवन से कई ऐसी अच्छी बातें सीखी जा सकती हैं, जो हमारे जीवन में सकारात्मक परिवर्तनों को प्रेरित कर सकते हैं। एक बार गांधी जी से जब यह पूछा गया कि आप दुनिया को क्या संदेश देना चाहते हैं, तो उन्होंने कहा, ह्यमेरा जीवन ही मेरा संदेश है.ह्व गांधीजी के जीवन से एक घटना हमें समय की महत्वपूर्णता के बारे में गहरा संदेश देती है. जब वे साबरमती आश्रम में निवास कर रहे थे, तो कुछ गांववाले उन्हें अपने पास की गांव में एक सभा की आमंत्रण दिया. उन्होंने सभा का समय तय किया, और सभी को चार बजे शाम का समय बताया. गांधीजी ने इस आमंत्रण को स्वीकार किया. परन्तु समय पर जाने से पहले एक व्यक्ति ने कहा, ह्यबापू, मैं आपको गांव के लिए कार से भेज दूंगा, ताकि आपको सभा स्थल पर पहुँचने में कोई दिक्कत न हो ह्व अगले दिन गांधीजी ने समय पर सभा में पहुँचने के लिए कार की प्रतीक्षा की, लेकिन चार बजने तक कोई नहीं पहुँचा. इसके बजाय, गांधीजी ने एक साइकिल उठाई और सभा स्थल पहुँच गए. लोगों ने जब उन्हें वहाँ देखा, तो वे हैरानी में आ गए. गांधीजी ने समय की महत्वपूर्णता को दशार्या और समय के अद्वितीय मूल्य को मान्यता दी. महात्मा गांधी का मानना था कि हम जो सोचते हैं, वही बन जाते हैं। अगर हमारे मन में किसी लक्ष्य तक पहुँचने के बारे में नकारात्मक भाव होता है, तो वास्तविक जीवन में भी वही सच होता है. गांधीजी मानते थे कि इस तरह की स्थितियों में हमें नकारात्मक विचारों को मन से हटा देना चाहिए और केवल सकारात्मक सोच के साथ मेहनत करते रहना चाहिए. उनका मानना था कि अगर व्यक्ति को खुद पर विश्वास हो, तो वह कुछ भी करने के लिए सामर्थ्यशाली हो जाता है. महात्मा गांधी को अपने जीवन में कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा. मुश्किलों के आगे हार मानने की जगह वे लगातार प्रयास करते रहे. दक्षिण अफ्रीका में, जब उन्होंने पहली श्रेणी की रेलगाड़ी में सफर किया, तो उन्हें डिब्बे से बाहर फेंक दिया गया इसके बावजूद, वे हार नहीं माने और अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए संघर्ष करते रहे. वे स्वतंत्रता संग्राम में भी कई बार जेल जाने के बावजूद, अंग्रेजों से भारत की आजादी के लिए संघर्ष करते रहे. गांधीजी का संदेश था कि हमें कभी भी मुश्किलों से हार नहीं मानना चाहिए. जब हम किसी काम को करने का प्रयास करते हैं और हमारे परिश्रम का परिणाम नहीं मिलता है, तो हम परेशान हो जाते हैं. गुस्से में अजीब व्यवहार करने लगते हैं. हालांकि, गांधीजी ने अपने जीवन में अहिंसा का मार्ग चुना और शांति और धैर्य बनाए रखकर उन्होंने वह प्राप्त किया जो वे चाहते थे. हमें याद रखना चाहिए कि कई बार परिस्थितियां हमारे अनुकूल, हमारे मनमुताबिक नहीं होतीं, लेकिन उस समय भी हमें धैर्य नहीं खोना चाहिए. महात्मा गांधी कहते थे, ह्यजो काम करते हो, हो सकता है कि वह कम महत्ववाला हो, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण यह है कि तुम उस काम को करते रहो ह्य वे हर दिन, हर पल कुछ नया सीखने की सलाह देते थे. गांधीजी ने अपने जीवन में अनुशासन को महत्वपूर्ण माना और समय पर उठने से लेकर हर दिन के कामों तक हर समय में अनुशासन बनाए रखा. वे इसके साथ ही अपने जीवन में कल के लिए बचत करने की महत्वपूर्णता को भी समझाते थे. गांधीजी कहते थे कि जो बदलाव हम दूसरों में देखना चाहते हैं, वह बदलाव हमें सबसे पहले अपने भीतर लाना होगा .गांधी जी ने देश को अंग्रजी हुकूमत से आजादी दिलाने में काफी बलिदान दिए. संघर्ष किया. अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है. इन सारी बातों को कोई कभी भी नहीं भूल सकता. सदा अहिंसा की राह पर चलते हुए आजादी की लड़ाई लड़ी. भारतवर्ष को ब्रिटिश राज से आजाद कराया.

दैनिक इबादत
सम्पादकीय

त्योहारी सीजन में महंगाई का तड़का

देश में नवरात्र से शुरू हो रहा त्योहारी सीजन महंगाई की मार से उपभोक्ताओं के लिए राहतभरा नहीं कहा जा सकता है। त्योहारी सीजन की शुरुआत से पहले ही महंगाई का तड़का शुरू हो गया है। महंगाई की मार रसोई पर पड़ने से लोगों के घरों का बजट गड़बड़ा गया है। आटा-दाल, मिर्च मसालों सहित फल-सब्जियों के भाव में इजाफे के बाद अब खाद्य तेल में उबाल आया हुआ है। कच्चे और रिफाइंड तेल पर सीमा शुल्क बढ़ाने के केंद्र सरकार के फैसले से त्योहारी सीजन में खाने के तेल में जबरदस्त तड़का लगा है। नवरात्रि से त्योहारी सीज़न के आगाज़ के साथ आगामी दिनों में एक के बाद एक त्योहार आने है। उम्मीद की जा रही है इस बार बाजार में नवरात्र, दशहरा, दीपावली सहित और भी बहुत महत्वपूर्ण व्रत-त्योहार आएंगे जिनमें जमकर खरीददारी की सम्भावना है। त्योहारों पर जिस तरह से विभिन्न प्रकार की चीजों की बिक्री से बाजार गुलज़ार हो रहा है उससे साफ अंदाजा लगा सकते हैं कि आने वाले सभी त्योहारों पर खरीदारी के लिए ग्राहक मन बना चुके हैं। ऑनलाइन शॉपिंग की तरफ लोगों का रुझान बढ़ा हुआ है। ई-कॉमर्स कंपनी एमेजॉन इंडिया सहित फ्लिपकार्ट और सॉफ्टबैंक समर्थित मीशो जैसी कंपनियों की त्योहारी सेल शुरु हो गई है। दुकानदारों का कहना है कि बाजार में खरीदारी करने वालों की भीड़ बढ़ रही है और आने वाले दिनों में कारोबार बढ़ने की उम्मीद है। त्योहारी सीजन से इलेक्ट्रॉनिक, कपड़ा, ऑटो मोबाइल, सराफा बाजार में ग्राहकों का रुझान बढ़ा है। देशभर में पर्यटन क्षेत्र फिर से पटरी पर लौटने लगा है। पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की बढ़ती संख्या से न केवल इन स्थलों की रौनक बढ़ रही है बल्कि अच्छा कारोबार होने से कारोबारियों के चेहरों पर चमक देखने को मिल रही है। पर्यटन कारोबारियों का कहना है कि आने वाले दिनों में पर्यटकों की संख्या में बढ़ोतरी होने की उम्मीद है। अच्छा कारोबार होने से सभी कारोबारियों को आर्थिक लाभ मिलेगा। इस त्योहारी सीजन में एक दर्जन बड़े त्योहार और व्रत आते हे जिसमें देशवासी उमंग और उत्साह के साथ शामिल होकर अपनी खुशियों का इजहार करते है। लोग खरीदारी के लिए बाजारों में पहुंच रहे हैं। दुकानें ग्राहकों से गुलजार होने लगी है। बाजारों में चहल पहल व भीड़-भाड़ देखने को मिल रही है। त्योहारी सीजन शुरु होने के साथ ही बाजार और ऑनलाइन शॉपिंग वेबसाइट्स पर ऑफर्स की प्रतिस्पर्धा बढ़ने लगी है। मीडिया में बड़े बड़े विज्ञापनों के माध्यम से लोगों को लुभाया जा रहा है। खुदरा व्यापारी ऑनलाइन सेल का विरोध कर रहे है और अपने व्यापार के चौपट होने की दुहाई दे रहे है मगर उपभोक्ता ऑनलाइन व्यापार से खुश नजर आ रहे है। उन्हें बाजार की धकमपेल से छुटकारा मिल रहा है। ऑनलाइन सेल में सामान सस्ता जरूर मिल रहा है मगर उपभोक्ता को सावधानी रखनी पड़ेगी क्योंकि ठगी करने वाले गिरोह भी सक्रिय हो गए है। जो भोले भले लोगों को सस्ते माल के चक्कर में फंसा कर अपना उल्लू सीधा कर रहे है। ऐसे में लोगों ने सतर्कता नहीं रखी तो सस्ते में माल खरीदना महंगा भी पड़ सकता है।

ताशकंद में हमने खोया लाल बहादुर

- डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

भाग्य और कर्म के बीच के संघर्ष में कभी कर्म जीतता है तो कभी भाग्य, किन्तु कभी-कभी दोनों के इतर प्रारब्ध बलवान हो जाता है। आध्यात्म और दर्शन के अध्येता प्रारब्ध को सर्वोपरि मानकर नियति के फ़ैसले को अंतिम निर्णय कहते हैं और प्रारब्ध सबकुछ छीनकर भी कभी-कभी उससे कहीं अधिक लौटा देता है। इसी तरह उत्तरप्रदेश के छोटे से नगर मुग़लसराय में रहने वाले लिपिक मुंशी शारदा प्रसाद श्रीवास्तव के घर 2 अक्टूबर 1904 में एक बालक का जन्म हुआ। घर के लोग उस बालक को प्यार से नन्हे कहने लगे, जिसका मूल नाम लाल बहादुर श्रीवास्तव हुआ। गाँव की गलियों में खेलने वाला नन्हे, जिसने महज़ 18 माह की आयु में ही पिता को हमेशा के लिए खो दिया। पिता के देहांत के बाद माँ रामदुलारी नन्हे को लेकर नाना हज़ारीलाल के घर मिर्ज़ापुर आ गई पर दुर्भाग्य से कुछ ही समय बाद नाना भी चल बसे। फिर मौसा रघुनाथ प्रसाद की सहायता से नन्हे का लालन-पालन हुआ, जैसे-तैसे नन्हे ने ननिहाल में रहते हुए प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की, फिर उसके बाद की शिक्षा हरिश्चन्द्र हाई स्कूल और काशी विद्यापीठ में हुई। लालबहादुर ने संस्कृत में काशी विद्यापीठ से शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। और इस शास्त्री की उपाधि ने जातिगत पहचान श्रीवास्तव को गौण कर दिया, फिर लाल बहादुर शास्त्री के रूप में पहचान बनी। संघर्षों की टिक-टिक करती घड़ी ने बचपन तो छीन ही लिया पर हौंसलों ने अंगड़ाई लेना स्वीकार नहीं किया। उसी नियति ने उस अबोध बालक के रूप में भारत को दूसरा प्रधानमंत्री दिया। बात देश के दूसरे प्रधानमंत्री और भारतीय किसानों के आदर्श पुरुष की इतनी-सी है कि कर्म की घड़ी यदि निरंतर चलती रहे तो प्रारब्ध के भाल पर भाग्य विजय तिलक करता है। स्वाधीनता संग्राम के जिन आन्दोलनों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही, उनमें 1921 का असहयोग आंदोलन, 1930 का दांडी मार्च तथा 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन उल्लेखनीय हैं। भारत छोड़ो आंदोलन में शास्त्री जी ने अभूतपूर्व योगदान दिया। 9 अगस्त 1942 के दिन शास्त्रीजी ने इलाहाबाद पहुँचकर अगस्त क्रान्ति की दावानल को पूरे देश में प्रचण्ड रूप दे दिया। पूरे ग्यारह दिन तक भूमिगत रहते हुए यह आन्दोलन चलाने के बाद 19 अगस्त 1942 को शास्त्रीजी गिरफ़्तार हो गये। जवाहरलाल नेहरू का उनके प्रधानमन्त्री के कार्यकाल के दौरान 27 मई, 1964 को देहावसान हो जाने के बाद साफ़-सुथरी छवि के कारण शास्त्रीजी को 1964 में देश का प्रधानमंत्री बनाया गया। उन्होंने 9 जून 1964 को भारत के प्रधानमंत्री का पद भार ग्रहण किया। उनके कार्यकाल में 1965 का भारत-पाक युद्ध शुरू हो गया। इससे तीन वर्ष पूर्व चीन का युद्ध भारत हार चुका था। शास्त्रीजी ने अप्रत्याशित रूप से हुए इस युद्ध में राष्ट्र को उत्तम नेतृत्व प्रदान किया और पाकिस्तान को करारी शिकस्त दी। इसकी कल्पना पाकिस्तान ने कभी सपने में भी नहीं की थी।

सन् 1965 में भारत और पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान के बीच शान्ति समझौते का दौर शुरू हुआ, जिसे ताशकंद समझौता नाम दिया गया, जो भारत और पाकिस्तान के बीच 11 जनवरी, 1966 को हुआ था। इस समझौते के अनुसार यह तय हुआ कि भारत और पाकिस्तान दोनों ही देश अपनी शक्ति का प्रयोग नहीं करेंगे और अपने झगड़ों को शान्तिपूर्ण ढंग से निबटाएँगे। यह समझौता भारत के प्रधानमन्त्री लाल बहादुर शास्त्री तथा पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री अयूब ख़ाँ की लम्बी वार्ता के उपरान्त 11 जनवरी, 1966 को ताशकंद, रूस में हुआ। 'ताशकंद सम्मेलन' सोवियत रूस के प्रधानमंत्री द्वारा आयोजित किया गया था। इस समझौते का प्रभाव बेहद समयानुकूल और सशक्त था। क्योंकि इस समझौते के क्रियान्वयन के फलस्वरूप दोनों देशों की सेनाएँ उस सीमा रेखा पर वापस लौट गईं, जहाँ पर वे युद्ध के पूर्व में तैनात थीं। परन्तु इस घोषणा से भारत-पाकिस्तान के दीर्घकालीन सम्बन्धों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। फिर भी ताशकंद घोषणा इस कारण से याद रखी जाएगी कि इस पर हस्ताक्षर करने के कुछ ही घंटों बाद रहस्यमयी ढंग से भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की दुःखद मृत्यु हो गई। ताशकंद में अमरीका ने वार्ता का नाटक रचा, क्योंकि कुछ माह पूर्व से भारत-पाकिस्तान युद्ध चल रहा था और पाकिस्तान चाहता था कि भारत युद्ध में जीता हिस्सा लौटा दे, किंतु शास्त्री जी नहीं चाहते थे कि जो भूभाग भारतीय सेना ने जीत लिया है वह लौटाए। कुछ इतिहासकारों की मानें तो शास्त्रीजी ताशकंद जाना भी नहीं चाहते थे, लेकिन देश के कुछ नेताओं ने देश के अंदर ऐसा माहौल पैदा किया कि शास्त्री जी को मजबूरन ताशकंद जाना पड़ा। जब हमारे देश के वो लाल ताशकंद गए, तो उन्हें ताशकंद समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा गया, तब उन्होंने दो टूक शब्दों में कह दिया कि 'भारत युद्ध में जीता हुआ हिस्सा वापस नहीं करेगा।' जिसके बाद दबाव भी शास्त्री जी पर डाला गया लेकिन उन्होंने कह दिया कि उनके जीवित रहते जीता हुआ हिस्सा किसी भी कीमत पर वापस नहीं होगा, देश को उनके इस फ़ैसले से बड़ा गर्व हुआ। भारत के बहादुर 'लाल' पर देश घमण्ड कर रहा था, किंतु किसी को क्या पता था कि सियासी चालें खुद शास्त्री जी की गर्दन काटने पर तुली हुई हैं। जिस दिन शास्त्री जी ने हस्ताक्षर किए, उसी रात तो शास्त्री जी की रहस्यमयी ढंग से मौत की ख़बर भारत को दे दी गई। लाल बहादुर शास्त्री एक महान व्यक्ति थे, हैं और सदा रहेंगे। क्योंकि भारत भारती के भाल पर लगे तिलक की भाँति यह लाल भी अजर-अमर है।

(पत्रकार एवं लेखक, अनु अपार्टमेंट, 21-22 शंकर नगर, इंदौर (म.प्र.)

श्री लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति की 'श्रेष्ठ पहचान'

शास्त्रीजी की वजह से भारत में सफेद और हरित क्रांति आई। वो हरित आंदोलन के चलते ही उन्होंने अपने घर के लॉन में खेती-बाड़ी शुरू कर दी थी। इसलिए वो किसानों को हरित क्रांति से जोड़ने के लिए खुद अपने लॉन में कृषि कार्य किया करते थे। इतना ही नहीं कार खरीदने के लिए उन्होंने आम लोगों की ही तरह पंजाब नेशनल बैंक से लोन लिया। लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि जो सुविधा उन्हें मिल रही है उतनी ही आम लोगों को भी मिलनी चाहिए।

- अशोक भाटिया

आज (02 अक्टूबर 2024) महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री की जयंती है। पूरा देश दोनों महापुरुषों को श्रद्धांजलि दे रहा है। दिल्ली में राजघाट और विजय घाट पर दोनों महापुरुषों को श्रद्धांजलि देने नामी हस्तियां पहुंच रही हैं। आज कई सरकारी व निजी कार्यक्रम होंगे। कई राज्यों में आज स्कूल खुले रहेंगे। 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म हुआ था। दक्षिण अफ्रीका से 1915 में भारत लौटे गांधी ने स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व किया। गांधी के जन्मदिन को देश अब राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाता है। वहीं, सादगी और ईमानदारी की मिसाल कहे जाने वाले शास्त्री जी का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को बिहार के मुगलसराय में हुआ। वह जवाहरलाल नेहरू के बाद भारत के दूसरे प्रधानमंत्री बने। जहाँ आज गाँधी जी के जीवन चरित्र के साथ अनेक किस्से जुड़ें रहते है वहीँ लाल बहादुर शास्त्री के जीवन को केवल सादगी और भारतीय संस्कृति की 'श्रेष्ठ पहचान' के रूप में जाना जाता है। आज के दिन गाँधी जी को लेकर समाचार पत्र गाँधी जी को लेकर भरे रहते है और लाल बहादुर शास्त्री जी का जीवन चरित्र नाम नाम मात्र के लिए अख़बार के एक कोने में रहता है इसलिए हम आज ज्यादा बात करेंगे श्री लाल बहादुर शास्त्री के बारे व जानेंगे कि उन्हें सादगी व भारतीय संस्कृति की 'श्रेष्ठ पहचान' के रूप में क्यों जाना जाता है। महात्मा गांधी के साथ अपने जन्मदिन साझा करने वाले शास्त्री पक्के गांधीवादी थे और जीवन भर उन्ही के सिद्धांतों पर चलते रहे। यहां तक भारत के प्रधानमंत्री जैसा पद हासिल करने के बाद भी उन्होंने कभी भी अपने सादगी और विनम्रता नहीं छोड़ी। उनके जीवन में ऐसे बहुत से किस्से सुनने को मिलते हैं जब उन्होंने साबित किया कि वे एक सच्चे देशभक्त और गांधीवादी थे। उनका पूरा जीवन आज के युवाओं से लेकर सभी लोगों के ले एक मिसाल है। लाल बहादुर शास्त्री का जन्म उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में 2 अक्टूबर 1904 को एक भोजपुरी हिंदू कायस्थ परिवार में हुआ था। बचपन में ही उनके पिता का देहांत हो गया था जिसके बाद वे ननिहाल में पले बढ़े। उनका मूल नाम लाल बहादुर वर्मा था, लेकिन वाराणसी के काशी विद्यापीठ से स्नातक होने के बाद उनके नाम में शास्त्री जुड़ गया है वे लाल बहादुर शास्त्री कहलाने लगे। वे इतने मेधावी थे कि मात्र दस साल की उम्र में उन्होंने छठी कक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। आगे की पढ़ाई के लिए वे बनारस आ गए। विद्यार्थी जीवन में ही राष्ट्रभक्तों और शहीदों के बारे में पढ़ते हुए इन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के विषय में विस्तार से जाना। इन्ही दिनों जलियांवाला बाग की घटना के पश्चात 'छात्र आन्दोलन' ने गति पकड़ ली और शास्त्री जी इसका हिस्सा बन गए। शास्त्री जी महात्मा गांधी से अत्यधिक प्रभावित थे। गांधी जी के नेतृत्व में चल रहे असहयोग आंदोलन में शमिल होने के लिए देशवासियों से आह्वान किया, इस समय इनकी आयु मात्र 16 थी। उन्होंने गांधी जी के आह्वान पर अपनी पढ़ाई छोड़ देने का निर्णय किया और आंदोलन में हिस्सा लिया। जिसके चलते उन्हें 1921 में जेल भी जाना पड़ा। देश को स्वतंत्र कराने के क्रम में उन्हें अपने जीवन के 7 वर्ष कारावास (जेल) में गुज़ारने पड़े। आज़ादी के इन संघर्षों ने इन्हें पूर्णतः परिपक्व बना दिया। शास्त्री जी ने राजनीति में प्रवेश के माध्यम से देश की दिशा एवं दशा को बदलने का प्रयास किया। वस्तुतः वर्ष 1937 में प्रांतीय विधानसभाओं के चुनावों में उन्होंने उत्तर प्रदेश विधानसभा की सदस्यता प्राप्त की। इसी क्रम में आजादी के पश्चात सत्ता में आई कांग्रेस ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के नेता लाल बहादुर शास्त्री का महत्व समझ लिया। परिणामस्वरूप वर्ष 1947 में उन्हें उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल में मंत्री के रूप में शमिल कर लिया गया। वर्ष 1951 में वह पार्टी महासचिव बनें। तद्पश्चात शास्त्री जी को रेलवे एवं यातायात के केंद्रीय मंत्री के रूप में चुना गया। किंतु, इसी समय वर्ष 1955 में दक्षिण भारत के 'अरियल' के समीप रेल दुर्घटना में कई लोग हताहत हुए जिसके लिए स्वयंम को जिम्मेदार मानते हुए उन्होंने रेल मंत्री के पद से इस्तीफ़ा दे दिया। रेल दुर्घटना पर लंबी बहस का जवाब देते हुए उन्होंने कहा- 'शायद मेरे लंबाई में छोटे एवं विनम्र होने के कारण लोगों को लगता है कि मैं बहुत दृढ़ नहीं हो पा रहा हूँ यद्यपि शारीरिक रूप से मैं मजबूत नहीं हूँ लेकिन मुझे लगता है कि मैं आतंरिक रूप से इतना कमजोर भी नहीं हूँ।' गौरतलब हैं कि 1957 में वह इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र से चुने गए। उन्हें पुनः यातायात विभाग दिया गया और साथ ही साथ उद्योग और वाणिज्य विभागों का मंत्री भी बनाया गया। वर्ष 1961 में उन्हें भारत के गृहमंत्री के रूप में और 'भ्रष्टाचार निरोधक समिति' के लिए नियुक्त किया गया। इसी समय भारत-चीन युद्ध से सकते में आये नेहरू जी का साथ देने के लिए शास्त्री जी को बिना विभाग के मंत्री के रूप में मंत्रिमंडल में शामिल कर लिया गया। यहाँ शास्त्री जी ने भारत की जनता से अपील करते हुए कहा - 'जब हमारी स्वतंत्रता और अखंडता खतरे में हो तो पूरी शक्ति से उस चुनौती का मुकाबला करना ही 'एकमात्र कर्तव्य' होता है। हमें एकजुट होकर किसी भी प्रकार के अपेक्षित बलिदान के दृढ़तापूर्वक तत्पर रहना चाहिए ताकि उस चुनौती का हम बेहतर तरीके से मुकाबला कर सके' शास्त्री जी ने समाज के वंचित वर्गों के लिए भी उल्लेखनीय कार्य किया। वे लालालाजपतराय द्वारा स्थापित 'सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसायटी' (लोक सेवा मंडल) के आजीवन सदस्य बने। जहाँ उन्होंने पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए कार्य करना शुरू किया और बाद में वे उस सोसायटी के अध्यक्ष भी बने। इसी तरह उन्होंने किसान एवं युवा वर्ग को देश की आर्थिक एवं सैनिक शक्ति के तौर पर देखा। श्री लाल बहादुर शास्त्री ने 'जय जवान जय किसान' का नारा भी दिया, जो आगे चलकर देशभक्ति का प्रतीक बन गया। शास्त्री जी के इस नारे का मुख्य उद्देश्य एक ओर जहाँ देश की सैनिक शक्ति में वृद्धि करने का था वही दूसरी ओर देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने का रहा। शास्त्री जी ने आनंद (गुजरात) के 'अमूल दूध सहकारी समिति' का समर्थन और राष्ट्रीय डेयरी विकास का निर्माण करके श्वेत क्रांति को बढ़ावा दिया। जिससे भारत दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में अग्रणी बनकर उभरा। भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान (वर्ष 1965) भारत खाद्य संकट के दौर से गुजर रहा था। इस समस्या का समाधान 'हरित क्रांति' के माध्यम से किया गया। नतीजन भारत खाद्यान्न निर्यात करने वाले देशों में शुमार हो गया। शास्त्री जी, भारत के पड़ोसी देशों के साथ अपने संबंधो में हमेशा शांति एवं संतुलन बनाये रखने का प्रयास करते थे। इसी क्रम में भारत-पकिस्तान युद्ध (1965) के संबंध में ताश्कंद (तत्कालीन सोवियत संघ) में सोवियत राष्टपति की मध्यस्थता से भारत तथा पाकिस्तान में सुलह हुई। जिसके तहत 10 जनवरी, 1966 पाकिस्तान के राष्टपति मोहम्मद अयूब खान के साथ युद्ध को समाप्त करने हेतु 'ताशकंद घोषणापत्र' पर हस्ताक्षर किये गये। 11 जनवरी 1966 को ताशकंद में ही उनका निधन हो गया।शास्त्री जी, ने कई वर्षों तक अपनी निस्वार्थ सेवा भावना, कर्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी एवं करुणा जैसे गुणों के चलते जनता के बीच अपनी अलग पहचान बनायी। विनम्र, दृढ़ इच्छाशक्ति, सहिष्णु एवं जबरदस्त आतंरिक शक्ति के धनी शास्त्री जी लोगों के बीच ऐसे शख्स बनकर उभरे, जिन्होंने लोगों की भावनाओं को समझा। इन्होंने अपने दूरदर्शी दृष्टिकोण के माध्यम से भारत को विश्व पटल पर अलग पहचान दिलवायी। गांधी जी की राजनीतिक शिक्षाओं से प्रेरणा लेते हुए गांधी जी के लहज़े में ही एक बार उन्होंने कहा था- 'मेहनत प्रार्थना करने के समान है।' महात्मा गांधी के समान विचार रखने वाले श्री लाल बहादुर शास्त्री सादगी व भारतीय संस्कृति की 'श्रेष्ठ पहचान' हैं।

(वरिष्ठ स्वतंत्र पत्रकार, लेखक, समीक्षक एवं टिप्पणीकार, वसई पूर्व, मुंबई)

कश्मीर की सड़कों पर 'हर घर से निकलेगा नसरल्लाह' नारा क्यों ?

- मनोज कुमार अग्रवाल

इजरायल लगातार हिजबुल्लाह आतंकियों को निशाना बनाते हुए उनके ठिकानों पर एयर स्ट्राइक के दौरान हिजबुल्लाह चीफ नसरल्लाह मारा गया। इजारयली डिफेंस फोर्स ने कहा कि अब हसन नसरल्लाह दुनिया में आतंक नहीं फैला पाएगा। हसन नसरल्लाह 32 साल से संगठन को चीफ था लेकिन क्या हिजबुललाह चीफ नसरल्लाह के मारे जाने से आतंकवाद दफन हो जाएगा? दरअसल जरूरत नसरल्लाह के खात्मे की नहीं उस कट्टरपंथी आतंकी मानसिकता के सफाए की है जो नसरल्लाह को जन्म देती है। आपको बता दें कि लेबनान में इजरायल के बड़े हवाई हमले में विश्व के सबसे बड़े सशस्त्र और आतंकी संगठन हिजबुल्लाह के प्रमुख सैयद हसन नसरल्लाह की मौत हो गई। ईरान समर्थित समूह हिजबुल्लाह ने भी पुष्टि की है कि 32 वर्षों तक समूह का नेतृत्व करने वाला नसरल्लाह शुक्रवार के हमले में मारा गया है। अब हिजबुल्लाह अपने 42 साल के इतिहास में सबसे भारी हमले के बाद एक नए प्रमुख को चुनने की चुनौती का सामना कर रहा है। इजरायल ने लेबनान की राजधानी बेरूत पर एयर स्ट्राइक कर हिजबुल्लाह चीफ हसन नसरल्लाह को मार गिराया। इसके बाद उनके चचेरे भाई हाशिम सफीद्दीन को हिजबुल्लाह चीफ घोषित किया गया है। नसरल्लाह की मौत का रोष जम्मू कश्मीर में देखने को मिला है। यहां विरोध प्रदर्शन के दौरान प्रदर्शनकारी छात्रा ने कहा कि आपने एक हिजबुल्लाह को मारा है अब हर घर से हिजबुल्लाह निकलेगा', नसरुल्लाह की मौत पर इजरायल पर आक्रोश व्यक्त किया जा रहा है। हसन नसरल्लाह की मौत के बाद जम्मू-कश्मीर के बडगाम की सड़कों लोगों ने जमकर प्रदर्शन किया। लोगों ने नसरल्लाह के पोस्टर के साथ इजरायल के खिलाफ नारे लगाए। कश्मीर में प्रदर्शन कर रहीं एक छात्रा ने इजरायल पर गुस्सा दिखाते हुए कहा, 'मैं हर उस इंसान से बात कर रही हूं, जो फिलिस्तीन के खिलाफ है। मैं लेबनान के लोगों को हौसला देना चाहूंगी कि वो बिल्कुल भी फिक्र न करें जो हम उनके साथ हैं। हम उनका साथ कभी नहीं छोड़ेंगे। आपको पता नहीं है कि आपने किसको शहीद किया है। अब हर घर से हिजबुल्लाह निकलेगा।' रिपोर्ट्स के मुताबिक इस एयर स्ट्राइक में नसरल्लाह के अलावा उसकी बेटी जैनब की भी मौत हुई है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक जिस कमांडर सेंटर पर इजरायल ने हमला किया था, वहां नसरल्लाह की बेटी का शव भी मिला। इजरायल ने यह हमला तब किया नसरल्लाह और ईरान समर्थित समूह के कई अन्य नेता लेबनान की राजधानी बेरूत में एक बंकर में जमा हुए थे। ये लोग दक्षिण बेरूत के व्यस्त इलाके में जमीन से 60 फीट नीचे इजरायल पर हमले की प्लानिंग कर रहे थे। इस क्षेत्र को तबाह करने के लिए आईडीएफ ने लगभग 80 टन बम का इस्तेमाल किया था। दहियाह के बेरूत उपनगर में हमला इजरायली प्रधान मंत्री बेंजामिन नेतन्याहू द्वारा संयुक्त राष्ट्र को संबोधित करने के तुरंत बाद हुआ, जिसमें उन्होंने कसम खाई थी कि हिजबुल्लाह के खिलाफ इजरायल का अभियान जारी रहेगा। जानकारी के मुताबिक, विस्फोट से कुछ समय पहले ही इससे पहले हुई स्ट्राइक में मारे गए वरिष्ठ कमांडर सहित तीन हिजबुल्लाह सदस्यों के अंतिम संस्कार के लिए लोग जमा हुए थे।बीते शुक्रवार (27 सितंबर) को इजरायल के हवाई हमले में मारे गए हिजबुल्लाह चीफ हसन नसरुल्लाह का शव बरामद कर लिया गया है। सुरक्षा और मेडिलकल टीम ने शव को हमले वाली जगह से ही बरामद किया है। वहीं, इजरायल लगातार हिजबुल्लाह पर हमले कर रहा है और रविवार (29 सितंबर) को लेबनान से सटी सीमा पर टैंक तैनात किए हैं। सूत्रों ने कहा कि उसके शरीर पर कोई सीधा घाव नहीं था और ऐसा लग रहा है कि मौत का कारण तेज धमाके से हुए ट्रॉमा रहा होगा। उधर, इजरायल ने कहा कि हिजबुल्लाह के ठिकानों पर हमले जारी हैं। एक नए अपडेट में, इजरायली सेना ने कहा कि उसने पिछले कुछ घंटों के दौरान लेबनान में हिजबुल्लाह के कई ठिकानों पर हमला किया है। सेना का के हमलों का उद्देश्य हिजबुल्लाह के रॉकेट लॉन्चर और हथियार गोदामों को तबाह करना था। दरअसल कई महीनों की योजना और कई खुफिया सूचनाओं के बाद, इजरायल ने एक अंडरग्राउंड बंकर पर सटीक हमला किया, जहां नसरल्लाह और कई अन्य हिजबुल्लाह नेता बैठक कर रहे थे। यह बंकर दक्षिण बेरूत की एक व्यस्त सड़क से 60 फीट नीचे स्थित था।

पिछले कुछ हफ्तों में इजरायल रक्षा बलों ने लेबनान के अंदर अपने हमले तेज कर दिए हैं। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू का दावा है कि इन हमलों का उद्देश्य आतंकवादी ग्रुप हिजबुल्लाह को तबाह करना है जो कथित तौर पर इजरायल में नागरिकों पर हमला करने की योजना बना रहा है।

गीत

ना नेताओं का भाषण पूर जौर चाहिए।
हम गरीबों को रोटी का एक कौर
चाहिए।।

हम क्यों दे अपना कश्मीर प्यार।
हमें भारत में फिर लाहौर चाहिए।।

मुश्किल है मगर ना, मुमकिन नहीं।
हमें अपनी एकता पे, बस गौर
चाहिए।।

अपंग हो माता जुदा हो कौई अंग।
ना ऐसी सदी ना ऐसा दौर चाहिए।।

चुरा ले जो हमसे जुलूसों मोहब्बत।
अकरम पड़ोस में ना वो चौर चाहिए।।

अकरम शिरानी

(203/ शैरानी पुरा रतलाम मध्यप्रदेश)

गांधी जी आज के दौर में भी उतने ही प्रासंगिक हैं,जितने कि वे अपने जीवन काल में थे। ब्रदर सोलोमन की पसंदीदा गांधीवादी शिक्षाओं में से एक है,' अगर कोई दुश्मन आपके बाएं गाल पर वार करे,तो उसे अपना दायां गाल दे दो।' आपको डॉ. विनय अग्रवाल में भी गांधी जी की छाया नजर आती है। पेशे से मेडिसिन के क्षेत्र से जुड़े हुए डॉ. अग्रवाल अपने स्तर पर लगातार वाल्मीकि समाज के नौजवानों को रोजगार और उन्हें शिक्षित करने के लिए प्रयासरत रहते हैं।

गांधी के रास्ते पर चलने वाली पांच शख्सियतें

- आर.के. सिन्हा

हम भारतीय चाहें जितना भी गर्व कर सकते हैं कि महात्मा गांधी जैसी पवित्र शख्सियत का संबंध भारत से है। हालांकि, उनके प्रति सम्मान और आदर का भाव तो सारी दुनिया ही रखती है। वे अपने जीवनकाल और उसके बाद भी करोड़ों लोगों को अपने सत्य और अहिंसा के विचारों से प्रभावित करते हैं। अब भी सारी दुनिया में अनगिनत लोग गांधी जी को ही अपना आदर्श मानते हैं। इसी तरह से न जाने कितने लोग गांधी जी के रास्ते पर चलते हुए अपने - अपने ढंग से संसार को बेहतर बनाने की कोशिशें कर रहे हैं। उनमें भी अब गांधी जी की छवि दिखाई देती है। कात्सू सान उन गांधीवादियों में शामिल हैं जो विश्व बंधुत्व, प्रेम और शांति का संदेश देने के लिए भारत के गांवों, कस्बों, शहरों और महानगरों में घूमती हैं। आप चाहें तो 88 साल की कात्सू सान को देश की सबसे खास गांधीवादी व्यक्तित्वों में एक मान सकते हैं। कात्सू सान राजघाट पर होने वाली सर्वधर्म प्रार्थना सभाओं में बुद्ध धर्म ग्रंथों से प्रार्थना पढ़ती हैं। उन्हें सब कात्सू बहन कहते हैं। गांधी जी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों को लेकर उनकी निष्ठा निर्विवाद है। वह गुजरे 60 वर्षों से भी ज्यादा सालों से गांधी जी को पढ़ रही हैं और दुनिया को उनके बताए रास्ते पर चलने का संदेश दे रही हैं। कात्सू सान मूलतः जापानी नागरिक हैं। वह 1956 में भगवान बुद्ध के देश भारत में आईं थीं, ताकि ; उन्हें वे और गहराई से जान लें। एक बार यहां आईं तो उनका गांधीवाद से ऐसा साक्षात्कार हो गया कि उसके बाद तो उन्होंने भारत में ही बसने का निर्णय ले लिया। उनमें आप अपनी मां के चेहरे को देख सकते हैं। भारत को लेकर उनकी दिलचस्पी भगवान बौद्ध के चलते ही बढ़ी थी। पर अब तो उन्हें भारत ही अपना देश लगता है। वह कहती हैं कि भारत के कण-कण में पवित्रता है। भारत ही वास्तव में संसार का आध्यात्मिक विश्व गुरु है। भारत के धर्मनिरपेक्ष चरित्र पर वो कहती हैं कि मुझे तो दुनिया में कोई अन्य देश मिला ही नहीं, जहां पर सरकारी कार्यक्रमों में सर्वधर्म प्रार्थना सभा आयोजित होती हो। भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ पर सभी धर्मों का बराबरी का सम्मान मिलता है। कात्सू सान के मुताबिक भगवान बुद्ध और गांधी जी दोनों ही के रास्ते आपको एक दिशा में ही लेकर जाते हैं। इसीलिये ये दोनों सदैव प्रासंगिक रहने वाले हैं। दोनों का जीवन पीड़ा को कम करने और समाज से अन्याय को दूर करने के लिए ही समर्पित

रहा था। इसी प्रकार, गांधी जी की दर्जनों मूर्तियां बनाने वाले महान मूर्ति शिल्पकार राम सुतार जी बचपन से ही गांधी के रास्ते पर चलने लगे थे।वे जब गांधी जी की किसी प्रतिमा को शक्ल दे रहे होते हैं, तो उन्हें लगता है मानो वे गांधी से संवाद कर रहे हों। उन्हें गांधी जी की प्रतिमाओं पर काम करते हुए अपार आनंद मिलता है। संसद भवन के प्रांगण में लगी उनकी बनाई गांधी जी की मूर्ति तो बेजोड़ है। इसमें बापू ध्यान की मुद्रा में हैं। यह असाधारण मूर्ति 17 फीट ऊंची है। उनकी कृतियां मुंह से बोलती हैं। उन्होंने ही पटना के गांधी मैदान में स्थापित बापू की मूर्ति को भी तैयार किया था। इसी तरह ब्रदर सोलोमन जॉर्ज भी पक्के गांधीवादी हैं। वे गांधी जी को ही अपना मार्गदर्शक मानते हैं। उन्हें गांधी जी इसलिए भी अपने लगते हैं क्योंकि वह 12 मार्च 1915 को अपनी पहली राजधानी यात्रा के दौरान सेंट स्टीफंस कॉलेज में ही ठहरे थे। देश के कई शहरों में शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के लिए काम कर रही संस्था दिल्ली ब्रदरहुड सोसाइटी से जुड़े हुए हैं ब्रदर सोलोमन। इसी संस्था ने सेंट स्टीफंस क़ॉलेज स्थापित किया था। ब्रदर सोलोमन बताते हैं कि गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में ईसाई मिशनरी जोसेफ डोक से भी मिले थे, जिन्होंने उनकी पहली जीवनी लिखी। वहां ही उनकी दीनबंधु सीएफ एंड्रयूज से भी उनकी मुलाकात हुई। उन्हें लगता है कि गांधी जी विश्व भर में शांति के सबसे बड़े प्रेरक हुए हैं, जिन्हें दुनिया ने बुद्ध और ईसा मसीह के बाद देखा है। गांधी जी आज के दौर में भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने कि वे अपने जीवन काल में थे। ब्रदर सोलोमन की पसंदीदा गांधीवादी शिक्षाओं में से एक है, 'अगर कोई दुश्मन आपके बाएं गाल पर वार करे, तो उसे अपना दायां गाल दे दो।' आपको डॉ. विनय अग्रवाल में भी गांधी जी की छाया नजर आती है। पेशे से मेडिसिन के क्षेत्र से जुड़े हुए डॉ. अग्रवाल अपने स्तर पर लगातार वाल्मीकि समाज के नौजवानों को रोजगार और उन्हें शिक्षित करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। उन्हें दलितों के हक में गांधी जी के किए काम प्रभावित करते हैं। गांधी जी ने मंदिरों में दलितों के प्रवेश के लिए आंदोलनों का समर्थन किया। डॉ. अग्रवाल का बचपन राजधानी के कृष्णा नगर में बीता। उस दौरान उन्होंने वाल्मीकि समाज की बदहाली को अपनी आंखों से देखा। उसके बाद वे जब सक्षम हुए तो उन्होंने वाल्मीकि समाज के लिए ठोस काम करने शुरू किये। इसकी प्रेरणा उन्हें गांधी जी से ही मिली। वे कहते हैं कि गांधी की आत्मकथा पढ़ने वाले भलीभांति जानते है कि वे बचपन से ही अस्पृश्यता को नहीं मानते थे। अब 62 वर्षीय कृष्णा विद्यार्थी को ही लें। वे राजधानी के पंचकुइयां रोड पर स्थित वाल्मीकि मंदिर के काम-काज को देखते हैं। वाल्मीकि मंदिर और गांधी जी का गहरा संबंध रहा है।वे इसी मंदिर परिसर के एक साधारण से कमरे में 1 अप्रैल 1946 से लेकर 10 जून 1947 तक रहे। कृष्ण विद्यार्थी बीते चालीस सालों से उस कमरे को रोज सुबह साफ-स्वच्छ करते हैं, जिसमें गांधी जी रहते थे। वाल्मीकि समाज से रिश्ता रखने वाले कृष्ण विद्यार्थी कहते हैं कि गांधी जी वाल्मीकि समाज की दशा को सुधारने के लिए जीवन पर्यंत सक्रिय रहे। गांधी जी ने वाल्मीकि परिवारों के बच्चों को यहां पढ़ाया भी। उन्हें इस बात का अफसोस है कि जब गांधी जी 7 सितंबर, 1947 को अंतिम बार दिल्ली आए तो उन्हें वाल्मीकि बस्ती की बजाय बिड़ला हाउस में लेकर जाया गया। तब कहा गया कि वाल्मीकि बस्ती में उनके लिए असुरक्षित है। पर जो जगह कहने को सुरक्षित थी, वहां पर ही उन्हें मार डाला गया। कृष्ण विद्यार्थी के नेतृत्व में यहां पर हरेक 2 अक्तूबर और 30 जनवरी को सर्वधर्म प्रार्थना सभा भी आयोजित होती है। वे खुद गांधी जी के विचारों के प्रसार-प्रचार के लिए देश के कोने-कोने में जाते रहते हैं। बेशक, ये सब महान शख्सियतें गांधी जी के विचारों को देश-दुनिया में लेकर जा रही हैं। देश-दुनिया में इनके जैसे अनगिनत गांधी वादी सक्रिय हैं। इनमें हमें गांधी जी के दर्शन होते हैं।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)

सम्पादकीय

खत्म होता कानून का खौफ

लोग कानून का सम्मान करें स्वस्थ लोकतंत्र में ऐसा होना बहुत जरूरी है लेकिन समाज में कानून का भय होना भी बहुत जरूरी है। कानून का खौफ खत्म हो गया तो समाज पूरी तरह से अराजक हो जाएगा। ऐसा लगता है कि पुलिस, कानून और अदालतों का खौफ अब खत्म होता जा रहा है। कानून तोड़ना हैसियत का सवाल बनता जा रहा है। आज समाज में असुरक्षा की भावना बढ़ गई है। लोगों के जीवन और सम्पत्ति को सुरक्षा देना सबसे जरूरी काम है। महानगरों में दिन हो या रात हर कोई खौफजदा है। राह चलते तेज और गलत ड्राइविंग से कोई किसी को कुचल कर भाग जाए कोई नहीं जानता। हिट एंड रन के मामलों में लगातार बढ़ौतरी हो रही है लेकिन ऐसे मामलों में मरने वाले लोगों को कभी न्याय नहीं मिलता। कानून के शासन का अर्थ मनमानी करने वाली ताकतों को रोकना और कमजोर को इंसाफ दिलाना भी है। महानगरों की जटिलताओं और विरोधाभासों को देखते हुए तो ऐसा लगता है जैसे इंसान की कोई कीमत ही नहीं है। देश की राजधानी दिल्ली में देर रात बेखौफ दो युवकों द्वारा कानून-व्यवस्था की धज्जियां उड़ाते हुए दिल्ली पुलिस के सिपाही संदीप को कार से कुचलकर मार डाला गया। इससे स्पष्ट है कि उन्हें कानून का कोई खौफ नहीं था।

प्रथम दृष्टि में तो यह मामला हिट एंड रन का ही लगता था लेकिन जांच के बाद नया एंगल सामने आने पर यह सीधे-सीधे हत्या का मामला बनता है। कांस्टेबल संदीप ने लापरवाही से गाड़ी चला रहे लोगों को रोकने की कोशिश की तो उन्होंने न केवल संदीप की बाइक को टक्कर मारी बल्कि उसे 10 मीटर तक घसीटा भी गया। शुरूआती जांच में यह भी पता चला है कि कांस्टेबल संदीप ने दोनों आरोपियों को दो बार सार्वजनिक स्थान पर शराब पीने के आरोप में हवालात भेजा था जिससे वे सिपाही से रंजिश रखने लगे थे। यद्यपि पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है जिससे पूरा घटनाक्रम परत-दर-परत खुल गया है। आम धारणा यह बन चुकी है कि जब इस देश में पुलिस वाले ही सुरक्षित नहीं तो आम लोगों की सुरक्षा कैसे होगी। ऐसी घटनाएं दिल्ली में ही नहीं बल्कि हर राज्य में हो रही हैं। कहीं शराब माफिया, कहीं अवैध खनन माफिया, कहीं कोल माफिया तो कहीं आपराधिक तत्व बेखौफ होकर कर्त्तव्यनिष्ठ अफसरों और कर्मचारियों को कुचलते रहे हैं। पुलिस तंत्र बड़े से बड़े एक्शन के दावे तो करता है लेकिन परिणाम ढाक के तीन पात ही निकलते हैं। जब जेलों में बंद गैंगगस्टर मीडिया को बिना किसी खौफ के नियमों का उल्लंघन कर इंटरव्यू देने लगे, जेल में बैठकर अपहरण, धमकी देकर फिरौती वसूलने का धंधा चलाने लगे तो फिर अनुमान लगाया जा सकता है कि कानून व्यवस्था की स्थिति कैसी है। मुम्बई और दिल्ली में अभिनेता सलमान खान सहित कई प्रतिष्ठित व्यापारियों के घरों के बाहर फायरिंग कर आतंक पैदा करने और फिरौती मांगने की घटनाओं में लगातार वृद्धि हो रही है। दिल्ली में एक ही दिन में महंगी कारों के सैकेंड हैंड शोरूम, एक होटल और एक मिठाई की दुकान को निशाना बनाकर गोलीबारी की घटना सामने आई है। यह घटनाएं गिरोहों द्वारा जबरन वसूली से जुड़ी हुई हैं। पंजाब में लगातार ऐसी घटनाएं सामने आ रही हैं। वहां तो विदेश में बैठे गैंगस्टर पंजाब में सक्रिय गैगस्टरों की मदद से लगातार हत्याएं कर रहे हैं।

गांधी जयंती पर विशेष : वैश्विक सत्य-अहिंसा के पर्याय महात्मा गांधी, यूं ही गांधी महात्मा नहीं हुए

गांधी जी ने अंग्रेजों के अपमान के विरुद्ध मोर्चा संभालते हुए उनके विरोध के लिए सत्याग्रह और अहिंसा का मार्ग चुना था। दक्षिण अफ्रीका के दौरान उन्होंने अध्यापक, चिकित्सक और कानूनी अधिकार की लड़ाई के लिए अधिवक्ता के रूप में जनता को जागरूक करने के लिए अपनी सेवाएं प्रदान की और महत्वपूर्ण काम किए। अपने जीवन काल में उन्होंने कई पुस्तकों का लेखन कर समाज की सेवा की। उनकी एक महत्वपूर्ण पुस्तक माय एक्सपेरिमेंट विथ ट्रुथ विश्व प्रसिद्ध आत्मकथा बनी। दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी के कार्यों तथा सतत प्रयत्नों की ख्याति भारत में फैल चुकी थी। और जब वे भारत लौटे तो उनका गोपाल कृष्ण गोखले, लोकमान्य गंगाधर तिलक जैसे नेताओं ने भव्य स्वागत किया।

संजीव ठाकुर

भारत के महान सपूत गांधी ने पूरे विश्व में भारत में स्वतंत्रता आंदोलन के रूप में विश्व को अहिंसा का संदेश दिया और शायद कोई विश्वास करेगा कि अहिंसा से ही महात्मा गांधी ने भारत देश को परितंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराया और अंग्रेजों को भारत से रुखसत करने का दुष्कर कार्य किया। 2 अक्टूबर को गांधी जी के जन्मदिवस पर पूरे विश्व में अहिंसा दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। महात्मा गांधी युगकालीन अहिंसक वैचारिक क्रांति के एक बड़े और सशक्त सूत्रधार थे। यह भारत का सौभाग्य ही है कि 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर गुजरात में एक महान व्यक्तित्व ने जन्म लिया था। जिनका पूरा नाम मोहन दास करमचंद गांधी था। भावनगर के श्यामल दास कॉलेज में उनकी शिक्षा हुई तत्पश्चात उनके भाई लक्ष्मी दास ने उन्हें बैरिस्टर की शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड भेज दिया था। इंग्लैंड जाने से पहले मात्र 13 वर्ष की आयु में उनका विवाह कस्तूरबा गांधी से हो गया था। 1891 में गांधीजी इंग्लैंड से वकालत पास कर मुंबई में वकालत प्रारंभ कर दी थी। गांधी जी के समाज क्रांतिकारी जीवन का शुभारंभ 1893 में तब हुआ जब एक मुकदमे के सिलसिले में दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। वहां उन्होंने अंग्रेजों को भारतीयों एवं वहां के मूल निवासियों के साथ बुरा व्यवहार करते देखा था। वहां अंग्रेजों ने महात्मा गांधी को भी कई बार अपमानित किया था। भारत में आते ही गांधी जी ने एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य बिहार के चंपारण जिले के नीलहे किसानों को अंग्रेजों से मुक्ति दिलानें का किया, 1917 में गांधी जी के सत्याग्रह के फलस्वरूप ही चंपारण के किसानों का शोषण समाप्त हो पाया था। अहमदाबाद में आश्रम की स्थापना के साथ साथ अंग्रेज सरकार के विरुद्ध उनका संघर्ष प्रारंभ हुआ और भारतीय राजनीति की बागडोर अब महात्मा गांधी के हाथों में आ चुकी थी। गांधीजी इस बात को अच्छे से समझ चुके थे कि सामरिक तौर पर अंग्रेजों से लड़ाई नहीं की जा सकती है, भारत को अंग्रेजों से मुक्ति लाठी बंदूक के बल पर नहीं प्राप्त हो सकती थी, इसीलिए उन्होंने सत्य और अहिंसा की शक्ति का सहारा लिया। स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। 1920 में उन्होंने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ असहयोग आंदोलन प्रारंभ कर दिया था। अंग्रेजों ने जब नमक पर कर लगाया तो गांधीजी ने 24 दिन की दांडी यात्रा आयोजित की 24 दिनों की यात्रा के पश्चात उन्होंने अपने हाथों से दांडी नामक स्थान पर नमक बनाया और सविनय अवज्ञा आंदोलन भी संचालित किया। इसी बीच गांधी इरविन समझौता के लिए गांधीजी इंग्लैंड भी गए पर अंग्रेजों की बदनियति के कारण यह समझौता मूर्त रूप नहीं ले सका, फल स्वरुप यह आंदोलन 1934 तक चलता रहा। 1942 में गांधी जी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आंदोलन चलाया गया जिसमें करो या मरो का नारा देकर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को एकजुट कर अंग्रेजो के खिलाफ मोर्चा खोला गया। गांधीजी तथा अन्य नेताओं, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के अथक प्रयास से 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। 1920 से 1947 तक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में गांधीजी की भूमिका के कारण इस युग को गांधी युग भी कहा जाता है। स्वतंत्रता के बाद भी गांधीजी का विरोध हिंदू और मुसलमान कट्टरपंथी लोग लगातार करते रहे। और 30 जनवरी 1948 को जब वे प्रार्थना सभा जा रहे थे तब उनकी निर्मम हत्या कर दी गई। सत्य तथा अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी का दुखद देहांत हो गया।

गांधी जी हमारे बीच नहीं है, पर उन्हें युगों तक याद किया जाता रहेगा।उनके द्वारा प्रतिपादित चार आधारभूत सिद्धांत सत्य, अहिंसा, प्रेम और सद्भाव को आज भी पूरे विश्व में करोड़ों लोगों द्वारा अंगीकार किया जा रहा है। सत्यमेव जयते जैसे राष्ट्रीय वाक्य के प्रेरणा स्रोत गांधी जी ही थे। गांधी जी द्वारा अपनाई अहिंसा का सही मतलब मन,वाणी तथा कर्म से किसी को आहत ना करना, उनके यह महान विचार थे कि अहिंसा के बिना सत्य का अन्वेषण असंभव है। महात्मा गांधी एक वैचारिक क्रांति के युग थे। गांधी जी सर्वधर्म समभाव के एक बड़े प्रेरणा स्रोत भी रहे। वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा भी उनके द्वारा प्रतिपादित की गई थी।

उनके मन में सभी धर्मों के प्रति प्रेम तथा आदर भाव समाहित था, और यही वजह है कि गांधी जी को महात्मा गांधी और राष्ट्रपिता कहा जाता है। गांधीजी की सरलता एवं सत्य अहिंसा के प्रति अनुराग के सामने अंग्रेज नतमस्तक होकर भारत को स्वतंत्र कर भारत छोड़ गए। अंग्रेज गांधी जी की सत्याग्रह तथा सहयोग से घबराकर भारत से दुम दबाकर भागे। गांधीजी की सादगी,सरलता एवं सादा जीवन, सत्य और अहिंसा हम सबके लिए आज सबसे ज्यादा अनुकरणीय है। महात्मा गांधी को हम सब भारत वासियों तथा सत्य और अहिंसा के पुजारियों की ओर से नमन श्रद्धांजलि एवं प्रणाम।

शख्सियत

बढ़ता राजस्थान

'वाकिफ कहां जमाना हमारी उड़ान से वो ओर थे जो हार गए इस आसमान से'

नमस्कार साथियों हमारे आज की संक्षिप्त कलम के स्टार हैं राजस्थान पुलिस की शान डिप्टी एसपी राजीव राहर। इनका जन्म 16 नवंबर 1973 को ग्राम लादूसर जिला झुंझुनू सीकर जिले के कस्बा रामगढ़ शेखावाटी में हुआ। सम्पूर्ण शिक्षा वहीं से प्राप्त की पिताजी आर एन कईया राजकीय महाविद्यालय रामगढ़ शेखावाटी में प्रोफेसर रहे। बीएड़ की और 1986 में सब इंस्पेक्टर के पद पर भर्ती हुए तथा वर्ष 2010-11 में इंस्पेक्टर बने तथा वर्ष 2021-22 में डिप्टी एसपी के पद पर प्रमोट हुए। वर्तमान पद स्थापना डिप्टी एसपी ऋषभदेव उदयपुर। इससे पहले को खेदर सिरोही में रहे,सब इंस्पेक्टर जिला चूरू में हमीर का बास, सिद्धपुर राजगढ़ ,ट्रैफ्फिक चूरू और रतननगर रहे। दुधवा खारा सीकर जिले में श्रीमाधोपुर, हनुमानगढ़ जिले में हनुमान जंक्शन अलवर में गोविंदगढ़ और लक्ष्मणगढ़ रहे। इंस्पेक्टर पद पर आने के बाद सरकार ने इन्हें चुरू जिले में सरदारशहर, सीकर में फ्तेहपुर कोतवाली, महिला थाना,मानव तस्करी विरोधी यूनिट, नीम का थाना और कोतवाली लगाया । जयपुर कमिश्नरेट में ये जवाहर नगर रहे। अलवर में राजगढ़ और भिवाड़ी रहे। डिप्टी एसपी पद पर 11वीं बटालियन दिल्ली, सीओ रेवदर सिरोही और सीओ ऋषभदेव उदयपुर वर्तमान में स्थापित है। राजस्थान पुलिस के जांबाज पुलिस अधिकारी के रूप में राजीव राहर की गिनती होती है इन्होंने अपनी बेल पुलिसिंग और खाकी के प्रति अपने जांबाज जज्बे के रूप में दिखाते हुए बड़े-बड़े अपराधियों को उनके सही ठिकाने पर पहुंचाया। ये जहां भी रहे

राजीव राहर
(डिप्टी एसपी, राजस्थान पुलिस)

वहां के पुलिसबल ने इनका इस्तकबाल किया और हौसला अफ्जाई की । अधिकारियों से मिले हुए प्रेम और स्नेह के कारण इन्होंने अपराधियों और अपराध पर अंकुश लगाए। दैनिक बढ़ता राजस्थान की टीम इस जांबाज ऑफिसर को सलूट करती है और उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

जय हिंद
रूपक शर्मा

आज का इतिहास

2 अक्टूबर की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- ब्रिटेन के किंग हेनरी सप्तम ने 1492 में फ्रांस पर आक्रमण किया।
- 1924 में राष्ट्रसंघ को शक्तिशाली बनाने के उद्देश्य से लाया गया जेनेवा प्रस्ताव।
- महासभा द्वारा 1924 में स्वीकृत हुआ किंतु बाद में उसकी पुष्टि नहीं हुई।
- श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय जनसंघ की स्थापना 1951 में की।
- सामुदायिक विकास कार्यक्रम की शुरूआत 1952 में हुई।
- बम्बई (अब मुंबई) में शिपिंग कारपोरेशन ऑफ इंडिया का गठन 1961 में हुआ।
- तत्कालीन राष्ट्रपति वी.वी. गिरि ने 1971 में गांधी सदन के नाम से प्रसिद्ध बिड़ला हाउस देश को समर्पित किया।
- तेहरान में 1982 को हुए बम विस्फोट से 60 मरे, 700 घायल।
- दहेज निषेधाज्ञा संशोधन अधिनियम 1985 को अस्तित्व में आया।
- दक्षिण कोरिया की राजधानी सोल में 1988 को 24वें ओलंपिक खेलों का समापन।
- तमिलनाडु में मंडपम और पम्बन के बीच समुद्र के ऊपर सबसे लंबा पुल 1988 में खुला।
- रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन 2000 में भारत की चार दिवसीय यात्रा दिल्ली पहुँचे।
- 19 देशों के संगठन नाटो ने 2001 में अफगानिस्तान पर हमले के लिए हरी झंडी दी।
- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने कांगों में 5900 सैनिक भेजने का प्रस्ताव 2004 में मंजूर किया।
- दक्षिण अफ्रीका ने 2006 में परमाणु ईंधन आपूर्ति मामले पर भारत को समर्थन देने का फैसला किया।
- उत्तर तथा दक्षिण कोरिया के बीच दूसरी शिखर बैठक 2007 को सम्पन्न हुई।

2 अक्टूबर को जन्मे व्यक्ति

- बिहार के प्रमुख गाँधीवादी रचनात्मक कार्यकर्ता और स्वतंत्रता सेनानी प्रजापति मिश्र का जन्म 1898 में हुआ।
- भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री का जन्म 1904 में हुआ।
- प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक तपन सिन्हा का जन्म 1924 में हुआ।
- हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार तथा सिनेमा कथा लेखक शंकर शेष का जन्म 1933 में हुआ।
- प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री आशा पारेख का जन्म 1942 में हुआ।
- भारतीय महिला हॉकी टीम की पूर्व कप्तान प्रीतम सिवाच का जन्म 1974 में हुआ।
- प्रविण उदासि का जन्म 1976 में हुआ।
- 'अशोक चक्र' से सम्मानित भारतीय सेना के जांबाज सैनिक हंगपन दादा का जन्म 1979 में हुआ।
- मारियोन बार्तोली का जन्म 1984 में हुआ।

2 अक्टूबर को हुए निधन

- विख्यात चित्रकार राजा रवि वर्मा का निधन 1906 में हुआ।
- भारत की एक प्रख्यात गांधीवादी, स्वतंत्रता सेनानी और एक सामाजिक कार्यकर्ता राजकुमारी अमृत कौर का निधन 1964 में हुआ।

विशेष आलेख

क्या ईरान की खुफिया यूनिट को मोसाद का एजेंट चला रहा था

रामस्वरूप रावतसरे

ईरान के पूर्व राष्ट्रपति महमूद अहमदीनेजाद ने सीएनएन-तुर्क को दिए गए एक इंटरव्यू में बड़ा खुलासा किया है। अहमदीनेजाद ने कहा है कि इजरायल की खुफिया एजेंसी मोसाद ने ईरानी सीक्रेट सर्विस में ही घुसपैठ कर ली थी। मोसाद ने उस ईरानी एजेंसी के चीफ को ही अपनी तरफ मोड़ लिया था, जिसका काम इजरायल पर निगरानी का था। उन्होंने कहा, हमने इजरायल का मुकाबला करने के लिए एक स्पेशल टीम बनाई, लेकिन उसका हेड ही मोसाद का एजेंट निकल गया। ईरान के पूर्व राष्ट्रपति महमूद अहमदीनेजाद का दावा है कि मोसाद ने ईरान के कई खुफिया अधिकारियों, खासकर सीनियर अधिकारियों को अपनी तरफ कर लिया था। अहमदीनेजाद ने कहा कि करीब 20 ईरानी अधिकारी डबल एजेंट्स की भूमिका में थे, जो एक तरफ ईरान के लिए काम कर रहे थे और दूसरी तरफ इजरायल को सीक्रेट इन्फॉर्मेशन भी दे रहे थे। मोसाद के इस ऑपरेशन का टारगेट ईरान के परमाणु कार्यक्रम से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी हासिल करना था। उन्होंने बताया कि 2021 में काउंटर यूनिट के प्रमुख की पहचान एक इजरायली जासूस के रूप में हुई थी।

यह पहली बार नहीं है जब इजरायल पर ईरान की जासूसी का आरोप लगा हो। 2018 में इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने खुलासा किया था कि ईरान के परमाणु कार्यक्रम से जुड़े कई दस्तावेज इजरायली एजेंटों द्वारा चुरा लिए गए थे। नेतन्याहू ने एक हाई-प्रोफाइल भाषण में दस्तावेज़ों को दिखाया और दावा किया कि इससे साबित होता है कि ईरान सीक्रेट तरीके से परमाणु हथियारों का कार्यक्रम चला रहा है। अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) ने बाद में पुष्टि की थी कि ये दस्तावेज़ तेहरान में एक सीक्रेट ऑपरेशन के दौरान कब्जे में लिए गए थे। रिपोर्ट्स के अनुसार, उस ऑपरेशन के दौरान मोसाद एजेंटों ने तेहरान के एक गोदाम में घुसकर कई लॉकरों को तोड़ दिया और 100,000 से अधिक गोपनीय दस्तावेज़ अपने कब्जे में ले लिए। इस ऑपरेशन में दो दर्जन से अधिक एजेंट शामिल थे और यह छह घंटे तक चला था। इन दस्तावेज़ों में ईरान के परमाणु हथियारों के विकास से जुड़ी व्यापक जानकारी थी, जिसने दुनिया भर में ईरान के परमाणु कार्यक्रम की दिशा को लेकर नई बहस छेड़ दी थी। चोरी गए इन दस्तावेज़ों ने अमेरिका की ईरान पर नीति को काफी हद तक प्रभावित किया था। 2015 में हुए ईरान परमाणु समझौते से अमेरिका ने 2018 में उस वक्त हाथ खींच लिया था जब तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को नेतन्याहू ने एक सीक्रेट ब्रीफिंग दी थी। इन दस्तावेजों के खुलासे से यह दावा मजबूत हुआ कि ईरान समझौते की शर्तों का पालन नहीं कर रहा था, जिसका उद्देश्य ईरान की परमाणु आकांक्षाओं को कम करना और उसके बदले प्रतिबंधों को हटाना था। इजरायल द्वारा लेबनान में हिज़बुल्लाह के

मुख्य नेता हसन नसरल्लाह की हत्या के बाद अहमदीनेजाद ने यह चौंकाने वाला खुलासा किया है। उन्होंने ये भी कहा है कि ईरान के भीतर एक महत्वपूर्ण काउंटर इजरायल यूनिट में मोसाद का एजेंट शामिल है, जिससे लगातार इजरायल को जानकारी मिल रही है। उन्होंने कहा कि 2018 में ईरानी परमाणु दस्तावेजों की चोरी और ईरानी परमाणु वैज्ञानिकों की टारगेट किलिंग के लिए जिम्मेदार यही एजेंट थे। अहमदीनेजाद के अनुसार ईरान की मोसाद विरोधी इकाई का प्रमुख 2021 में एक इजरायली जासूस के रूप में सामने आया। उन्होंने आरोप लगाया कि इजरायल ने ईरान के भीतर जटिल ऑपरेशन किए। उन्हें जानकारी हासिल करना बहुत आसान हो गया था।

ईरान में अभी भी इस पर चुप्पी साधी हुई है। बता दें कि महमूद अहमदीनेजाद साल 2005 से 2013 तक, 2 बार ईरान के राष्ट्रपति रह चुके हैं। उन्होंने इस साल भी राष्ट्रपति चुनाव के लिए मैदान में उतरने की कोशिश की थी, लेकिन उनका पर्चा ही खारिज हो गया था और वो शुरुआती राउंड में ही बाहर हो गए थे। इजरायल ने लेबनान में 23 सितंबर 2024 को कई हवाई हमले किए, जिसमें हिज़बुल्लाह के ठिकानों को निशाना बनाया गया। इस बीच, 27 सितंबर 2024 को इजरायली सेना ने बेरूत में एक हवाई हमले के जरिए हिज़बुल्लाह प्रमुख हसन नसरल्लाह को मार गिराया। लेबनान के स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, इन हमलों में 960 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है और 2,770 से अधिक लोग घायल हो चुके हैं। हमलों में कई हिज़बुल्लाह नेताओं की भी जान गई है। हिज़बुल्लाह और इजरायल के बीच यह संघर्ष तब से जारी है, जब इजरायल ने गाजा पर हमला शुरू किया था। ये हमला अक्टूबर 2023 में हमास द्वारा सीमा पार करके इजरायल पर किए गए हमले के बाद शुरू हुआ था, जिसमें 1200 से अधिक इजरायलियों की मौत हो गई थी। इसी हमले के बाद इजरायली पलटवार में अकेले गजा पट्टी में ही 41,600 से अधिक लोग मारे जा चुके हैं, जिनमें ज्यादातर महिलाएँ और बच्चे शामिल हैं। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने चिंता जताई है कि लेबनान में इजरायली हमलों से गाजा का संघर्ष एक व्यापक क्षेत्रीय युद्ध में तब्दील हो सकता है।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विविध लक्ष्यों को पूरा करेंगे। क्या आप यह जानना चाहते है कि आपके जीवन के ऐसे कौनसे क्षेत्र है, जहां आपके सितारे बुलंद रहेंगे और दूसरी तरफ, आपको किस बातों से सावधान रहना चाहिए। हम न सिर्फ हमारे काम में और जटिल मुद्दों को सुलझाते वक्त सकारात्मक ऊर्जा को महसूस करेंगे, बल्कि पारस्परिक संबंधों में भी, जहां यह स्थानान्तरण हमें संताए और बातचीत में लाभ प्रदान करेगा

मेष

आज आपको आर्थिक मामलों और लेन-देन के मुद्दों में सतर्क रहने की जरूरत है। विवाद से बचें अन्यथा परिवार के सदस्यों के साथ कलह हो सकता है। खाने-पीने में सावधानी रखें। आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। पर्यटन का आयोजन करेंगे।

वृष

स्त्री मित्रों के साथ मुलाकात होगी। अधूरे काम पूरे होंगे। आर्थिक लाभ की संभावना है। आज के दिन आपमें आलस्य और थकान रहने के कारण शारीरिक रूप से अस्वस्थता का अनुभव करेंगे। आज का दिन आपके लिए शुभ है। प्रसन्नता होगी।

मिथुन

आपका आज का दिन शुभ साबित रहेगा। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। यश-कीर्ति तथा आनंद की प्राप्ति होगी। परिजनों के साथ आनंद में समय व्यतीत होगा। कार्यालय में सहकर्मियों और अधीनस्थ व्यक्तियों का पूरा सहयोग प्राप्त होगा।

कर्क

मानसिक रूप से भी आपको चिंता सताएगी। व्यावसायिक क्षेत्र में भाग्य का साथ नहीं मिलेगा। मन में दुविधा रहने के कारण निर्णय लेने में बाधा आएगी। संतान का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। नौकरी में पदोन्नति होगी। प्रसन्नता होगी। मानसिक स्वास्थ्य मन को प्रफुल्लित रखेगा।

सिंह

आध्यात्मिक सिद्धि और ईश्वर भक्ति के लिए उत्तम समय है। गहरे चिंतन-मनन द्वारा मानसिक शांति प्राप्त कर सकेंगे। आज आपको कुछ खास करने का मन करेगा। किसी प्रिय व्यक्ति के साथ अच्छा समय गुजारेंगे।

कन्या

आज किसी भी नए काम का आरंभ न करें। बोलते समय और व्यवहार में खूब संभलकर रहने की आवश्यकता है। गुप्त शत्रुओं के जाल में न फंसें, इसका ध्यान रखें। आकस्मिक धन लाभ के योग हैं। रहस्यमय विषयों की तरफ आकर्षित होंगे।

तुला

नौकरी और व्यवसाय में अनुकूल परिस्थितियां होंगी। धन लाभ होने की संभावना है। मित्रों, विशेषकर महिला मित्रों से लाभ होगा। दोस्तों के साथ पर्यटन पर जा सकते हैं। आज का दिन आपके लिए सामान्य रहेगा।

वृश्चिक

आज नए कपड़े व गहने खरीद सकते हैं तथा आमोद प्रमोद में आपका दिन गुजरेगा। आज आपको अपने वाणी और व्यवहार में सावधानी रखने की जरूरत है। आपकी बातचीत से कोई गलतफहमी न हो, उसका ध्यान रखें। वृद्धि होगी।

धनु

आज समय से भोजन भी नहीं मिलेगा। व्यर्थ में खर्च हो सकता है। घर तथा अपने कार्यक्षेत्र में आपके लिए लाभदायक वातावरण होगा। शारीरिक और मानसिक रूप से आज आप काफी स्वस्थ रहेंगे। रचनात्मकता में वृद्धि होगी।

मकर

मौज-मस्ती, मनोरंजन, उत्तम भोजन और नए वस्त्र परिधान से आपका मन खुश रहेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। वाहन सुख मिलेगा। किसी प्रिय व्यक्ति का साथ मिलने से मन प्रसन्न रहेगा। दांपत्य जीवन में निकटता अनुभव होगा।

कुंभ

आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है और विशेषकर आंखों में तकलीफ हो सकती है। ईश्वर की भक्ति और आध्यात्मिक बातों में रुचि लेने से मन को कुछ शांति मिलेगी। आज का दिन आपके लिए लाभदायक साबित होगा।

मीन

आर्थिक योजनाएं सफलतापूर्वक पूरी होंगी। विवाहोत्सुक युवक- युवतियों के विवाह की संभावना है। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आज आपके सभी काम सरलतापूर्वक पूरे होंगे। व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। अधिकारी आपके काम से संतुष्ट नहीं होंगे।

सुभाषित *बांटो और राज करो, एक अच्छी कहावत है परन्तु एक होकर आगे बढ़ो, इससे भी अच्छी कहावत है।* ❐ **गोथे**

जनताकी सुरक्षा पहले

बुलडोजर कारवाईपर सर्वोच्च न्यायालयने मंगलवारको कड़ी टिप्पणी करते हुए स्पष्ट कर दिया है कि जनताकी सुरक्षा सबसे पहले है और सड़कोंपर बने किसी भी धार्मिक ढांचेको हटाया जाना जरूरी है। न्यायमूर्ति बी.आर. गवई और न्यायमूर्ति के.वी. विश्वनाथकी पीठने मामलेकी सुनवाईके दौरान जो बड़ी टिप्पणी की है उसके निहितार्थ भी बड़े हैं। न्यायालयका यह कहना महत्वपूर्ण है कि लोगोंको सुरक्षा सबसे ऊपर है। चाहे मन्दिर हो या दरगाह हो सड़क, जलमार्ग या रेल ट्रैकको अवरोध पैदा कर रहे किसी भी धार्मिक ढांचेको हटाना आवश्यक हो गया है। न्यायालयने यह भी कहा है कि भारत धर्मनिरपेक्ष देश है और बुलडोजर एक्शनको लेकर उसका आदेश भी सभी नागरिकोंके लिए होगा, चाहे वे किसी भी धर्मके हों। हमारे निर्देश सभीके लिए होंगे। मन्दिर या दरगाह या गुरुद्वारा यदि सड़कके बीच कोई धार्मिक ढांचा है तो यह जनताके लिए बाधा नहीं बन सकता है। अनधिकृत निर्माणोंके लिए एक कानून होना चाहिए। यह धर्मपर निर्भर नहीं होना चाहिए। पीठने १७ सितम्बरको ही कहा था कि उसकी अनुमतिके बिना एक अक्तूबरतक आरोपियों सहित अन्य लोगोंकी सम्पत्तियोंको नहीं गिराया जायगा। यदि अवैध रूपसे ध्वस्तीकरणका एक भी मामला है तो हमारे संविधानके मूल्योंके खिलाफ है। देशभरमें चल रही बुलडोजर कारवाईके खिलाफ दाखिल जमीयत उलेमा-ए-हिन्दकी याचिकापर सुनवाईके दौरान शीर्ष न्यायालयने जो भी कड़ी टिप्पणी की है, वह स्वागतयोग्य है क्योंकि देशमें ऐसे धार्मिक ढांचोंकी बड़ी संख्या है जो जनताके सुगम यातायातमें बाधक हैं। इसे ध्वस्त करना समयकी मांग है। सिर्फ सार्वजनिक स्थानोंपर अतिक्रमण हटानेकी छूट रहेगी। सर्वोच्च न्यायालयने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि सिर्फ किसी आपराधिक मामलेमें आरोपी या दोषी करार देना सम्पत्ति तोड़नेका आधार नहीं होगा, इसके लिए निर्माणमें किसी म्यूनिसिपल नियमोंका उल्लंघन होना चाहिए। साथ ही सर्वोच्च न्यायालयने एक और बड़ी बात यह भी कही है कि शीर्ष न्यायालयके दिशा-निर्देशोंका उल्लंघन अदालतकी अवमानना माना जायगा और यदि तोड़फोड़ अवैध पायी गयी तो सम्पत्तिको वापस करना होगा। यह निर्देश उन सरकारों और अधिकारियोंके लिए बड़ी नसीहत है जो किसी पूर्वाग्रहके चलते सम्पत्तियोंको तोड़ते हैं। ऐसी कारवाईसे गलत सन्देश जाते हैं। सर्वोच्च न्यायालयकी टिप्पणियां अवैध निर्माण करनेवालोंको भी सख्त निर्देश देती हैं। शीर्ष न्यायालयने इस प्रकरणसे फैसला सुरक्षित रख लिया है। अब लोगोंको 'बुलडोजर जस्टिस' की प्रतीक्षा है।

संवेदनहीनताकी हद

आज जब हम अपने आसपासकी स्थितिको नजदीकसे देखते हैं तो पाते हैं कि हम कितने असभ्य और असंवेदनशील हो गये हैं। मानवीय संवेदनाओंका तेजीसे होता ह्रास देश और समाजके लिए शुभ नहीं है। किसी दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति, किसी गर्भवती महिला या किसी दिव्यांगकी सहायता हम सबकी जिम्मेदारी है, जबकि इसके विपरीत आज किसी भी हादसा या विपत्तिमें फंसे व्यक्तिकी मदद करनेवाले कम होते हैं, परन्तु मोबाइलसे वीडियोग्राफी कर वायरल करनेवालोंकी संख्या अधिक हो गयी है। ऐसा ही मानवताको शर्मसार करनेवाला दृश्य सोमवारको उत्तर प्रदेशके अम्बेडकर नगर जनपदके थाना इब्राहिमपुरके अन्तर्गत इल्तिफातगंज बाजारमें देखनेको मिला। सड़क किनारे एक बच्चेको जन्म देनेके बाद कराह रही विक्षिप्त महिलाको अस्पताल पहुंचानेकी जगह लोग अपने मोबाइलसे वीडियो बनानेमें लगे हुए थे, ताकि बादमें इसे सोशल मीडियापर वायरल कर शासन-प्रशासन कोस कर अपनी जिम्मेदारीका दिखावा कर सके। हमारे संवेदनहीन समाजके तथाकथित सभ्य एवं समृद्ध लोग इन पीड़ित और परेशान लोगोंकी मदद करनेके बजाय मोबाइलसे वीडियो बनाना जरूरी समझते हैं। यह हमारे संस्कारको कलंकित करनेवाली सोच है। शासन-प्रशासनके लिए तो यह दोहरा शर्मनाक मामला है कि पहले तो मानसिक रूपसे विक्षिप्त महिला किसी वहशीके हवसका शिकार होकर गर्भवती हुई। इसके बाद सड़क किनारे उसका प्रसव हुआ। हालांकि इससे इतर ऐसे संवेदनहीन समाजमें संवेदनशील लोग भी मौजूद हैं, जिन्होंने मानवताको बचाये रखा है। मामलेकी जानकारी जब नजदीकमें स्थित फातिमा नर्सिंग होमके मालिक डाक्टर इरफानको मिली तो तुरन्त ही उन्होंने अपने स्टाफको भेज कर महिला और बच्चेको अस्पतालमें लाकर उसका समुचित इलाज किया। नवजात शिशु और मांको नये कपड़े, दूध और हर चीज मुहैया करायी। इन शर्मनाक और त्रासद घटनाओंके नामपर आमसे लेकर खासतक कोई भी चिन्तित दिखायी नहीं दे रहा है, यह हमारी इनसानियतपर एक करारा तमाचा है। इसके लिए सामाज शास्त्रियोंको आगे आकर लोगोंको सामाजिक और मानवीय दायित्वोंका बोध कराना होगा।

लोक संवाद

टूटते भरोसेसे बढ़ता अकेलापन

महोदय,-कहीं पढ़ा था, जैसे ही हम भरोसा करना छोड़ देते हैं, वैसे ही हम खुदको भीतरसे बंद कर लेते हैं और अकेलेपनकी कंदरामें खो जाते हैं। हम प्यार कम करते हैं और डरते ज्यादा हैं। सच है कि इनसानी रिश्तोंका मनोविज्ञान बिल्कुल बदल चुका है। आज हर रिश्ते असंवेदी हो चुके हैं, हम किसीपर भी यकीन नहीं करते। ऐसा नहीं है कि भरोसा टूटनेकी कोई एक वजह है। आज हर गलत परिणतिको विदेशी संस्कृतिके प्रभावका परिणाम कह देनेका चलन या यूं कहें कि फैशन बन चुका है। व्यक्ति, समाज और देश सभी एक दूसरेसे अंतसम्बंधित हैं। यदि समाज ऐसा बन चुका है जहां हम भरोसा करना छोड़ चुके हैं तो दोषी कौन है। कोई खास समाज या सरकार या समूह दोषी नहीं है, बल्कि समस्त मनुष्य बिरादरी जिम्मेदार है। महत्वाकांक्षाएं इतनी बढ़ चुकी हैं कि लोग रिश्तोंको सीढ़ीकी तरह इस्तेमाल कर ऊपर चढ़ जाना चाहते हैं और जब कहीं पहुंच जायं फिर उन्हीं रिश्तोंको रौंद डालते हैं। किसीपर कोई कैसे यकीन करे। रिश्तोंकी अहमियत खो चुकी है, चाहे वह बच्चोंसे हो या माता-पितासे या सगे-सम्बन्धीसे या दोस्त या फिर पड़ोसीसे हो। पति पत्नीमें तो आत्मिक रिश्ता कभी दिखता ही नहीं, मनमें कड़वाहट भरी होती है लेकिन ऊपरसे प्रेममें कमी नहीं होती। वह पुरुष जो दहेज लेकर सामानकी तरह देख-परखकर विवाह करेगा उसे कैसे कोई स्त्री प्रेम कर सकती है। दहेजके लिए या फिर सिर्फ बेटी जन्म देनेके कारण विवाहके कई साल बाद भी स्त्रीको मार दिया जाता है। जन्मजात कन्यासे लेकर मृत्युके द्वारपर खड़ी औरत असुरक्षित होती है। कब वह शारीरिक शोषणका शिकार हो जाय, नहीं मालूम और ये भरोसा स्त्रीका उसके अपने ही घरमें अपने ही नजदीकी रिश्तों द्वारा तोड़ा जाता है। प्रेमी-प्रेमिकाओंके तार भी मनसे और आत्माकी गहराइयोंसे जुड़े नहीं होते, वैसेमें प्रेम महज प्रदर्शनका जरिया बन जाता है। यदि कोई प्रेमी विवाह कर भी ले तो मानो कि बड़ा अहसान कर दिया हो, परन्तु फिर भी दहेज चाहिए होता है। मनमें डर बैठ जाता कहीं एक और धोखा न मिल जाय या कोई और भरोसा न तोड़ जाय और ये डर न तो सहज जीवन जीने देता और न खुलकर जीने देता। प्रेम, दोस्ती, रिश्ते सबको संदेहकी नजरसे देखते हैं और खुदमें इतने सिमट जाते कि खुदपर यकीन नहीं रह जाता कि वह क्या करे कि धोखा न मिले और शायद भरोसा खुदपर से भी उठ जाता है। आत्मविश्वासके साथ ही इनसानी रिश्तोंसे भरोसा खत्म हो जाता है। **-जेन्नी शबनम, वाया ईमेल।**

संकटग्रस्त विश्वको अहिंसाकी जरूरत

आज चारों तरफ हिंसाका बाहुल्य है। अनावश्यक हिंसा लोगोंका शौक बनता जा रहा है। यह शौक आदमीकी जीवनशैली बन रहा है। देश एवं दुनियामें जटिल होते हिंसक हालातोंपर नियंत्रणके लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधीका जन्मदिन अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर अहिंसा दिवसके रूपमें मनाना हमारे लिए गर्वकी बात है।

❐ **ललित गर्ग**

महात्मा गांधीका जन्मदिन २ अक्तूबरको अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर अहिंसा दिवसके रूपमें मनाया जाना हमारे लिए गर्वकी बात है। गांधीकी अहिंसाने देशको गौरवान्वित किया है। गांधीके अनुयायियों एवं उनमें आस्था रखनेवाले उन तमाम लोगोंको इससे हार्दिक प्रसन्नता हुई है। यह बापूकी अन्तरराष्ट्रीय स्वीकार्यताका बड़ा प्रमाण भी है। यह एक तरहसे गांधीजीको दुनियाकी एक विनम्र श्रद्धांजलि भी है। यह अहिंसाके प्रति समूची दुनियाकी स्वीकृति भी कही जा सकती है। महात्मा गांधीने विश्व शांति, अहिंसा एवं आपसी सौहार्दकी स्थापनाके लिए देश-विदेशके शीर्ष नेताओंसे मुलाकातें कीं, अहिंसक प्रयोग किये, भारतको अहिंसाके द्वारा आजादी दिलायी। उन्होंने आदर्श, शांतिपूर्ण एवं अहिंसक समाजके निर्माणके लिए वातावरण बनाया। सबसे पहले अहिंसा परमो धर्म: का प्रयोग हिन्दुओंके पावन ग्रंथ महाभारतके अनुशासन पर्वमें किया गया था। लेकिन इसको अंतरराष्ट्रीय प्रसिद्धि दिलवायी महात्मा गांधीने। गांधीने अपनी वाणीसे और अपने स्वयंके जीवनसे इसे वह प्रतिष्ठा दिलायी कि अहिंसाके साथ महात्मा गांधीका नाम ऐसा जुड़ गया कि दोनोंको अलग कर ही नहीं सकते। अहिंसाका सीधा-साधा अर्थ करें तो वह होगा कि व्यावहारिक जीवनमें हम किसीको कष्ट नहीं पहुंचायें, किसी प्राणीको अपने स्वार्थके लिए दु:ख न दें। आत्मान: प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत्॥ इस भावनाके अनुसार दूसरे व्यक्तियोंसे ऐसा व्यवहार करें जैसा कि हम उनसे अपने लिए अपेक्षा करते हैं। इतना ही नहीं, सभी जीव-जन्तुओंके प्रति अर्थात् पूरे प्राणी मात्रके प्रति अहिंसाकी भावना रखकर किसी प्राणीकी अपने स्वार्थ एवं जीभके स्वाद आदिके लिए हत्या न तो करें और न ही करवायें और हत्यासे उत्पन्न वस्तुओंका भी उपभोग नहीं करें।

हमारे लिए यह सन्तोषका विषय इसलिए है कि अहिंसाका जो प्रयोग भारतकी भूमिसे शुरू हुआ उसे संसारकी सर्वोच्च संस्थाने जीवनके एक मूलभूत सूत्रके रूपमें मान्यता दी। हम देशवासियोंके लिए अपूर्व प्रसन्नताकी बात है कि गांधीकी प्रासंगिकता चमत्कारिक ढंगसे बढ़ रही है। दुनिया उन्हें नये सिरेसे खोज रही है। उनको खोजनेका अर्थ है अपनी समस्याओंके समाधान खोजना, हिंसा एवं आतंकवादकी बढ़ती समस्याका समाधान खोजना। शायद इसीलिए कई विश्वविद्यालयोंमें उनके विचारोंको पढ़ाया जा रहा है, उनपर शोध हो रहे हैं। आज भी भारतके लोग गांधीके पदचिह्नोंपर चलते हुए अहिंसाका समर्थन करते हैं। पड़ोसी देशके साथ भी लगातार अहिंसासे पेश आते रहे हैं, लेकिन उन्होंने हमारी अहिंसाको कायरता समझनेकी भूल की है। हिंसकवृत्ति आदमीको एक दिन कालसौकरिक कसाई बना देती है, कंस बना देती है, रावण बना देती है। एक ऐसा हिंसक समाज बन रहा है, जिसमें कुछ लोगोंको दिनभरमें जबतक किसीको मार नहीं देते, उन्हें बेचैनी-सी रहती है। इतिहासमें ऐसे कुछ विकृत दिमागके लोग हुए हैं, जिन्हें यातना देकर किसीको मारनेमें आनन्द आता था। अपने शौकको पूरा करनेके लिए वे कारागृहमें लोगोंको भेड़-बकरियोंकी तरह भरते थे और प्रतिदिन उनमेंसे कईको वीभत्स तरीकेसे मारते थे। इसमें उन्हें एक अव्यक्त आनन्दकी अनुभूति होती थी। सैमुबल बेकेटका मार्मिक कथन है कि आंसू बहना इस दुनियामें कभी नहीं थमता। एक शख्सकी आंखमें वह थमता है तो कहीं और किसी दूसरेकी आंखमें बहने लगता है। लेकिन यही बात हंसीपर भी लागू होती है। हिंसाके माहौलमें अहिंसाके दीपक भी यत्र-तत्र प्रज्ज्वलित होते ही है। भले ही अहिंसा एवं शांतिकी लौ धीमी हो, लेकिन यह हिंसा एवं अशांतिसे कहीं बेहतर एवं कारगर है। अहिंसा दिवसकी आयोजना इस मद्धिम होती रोशनीको तीव्र करनेकी प्रेरणा देती है। जिनकी जीवनशैली हिंसाप्रधान होती है, उनकी दृष्टिमें हिंसा ही हर समस्याका समाधान है। हिंसा एक मिथ्यादर्शन, किन्तु हिंसकवृत्तिके लोगोंने उसे सम्यक्‌दर्शन बना दिया है। जो जितनी बड़ी हिंसा करता है, उसे उतना ही सफल माना जाने लगा है। राजनीतिमें तो हिंसा जीतका हथियार बन गयी है। बड़े राष्ट्र इसी तरहकी हिंसाके बलपर दुनिय पर अपना आधिपत्य करते हैं। बात शांतिकी हो, अहिंसाकी हो और मार्ग हिंसा एवं अशांतिका चुने तो यह कैसे संभव हो सकता है। अहिंसा एवं शांतिको चाहनेवालों जागरूक होना होगा और इसके लिए महात्मा गांधीके जीवन-दर्शन एवं सिद्धान्तोंको सामने रखना होगा। गांधीने कहा भी है कि अहिंसा ही धर्म है, वही जिन्दगीका एक रास्ता है। अध्यात्मके आचार्योंने हिंसा और युद्धकी मनोवृत्तिको बदलनेके लिए मनोवैज्ञानिक भाषाका प्रयोग किया है। उन्होंने कहा है, युद्ध करना परम धर्म है, परन्तु सच्चा योद्धा वह है, जो दूसरोंसे नहीं स्वयंसे युद्ध करता है, अपने विकारों और आवेगोंपर विजय प्राप्त करता है। जो इस सत्यको आत्मसात कर लेता है, उसके जीवनकी सारी दिशाएं बदल जाती हैं। वह अपनी शक्तियोंका उपयोग स्व-पर कल्याणके लिए करता है। जबकि एक हिंसक अपनी बुद्धि और शक्तिका उपयोग विनाश और विध्वंसके लिए करता है। पड़ोसी देश पाकिस्तान ऐसा ही करता रहा है, उसको अपनी अवामके बारेमें सोचना चाहिए। शायद वह कभी भी हिंसा एवं युद्ध नहीं चाहती है। गांधीजी आज संसारके सबसे लोकप्रिय भारतीय बन गये हैं, जिन्हें कोई हैरतसे देख रहा है तो कोई कौतुकसे। इन स्थितियोंके बावजूद उनका विरोध भी जारी है। उनके व्यक्तित्वके कई अनजान और अंधेरे पहलुओंको उजागर करते हुए उन्हें पतित साबित करनेके भी लगातार प्रयास होते रहे हैं, लेकिन वे हर बार ज्यादा निखरकर सामने आये हैं, उनके सिद्धान्तोंकी चमक और भी बड़ी है। वैसे यह लम्बे शोधका विषय है कि आज जब हिंसा और शस्त्रकी ताकत बढ़ रही है, बड़ी शक्तियां हिंसाको तीक्ष्ण बनानेपर तुली हुई हैं, उस समय अहिंसाकी ताकतको भी स्वीकारा जा रहा है। यह बात भी थोड़ी अजीब-सी लगती है कि पूंजी केन्द्रित विकासके इस तूफानमें एक ऐसा शख्स हमें क्यों महत्वपूर्ण लगता है जो आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्थाकी वकालत करता रहा, जो छोटी पूंजी या लघु उत्पादन प्रणालीकी बात करता रहा। जब हथियार ही व्यवस्थाओंके नियामक बन गये हों तब अहिंसाकी आवाज कितना असर डाल पायगी। एक वैकल्पिक व्यवस्था और जीवनकी तलाशमें सक्रिय लोगोंको गांधीवादसे ज्यादा मदद मिल रही है। इस दृष्टिसे अहिंसा दिवस सम्पूर्ण विश्वको अहिंसाकी ताकत और प्रासंगिकतासे अवगत करानेका सशक्त माध्यम है। वस्तुत: अहिंसा मनुष्यताकी प्राण.वायु आक्सीजन है। प्रकृति, पर्यावरण पृथ्वी, पानी और प्राणिमात्रकी रक्षा करनेवाली अहिंसा ही है। मानवने ज्ञान-विज्ञानमें आश्चर्यजनक प्रगति की है। परन्तु अपने और औरोंके जीवनके प्रति सम्मानमें कमी आयी है। विचार-क्रान्तियां बहुत हुईं, किन्तु आचार-स्तरपर क्रान्तिकारी परिवर्तन कम हुए। शान्ति, अहिंसा और मानवाधिकारोंकी बातें संसारमें बहुत हो रही हैं, किन्तु सम्यक-आचरणका अभाव अखरता है। गांधीजीने इन स्थितियोंको गहराईसे समझा और अहिंसाको अपने जीवनका मूल सूत्र बनाया। अहिंसा दिवस मनाना तभी सार्थक होगा जब हम उसे अपनी जीवनशैली बनायेंगे।

अहिंसा दिवस सम्पूर्ण विश्वको अहिंसाकी ताकत और प्रासंगिकतासे अवगत करानेका सशक्त माध्यम है। वस्तुत: अहिंसा मनुष्यताकी प्राणवायु आक्सीजन है। मानवने ज्ञान-विज्ञानमें आश्चर्यजनक प्रगति की है। परन्तु जीवनके प्रति सम्मानमें कमी आयी है। विचार-क्रान्तियां बहुत हुईं, किन्तु आचार-स्तरपर क्रान्तिकारी परिवर्तन कम हुए। शान्ति, अहिंसा और मानवाधिकारोंकी बातें संसारमें बहुत हो रही हैं, किन्तु सम्यक-आचरणका अभाव अखरता है। गांधीजीने इन स्थितियोंको गहराईसे समझा और अहिंसाको अपने जीवनका मूल सूत्र बनाया।

महालयाका वैज्ञानिक दृष्टिकोण

निरुक्तकार यास्कके अनुसार 'पिता पाता पालयिता वा जनयिता वा' यानी पालन करनेवाला, उत्पन्न करनेवाला और रक्षा करनेवाला पिता कहलाता है। कहा गया है ऋषियोंसे पितरोंकी उत्पत्ति हुई। पितरोंने देवताओं और मनुष्योंको जन्म दिया।

❐ **शकुन्तला देवी**

जब एक हो तो पिता और जब अनेक हों तो उनकी संज्ञा पितर कहलाती है। पितरोंने देवताओं और मनुष्योंको जन्म दिया और देवोंसे क्रमश: चर और अचर संसार उत्पन्न हुआ। मनुस्मृतिमें कहा गया है- देवता, पितर और मनुष्योंके लिए वेदका ज्ञान शाश्वत है। वैदिक और पौराणिक परम्परामें श्राद्ध और तर्पण सनातन परम्पराका हिस्सा है। वेदों, गृहसूत्रों, धर्म सूत्रों और पुराणोंमें इस विषयमें अनेक तरहका वर्णन किया गया है। वेदोंमें पितर और उनके तर्पणके बारेमें अनेक मंत्र हैं। जिनमें यजुर्वेद मंत्रका विशेष उदाहरण दिया जाता है। मंत्र है-पितृभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नम:। पितर: पितर: शुन्धध्वम्। यानी स्वधाके अधिकारी स्वधायी पिता, पितामह, प्रपितामह लोगोंको अन्न जल सत्कारपूर्वक दिया जाय। वे क्रीड़ा करते, मोद मनाते तृप्त (तर्पण) और सन्तुष्ट हों और हमें पवित्र करें। यह मंत्र यह बताता है कि जीवित माता-पिताकी सेवा-सत्कार करना, उन्हें हर तरहसे सन्तुष्ट करना ही श्राद्ध और तर्पण है। गौरतलब है पौराणिक परम्परामें आश्विन मासके पितृपक्षमें श्राद्ध-तर्पण कर्मकांडकी पुरातन परम्परा है। संस्कृत भाषामें पितृ शब्द है जिसका मायने पिता होता है। यानी पालन एवं रक्षण करनेवाला। शास्त्रमें पितरोंके बारह स्थानोंपर रहनेका वर्णन है, जिसमें वह स्थान जहां माता-पितादि रहते प्रमुख हैं और राष्ट्ररक्षामें वृद्धजनोंकी रक्षा एवं पालन-पोषण करनेवाला विभाग पितृलोक कह गया है। इससे भी यही साबित होता है कि मृत्युको प्राप्त पूर्वजोंके लिए कोई क्रिया वेद एवं शास्त्र सम्मत नहीं है। वैदिक और पौराणिक कर्मकांडोंका मानव जीवनके साथ गहरा रिश्ता है। सोलह संस्कारों और प्रतिदिन किये जाने वाले पंचयज्ञोंसे जीवनको पूर्ण बनानेका विधान वेद-शास्त्रोंमें बेहतर तरीकेसे विस्तारसे किया गया है। इन्हीं पंचयज्ञोंमें ब्रह्मयज्ञ (ईश्वरकी स्तुति, प्रार्थना, उपासना) पितृयज्ञ (माता-पिता एवं बड़ोंकी सेवा) अतिथि यज्ञ (आये हुए महमानोंका सम्मान), देव यज्ञ (यज्ञ-हवन) और भूतयज्ञ (प्राणियोंको जल एवं भोजन देना) का विधान किया गया है। शास्त्रीय विधानके अनुसार श्रत् सत्यं दधाति यया क्रियया साश्रद्धा, श्रद्धया यत क्रियते तच्छाद्धम्। यानी जिस कर्म या क्रियासे सत्यका ग्रहण किया जाय उसको श्रद्धा और श्रद्धाके साथ जो कर्म किया जाय उसे श्राद्ध कहते हैं। तर्पणके सम्बंधमें वेदका विचार है कि 'तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितृन् तत् तर्पणम्। यानी जिस-जिस कर्मसे माता-पिता एवं गुरुजन सुखी या प्रसन्न हों उसे तर्पण कहा गया है। श्राद्ध और तर्पणका वैज्ञानिक, सामाजिक और भावनात्मक पक्ष भी है। पौराणिक परम्परामें क्वार (अश्विन माह) में श्राद्ध और तर्पणका विधान कर्मकांडके रूपमें किये जानेकी परम्परा है। श्राद्ध और तर्पणका वैदिक और पौराणिक विधान अलग-अलग तरहका है। संस्कृतमें पिताका बहुवचन पितर कहलाता है। मनु:स्मृतिमें कहा गया है-ऋषय: पितरो देवा भूतान्यतियस्तथा। आशासते कुटुम्बिभ्यस्तेभ्य: कार्य विजानता। यानी ऋषिगण, पितर, देव, प्राणी तथा अतिथि लोग गृहस्थजनोंसे ही पोषण पानेकी आशा करते हैं। वहींपर अथर्ववेदमें कहा गया है-स्वधां पितृभ्य: अमृत: दुहाना आपोदेवीरुभययांस्तर्पयन्तु। यानी शक्तिवर्द्धक मिष्ठान्न, फल, शी, दूध एवं अन्नजलादि सब पदार्थ स्वधा होकर मेरे पितरोंको तृप्त करें। पितृयज्ञमें पितरों (वेदमें पितर जीवित माता-पिताको कहा गया है) का प्रतिदिन भोजन और दूसरी जरूरी चीजोंका श्रद्धा एवं भक्तिके साथ देनेका विधान कर्तव्यके रूपमें किया गया है। पितरोंके लिए श्रद्धाके साथ किये जानावाला कर्तव्य 'श्राद्ध' कहा गया है और उन्हें हर तरहसे संतुष्ट यानी तृप्त करना 'तर्पण' कहा गया है। वेदोंमें पिता या पितर शब्द रक्षा करने, पालन करने और जन्म देनेवालेके अर्थमें आया है। इसके अलावा स्व-कर्तव्य करते हुए उम्रके अनुसार निर्बल वृद्ध जन भी पितर कहे गये हैं। शतपथ ब्राह्मणमें कहा गया है-योऽपक्षीयते स पितर: यानी जो कमजोर हों वे पितर हैं। शास्त्रके मुताबिक दिनको देव, रातको पितर, दिनके पहले भागमें देव और उत्तर भागको पितर कहा गया है। वेदमें पितरकी विस्तारसे चर्चा की गयी है, जिसमें पितृलोककी बात कही गयी है। पितृ लोकका मतलब पितरोंके विभाग और रहनेकी जगह पितर लोक है। यानी परिवारमें माता-पिता जहां रहते हैं वही पितृलोक है। यजुर्वेदमें कहा गया है-स्वयंकी आधारित शक्ति और ज्ञान भाग और स्वभाव 'स्वधा' कहा गया है। स्वधाका विस्तार करते हुए कहा गया है- जो स्वधाके अधिकारी पिता, पितामह (बाबा) प्रपितामह (परबाबा) जो जीवित हों, उन्हें श्रद्धा और भक्तिके साथ भोजन, वस्त्र और अन्य जरूरी चीजें देकर तृप्त करना श्राद्ध और तर्पण है। गौरतलब है पितरोंको भोंजन, वस्त्रादि श्रद्धा और भक्तिके साथ ही देनेसे स्व-कर्तव्यका पालन हो पाता है। पुराणोंमें श्राद्ध और तर्पणके बारेमें विस्तारसे वर्णन किया गया है। ब्रह्मवैवर्त पुराणमें पितरका विस्तारसे वर्णन किया गया है। श्लोकमें कहा गया है अन्न देनेवाला, भयसे रक्षा करनेवाला, विद्या देनेवाला, पत्नीका पिता और जन्म देनेवाला, ये पांच मनुष्यको पितर या पिता कहा गया हैं।

सनातन परम्पराओंमें कुछ परम्पराएं आज जीवित हैं, लेकिन अपने मूल रूपमें नहीं। पौराणिक परम्परामें श्राद्ध एवं तर्पण अश्विन महीनेमें गया जाकर स्वर्गलोक गये परिवारके पूर्वजोंके लिए पिंडदान करनेकी परम्परा है। सिरके बाल साफ कर पन्द्रह दिनतक भोंज करानेकी परम्परा भी है। जलांजलि देकर पूर्वजोंके प्रति श्रद्धाका भाव रखना खास बताया गया है। इसके अलावा कुत्ते-यबिल्ली, कौवे और दूसरे प्राणियोंको भोजन खिलानेकी परम्परा है। इसमें इसे बहाने परिवारके पूर्वजोंको याद कर उनके कार्योंके प्रति नतमस्तक होनेका भी यह पक्ष रखा गया है। लेकिन सारे कर्मकांड श्रद्धा और भक्तिके साथ करना चाहिए। इससे परिवारी जनोंके प्रति कृतज्ञताका भाव जागृत होता है। परिवारको अच्छी परम्परापर आगे बढ़ानेके लिए भी यह पक्ष जाना जाता है। शास्त्रके अनुसार संतानको चाहिए है पितरोंके प्रति शास्त्र सम्मत कर्तव्यको करते हुए उन्हें हर तरहसे सन्तुष्ट करे। वेदमें इन कर्तव्योंको इस तरह समझाया गया है। यज्ञ यानी परोपकार करना, ज्ञान हासिल कर उनके जरूरतके मुताबिक उन्हें उनका भाग देना। माता-पिता एवं आचार्यका किसी भी तरह अनादर न करना और उनके साथ सम्माननीय व्यवहार करना, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना और उनके अनुभवोंका लाभ लेना, राष्ट्र रक्षामें निपुण लोगोंके लिए भोजन और आवासकी व्यवस्था करना। परिवार एवं समाजके सभी उन ज्ञान वृद्धों और बड़ी उम्र (आयुवृद्ध) के सभी लोगोंके लिए स्थायी जीविका और दूसरी जरूरी चीजोंकी व्यवस्था करना। मतलब संतान अपने बड़ोंके लिए उन सभी चीजोंकी व्यवस्था करे, कराये जो उनके लिए जरूरी हो। वेदमें पितरोंके खास तरहके कर्तव्य गिनाये गये हैं, जिसमें संतान पैदा करना, उनका पालन-पोषण करना, उनको उनकी प्रतिभा एवं योग्यताके मुताबिक शिक्षा-दीक्षा देना प्रथम कर्तव्य बताया गया है और अन्य कर्तव्योंमें ज्ञानी पितर (जन) विद्याका दान, बौद्धिक विकास, मानसिक विकास तथा आत्मिक विकास करना है। युद्धकला, राष्ट्ररक्षा, शत्रुओंका दमन और संतानको वीर साहसी योद्धा बनानेवाले कार्योंको करते रहनेका भी विधान है। सनातन परम्परामें यज्ञोंका खास अहमियत है। वैदिक परम्परा और धर्मके मुताबिक रोजाना जिन कर्तव्योंको करनेकी बात कही गयी है उनमें 'पितृयज्ञ' भी है जो रोज करना जरूरी है, वरना पाप लगता है। इस नजरियेसे भी श्राद्ध और तर्पण जीवित माता-पिता और बड़ोंकी सेवा और सत्कार करना ही पितृयज्ञ है। यही सच्चे मायनेमें श्राद्ध और तर्पण है जिसे प्रतिदिन करनेका वैदिक विधान वेदोंमें बताया गया है। जैसे संतानका कर्तव्य पितरोंको श्रद्धा एवं भक्तिसे हर तरहसे तृप्त करना है उसी तरह संतानके प्रति पितरोंका भी कर्तव्य वेदमें बताया गया है। इसलिए जबतक पितर संतानके लिए और संतान पितरके लिए अपने कर्तव्य पूरा नहीं करते तबतक श्राद्ध और तर्पणकी क्रिया पूरी नहीं होती है।

साक्षी बनें

❐ **ओशो**

दुखके बारेमें भी उत्सवकी दृष्टि ही रखें। जैसे कि उदास हो तो साक्षी बनें रहें, क्योंकि उदासी अलग ही सौंदर्य है। तुम अपनेको उदासीसे इस तरह जोड़ लेते हो कि उदास घड़ीकी गहराइयोंका सौंदर्य देख ही नहीं पाते। मात्र उदास शब्द ही गलत अर्थ देता है कि कुछ गलत है। यह गलत धारणा है। जब जीवनको अपनी समग्रतामें समझ लेते हो तभी तुम उसका उत्सव मना सकते हो, नहीं तो यह असंभव है। उत्सवका अर्थ होता है, जो भी होता है वह गौण है, मैं तो उत्सव मनाऊंगा। गौर करना, तुम सुखमें उतने गहरे कभी नहीं होते जितने गहरे तुम तब होते हो, जब उदास होते हो। उदासीमें एक तरहकी गहराई होती है और खुशीमें उथलापन रहता है। कभी जाओ और प्रसन्न लोगोंको देखो। तुम इन्हें सदा चहकतेए मुस्कराते पाओगे। प्रसन्नता सतहके ऊपर लहरोंकी तरह है, तुम खोखला जीवन जीते हो। लेकिन उदासीमें एक तरहकी गहराई है। जब तुम उदास होते हो तो यह सतहपर लहरोंकी तरह नहीं होता, इसमें सागर जैसी गहराई होती है, मीलों मील गहरी। गहराईकी ओर बढ़ें, इसे देखें। प्रसन्नतामें शोरगुल है, उदासीमें एक तरहका मौन है। प्रसन्नता दिनकी तरह है और उदासी रातकी तरह। प्रसन्नता जैसे प्रकाशकी तरह है और उदासी अंधकारकी तरह। प्रकाश आता-जाता है, अंधकार सदा रहता है, यह शाश्वत है। प्रकाशका होना कभी-कभी है, अंधकार सदा है। जब तुम उदासीमें उतरते हो तब तुम्हें इन सब बातोंका अनुभव होता है। अचानक तुम्हें बोध होने लगता है कि उदासी वहां एक वस्तुकी तरह मौजूद है, तुम उसे देख रहे हो, उसके साक्षी हो और अचानक तुम प्रसन्न होने लगते हो। रसातलकी तरह, इतनी शांत, इतनी संगीतमय, कोई शोरगुल नहीं, कोई हलचल नहीं। तुम अंतहीन गिरते चले जाते हो और फिर पूर्णतया पुनर्जीवित होकर उसमेंसे निकल आते हो। यह विश्रांति है। यह तुम्हारी दृष्टिपर निर्भर करता है। जब तुम उदास होते हो तो तुम्हें लगता है कि कुछ बुरा हुआ है। यह तुम्हारा मानना है कि कुछ बुरा हुआ है और तब तुम उससे बचनेकी कोशिश करते हो। तुम इसपर गौर नहीं करते। तब तुम किसी दूसरेके पास जाते हो, किसी पार्टीमें या फिर तुम टीवी या रेडियो चला देते हो या फिर अखबार पढ़ने लगते हो, कुछ भी, जिससे तुम इसे भुला सको। तुम्हें यह गलत दृष्टि दी गयी है कि उदासी गलत है। इसमें कुछ बुरा नहीं है। यह जीवनका दूसरा छोर है। प्रसन्नता एक छोर है, उदासी दूसरा। आनन्द एक छोर है, दुख दूसरा। जीवन दोनोंसे मिलकर बना है और जीवन एक क्रियाकलाप है इन दोनोंके कारण। आनन्दपूर्ण जीवनका केवल विस्तार होगा, उसमें गहराई नहीं होगी। केवल उदासीके जीवनमें गहराई होगी, विस्तार नहीं। दोनों उदासी और आनन्दपूर्ण जीवन बहुआयामी होता है, यह सभी दिशाओंमें एक साथ चलता है।

समाजमें पनपती मानसिक विकृति

❐ **कविता सिसोदिया**

एक समय था जब हमारे देश भारतके राजा कहा करते थे कि मेरे देशमें कोई चोर नहीं। शराबी और कायर नहीं, कोई अधार्मिक नहीं, कोई व्यभिचारी नहीं। क्या आजका राष्ट्रपति या प्रधान मंत्री ऐसा कह सकता है घ् शायद उत्तर मिलेगा, नहीं। सैंकड़ों चोरियां होती हैं, अनेक हत्याएं होती हैं, अनेक महिलाओं, यहांतक कि नन्हीं-नन्हीं कन्याओं, जिन्हें नवरात्रोंमें देवी समझकर पूजा जाता है, उनके साथ दिल दहला देनेवाले सामूहिक बलात्कार और हत्याएं हो रही हैं कि सुनकर ही रौंगटे खड़े हो जाते हैं। क्या इसलिए कि हमारा चरित्र गिर गया है या बड़ी-बड़ी उच्च डिग्रियां लेकर भी हम मानसिक दृष्टिसे गिरे हुए हैं। पिछले कुछ वर्षोंसे मानव समाजमें तकनीकी एवं आर्थिक क्षेत्रोंमें व्यापक परिवर्तन मूल्य प्रभावित हुए हैं। परिवर्तन समयकी स्वाभाविक वृति है। ऐसा कभी नहीं था कि परिवर्तन रुका हो। आज हम इतराते हैं कि हम चांदपर पहुंच गये। मंगल और शुक्र ग्रह भी घूम आये। सेंसर जैसी कई अन्य आधुनिकतम तकनीकसे अंगुलीके संकेतसे मनवांछित प्राप्त कर सकते हैं। तीव्र गतिसे होनेवाली वैज्ञानिक प्रगति नये कीर्तिमान स्थापित कर रही है। इस क्रांतिमें इंटरनेट एक ऐसे व्यापक हाईवेके रूपमें सामने आया है जिसने समूचे विश्वको अपने आलिंगनमें ले लिया है। इंटरनेटकी सहायतासे हम दुनियाभरकी जानकारियां उपलब्ध करा सकते हैं। पहले हम कहते थे कि विज्ञानने संसारको कुटुंब बना दिया, किन्तु आज इंटरनेटने मानों कुटुंबको ही कमरेमें उपस्थित कर दिया है। मानव जीवनमें इंटरनेट क्रांति एक महत्वपूर्ण बदलाव लायी है, परन्तु हर सचाईके साथ बुराई, प्रगतिके साथ अवनति, उत्थानके साथ पतन जुड़े रहते हैं। अत: जब कल्याण और प्रगतिके लिए कोई नयी सोच, विधि, तकनीक सामने आती है तो पीछेसे शैतानी प्रवृत्ति भी चुपकेसे प्रवेश कर लेती है। राक्षसी वृतिका अच्छाईके साथ सदा ही विरोध रहा है। हमारे पुराणोंमें अनेक ऐसे दृष्टांत हैं। भस्मासुर, महिषासुर, रावण आदि घोर तपस्या कर ईश्वरसे अपने अस्तित्व और वर्चस्वके स्थायित्वका वरदान मांगते थे और वरदान मिल जानेपर उसका दुरुपयोग करते थे। इसी प्रकार वैज्ञानिक अनुसंधान एवं आविष्कार भी वैज्ञानिकोंकी तपस्याका परिणाम होते हैं। यही इंटरनेटकी दुनियामें भी हुआ है जहां दुर्लभ उपयोगी जानकारियां एक ही क्लिकमें मिल रही हैं, वहींपर अश्लीलता भी परोसी जाने लगी है। कई प्रकारकी ठगी हो रही है। युवाओं विशेष रूपसे किशोरावस्थावालोंके लिए यह हर प्रकारसे हानिकारक सिद्ध होने लगा है। बच्चा जब गर्भमें होता है तो मां जैसे वातावरणमें रहती है, उसका महत्वपूर्ण प्रभाव गर्भमें पल रहे बच्चेपर पड़ता है। धार्मिक ग्रंथ महाभारतमें भी अभिमन्युके चक्रव्यूह भेदनेके प्रसंगमें यह बात आयी है और नारदके आश्रममें जन्म लेकर वहांके विष्णुमय वातावरणमें पलकर हिरण्यकश्यप जैसे दैत्यका पुत्र प्रह्लाद विष्णु भक्त बन गया था। यही बात विज्ञान और चिकित्सक भी कहते हैं कि गर्भवती महिलाको स्वस्थ आहारके साथ स्वस्थ वातावरण मिलना चाहिए, परन्तु आजकी अधिकतर माताएं जब गर्भावस्थामें बेड रैस्टपर होती हैं या फुर्सत मिलती है तो इंटरनेटकी दुनियामें मनोरंजनकी सामग्रीकी ओर अधिक एवं धार्मिक या नैतिक शिक्षाप्रद वीडियो कार्यक्रमोंकी ओर कम ही झुकाव रखती हैं। बच्चा गर्भमें ही इंटरनेटकी दुनियामें प्रवेश कर जाता है। शिशु जब धरापर अवतरित होता है तो कुछ माहके बाद मां बच्चेको आया या मेडके पास छोड़कर नौकरीपर चली जाती है या कुछ गृहणियां घरका काम निबटानेके लिए स्मार्टफोनमें यूट्यूबपर डांस या गाना लगाकर बच्चोंको पकड़ा देती हैं। जो बच्चे मांसे चिपके रहते थे वे फोनसे चिपके रहते हैं।

धीरे-धीरे बच्चा जब बड़ा होता है तो बोलकर नेट चलाना सीख जाता है और यही कच्ची उम्र जिज्ञासाका भंडार होती है। जैसे-जैसे वह पांच-सात वर्षका होता है, नेटकी दुनियाका आदी बन चुका होता है। फिर नेटकी दुनियामें वह अश्लीलताकी दुनिया में अनजानेमें ही कदम रख देता है। जो सुकोमल आयु और तन चरित्र निर्माणके सुसंस्कारकी पवित्र गंगासे सराबोर होनेके होते हैं, वे कोमल आयु और तन अपनी आयुसे आगे निकलकर अश्लीलताके रास्तेकी कीचड़में लिप्त होने लगते हैं। यदि बच्चेमें अच्छे संस्कार भरे होंगे, विवेकशील होंगे, उसे अच्छे-बुरेका ज्ञान बचपनसे उसके दिलों दिमागमें भर दिया गया होगा, तब तो वह इस नरककी दुनियासे दूर होकर अपना रास्ता बदल देगा, परन्तु इसके विपरीत परिस्थितियां होंगी तो बच्चे इन अश्लील वेबसाइटोंके आदी हो जायंगे। हालमें सुर्खियोंमें रहे केस कोलकातामें एक डाक्टर युवतीसे बलात्कार एवं हत्याका आरोपी पोर्न फिल्मोंका आदी बताया गया है। सोशल मीडियामें ऐसी अश्लीलता परोसनेवालोंपर कोई रोक नहीं है। धड़ल्लेसे पोर्न फिल्में बन रही हैं। इनपर कोई प्रतिबंध नहीं है। इसी प्रकार वेब सीरीजकी भी शुरुआत हुई, जिसमें सेंसरशिपका कोई डर या रोक नहीं है। खूब गंदी गालियां दी जाती हैं। अश्लील दृश्य, जिन्हें बोल्ड सीन कहा जाता है, खुलकर दिखाये जाते हैं। यदि इंटरनेटपर कोई देश-विदेशके समाचार या अन्य महत्वपूर्ण जानकारी लेनी हो तो ये अश्लील वीडियो या विज्ञापन भी साथ ही दिखने लगते हैं। नादान बच्चे जिज्ञासामें इनमें भटक जाते हैं। संयुक्त परिवारमें बड़े-बुजुर्गोंका डर होता था। परन्तु आज अलग कमरोंमें बच्चे सोशल मीडियामें क्या देख रहे हैं, इसका न तो बच्चोंको डर है, न बड़ोंको खबर है। मानसिक विकृति बढ़ती जा रही है। पोर्न फिल्में या वेब सीरीज देखनेकी आदतसे बच्चोंका मानसिक और शारीरिक पतन हो रहा है। वे इनके पीछे पागलसे हो रहे हैं। मस्तिष्कमें सोचनेकी क्षमता कम हो रही है। उनमें एक नशा-सा छा रहा है। याददाश्त कम होने लगी है। मानसिक विकृति इतनी हावी हो गयी है कि १०-१२ वर्षका बच्चा पांच सालकी कन्यासे बलात्कार कर रहा है। आजकी युवती अपने परिवारमें भी सुरक्षित नहीं है। बाड़ ही फसलको खा रही है।

वन नेशन, वन इलेक्शन को औपचारिक मंजूरी

भारतीय लोकतंत्र में इस समय मुख्य चुनौती सारे चुनाव एक साथ करा देने की नहीं, बल्कि जो चुनाव होते हैं, उनकी साख कायम रखने की है। ऐसी कई समस्याएं बढ़ती गई हैं, जिनकी वजह से भारतीय चुनावों पर गंभीर प्रश्न उठ रहे हैं। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रिय योजना वन नेशन, वन इलेक्शन० को औपचारिक मंजूरी दे दी है। इसका अर्थ यह है कि अब सरकार इस योजना को लागू करने की दिशा में काम करेगी। यह कैसे होगा, इसका मोटा खाका रामनाथ कोविंद कमेटी ने बनाया था। उसके मुताबिक लोकसभा चुनाव वाले वर्ष में सभी राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव भी कराए जाएंगे। कोविंद कमेटी ने जब अपनी रिपोर्ट पेश की थी, तब भी इससे ज्यादा स्पष्टता नहीं बनी थी, ना कैबिनेट के हरी झंडी देने के बाद अब इसका पूरा ब्लू प्रिंट उभरा है। इसलिए कहा जाएगा कि अभी तक यह योजना महज एक इरादा ही है। सत्ता पक्ष चाहता, तो महाराष्ट्र, हरियाणा और जम्मू-कश्मीर विधानसभाओं के चुनाव भी लोकसभा चुनाव के साथ करवा कर इस योजना को अधिक विश्वसनीय बना सकती था। लेकिन बाकी बातें तो दूर, हरियाणा और जम्मू-कश्मीर के साथ-साथ महाराष्ट्र और हरियाणा के चुनाव भी नहीं कर जा सके। वैसे भी भारतीय लोकतंत्र में इस समय मुख्य चुनौती सारे चुनाव एक साथ करा देने की नहीं, बल्कि जो चुनाव होते हैं, उनकी साख बहाल करने की है। पहला मुद्दा निर्वाचन आयोग की निष्पक्षता सुनिश्चित करने का था, जिसमें होनी वाली नियुक्ति प्रक्रिया को पिछले वर्ष सरकार ने मनमाने ढंग से बदल दिया। आम चुनाव के दौरान आयोग का रुख लगातार सवालों के घेरे में रहा। आयोग ने मतदान प्रतिशत बताने में जैसी देर की और बाद में गिरे वोटों की संख्या में जितनी वृद्धि बताई गई, उससे साख का संकट खड़ा हुआ है। चुनाव परिणाम को लेकर जैसे प्रश्न इस बारे उठे, वैसा भारत के चुनावी इतिहास में कभी नहीं हुआ था। इसके अलावा धन का कसता जा रहा शिकंजा चुनावों के प्रातिनिधिक दायरे को लगातार सिकोड़ रहा है।

ताशकंद में हमने खोया लाल बहादुर

आरती कुमारी

भाग्य और कर्म के बीच के संघर्ष में कभी कर्म जीतता है तो कभी भाग्य, किन्तु कभी-कभी दोनों के इतर प्रारब्ध बलवान हो जाता है।आध्यात्म और दर्शन के अध्येता प्रारब्ध को सर्वोपरि मानकर नियति के फ़ैसले को अंतिम निर्णय कहते हैं और प्रारब्ध सबकुछ छीनकर भी कभी-कभी उससे कहीं अधिक लौटा देता है। इसी तरह उत्तरप्रदेश के छोटे से नगर मुग़लसराय में रहने वाले लिपिक मुंशी शारदा प्रसाद श्रीवास्तव के घर 2 अक्टूम्बर 1904 में एक बालक का जन्म हुआ। घर के लोग उस बालक को प्यार से नन्हे कहने लगे, जिसका मूल नाम लाल बहादुर श्रीवास्तव हुआ। गाँव की गलियों में खेलने वाला नन्हे, जिसने महज़ 18 माह की आयु में ही पिता को हमेशा के लिए खो दिया। पिता के देहांत के बाद माँ रामदुलारी नन्हे को लेकर नाना हज़ारीलाल के घर मिर्ज़ापुर आ गई पर दुर्भाग्य से कुछ ही समय बाद नाना भी चल बसे। फिर मौसा रघुनाथ प्रसाद की सहायता से नन्हे का लालन-पालन हुआ, जैसे-तैसे नन्हे ने ननिहाल में रहते हुए प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की, फिर उसके बाद की शिक्षा हरिश्चन्द्र हाई स्कूल और काशी विद्यापीठ में हुई। लालबहादुर ने संस्कृत में काशी विद्यापीठ से शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। और इस शास्त्री की उपाधि ने जातिगत पहचान श्रीवास्तव को गौण कर दिया, फिर लाल बहादुर शास्त्री के रूप में पहचान बनी। संघर्षों की टिक-टिक करती घड़ी ने बचपन तो छीन ही लिया पर हौंसलो ने अंगड़ाई लेना स्वीकार नहीं किया। उसी नियति ने उस अबोध बालक के रूप में भारत को दूसरा प्रधानमंत्री दिया। बात देश के दूसरे प्रधानमंत्री और भारतीय किसानों के आदर्श पुरूष की इतनी-सी है कि कर्म की घड़ी यदि निरंतर चलती रहे तो प्रारब्ध के भाल पर भाग्य विजय तिलक करता है। 1928 में शास्त्री जी का विवाह मिर्ज़ापुर निवासी गणेशप्रसाद की पुत्री ललिता से हुआ। ललिता और शास्त्रीजी की छः सन्तान हुईं, दो पुत्रियाँ-कुसुम व सुमन और चार पुत्र – हरिकृष्ण, अनिल, सुनील व अशोक। वैसे भी उत्तरप्रदेश की राजनैतिक मिट्टी केंद्रीय क़द तय करती है। उसी मिट्टी में लालबहादुर शास्त्री भी अपने भाग्य से कुश्ती लड़ते हुए जन सेवा के मैदान में थे। संस्कृत भाषा में स्नातक स्तर तक की शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् वे भारत सेवक संघ से जुड़ गये और देशसेवा का व्रत लेते हुए यहीं से अपने राजनैतिक जीवन की शुरुआत की। शास्त्रीजी सच्चे गान्धीवादी थे, जिन्होंने अपना सारा जीवन सादगी से बिताया और उसे गरीबों की सेवा में लगाया। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सभी महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों व आन्दोलनों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही और उसके परिणामस्वरूप उन्हें कई बार जेलों में भी रहना पड़ा। स्वाधीनता संग्राम के जिन आन्दोलनों में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही, उनमें 1921 का असहयोग आंदोलन, 1930 का दांडी मार्च तथा 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन उल्लेखनीय हैं। भारत छोड़ो आंदोलन में शास्त्री जी ने अभूतपूर्व योगदान दिया। 9 अगस्त 1942 के दिन शास्त्रीजी ने इलाहाबाद पहुँचकर अगस्त क्रान्ति की दावानल को पूरे देश में प्रचण्ड रूप दे दिया। पूरे ग्यारह दिन तक भूमिगत रहते हुए यह आन्दोलन चलाने के बाद 19 अगस्त 1942 को शास्त्रीजी गिरफ़्तार हो गये। भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् शास्त्रीजी को उत्तर प्रदेश के संसदीय सचिव के रूप में नियुक्त किया गया था। गोविंद बल्लभ पंत के मंत्रिमण्डल में उन्हें पुलिस एवं परिवहन मन्त्रालय सौंपा गया। परिवहन मंत्री के कार्यकाल में उन्होंने प्रथम बार महिला संवाहकों (कण्डक्टर्स) की नियुक्ति की थी। पुलिस मंत्री होने के बाद संवेदनशील शास्त्री जी ने एक अनूठे प्रयोग को किया, जो आज तक नज़ीर बन चुका है। भीड़ को नियन्त्रण में रखने के लिये लाठी की जगह पानी की बौछार का प्रयोग उन्होंने प्रारम्भ कराया। आज भी पुलिस पहले लाठीचार्ज की जगह पानी की बौछार चलाती है। पण्डित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में 1951 में शास्त्री जी अखिल भारत कांग्रेस कमेटी के महासचिव नियुक्त किए गए। उन्होंने 1952, 1957 व 1962 के चुनावों में कांग्रेस पार्टी को भारी बहुमत से जिताने के लिये बहुत परिश्रम किया। जवाहरलाल नेहरू का उनके प्रधानमन्त्री के कार्यकाल के दौरान 27 मई, 1964 को देहावसान हो जाने के बाद साफ़-सुथरी छवि के कारण शास्त्रीजी को 1964 में देश का प्रधानमंत्री बनाया गया। उन्होंने 9 जून 1964 को भारत के प्रधानमंत्री का पद भार ग्रहण किया। उनके कार्यकाल में 1965 का भारत-पाक युद्ध शुरू हो गया। इससे तीन वर्ष पूर्व चीन का युद्ध भारत हार चुका था। शास्त्रीजी ने अप्रत्याशित रूप से हुए इस युद्ध में राष्ट्र को उत्तम नेतृत्व प्रदान किया और पाकिस्तान को करारी शिकस्त दी। इसकी कल्पना पाकिस्तान ने कभी सपने में भी नहीं की थी। सन् 1965 में भारत और पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान के बीच शान्ति समझौते का दौर शुरू हुआ, जिसे ताशकंद समझौता नाम दिया गया, जो भारत और पाकिस्तान के बीच 11 जनवरी, 1966 को हुआ था। इस समझौते के अनुसार यह तय हुआ कि भारत और पाकिस्तान दोनों ही देश अपनी शक्ति का प्रयोग नहीं करेंगे और अपने झगड़ों को शान्तिपूर्ण ढंग से निबटाएँगे। यह समझौता भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री तथा पाकिस्तान के प्रधानमंत्री अयूब ख़ाँ की लम्बी वार्ता के उपरान्त 11 जनवरी, 1966 को ताशकंद, रूस में हुआ। 'ताशकंद सम्मेलन' सोवियत रूस के प्रधानमंत्री द्वारा आयोजित किया गया था। इस समझौते का प्रभाव बेहद समयानुकूल और सशक्त था। क्योंकि इस समझौते के क्रियान्वयन के फलस्वरूप दोनों देशों की सेनाएँ उस सीमा रेखा पर वापस लौट गईं, जहाँ पर वे युद्ध के पूर्व में तैनात थीं। परन्तु इस घोषणा से भारत-पाकिस्तान के दीर्घकालीन सम्बन्धों पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। फिर भी ताशकंद घोषणा इस कारण से याद रखी जाएगी कि इस पर हस्ताक्षर करने के कुछ ही घंटों बाद रहस्यमयी ढंग से भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की दुःखद मृत्यु हो गई। ताशकंद में अमरीका ने वार्ता का नाटक रचा, क्योंकि कुछ माह पूर्व से भारत-पाकिस्तान युद्ध चल रहा था और पाकिस्तान चाहता था कि भारत युद्ध में जीता हिस्सा लौटा दे, किंतु शास्त्री जी नहीं चाहते थे कि जो भूभाग भारतीय सेना ने जीत लिया है वह लौटाए। कुछ इतिहासकारों की मानें तो शास्त्रीजी ताशकंद जाना भी नहीं चाहते थे, लेकिन देश के कुछ नेताओं ने देश के अंदर ऐसा माहौल पैदा किया कि शास्त्री जी को मजबूरन ताशकंद जाना पड़ा। जब हमारे देश के वो लाल ताशकंद गए तो उन्हें ताशकंद समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा गया, तब उन्होंने दो टूक शब्दों में कह दिया कि "भारत युद्ध में जीता हुआ हिस्सा वापस नहीं करेगा।" जिसके बाद दबाव भी शास्त्री जी पर डाला गया लेकिन उन्होंने कह दिया कि उनके जीवित रहते जीता हुआ हिस्सा किसी भी कीमत पर वापस नहीं होगा, देश को उनके इस फ़ैसले से बड़ा गर्व हुआ। भारत के बहादुर 'लाल' पर देश घमण्ड कर रहा था, किंतु किसी को क्या पता था कि सियासी चालें ख़ुद शास्त्री जी की गर्दन काटने पर तुली हुई हैं। जिस दिन शास्त्री जी ने हस्ताक्षर किए, उसी रात को शास्त्री जी की रहस्यमयी ढंग से मौत की ख़बर भारत को दे दी गई। पूरा भारत स्तब्ध था किंतु बड़ा झटका तब लगा, जब ख़ुद भारत सरकार के हवाले से कहा गया कि शास्त्री जी को हार्टअटैक पड़ा है। लेकिन शास्त्री जी की पत्नी की मानें तो अंतिम समय जब उन्होंने शास्त्री जी को देखा तो उनका शरीर बिल्कुल नीला पड़ा हुआ था और उनका यह भी कहना था कि उनके पति को ज़हर दिया गया है। रूस में हुए उनके पोस्टमार्टम की रिपोर्ट का सच तो छुपा दिया गया। शास्त्री जी के अपने ही देश भारत में उनकी मौत की जांच पड़ताल के बजाए उनकी मौत का सच जानने के लिए पोस्टमार्टम तक नहीं कराया गया। जिसके बाद सवाल भी उठे कि भारत आखिर सच क्यों छुपाना चाहता है? ऐसा भी बताया जाता है कि रूस ने भारत को पोस्टमार्टम रिपोर्ट भी भेजी थी, लेकिन उसे जनता को नहीं दिखाया गया। अपने ही देश में उनकी मौत का सच छिपा दिया गया, जिसके संबंध में दलील दी गई कि ये अंतरराष्ट्रीय संबंध की वजह से किया जा रहा है। शास्त्री जी की मृत्यु के बाद कार्यवाहक के तौर पर गुलजारीलाल नंदा को प्रधानमंत्री बनाया गया और उसके बाद इंदिरा गांधी सत्ता में आईं। उनके रूस से बहुत अच्छे संबंध थे, इस वजह से भी देश को आजतक शास्त्री जी की मौत का सच सुनने को नहीं मिला और अब शास्त्री जी की मौत का रहस्य सिर्फ़ एक कभी न सुलझने वाली पहेली बनकर ही रह गया। आखिर नियती को यही मंज़ूर था कि "जय जवान-जय किसान" का मूल मंत्र देने वाला राष्ट्र सपूत ऐसे विदा हो जाएगा। आखिर राजनीति की इस दुर्दशा पर देश मौन हो गया। शास्त्री जी की सादगी, देशभक्ति और ईमानदारी के लिये मरणोपरान्त उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया। लाल बहादुर शास्त्री एक महान व्यक्ति थे, हैं और सदा रहेंगे। क्योंकि भारत भारती के भाल पर लगे तिलक की भाँति यह लाल भी अजर-अमर है।

श्री लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति की 'श्रेष्ठ पहचान'

अशोक भाटिया

आज (02 अक्टूबर 2024) महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री की जयंती है। पूरा देश दोनों महापुरुषों को श्रद्धांजलि दे रहा है। दिल्ली में राजघाट और विजय घाट पर दोनों महापुरुषों को श्रद्धांजलि देने नामी हस्तियां पहुंच रही हैं। आज कई सरकारी व निजी कार्यक्रम होंगे। कई राज्यों में आज स्कूल खुले रहेंगे। 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म हुआ था। दक्षिण अफ्रीका से 1915 में भारत लौटे गांधी ने स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व किया। गांधी के जन्मदिन को देश अब राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाता है। वहीं, सादगी और ईमानदारी की मिसाल कहे जाने वाले शास्त्री जी का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को बिहार के मुगलसराय में हुआ। वह जवाहरलाल नेहरू के बाद भारत के दूसरे प्रधानमंत्री बने। जहां आज गाँधी जी के जीवन चरित्र के साथ अनेक किस्से जुड़ें रहते है वहीँ लाल बहादुर शास्त्री के जीवन को केवल सादगी और भारतीय संस्कृति की 'श्रेष्ठ पहचान' के रूप में जाना जाता है । आज के दिन गाँधी जी को लेकर समाचार पत्र गाँधी जी को लेकर भरे रहते है और लाल बहादुर शास्त्री जी का जीवन चरित्र नाम नाम मात्र के लिए अख़बार के एक कोने में रहता है इसलिए हम आज ज्यादा बात करेंगे श्री लाल बहादुर शास्त्री के बारे व जानेंगे कि उन्हें सादगी व भारतीय संस्कृति की 'श्रेष्ठ पहचान' के रूप में क्यों जाना जाता है । महात्मा गांधी के साथ अपने जन्मदिन साझा करने वाले शास्त्री पक्के गांधीवादी थे और जीवन भर उन्ही के सिद्धांतों पर चलते रहे। यहां तक भारत के प्रधानमंत्री जैसा पद हासिल करने के बाद भी उन्होंने कभी भी अपने सादगी और विनम्रता नहीं छोड़ी। उनके जीवन में ऐसे बहुत से किस्से सुनने को मिलते हैं जब उन्होंने साबित किया कि वे एक सच्चे देशभक्त और गांधीवादी थे। उनका पूरा जीवन आज के युवाओं से लेकर सभी लोगों के ले एक मिसाल है। लाल बहादुर शास्त्री का जन्म उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में 2 अक्टूबर 1904 को एक भोजपुरी हिंदू कायस्थ परिवार में हुआ था। बचपन में ही उनके पिता का देहांत हो गया था जिसके बाद वे ननिहाल में पले बढ़े। उनका मूल नाम लाल बहादुर वर्मा था, लेकिन वाराणसी के काशी विद्यापीठ से स्नातक होने के बाद उनके नाम में शास्त्री जुड़ गया है वे लाल बहादुर शास्त्री कहलाने लगे।

वे इतने मेधावी थे कि मात्र दस साल की उम्र में उन्होंने छठी कक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। आगे की पढ़ाई के लिए वे बनारस आ गए। विद्यार्थी जीवन में ही राष्ट्रभक्तों और शहीदों के बारे में पढ़ते हुए इन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के विषय में विस्तार से जाना। इन्ही दिनों जलियांवाला बाग की घटना के पश्चात 'छात्र आन्दोलन' ने गति पकड़ ली और शास्त्री जी इसका हिस्सा बन गए। शास्त्री जी महात्मा गांधी से अत्यधिक प्रभावित थे। गांधी जी के नेतृत्व में चल रहे असहयोग आंदोलन में शमिल होने के लिए देशवासियों से आह्वान किया, इस समय इनकी आयु मात्र 16 थी। उन्होंने गांधी जी के आह्वान पर अपनी पढ़ाई छोड़ देने का निर्णय किया और आंदोलन में हिस्सा लिया। जिसके चलते उन्हें 1921 में जेल भी जाना पड़ा। देश को स्वतंत्र कराने के क्रम में उन्हें अपने जीवन के 7 वर्ष कारावास (जेल) में गुज़ारने पड़े। आज़ादी के इन संघर्षों ने इन्हें पूर्णतः परिपक्व बना दिया। शास्त्री जी ने राजनीति में प्रवेश के माध्यम से देश की दिशा एवं दशा को बदलने का प्रयास किया। वस्तुतः वर्ष 1937 में प्रांतीय विधानसभाओं के चुनावों में उन्होंने उत्तर प्रदेश विधानसभा की सदस्यता प्राप्त की। इसी क्रम में आजादी के पश्चात सत्ता में आई कांग्रेस ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के नेता लाल बहादुर शास्त्री का महत्व समझ लिया। परिणामस्वरूप वर्ष 1947 में उन्हें उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल में मंत्री के रूप में शमिल कर लिया गया। वर्ष 1951 में वह पार्टी महासचिव बनें। तद्पश्चात शास्त्री जी को रेलवे एवं यातायात के केंद्रीय मंत्री के रूप में चुना गया। किंतु, इसी समय वर्ष 1955 में दक्षिण भारत के 'अरियल' के समीप रेल दुर्घटना में कई लोग हताहत हुए जिसके लिए स्वयंम को जिम्मेदार मानते हुए उन्होंने रेल मंत्री के पद से इस्तीफ़ा दे दिया।

रेल दुर्घटना पर लंबी बहस का जवाब देते हुए उन्होंने कहा- "शायद मेरे लंबाई में छोटे एवं विनम्र होने के कारण लोगों को लगता है कि मैं बहुत दृढ़ नहीं हो पा रहा हूँ यद्यपि शारीरिक रूप से मैं मजबूत नहीं हूँ लेकिन मुझे लगता है कि मैं आतंरिक रूप से इतना कमजोर भी नहीं हूँ।" गौरतलब हैं कि 1957 में वह इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र से चुने गए। उन्हें पुनः यातायात विभाग दिया गया और साथ ही साथ उद्योग और वाणिज्य विभागों का मंत्री भी बनाया गया। वर्ष 1961 में उन्हें भारत के गृहमंत्री के रूप में और 'भ्रष्टाचार निरोधक समिति' के लिए नियुक्त किया गया। इसी समय भारत-चीन युद्ध से सकते में आये नेहरू जी का साथ देने के लिए शास्त्री जी को बिना विभाग के मंत्री के रूप में मंत्रिमंडल में शामिल कर लिया गया।

यहाँ शास्त्री जी ने भारत की जनता से अपील करते हुए कहा – "जब हमारी स्वतंत्रता और अखंडता खतरे में हो तो पूरी शक्ति से उस चुनौती का मुकाबला करना ही "एकमात्र कर्तव्य" होता है। हमें एकजुट होकर किसी भी प्रकार के अपेक्षित बलिदान के दृढ़तापूर्वक तत्पर रहना चाहिए ताकि उस चुनौती का हम बेहतर तरीके से मुकाबला कर सके" शास्त्री जी ने समाज के वंचित वर्गों के लिए भी उल्लेखनीय कार्य किया। वे लालालाजपतराय द्वारा स्थापित "सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसायटी" (लोक सेवा मंडल) के आजीवन सदस्य बने। जहाँ उन्होंने पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए कार्य करना शुरू किया और बाद में वे उस सोसायटी के अध्यक्ष भी बने। इसी तरह उन्होंने किसान एवं युवा वर्ग को देश की आर्थिक एवं सैनिक शक्ति के तौर पर देखा। श्री लाल बहादुर शास्त्री ने "जय जवान जय किसान" का नारा भी दिया, जो आगे चलकर देशभक्ति का प्रतीक बन गया। शास्त्री जी के इस नारे का मुख्य उद्देश्य एक ओर जहाँ देश की सैनिक शक्ति में वृद्धि करने का था वही दूसरी ओर देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने का रहा। शास्त्री जी ने आनंद (गुजरात) के 'अमूल दूध सहकारी समिति' का समर्थन और राष्ट्रीय डेयरी विकास का निर्माण करके श्वेत क्रांति को बढ़ावा दिया। जिससे भारत दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में अग्रणी बनकर उभरा। भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान (वर्ष 1965) भारत खाद्य संकट के दौर से गुजर रहा था। इस समस्या का समाधान "हरित क्रांति" के माध्यम से किया गया। नतीजन भारत खाद्यान्न निर्यात करने वाले देशों में शुमार हो गया।

शास्त्री जी, भारत के पड़ोसी देशों के साथ अपने संबंधो में हमेशा शांति एवं संतुलन बनाये रखने का प्रयास करते थे। इसी क्रम में भारत-पकिस्तान युद्ध (1965) के संबंध में ताश्कंद (तत्कालीन सोवियत संघ) में सोवियत राष्टपति की मध्यस्थता से भारत तथा पाकिस्तान में सुलह हुई। जिसके तहत 10 जनवरी, 1966 पाकिस्तान के राष्टपति मोहम्मद अयूब खान के साथ युद्ध को समाप्त करने हेतु "ताशकंद घोषणापत्र" पर हस्ताक्षर किये गये। 11 जनवरी 1966 को ताशकंद में ही उनका निधन हो गया।शास्त्री जी, ने कई वर्षों तक अपनी निस्वार्थ सेवा भावना, कर्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी एवं करुणा जैसे गुणों के चलते जनता के बीच अपनी अलग पहचान बनायी। विनम्र, दृढ़ इच्छाशक्ति, सहिष्णु एवं जबरदस्त आतंरिक शक्ति के धनी शास्त्री जी लोगों के बीच ऐसे शख्स बनकर उभरे, जिन्होंने लोगों की भावनाओं को समझा। इन्होंने अपने दूरदर्शी दृष्टिकोण के माध्यम से भारत को विश्व पटल पर अलग पहचान दिलवायी। गांधी जी की राजनीतिक शिक्षाओं से प्रेरणा लेते हुए गांधी जी के लहज़े में ही एक बार उन्होंने कहा था- "मेहनत प्रार्थना करने के समान है।" महात्मा गांधी के समान विचार रखने वाले श्री लाल बहादुर शास्त्री सादगी व भारतीय संस्कृति की 'श्रेष्ठ पहचान' हैं। शास्त्री का जीवन ना केवल सादगी भरा रहा, वे हमेशा प्रचार प्रसार से दूर ही रहे। आजादी के आंदोलन में भी उनकी प्रमुख भूमिका थी और आजादी के बाद भी वे भारत के प्रमुख नीति निर्मातों में शामिल रहे। वे देश पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की कैबिनेट का हिस्सा रहे और उन्होंने रेलवे और गृह जैसे बड़े और महकमे संभाले और नेहरू के विश्वस्त बने रहे। नेहरू के निधन के बाद शास्त्री जून 1964 में देश के दूसरे प्रधानमंत्री बने। शास्त्री जी अपने वेतन का काफी हिस्सा गांधीवादी विचारधारा को आगे बढ़ाने और सामाजिक भलाई में खर्च किया करते थे। यही वजह थी कि उन्हें घर की जरूरतों के लिए मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। वे इतने विनम्र थे कि जब भी उनके खाते में तनख्वाह आती थी, तब वे उसे लेकर गन्ने का रस बेचने वाले के पास जाते। शास्त्री जी शान से कहते थे कि आज जेब भरी हुई है। जिसके बाद दोनों पति – पत्नी जूस वाले के यहाँ ही गन्ने का रस पीते। शास्त्रीजी अपनी ईमानदारी के लिए मशहूर थे। उन्होंने अपने कार्यकाल में भ्रष्टाचार से निपटने के लिए एक समिति बनाई थी। भ्रष्टाचार से जुड़े सवाल पर उन्होंने अपने बेटेके मामले में भी भेदभाव नहीं किया। जब उन्हें पता चला कि उनके बेटे को गलत तरीके से प्रमोशन मिल रहा है। उन्होंने अपने बेटे की ही प्रमोशन रुकवा दी। शास्त्रीजी की वजह से भारत में सफेद और हरित क्रांति आई। वो हरित आंदोलन के चलते ही उन्होंने अपने घर के लॉन में खेती-बाड़ी शुरू कर दी थी। इसलिए वो किसानों को हरित क्रांति से जोड़ने के लिए खुद अपने लॉन में कृषि कार्य किया करते थे। इतना ही नहीं कार खरीदने के लिए उन्होंने आम लोगें की ही तरह पंजाब नेशनल बैंक से लोन लिया। लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि जो सुविधा उन्हें मिल रही है उतनी ही आम लोगों को भी मिलनी चाहिए। शास्त्री जी खुद कार की जरूरत महसूस नहीं करते थे। सामाजिक कार्यों के खर्चों की वजह से घर में पैसों की किल्लत भी रहती ही थी। प्रधानमंत्री बनने तक उनके पास घर और कार दोनों नहीं थे। घरवालों के कहने पर उन्होंने कार खरीदने के लिए जब अपने बैंक खाते की जानकारी गंवाई तो उन्होंने पता चला कि खाते में केवल 7 हजार हैं जबकि कार 12 हजार की है। वे 5 हजार का बंदोबस्त कर सकते थे, फिर भी उन्होंने लोन लेने का फैसला किया।लोन चुकाने से पहले ही शास्त्रीजी इस दुनिया से विदा हो गए। उनका लोन माफ करने की पेशकश को उनकी पत्नी ललिता शास्त्री ने ठुकरा दिया और वे चार साल तक कार की किस्तें चुकाती रहीं।

मेष राशि-आज आपका दिन खुशियों से भरा रहेगा। इस राशि के छात्रों को अपने शिक्षकों का पूरा-पूरा सहयोग मिलेगा। आज अपनी छिपी हुई प्रतिभा को पहचानकर उसे रचनात्मक कार्यों में लगाएंगे। इससे आपको मानसिक मिलेगा। आज दिन का अधिकतर समय पारिवारिक लोगों के साथ बीतेगा, सभी लोग खुशी महसूस करेंगे।आज आपको जीवनसाथी से खुशखबरी मिलेगी, जिससे पूरे दिन मन प्रसन्न रहेगा।

वृष राशि-आज आपका दिन ठीक-ठाक रहेगा। परिवारिक माहौल बेहतर बना रहेगा। आपके काम में परिवार वालों का सहयोग बना रहेगा। कारोबार में मेहनत का फायदा मिलेगा। आज राजनीतिक क्षेत्र से जुड़े मित्र की पावर आपके लिए कारगर साबित होगी। उसके साथ लाभदायक बिंदुओं पर विचार-विमर्श भी रहेगा। सामाजिक कार्यकर्ताओं का सहयोग करना आपका मान-सम्मान बढ़ाएगा।

मिथुन राशि-आज आपका दिन खुशनुमा पल लेकर आया है। आज आप अपना लक्ष्य निर्धारित करने के लिए कोई नई योजना बनायेंगे, योजना भविष्य में कारगर साबित होगी। आज स्वास्थ्य संबंधी हल्की-फुल्की परेशानी रहने की वजह से आलस और सुस्ती हावी रहेगी। जिसका असर आपकी कार्यप्रणाली पर पड़ सकता है। सकारात्मक बने रहने के लिए अच्छे साहित्य और पारिवारिक लोगों के संपर्क में रहेंगे तो बढिय़ा रहेगा। आज नए कामों पर आपका ध्यान रहेगा।

कर्क राशि-आज आपका दिन नया बदलाव लाने वाला है। आज नौकरी कर रहे लोगों को अपने किसी प्रोजेक्ट को पूरा करने में बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। आज जीवनसाथी के साथ खट्टी-मीठी नोकझोंक रहेगी। जिसकी वजह से संबंधों में और अधिक नजदीकियां बढ़ेंगी। आज समय का सही इस्तेमाल करेंगे और हर काम को लगन से करने की ललक रहेगी।

सिंह राशि-आज आप खुशियों से भरे दिन की शुरुआत करने वाले हैं। पारिवारिक मामलों को लेकर आपको थोड़ी भागदौड़ करनी पड़ेगी। आज गतिविधियों में आपका योगदान होने से आपका मान-सम्मान भी बढ़ेगा। आपके व्यक्तिगत काम भी आज काफी हद तक सुचारू रूप से पूरे हो जाएंगे। आज कोई समस्या होने पर आपको मित्रों द्वारा उचित मदद भी मिलेगी। आज किसी से भी बेवजह उलझने से आपको बचना चाहिए।

कन्या राशि-आज आपका दिन उत्साह से भरा रहेगा। आपके पारिवारिक रिश्ते मजबूत होंगे। नवविवाहितों के जीवन में खुशियाँ बढ़ेगी। आज अपने जीवन को सकारात्मक नजरिए से समझने की कोशिश करेंगे तो इससे चल रही गलतफहमियां सुलझ जाएंगी। धर्म और अध्यात्म के प्रति बढ़ता हुआ आपका विश्वास आपको शांति और मानसिक सुख देगा। किसी खास मुद्दे पर चर्चा भी रहेगी। आपकी सकारात्मक सोच से परिस्थितियां अच्छी होंगी।

तुला राशि-छात्रों के करियर में आज नया बदलाव आयेगा, जो उनके भविष्य के लिए फायदेमंद होगा। आपकी सेहत बढिय़ा रहेगी। आज आपका अपने प्रियजनों के साथ बहुत ही बेहतरीन समय बीतेगा। घरेलू कामों में रुचि बनी रहेगी और रिलैक्स महसूस करने के लिए मनोरंजन संबंधी योजनाएं भी बन सकती हैं। पारिवारिक व्यवस्था को बनाए रखने में आपका विशेष योगदान रहेगा।

वृश्चिक राशि-आज आपका दिन सामान्य रहेगा। आज ऑफिस के काम में आप थोड़े बिजी होंगे। आपको थोड़ी थकान महसूस होगी, अपने खान पान पर विशेष ध्यान दें। आज राजनैतिक और अनुभवी व्यक्ति की सलाह और मदद आपके व्यवसाय को नई दिशा देगी। आर्थिक स्थिति आज सामान्य बनी रहेगी। आज अपने पर्सनल कार्यों में किसी बाहरी व्यक्ति को शामिल ना करें। परिवार के कुछ खास मामलों में आज आपको अनदेखी करने से बचना चाहिए।

धनु राशि-आज किसी खास काम में आपको फायदा मिलेगा। माता-पिता के साथ आपके रिश्ते बेहतर होंगे। जीवनसाथी आपकी बातों से प्रभावित होंगे, आपके कामों में आपकी मदद भी करेंगे। आज आपके स्वभाव में वहम और गुस्से की स्थिति देखने को मिल सकती है जिसकी वजह से परिवार के लोग भी परेशान रहेंगे। आज आपको घर के किसी वरिष्ठ सदस्य के स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रहेगी।

मकर राशि-आज आपका दिन लाभदायक रहेगा। आज काफी हद तक तनावमुक्त महसूस करेंगे।आज बहुत व्यवस्थित रहने का समय है। आज आप ध्यान रखेंगे कि आपकी बात से किसी को आघात ना पहुंचे। अपनी महत्वपूर्ण चीजों की संभाल खुद करेंगे। आज व्यक्तिगत कारणों की वजह से व्यवसाय पर अधिक ध्यान नहीं दे पाएंगे।

कुंभ राशि-आज आपका दिन नई उमंगों के साथ शुरू होगा। लवमेट के लिए आज का दिन शानदार रहेगा। आज मीडिया और कम्युनिकेशन से संबंधित व्यवसाय में उपलब्धियों के योग बन रहे हैं। इस उचित समय का भरपूर सदुपयोग करेंगे। व्यवसायिक पार्टियों के साथ संबंध मधुर बनाने का प्रयास करेंगे। आज पारिवारिक मामलों में ज्यादा हस्तक्षेप ना करें। इससे घर का वातावरण सुखद और शांतिपूर्ण बना रहेगा।

मीन राशि-आज आपका दिन आपके अनुकूल रहेगा। घर में नजदीकी रिश्तेदारों के आने से उत्सव का माहौल रहेगा। कई तरह के विचारों का आदान-प्रदान रहेगा। आज घर में काफी समय बाद निकट संबंधियों का आगमन होगा और आपसी विचारों को साझा करने से घर के वातावरण को खुशनुमा बनाकर रखेगा। आज बच्चों के साथ उनके क्रियाकलापों में रुचि लेना और सहयोग करना उनके आत्मविश्वास को और अधिक बनाएगा।

शब्द सामर्थ्य -195

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. चौड़ी और सपाट जमीन, रणभूमि 3. स्वरग्राम, संगीत के सात स्वरों का समूह 6. धूल का कण, किसी वस्तु का सूक्ष्मकण, धूल 7. हिम्मत, सामर्थ्य 8. अभ्यर्थना, रिसेप्शन, यथा अवसर पर पूछे जाने वाला मंगल कुशल 9. आपस का करार, निबटारा 10. वरदान, दुल्हा 12. भोग, ऐश्वर्य 13. कीमत, मूल्य 14. एक वाद्ययंत्र जिसे सपेरे बजाते हैं 16. समता, बराबरी 18. अश्लील, बेहुदा, अभद्र, घटिया 19. युक्ति, उपाय, ढंग 20. रिक्त, अपूर्ण।

ऊपर से नीचे

1. दोस्ती, मित्रता 2. अच्छी शिक्षा, नेक सलाह 4. बचाव, हिफाजत 5. मीठापन, मधुर होने का भाव 7. समुद्र 8. आत्मनिर्भर, जो दूसरे पर आश्रित न हो 9. रसवाला, रसदार 11. मां का बच्चों के प्रति प्रेम 13. खैरात, देने की क्रिया 15. दृष्टि, निगाह 16. वरिष्ठ, बुजुर्ग, चतुर 17. पराजय, हार।

1		2	■	3	4		5	■
	■		■	■		■	6	
■	7			■	■	■		■
8			■	9				■
10		■	■		■	■	■	11
	■	12			■	■	13	
14	15	■		■	16	17		
■		■	18				■	■
19				■			20	

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 194 का हल

ला	लू	प्र	सा	द	या	द	व	■
प	■	ति	■	■	र	क्ष	क	■
र	ह	मा	न	■	■	■	■	आ
वा	■	■	मि	थु	न	■	दा	स
ह	वा	ला	त	■	सी	ता	■	पा
■	न	■	■	■	ब	क	वा	स
औ	र	त	■	म	■	त	■	■
ला	■	बे	च	ना	■	व	च	न
द	ह	ला	■	ना	ग	र	■	दी

सूडोकू नवताल- 7206

★☆☆☆☆ सरल

6					7			
		8	2				7	5
	4			3				6
	7	1			2		5	
8				4				3
	2		8			9	6	
2				8			3	
4	3				9	8		
			3					9

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकू नवताल - 7205 का हल

7	4	6	9	1	5	8	3	2
1	5	2	8	3	7	4	6	9
9	3	8	2	6	4	7	1	5
8	6	4	7	9	1	5	2	3
5	2	7	3	4	6	9	8	1
3	9	1	5	8	2	6	7	4
2	7	9	1	5	8	3	4	6
6	1	5	4	7	3	2	9	8
4	8	3	6	2	9	1	5	7

सामाजिक दायरे में कई लोग रहते हैं। लेकिन कुछ ऐसे लोग होते हैं, जिन्हें हम पंसद नहीं करते। लेकिन इसके बावजूद हमें उनकी मेजबानी करनी पड़ती है। क्योंकि इनकी मेजबानी करना जरूरी हो जाता है या हम 'ना' नहीं कह पाते, इसलिए हमें इसकी मेजबानी करनी पड़ती है. चाणक्य ऐसे लोगों के बारे में बताते हैं, इनका बहुत अधिक मान-सम्मान या सत्कार करने से बचना चाहिए।

चाणक्य

सन्मार्ग
पटना, बुधवार 02 अक्टूबर 2024
www.live7tv.com

एक जवाबदेह चुनावी घोषणा पत्र की दरकार

नरेश कौशल

देश में आम चुनावों के बाद हो रहे विधानसभा चुनावों में एक बार फिर मुफ्त की रेवड़ियां बांटने का खेल जोर-शोर से चल रहा है। जनता में राजनीतिक दलों की घटती साख और रीति-नीतियों के प्रति जनता में उपजे अविश्वास के बीच राजनेता मुफ्त का खतरनाक खेल खेल रहे हैं। वे लोकलुभावन का शॉर्टकट रास्ता अख्तियार कर रहे हैं। वे मुफ्त का चंदन घिस मेरे नंदन की कहावत को अपना रहे हैं। उन्हें पता है कि मुफ्त के माल का पैसा कौन-सा उनकी जेब से जा रहा है। बोझ तो सरकारी खजाने पर पड़ेगा। दुर्भाग्य से देश में ऐसी कोई नियामक व्यवस्था नहीं बन पायी कि मुफ्त की रेवड़ियों के खर्च की जवाबदेही नेताओं व राजनीतिक दलों के लिये तय की जा सके। चुनाव आयोग भी इस घातक रिवाज पर रोक लगाने में विफल ही लगता है। हकीकत यह है कि जब तक हम जनता को जागरूक नहीं करेंगे और जनता ही नेताओं पर दबाव नहीं बनाएगी, तब तक मुफ्त की रेवड़ियां बांटने का यह खेल यूं ही चलता रहेगा। वैसे हकीकत यह है कि जब तक जनता जागरूक नहीं होगी, राजनीतिक दलों के मुफ्त के वादों के घोषणापत्रों पर लगाम नहीं लगेगी। यह एक हकीकत है कि सरकारों व राजनीतिक दलों के तमाम थोथे दावों के बावजूद हम देश के अधिसंख्य नागरिकों को राजनीतिक रूप से इतना सजग-सचेत नहीं कर पाए हैं कि वे मुफ्त के प्रलोभनों, जाति, धर्म व क्षेत्रीयता की संकीर्णताओं से उठकर मतदान कर सकें। यदि देश का अधिसंख्य मतदाता राजनीतिक रूप से जागरूक होता तो मुफ्त की रेवड़ियों को वह ठुकरा देता।

हकीकत में जागरूक नागरिकों व लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति सजग स्वयंसेवी संस्थाओं को सर्वप्रथम किसी भी राज्य या देश के मौजूदा बजट का आकलन करना होगा। यह कि राज्य को किन-किन स्रोतों से राजस्व प्राप्त हो रहा है। कितना ऋण राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से लिया गया है। राज्य पर कुल ऋण का कितना बोझ है। उस पर कितना ब्याज लगातार राज्य को देना पड़ रहा है। यह सब राजनीतिक दलों व नेताओं को जनता को बताना होगा। मतदाताओं को अहसास कराना होगा कि उसके पास कितनी चादर है और उसे कितने पैर पसारने होंगे। एक बात तो तय है कि देश-प्रदेश के आर्थिक स्वास्थ्य के हित में हर हाल में लोकलुभावन घोषणाओं और मुफ्त की रेवड़ियों का प्रचलन बंद करना ही होगा। मतदाताओं में राष्ट्र और प्रदेश पहले है, की भावना जाग्रत करनी होगी। वहीं दूसरी ओर मुफ्त में राशन बांटकर जनता को सरकार पर आश्रित बनाये रखने की नीति बदलनी होगी ताकि लोग नाकारा होकर न रह जाएं। लोगों को सरकारी बैसाखी देने के बजाय उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होने लायक बनाया जाए। उन्हें मुफ्त राशन देने के बजाय सस्ता लोन दिया जा सकता है ताकि वे अपना काम धंधा शुरू करके आत्मनिर्भर हो सकें। यह लोककल्याण स्थायी होगा और बहुत संभव है कि यदि ऋण लेने से वे कोई काम-धंधा चला सकें तो दूसरों को भी रोजगार दे सकते हैं। सरकार व राजनीतिक दलों को सरकारी कर्मचारियों व वेतनभोगियों को बजट की वास्तविक स्थिति से भी अवगत कराना होगा। होता यह है कि राज्य की वास्तविक आर्थिक स्थिति को जानते हुए भी कर्मचारी संगठन सुविधाओं को बढ़ाने के लिये आंदोलन करते रहते हैं। उन्हीं से राय लेनी होगी कि यदि उनके वेतन-भत्ते बढ़ाने हैं तो बजट में उस राशि की पूर्ति आय के किन स्रोतों से की जा सकती है। एक बात तो तय है कि निश्चित रूप से फ्री बिजली और पानी की नीति बंद करनी होगी। हां, शुद्ध पेयजल व शुद्ध पर्यावरण निःशुल्क पाना नागरिकों का अधिकार है। वहीं दूसरी ओर बजट में शिक्षा, जन स्वास्थ्य सेवाओं, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों का कल्याण, महिलाओं के उत्थान हेतु पौष्टिक आहार जुटाने तथा समाज व बाल कल्याण हेतु अधिकतम प्रावधान होना चाहिए। दूसरी ओर शिक्षण संस्थानों, अस्पतालों, आंगनवाड़ी केंद्रों, खेलकूद संस्थानों आदि के लिये प्राथमिक आधार पर बजट की दरकार रहेगी। शिक्षा के स्वरूप में एकरूपता होनी चाहिए। होना तो यह चाहिए कि सरकारी स्कूलों के शिक्षा का स्तर निजी स्कूलों से बेहतर, नहीं तो कम से कम उनके बराबर तो हो। आम आदमी सरकार ने दिल्ली में जिस शिक्षा नीति को लागू किया, उसके अच्छे परिणाम मिले हैं। इसी तरह मोहल्ला क्लीनिक के प्रयोग को भी सराहा गया है। एक आदर्श घोषणा पत्र में ऐसी सुविधाओं का प्रावधान तो होना ही चाहिए। वहीं वोट जुटाने के लिये अवैध बस्तियों को वैध बनाने का जो दुर्भाग्यपूर्ण खेल शुरू हुआ है, उसका घातक असर नागरिक सेवाओं पर पड़ रहा है। जिन लोगों ने ईमानदारी से मेहनत की कमाई से कानूनी रूप से वैध मकान बनाए हैं और उसकी बड़ी कीमत चुकाई है, उन्हीं को इस संकट का सामना करना पड़ रहा है। अवैध रूप से बसायी गई इन बस्तियों के लिये बिजली, पानी, शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधायें देने का नकारात्मक प्रभाव वैध बस्तियों के नागरिकों पर पड़ रहा है। जरूरतमंद नागरिकों हेतु छत या बस्ती बसाने के लिए योजनाबद्ध नीतियां बनायी जानी चाहिए। उधर, बजट में आम आदमी की भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। विभिन्न गोष्ठियों में लोगों की बजट के बारे में राय लेनी होगी कि राज्य की अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर रखते हुए कैसा बजट बनाया जा सकता है। विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के उम्मीदवारों को मुफ्त की रेवड़ियां बांटने से बचना होगा। ताकि करदाताओं पर करों का अतिरिक्त बोझ न पड़े। आखिरकार इस फ्री राशन का बोझ देश की मध्यवर्गीय जनता की जेब पर ही पड़ता है। जिसकी वजह से मध्यवर्ग पिसता है- अमीर और गरीब के पाट के बीच में। सही अर्थों में होना तो यह चाहिए कि राज्य की अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाने को कदम उठाये जाएं। राज्य सरकार पर जो करोड़ों रुपये का ऋण का बोझ है, उसे उतारने के उपाय घोषणा पत्र में दर्ज हों कि कर चुकाने के लिये सभी किस तरह से सहयोग करेंगे। जैसे कि पहले कहा गया है कि स्वास्थ्य सेवाओं के लिये ज्यादा बजट का प्रावधान होना चाहिए। दवाइयां सस्ती करने के लिये विशेष व्यवस्था होनी चाहिए। किसानों के लिये खाद, बीज, कीटनाशक व सिंचाई की सुविधा तथा खेती में काम आने वाले उपकरण मसलन ट्रैक्टर आदि सस्ते मूल्य पर उपलब्ध कराये जाएं। बजाय कि ऋण माफ करने तथा सस्ती बिजली-पानी देने के। यदि हम किसान की कृषि उत्पादन की लागत कम कर देंगे, तो फिर किसान की सरकार पर निर्भरता कम हो जायेगी। सत्ताधीशों को याद रखना चाहिए कि सरकार का पहला फर्ज लोककल्याणकारी शासन के लक्ष्यों को प्राप्त करना होता है। बच्चों के लिये सस्ती एवं गुणवत्ता वाली शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। सत्तर वर्ष से ऊपर के लोग सरकार की प्राथमिकता में हों। उनके लिये निःशुल्क चिकित्सा की व्यवस्था हो। साथ ही बदलते सामाजिक दौर में असहाय स्थिति में रह रहे बुजुर्गों के लिये गुणवत्ता वाले निःशुल्क वृद्धाश्रमों की व्यवस्था भी बड़े पैमाने पर की जाए। इसके बावजूद यदि राजनीतिक दलों व नेताओं को कुछ मुफ्त बांटने की ज्यादा ही इच्छा हो तो वे अपने या पार्टी फंड से ऐसी व्यवस्था करें। साथ ही पार्टी फंड से जनकल्याण के बजट में योगदान करें। चुनाव के दौरान प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से अरबों रुपये जैसे पानी की तरह बहाये जाते हैं, यदि उसी धन को कमजोर वर्गों के कल्याण व नागरिक सुविधाएं सुधारने के लिये लगाया जाए तो जनता का ज्यादा भला होगा। अब वक्त आ गया है कि देश की जनता, जागरूक स्वयंसेवी संस्थाएं तथा राजनीतिक दल इस समस्या का सार्थक समाधान निकालें।

बेकाबू हो सकता है युद्ध

लेबनान में शुक्रवार को हुए इस्राइली हमले में हसन नसरल्लाह का मारा जाना हिज्बुल्ला के लिए ऐसा झटका है, जिससे उबरना उसके लिए आसान नहीं होगा। इस्राइली सेना और नेतन्याहू सरकार के लिए यह उतनी ही बड़ी कामयाबी है। अफसोस की बात यह है कि इस कथित झटके या कामयाबी के बाद भी इस क्षेत्र में शांति की संभावना मजबूत नहीं हुई है। इसके उलट संघर्ष के बेकाबू होने का खतरा बढ़ गया है। पिछले तीन दशक से भी ज्यादा समय से हिज्बुल्ला का नेतृत्व कर रहा नसरल्लाह मध्यपूर्व के सबसे प्रभावशाली व्यक्तित्वों में शुमार किया जाता था। उसकी कमी की जल्द भरपाई होना मुश्किल है। मगर हिज्बुल्ला के लिए यह इकलौता झटका नहीं है। हाल के हमलों में उसके एक दर्जन से ज्यादा टॉप के कमांडर मारे जा चुके हैं। बहुचर्चित पेजर और वॉकी टॉकी हमलों ने उसके इंटरनल कम्युनिकेशन सिस्टम को भी लगभग खत्म कर दिया है। ऐसे में खुद को समेटकर इस्राइल पर दोबारा वैसा ही हमला करना हिज्बुल्ला के लिए काफी मुश्किल होगा। ताजा झटका कितना भी बड़ा हो, यह समझना गलत होगा कि इससे हिज्बुल्ला इस्राइल के सामने समर्पण कर देगा। पिछले कुछ दशकों में हिज्बुल्ला दुनिया का सबसे ताकतवर नॉन स्टेट एक्टर बन चुका है। उसके पास 1,50,000 से अधिक रॉकेट और मिसाइलें बताई जाती हैं। उसकी सैन्य ताकत किसी मिडल साइज के देश के बराबर मानी जाती है। हिज्बुल्ला ने कहा भी है कि वह इस्राइल के खिलाफ अपना अभियान जारी रखेगा। कुछ समय पहले तक 12 देशों की ओर से प्रस्तावित युद्धविराम को लेकर जो भी बची-खुची उम्मीद थी, वह अब समाप्त हो गई है। ताजा कामयाबी ने इस्राइल का उत्साह और बढ़ा दिया है। ऐसे में सवाल यह है कि क्या हिज्बुल्ला की मिसाइलों का खतरा समाप्त करने के बाद इस्राइल अपने सैनिकों को लेबनान में घुसने का आदेश देता है। अगर ऐसा हुआ तो यह एक और लंबी लड़ाई की शुरूआत साबित हो सकती है। निगाहें ईरान पर भी टिकी हैं। वह पहले से नाराज है। तेहरान के एक गेस्टहाउस में हमास नेता इस्माइल हानिये की मौत का बदला भी उसे लेना है। नसरल्लाह की मौत उसके लिए भी झटका है। देखने वाली बात यह है कि उसकी प्रतिक्रिया कितनी और कैसी होती है। जहां तक भारत की बात है तो बाकी पूरी दुनिया की तरह वह भी यही चाहेगा कि संघर्ष की यह आग ज्यादा न फैले। इंडिया-मिडल ईस्ट-यूरोप इकॉनमिक कॉरिडोर जैसे दूरगामी हितों को फिलहाल छोड़ दें तो भी युद्ध का बेकाबू होना भारत को ही नहीं, ग्लोबल इकॉनमी को भी चुनौतियों के भंवर में डाल सकता है।

लोकतांत्रिक मूल्यों में वैश्विक हित

सुरेश सेठ

अमेरिका में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के लिए एक नया संकल्प लिया है। उन्होंने कहा कि वह आने वाले दिनों में भारत को पुष्पित बनाएंगे और पुष्प की पंक्तियों से इसे विकसित करेंगे। उन्होंने पी से प्रगतिशील भारत का उल्लेख किया, जिसका अर्थ है हमारे संविधान की प्रतिबद्धता कि हम देश में प्रजातांत्रिक समाजवाद स्थापित करेंगे। यह वंचितों के लिए आशा की किरण है, लेकिन अभी बहुत काम बाकी है। अमृत महोत्सव मनाने के बाद भी अमीर और गरीब के बीच की खाई और बढ़ गई है। यू से अजेय भारत का संकेत है कि भारत की सेना आत्मनिर्भर और आधुनिक हो गई है। देश की अखंडता की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। एस से आध्यात्मिक भारत का अर्थ है कि आधुनिकता की रौ की बजाय आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना भारत का लक्ष्य होगा। अध्यात्म का सही संदेश अगर कोई दे सकता है तो वह भारत है, लेकिन यह संदेश कट्टरता से मुक्त होना चाहिए। एच से मानवता का समर्थन करता भारत और पी से समृद्ध भारत का संकेत, मंदी के अंधड़ में फंसी दुनिया में भारत की तेज विकास दर को बनाए रखने और अपनी मंडियों में निवेश की मांग को कम न होने देने की ओर है। इन सभी पहलुओं के माध्यम से, प्रधानमंत्री मोदी ने स्पष्ट किया है कि भारत को प्रगतिशील, अजेय, आध्यात्मिक और समृद्ध बनाने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। भारत ने अपनी आजादी के शतकीय महोत्सव में विकसित भारत की स्थापना का लक्ष्य रखा है, और उसका आदर्श है कि वह आर्थिक महाशक्ति बनेगा। न्यूयॉर्क में प्रधानमंत्री मोदी प्रवासी भारतीयों को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति के प्रतीक नमस्ते को वैश्विक पहचान बनाने का समय आ गया है। उन्होंने भारतीय संस्कृति के

सकारात्मक मूल्यों को अमेरिका की सामाजिक व्यवस्था में प्रमुखता देने का संदेश दिया। मोदी ने प्रवासी भारतीयों को देश का ब्रांड एम्बेसडर बताया और कहा कि भारत आज अवसरों की धरती है। भारत में नेतृत्व करने की क्षमता है और वह रुकने या थमने वाला नहीं है। यह प्रेरणा वास्तव में उत्साहजनक है। मोदी यहां अपने देश में हो रहे सेमीकंडक्टर सेक्टर के तेज विकास की ओर इशारा कर रहे थे, जो भारत के डिजिटल परिवर्तन का हिस्सा है। उन्होंने मेड इन इंडिया के तहत सेमीकंडक्टर चिप्स को विकसित भारत की उड़ान के रूप में प्रस्तुत किया। हालांकि, इस डिजिटल युग का लाभ देश की गरीब और वंचित आबादी तक पहुंचाना जरूरी है, जो रोजगार और महंगाई की समस्याओं का सामना कर रही है। मोदी का नेतृत्व सशक्त है, लेकिन उन्हें इन वंचित वर्गों की जरूरतों का ध्यान रखना होगा, ताकि वे डिजिटल भारत में शिक्षा और अवसरों से वंचित न रहें। मोदी जी ने प्रवासी भारतीयों के सामने यह दावा किया कि भारत पहला जी-20 देश है जिसने पेरिस जलवायु लक्ष्यों को हासिल किया है, और उनका कार्बन उत्सर्जन दुनिया के मुकाबले कम है। उन्होंने कहा कि भारत हरित क्रांति की राह पर अग्रसर है और पर्यावरण प्रदूषण के संकट का सामना करने के लिए अग्रणी भूमिका निभाएगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि ग्लोबल साउथ के देशों के साथ-साथ विकसित पश्चिमी देश भी इस दिशा में कदम बढ़ाएंगे, क्योंकि पर्यावरण प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग सभी के लिए एक गंभीर संकट है। पिछले दिनों मौसम के असाधारण परिवर्तनों ने न केवल भारत को, बल्कि पूरी दुनिया को संकट में डाल दिया है। इसके परिणामस्वरूप कृषि, उत्पादन और निवेश में अनिश्चितता बढ़ गई है, जिससे मांग में कमी आई है। अमेरिका ने इस समस्या से निपटने के लिए अपनी फेडरल दरों में 50 बेसिस प्वाइंट की कमी की है। लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि वैश्विक स्तर पर हर क्षेत्र इस संकट का सामना कर रहा है, जिससे मंदी और निवेश की अनिश्चितता उत्पादन की गणनाओं को अस्तव्यस्त कर रही है। इसलिए, दुनिया को समावेशी विकास का नया रास्ता अपनाना होगा। भारत, जो अब दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला देश बन गया है, अगर बदलाव का नेतृत्व करता है, तो यह सकारात्मक कदम होगा। पश्चिमी और संपन्न देशों को तीसरी दुनिया के देशों की शक्ति का अहसास करना होगा और भारत की नई ताकत को स्वीकार करना पड़ेगा। यदि सभी मिलकर मौजूदा चुनौतियों पर नियंत्रण करते हुए आगे बढ़ते हैं, तो दुनिया में भुखमरी, महंगाई और बेरोजगारी का संकट समाप्त हो सकता है, जो अब केवल तीसरी दुनिया के देशों में नहीं, बल्कि संपन्न देशों में भी देखा जा रहा है। इसके अलावा, लोकतंत्र ही इस दुनिया में मुक्ति और विकास का सही रास्ता है। अधिनायकवादी महत्वाकांक्षाएं संघर्ष और तनाव पैदा करती हैं, जैसा कि पिछले दो-तीन वर्षों में देखा गया है। रूस-यूक्रेन युद्ध और इस्राइल-हमास संघर्ष के चलते दुनिया में शांति का माहौल नहीं बन रहा है, और यदि यह स्थिति बढ़ती है, तो इसके गंभीर परिणाम होंगे।

आप सिर्फ एक संख्या हैं

शैलेश श्रीवास्तव

ये वाला यूट्यूब चैनल देखा है कभी? बहुत ही गंदा है यार, पता नहीं क्या-क्या बोलता है, गालियां देता रहता है, और लोग कितना देखते हैं इसे। एक दोस्त ने कहा। आपको कैसे पता, आप देखते हो? मैने कहा। हां मैं तो सारे वीडियो देखता हूं, तभी तो पता चला। उसके बाद मैं सोच रहा था की अगर लोगों को ऐसे कंटेंट पसंद नहीं आते तो उसे बनाया क्यों जाता है। क्या लगता है? आप इंसान हैं। हांड़ मांस के बने हुए, चलते फिरते हुए। प्यार, अहसास, गुस्सा, स्नेह, ग्लानि जैसे रस हैं जो हमने कभी बचपन में किताबों में पढ़े और इस शरीर में दिमाग भी है। यहां कुछ लोगों को ऐसा लगता नहीं है वो आपको सिर्फ एक संख्या भर मानते है। सोशल मीडिया के जमाने में लोगों तक अपनी बातें पहुंचाना आसान हो गया है। ये भी पता चला की हमारे आस- पास बहुत से कंटेंट क्रिएटर हैं जो अपनी कल्पना से बहुत ही रचनात्मक और अलग तरह का कंटेंट बनाते हैं उनसे पूछिए नंबर कितने मायने रखते हैं, एक व्यू या एक लाइक बढ़ने पर कितनी खुशी मिलती है। वहीं इस बात से परे उसी कंटेंट से दूसरी तरफ बैठे इंसान के दिल दिमाग पर कितना असर हुआ, अच्छा हुआ या खराब, वो नरम दिल बना या क्रूर, मानवीय संवेदनाएं जगी या वहशीपन या हंसी मजाक में हमने किसी के धर्म, जाति या लिंग को हंसी का पात्र बना दिया। हम अक्सर कहतें हैं कि हमारे देश में अच्छी मूवीज नहीं बनती क्योंकि हम मसान, मांझी जैसी मूवीज सिनेमा में देखने नहीं जाते, हम जाते हैं देखने क्या कूल है हम या एनिमल जैसी मूवीज जिसमें फुहड़ता और महिलाओं को कमतर दिखाया जाता है। ये कई हफ्तों तक फुल हाउस चलती हैं और बॉक्स ऑफिस पर खूब पैसा कमाती है। इसी तरह जब हम कहते हैं कि अब न्यूज चैनल सही न्यूज नहीं दिखाते तब हमें भी सोचना होगा कि आखिर क्यों टीवी न्यूज चैनल महीनों तक सीमा हैदर की न्यूज दिखा रहे हैं या क्यों टीवी डिबेट में लड़ाईयां चल रही हैं क्योंकि की हम टीवी ऑन कर के उसे देख रहें हैं। हम कंटेंट को पसंद करें या गाली दें लेकिन चैनल चल रहा है और उसकी टीआरपी बढ़ रही है। इसी तरह आपको यूट्यूब, इंस्टाग्राम या अन्य सोशल मीडिया पर बहुत से चैनल मिल जाएंगे जिनके हर वीडियो में गालियां या लड़कियों को अलग-अलग तरह से नीचा दिखाया जाना आम बात है और उनके वीडियो लाखों में देखे जाते हैं। ऐसे चैनल्स पर इतने व्यूज आ रहे हैं इसीलिए उनके पीछे-पीछे बहुत से लोग वैसा ही गाली देने वाला या फूहड़ कंटेंट बना कर डाल रहे हैं। तो क्या ये सिर्फ उनकी गलती है? मुझे नहीं लगता, जब आप देखते हैं तो वो बनाते हैं। इन सब माध्यमों का इको सिस्टम ऐसा है कि बनाने वाले लोगों को आपके नजरिए से ज्यादा आप देख रहें हैं या नहीं, इससे फर्क पड़ता है। उन्होंने कंटेंट बनाया है पैसा कमाने के लिए, आपने देखा उन्हें पैसा मिला। इन सबकी नजर में आप सिर्फ एक संख्या भर हैं सोशल मीडिया में व्यूज या लाइक्स की संख्या, सिनेमा में पहले दिन या हफ्ते में कितने रुपये कमाए उसकी संख्या, न्यूज चैनल में टीआरपी की संख्या। अब ये आपको सोचना है की आप सिर्फ एक संख्या भर रहना चाहते हैं या उससे ज्यादा। भारत में इलेक्शन

एक त्योहार की तरह देखा जाता है। सरकारी भाषा में लोकतंत्र का त्योहार और बहुत सी जनता की भाषा में नेताओं से पैसा लूटने का त्योहार। 500 रुपये, दारू, कंबल, पंखा, साड़ी ये सब तो आपने सुना ही होगा कि नेता बांट रहे हैं, दरअसल ये जनता में कुछ ठेकेदार होते हैं उनकी डिमांड होती है। अब ये पैसा, दारू, कंबल या बाकी चीजें सबको तो मिलती नहीं हैं, कुछ को मिलती है और वो जिम्मेदारी लेते हैं बाकी सबके वोट डलवाने की। फिर आपका अपना कोई वजूद नहीं बचता, उनकी नजरों में आप सिर्फ एक संख्या बनकर रह जाते हैं। ऐसा हो सकता है आपकी विचारधारा किसी पार्टी से मेल खाती हो। कोई नेता आपको ज्यादा पसंद हो या किसी पार्टी या नेता का काम पसंद हो। हालांकि सरकार बनने के बाद भी अगर बात-बात में उसकी तरफदारी करते हैं तो आप अपना नुकसान कर रहे हैं। अगर सरकार काम नहीं कर रही है तो लोग नाराज होंगे और सवाल करेंगे लेकिन वहीं जनता के बीच उनके अघोषित प्रवक्ता हैं जो बात-बात पर उनकी तरफदारी करते हैं और सरकार का बचाव करतें हैं। वो अघोषित प्रवक्ता जनता को समय समय पर अलग- अलग तर्कों और अपने कौतूहल से शांत करते रहते हैं। अपने और अपने क्षेत्र के लिए काम की मांग करना एक अच्छे नागरिक का कर्तव्य है। वरना आप उनके लिए एक भेड़चाल वाला समूह और उसकी एक संख्या बनकर रह जाएंगे। आजकल हर तरफ नफरत का बाजार लगा है। एक धर्म के ठेकेदार अपने लोगों को बताते हैं की तुम खतरे में हो इसलिए एक पार्टी को वोट दो। दूसरे धर्म के ठेकेदार अपने लोगों को कहते हैं की तुम खतरे में हो तो एक पार्टी को हराने के लिए वोट दो। यहीं से वोटों का एकत्रीकरण करवाया जाता है और समझाया जाता है की अपना दिमाग मत लगाओ जो ठेकेदार कह रहे हैं वो ही करो। फिर नेता हमें 80-20 में बांटने की बात करते हैं। क्या आपको नहीं लगता, वो हम लोगों को सिर्फ एक संख्या ही मानते हैं कि या तो 80 में आ जाओ या 20 में आ जाओ। देश के अलग अलग क्षेत्रों में जाने पर पता चलता है की लोग बहुत अभाव में जी रहे हैं। बहुत से क्षेत्रों में अभी विकास नाम की चिड़िया ने पर भी नहीं मारा है। ऐसे ही लोगों से बात करिए तो लोग रोजमर्रा में होने वाली समस्याएं बताते हैं जैसे पानी के लिए घर से बहुत दूर जाना पड़ता है, घंटों बिजली नही आती है, स्कूल नही हैं, अस्पताल नहीं है, आने जाने की सुविधा नहीं है। दाल, तेल, आटा, चावल, मसाले ये सब बहुत महंगा हो गया है, सिलेंडर घर में तो है लेकिन भरा नहीं पा रहे क्योंकि गैस बहुत महंगी है और कमाई या तो है नहीं और अगर है तो बहुत कम। बेरोजगारी और महंगाई तो चरम पर है ये बात तो सरकारी डाटा भी बताते हैं। अच्छी बात ये है कि लोग इस बात को जानते हैं कि उन्हें जरूरत है बुनियादी सुविधाओं की और ये बुनियादी सुविधाएं सरकार के जरिए ही आयेंगी। लेकिन वहीं खराब बात भी है की जब सरकार बनाने के लिए वोट डालने का समय आता है तब वोट डालते हैं जाति, धर्म, कुछ रुपए, दारू, मेरे जानने वाला खड़ा है या भ्रामक प्रचार वाली बातों में आकर। जब आप ये करते हैं तब आप उन्हें ये बता रहे हैं कि आपको काम नहीं चाहिए सिर्फ यही सब चाहिए और किसी ठेकेदार के जरिए आपको सिर्फ एक संख्या की तरह ही गिना जाए इससे ज्यादा नहीं। न्यूज मीडिया के दौर में नेताओं को हीरो बनाया जाता है और बनाना भी चाहिए क्योंकि वो जनता के लिए बहुत काम करते हैं। आप बिल्कुल नेताओं को हीरो बनाइए। लोग सलमान, शाहरुख के फैन हैं लेकिन अगर पिक्चर में काम अच्छा नहीं है तो कुछ दिनों के बाद लोग देखने नहीं जाते और वो पिक्चर पिट जाती है। ठीक ऐसे ही नेता के फैन बनिए पर दिमाग खुला रखिए। उनकी बातें और काम दोनों पर नजर बनाए रखिए। मीडिया में दिखाया जाने वाला हवाबाजी वाला नहीं क्योंकि वहां तो नंबर्स को इधर-उधर कर के आपको बरगलाया जाएगा, धरातल वाला काम देखिए, अपने आस पास देखिए और समझिए। वरना किस जगह किसी नेता के कितने फैन है आप इसी संख्या भर रह जाएंगे। वे आपको संख्या न माने, इसलिए सोचिए जब आप अमीबा से मानव बने तो उसके साथ-साथ दिमाग और दिल दोनों विकसित हुए। इसलिए थोड़ा अपने अहसास से समझिए, दिमाग को चलाइए और समय समय पर तंत्र को, समाज को, सरकारों को, संस्थाओं को, पार्टियों को, बड़े-बड़े उद्योगों को ये याद दिलाते रहिए की आप मानव हैं सिर्फ एक संख्या नहीं।

साइबर अपराधियों से बचाना होगा युवाओं को

कुलांचे भरते शेयर बाजार व सबसे तेज गति से बढ़ती अर्थव्यवस्था के दावों के बीच एक स्याह सच यह है कि भारतीय युवा सुनहरे सपनों की आस में दुनिया भर में मारे-मारे फिर रहे हैं। उससे भी ज्यादा दुखद यह कि वे बिचौलियों, दलालों व अपराधियों की साजिश से मानव तस्करी और साइबर अपराधों का शिकार बन रहे हैं। सुनहरे सपने दिखाने वाले ऑनलाइन विज्ञापनों से सम्मोहित होकर हमारे युवा ऐसे आपराधिक जाल में फंस जाते हैं कि वहां से उनका देश लौटना भी संभव नहीं होता। हमारे देश की काली भेड़ें इस साजिश का हिस्सा होती हैं। भारत के हजारों युवा दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में फंसे हैं और साइबर अपराध करने वाले नियोक्ताओं के चंगुल में फंसकर अवैध गतिविधियों को संचालित करने को मजबूर हैं। यह तथ्य भी कम चिंताजनक नहीं है देश में साइबर अपराध में लिप्त लोग ही हमवतन लोगों को संदिग्ध क्रिप्टोकरेंसी योजनाओं में निवेश करने को लुभा रहे हैं। जनवरी 2022 से मई 2024 तक विजिटिंग वीजा पर कंबोडिया, थाइलैंड,म्यांमार और वियतनाम की यात्रा करने वाले 73000 भारतीयों में 30,000 अभी तक वापस स्वदेश नहीं लौटे हैं। इनमें से आधे से अधिक साइबर गुलाम 20 से 39 वर्ष आयु वर्ग के हैं। उल्लेखनीय है कि इन लापता युवाओं की राज्यवार सूची में पंजाब शीर्ष पर है। इसके बाद महाराष्ट्र और तमिलनाडु का आंकड़ा है। निश्चित तौर पर यह हमारे नीति-नियंताओं की विफलता है कि अपने बच्चों को देश में उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप रोजगार देने में विफल हैं। सौभाग्य से भारत को दुनिया में सबसे ज्यादा युवा आबादी मिली है मगर हम उन्हें उम्मीदों के अनुरूप काम नहीं दे पा रहे हैं। वहीं यह हमारी कानून व्यवस्था व खुफिया तंत्र की विफलता भी है कि हमारे बच्चे आसानी से साइबर अपराध करने वाले गिरोहों के चंगुल में फंस जाते हैं। हाल ही में कुछ भारतीय युवाओं को म्यांमार के साइबर अपराधियों के अड्डे से मुक्त कराया गया था। इस साजिश के खिलाफ व्यापक स्तर पर कार्रवाई करने की जरूरत है। ऐसे हालात में अपराध नियंत्रण हमारी प्राथमिकता होनी ही चाहिए, लेकिन इसके साथ ही इस संजाल की जड़ तक पहुंचने की कोशिश की जानी चाहिए ताकि साइबर अपराधी भोले-भाले लोगों को अपने जाल में न फंसा सकें। यहां सवाल उठना स्वाभाविक है कि जब भारत दुनिया में सबसे तेज गति से बढ़ती अर्थव्यवस्था का तमगा हासिल किए हुए है तो हमारी युवा प्रतिभाएं अन्य विकासशील देशों में नौकरी करने को क्यों मजबूर हो रही हैं? ये हमारी मजबूत अर्थव्यवस्था वाली छवि के विपरीत है। यदि मौजूदा समय में हम अपने देश में कुशल युवाओं को उनकी जरूरतों व आकांक्षाओं के अनुरूप नौकरी देने में विफल रहते हैं तो विकसित भारत का लक्ष्य दूर की कौड़ी बनकर रह जाएगा।

दलित, सवर्ण, छुआछूत और राजनेता

प्रवीण बागी

सीताराम

बबुआ जी

गांधी महीनों -महीनों तक दिल्ली की दलित बस्ती में रहते थे। आज कितने गांधी भक्त दलित बस्ती में झांकने भी जाते हैं? स्व. बिंदेश्वर पाठक ने सुलभ आंदोलन के माध्यम से दलितों के उत्थान के लिए जितना किया उतना किसी दलित नेता ने नहीं किया। पाठक जी ब्राह्मण थे। एक और घटना मुझे याद आती है। यह घटना सभवतः 1987 -88 की है। गया जिले में कोई गांव था (नाम याद नहीं आ रहा), उस गांव में अनेक दलित परिवार थे। उन्हें गांव के मंदिर में प्रवेश नहीं करने दिया जाता था। गांव भूमिहार बहुल था।

फोटो में जो दिख रहे हैं इनका नाम है सीताराम। ये दलित हैं। मजदूरी करते हैं। मेरा खेत भी बटाई पर बोते हैं। इनके पिता रगरू राम यूपी के थे। बिहार के एक चीनी मिल में सीजनल कर्मचारी थे। वहीं मेरे परिवार के संपर्क में आए। मेरे परबाबा ने इन्हें गांव लाकर अपनी जमीन पर बसाया। अब न मेरे परबाबा हैं न रगरु जी, लेकिन उनके पुत्र और उनका परिवार अब भी उसी जमीन पर रहता है। पहले झोपड़ी थी।अब पक्का मकान बन गया है।सीताराम जी भी दादा-नाना बन गए हैं। लेकिन अब भी उनके परिवार से मेरे घर का वही संबंध है, जो पूर्वजों के साथ था। गांव वालों ने पिछले पंचायत चुनाव में उन्हें पंच चुना था।

पहले वे झोपड़ी में रहते थे।अब पक्का मकान है। मेरे युवावस्था तक सीताराम गांव में हमारे घर आते थे तो जमीन पर बैठते थे। कभी उन्हें चौकी, खटिया या कुर्सी पर बैठते नहीं देखा। लेकिन इस बार जब मैं गांव गया तो देखा कि वे अब कुर्सी पर बैठने लगे हैं। पूरे गांव में किसी को इस पर आपत्ति नहीं है। पिछली बार श्रावणी पूजा में मैं परिवार सहित गांव गया था, तब अपनी पत्नी से इनका परिचय कराया। पत्नी ने स्वाभाविक संस्कार वश उनके पैर छूकर प्रणाम किया। बेचारे सीताराम जी सकुचा गए। आशीर्वाद भी नहीं दे पाए।

यह प्रसंग सार्वजनिक करना इसलिए मुझे जरूरी लगा क्योंकि 30 सितंबर रविवार को पटना के श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में अपनी पार्टी के दलित/ आदिवासी प्रकोष्ठ के सम्मेलन को संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने आरोप लगाया था कि आज भी दलितों के साथ भेदभाव हो रहा है। दलितों को बांटा जा रहा है। उनका यह बयान मेरे जैसे लोगों के लिए पीड़ादायक है। समाज में भेदभाव से इंकार नहीं है, लेकिन अब वह न के बराबर है। जब भी भेदभाव की बात होती है तो उंगली कथित ऊंची जाति की तरफ उठाई जाती है। जबकि भेदभाव सिर्फ दलितों के साथ नहीं सभी जातियों में है। दलित समाज में जितनी जातियां हैं, उनके अंदर भी ऊंच-नीच माना जाता है। चिराग जी या छुआछूत का शोर मचाने वाले अन्य नेता इसे क्या कहेंगे? कथित ऊंची जातियों की तरफ उंगली उठाने वाले नेता दलितों को सम्मान दिलाने के लिए क्या कर रहे हैं? समाज से छुआछूत या भेदभाव मिटाने के लिए फायरी नेताओं ने अपने कार्यों से कोई मिशाल पेश किया है क्या? मुझे उनका ऐसा कोई काम याद नहीं आता। अगर किसी ने किया हो तो उसे सार्वजनिक करें।

दौरे में जानेवाले मंत्री/ नेता किसी दलित के घर में क्यों नहीं रुकते और भोजन करते ? चिराग जी ने गांव के सबसे निर्धन दलित के यहां जाकर कभी चाय पी है, कभी भोजन किया है ? जिस निर्धन दलित के घर नेता जायेंगे, उसकी समाज में तो ऐसे ही प्रतिष्ठा बढ़ जाएगी। पर वे जाते हैं ऊंची हवेली और पैसे वाले के यहां, जो उनके साथ 100 -50 लोगों को जीमा सके। वहां उन्हें दलित याद नहीं आते। भाषण देना और आरोप लगाना सबसे आसान है। सार्थक काम करना कठिन है। नेताओं में महात्मा गांधी के प्रति श्रद्धा दिखाने की होड़ लगी रहती है, लेकिन गांधी के कामों का कोई अनुसरण करना नहीं चाहता।

गांधी महीनों -महीनों तक दिल्ली की दलित बस्ती में रहते थे। आज कितने गांधी भक्त दलित बस्ती में झांकने भी जाते हैं? स्व.बिंदेश्वर पाठक ने सुलभ आंदोलन के माध्यम से दलितों के उत्थान के लिए जितना किया उतना किसी दलित नेता ने नहीं किया। पाठक जी ब्राह्मण थे। एक और घटना मुझे याद आती है। यह घटना सभवतः 1987 -88 की है। गया जिले में कोई गांव था (नाम याद नहीं आ रहा), उस गांव में अनेक दलित परिवार थे। उन्हें गांव के मंदिर में प्रवेश नहीं करने दिया जाता था। गांव भूमिहार बहुल था। यह बात कृष्णबल्लभ नारायण सिंह उर्फ बबुआ जी को पता चली। बबुआ जी राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के बिहार संघचालक थे। उस समय वे गया में थे। तब मैं भी नवभारत टाइम्स के संवाददाता के तौर पर गया में पदस्थापित था।

बबुआ जी ने उस गांव में जाने का प्रोग्राम बनाया। मुझे भी किसी से इसकी जानकारी मिली। मैं भी उनके साथ हो लिया। उन्होंने मीडिया को इसकी सूचना नहीं दी थी। गांव में पहुंचने पर बबुआ जी का खूब स्वागत हुआ। उन्होंने सबके साथ मीटिंग की। समझाया - बुझाया। अंततः गांव के भूमिहार और अन्य जातियों के लोग दलितों को मंदिर में प्रवेश देने को तैयार हो गए। उनकी आपत्ति सिर्फ इतनी थी कि अधिकांश दलित बहुत गंदे रहते हैं। वे नहा धोकर मंदिर आएं तो उन्हें कोई विरोध नहीं है।

फिर बबुआ जी दलित टोले में गए। वहां भी उनका उसी गर्मजोशी से स्वागत हुआ। उन्होंने सभी को बैठाया। साफ -सफाई का महत्व समझाया और कहां की भगवान जितने उनके हैं उतने ही आपके भी हैं। मंदिर जाने से कोई नहीं रोकेगा। फिर मंदिर प्रवेश की एक तारीख तय हुई। उस दिन नियत समय पर बबुआ जी संघ के कुछ स्वंयसेवकों के साथ उस गांव पहुंचे। पूरे गांव में उत्सव सा माहौल था। मंदिर पर लाउडस्पीकर लगा था। पताका - झंडी ने पूरा गांव सजाया गया था। बबुआ जी पहले भूमिहारों की बस्ती में पहुंचे वहां से उनको साथ लेकर दलित बस्ती में पहुंचे। दलित समाज के लोग नए कपडे पहन कर उनका इन्तजार कर रहे थे। बैंड बाजा भी था। सभी एक दूसरे से गले मिले फिर बबुआ जी के नेतृत्व में साथ साथ मंदिर पहुंचे। पुजारी जी ने सामूहिक पूजा की। जिसमें सभी शामिल हुए। बुजुर्गों और महिलाओं की आंखों से आंसू बह रहे थे। सारे शिकवे-गिले उन आंसुओं में बह गए। यह मेरी आँखों देखी घटना है। याद रहे वह नक्सलियों का दौर था। अक्सर उस इलाके से नरसंहार की की खबरें आती रहती थीं। जातियों के बीच गहरा अविश्वास था। तब भी उस दौर में सच्चे मन से किये गए प्रयास ने लोगों के मन को बदल दिया। यहां यह बताना जरुरी है कि बबुआ जी भूमिहार थे। ऐसा प्रयास राजनेताओं द्वारा भी किया जा सकता है। इससे बड़ा बदलाव तेजी से हो सकता है। लेकिन राजनीति इसमें पिछड़ गई। लोग खुद बदल रहे हैं। अब राजनीति उसमें अवरोध पैदा कर रही है। दलितों के नाम पर कुछ नेता अपनी राजनीति चमकाने का प्रयास करते रहते हैं। समाज में घृणा और द्वेष फैलाने की कोशिश में लगे रहते हैं। ऐसे लोगों को मेरे गांव विजयपुर (जिला सिवान, बिहार) आकर देखना चाहिए कि दलितों को बिना किसी शोर के कैसे समाज में सम्मान दिया जाता है, आगे बढ़ाया जाता है। सीताराम जी इसके उदाहरण हैं। यह तस्वीर गांव में मेरे घर की है। सीताराम जी कुर्सी पर बैठे हैं। बहुत दिनों के बाद इस बार मैं भी सीताराम जी के घर गया। बहुत अच्छा लगा। उनका पूरा टोला गुलजार है। युवा लड़के महाराष्ट्र, बंगलोर, दिल्ली आदि जगहों पर जाकर कमाई कर रहे हैं। इसमें नेताओं का कोई योगदान नहीं है। इसलिए घटिया राजनीति बंद होनी चाहिए। दलितों को बेचना बंद कीजिए। प्रेम और भाईचारा को बढ़ावा दीजिए। यह संघर्ष नहीं सहयोग का दौर है।

कैसे खत्म होगा भ्रष्टाचार जब भ्रष्टाचारियों की ढाल बन रही सरकारें

योगेंद्र योगी

सीवीसी की रिपोर्ट में उन मामलों का भी जिक्र किया है जिनमें जांच में दोषी पाए गए अफसरों के खिलाफ आयोग की सिफारिशों को भी दरकिनार कर दिया गया। इनमें विभिन्न मंत्रालयों और केंद्र सरकार के अधीन संस्थाएं (पीएसयू-बैंक आदि) शामिल हैं। सीवीसी केंद्रीय मंत्रालयों और पीएसयू-बैंकों में मुख्य सतर्कता अधिकारियों (सीवीओ) के जरिये भ्रष्टाचार व अनियमितताओं पर नजर रखता है। सीवीसी ने कहा है कि कुछ संगठन आयोग की सलाह पर अमल करने और आरोपी अधिकारी को चार्जशीट जारी करने में देरी करते हैं। इससे कई मामलों में दोषी अधिकारी सेवानिवृत्त हो जाता है और समय सीमा चूकने के कारण कोई भ्रष्ट अधिकारी पर कोई कार्रवाई नहीं हो पाती। गौरतलब है कि सरकारी विभागों में विषबेल की तरह बढ़ते भ्रष्टाचार पर भारत विश्व में कलंकित हो रहा है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2023 के लिए भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक में भारत 180 देशों में 93वें स्थान पर रहा। जबकि वर्ष 2022 में भारत की रैंक 85 वीं थी। अर्थात भारत में भ्रष्टाचार की रफ्तार थमी नहीं है। इसमें तेजी आई है। इस सूचकांक में भारत आठ पायदान आगे बढ़ गया। वर्ष २०२३ की रिपोर्ट के मुताबिक दक्षिण एशिया में पाकिस्तान (133) और श्रीलंका (115) अपने अपने कर्ज के बोझ तले दबे हैं और राजनीतिक अस्थिरता से जूझ रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया कि हालांकि दोनों देशों में मजबूत न्यायिक निगरानी है, जो सरकार को नियंत्रण में रखने में मदद कर रही है। रिपोर्ट में कहा गया है कि चीन (76) ने पिछले दशक में भ्रष्टाचार के लिए 37 लाख से अधिक सार्वजनिक अधिकारियों को दंडित करके अपनी आक्रामक भ्रष्टाचार विरोधी कार्रवाई से सुर्खियां बटोरीं। भ्रष्टाचार से देश एक भी राज्य और केंद्र शासित प्रदेश अछूता नहीं है। केंद्र हो या राज्यों में चाहे किसी भी राजनीतिक दल की सरकारें हों, किन्तु एक भी सत्तारुढ़ दल यह दावा नहीं कर सकता की कोई भी एक विभाग पूर्णतः भ्रष्टाचार से मुक्त हो सका है। देश की तरक्की मे बाधक बना यह मुद्दा सिर्फ शोर-शराबे तक ज्यादा सीमित है।

वादे हैं वादों क्या, भ्रष्टाचार को लेकर कुछ ऐसी ही हालत भारत की है। भ्रष्टाचार को लेकर राजनीतिक दल बड़े-बड़े दावे करते हैं। भाजपा गठबंधन ने लोकसभा चुनाव के दौरान विपक्षी दलों के भ्रष्टाचार को प्रमुख मुद्दा बनाया था। इसी तरह विपक्षी दलों ने भी केंद्र की भाजपा सरकार के खिलाफ भ्रष्टाचार को निशाने पर रखा था। सत्ता पक्ष और विपक्ष के भ्रष्टाचार पर एक-दूसरे पर जबरदस्त प्रहार के बावजूद यह मुद्दा सुरसा के मुंह की तरह लगातार फैलता ही जा रहा है। भ्रष्टाचार की इस गंगोत्री से कोई अछूता नहीं है। भ्रष्टाचार का जड़ से खात्मा करना तो दूर बल्कि सत्ता तंत्र भ्रष्टाचारियों की ढाल बन कर खड़ा है। इसमें कोई भी राजनीतिक दल पीछे नहीं हैं। देश को खोखला करने वाले इस धीमे जहर को संरक्षण देने में केंद्र और राज्यों की सरकारों पीछे नहीं हैं। केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और राज्य सरकारों ने 212 मामलों में केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) को भ्रष्टाचार के दोषी पाए गए 543 अफसरों व कार्मिकों पर अभियोजन स्वीकृति लंबित है। सीबीआई के कामकाज पर निगरानी रखने वाले केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) की रिपोर्ट के मुताबिक इनमें राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों (यूटी) की सरकारों में अभियोजन स्वीकृति के 41 मामले शामिल हैं जिनमें 149 अधिकारी भ्रष्टाचार के दोषी पाए गए हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले साल भ्रष्टाचार की सबसे अधिक शिकायतें रेलवे कर्मचारियों के खिलाफ की गईं।

इसके बाद दिल्ली के स्थानीय निकायों और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के खिलाफ शिकायतें मिलीं। रिपोर्ट के अनुसार, 2023 में सभी श्रेणी के अधिकारियों/कर्मचारियों के खिलाफ भ्रष्टाचार की कुल 74,203 शिकायतें मिलीं, जिनमें से 66,373 का निपटारा कर दिया गया और 7,830 शिकायतें लंबित हैं। सीवीसी की रिपोर्ट के अनुसार केंद्र सरकार में वित्त मंत्रालय के विभिन्न विभागों में अभियोजन स्वीकृति के सबसे ज्यादा 75 मामले लंबित हैं जिनमें 197 भ्रष्ट अफसर-कार्मिक फंसें हैं। इनमें वित्तीय सेवा विभाग के 53 मामलों में मुकदमा चलाने की अनुमति लंबित है। वित्त मंत्रालय के बाद रक्षा, रेल, शिक्षा तथा कार्मिक मंत्रालयों में लंबित मामलों की संख्या अपेक्षाकृत ज्यादा है। राज्य सरकारों/केंद्र शासित प्रदेशों में भ्रष्टाचार के मामलों में सैकड़ों अफसरों के खिलाफ अभियोजन की स्वीकृति नहीं दी जा रही है। राज्यों/केंद्र शासित राज्यों में कुल 41 भ्रष्टाचार के मामलों 149 अधिकारी आरोपी हैं। इनमें महाराष्ट्र में 3 मामलों में 41 अधिकारी, उत्तर प्रदेश में 10 मामलों में 31, प.बंगाल में 4 मामलों 25, केंद्र शासित जम्मू-कश्मीर में 4 में 19, पंजाब में 4 में 6, मध्यप्रदेश में 1 भ्रष्टाचार के प्रकरण में एक अधिकारी शामिल है। रिपोर्ट के मुताबिक नियमों के अनुसार सीबीआई से प्रस्ताव भेजे जाने के बाद अधिकतम तीन माह में अभियोजन स्वीकृति देने का प्रयास किया जाना चाहिए लेकिन लंबित मामलों में 249 अधिकारियों के खिलाफ 81 मामले तीन माह की अवधि से अधिक पुराने हैं।

सीवीसी की रिपोर्ट में उन मामलों का भी जिक्र किया है जिनमें जांच में दोषी पाए गए अफसरों के खिलाफ आयोग की सिफारिशों को भी दरकिनार कर दिया गया। इनमें विभिन्न मंत्रालयों और केंद्र सरकार के अधीन संस्थाएं (पीएसयू-बैंक आदि) शामिल हैं। सीवीसी केंद्रीय मंत्रालयों और पीएसयू-बैंकों में मुख्य सतर्कता अधिकारियों (सीवीओ) के जरिये भ्रष्टाचार व अनियमितताओं पर नजर रखता है। सीवीसी ने कहा है कि कुछ संगठन आयोग की सलाह पर अमल करने और आरोपी अधिकारी को चार्जशीट जारी करने में देरी करते हैं। इससे कई मामलों में दोषी अधिकारी सेवानिवृत्त हो जाता है और समय सीमा चूकने के कारण कोई भ्रष्ट अधिकारी पर कोई कार्रवाई नहीं हो पाती। गौरतलब है कि सरकारी विभागों में विषबेल की तरह बढ़ते भ्रष्टाचार पर भारत विश्व में कलंकित हो रहा है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2023 के लिए भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक में भारत 180 देशों में 93वें स्थान पर रहा। जबकि वर्ष 2022 में भारत की रैंक 85 वीं थी। अर्थात भारत में भ्रष्टाचार की रफ्तार थमी नहीं है। इसमें तेजी आई है। इस सूचकांक में भारत आठ पायदान आगे बढ़ गया। वर्ष २०२३ की रिपोर्ट के मुताबिक दक्षिण एशिया में पाकिस्तान (133) और श्रीलंका (115) अपने अपने कर्ज के बोझ तले दबे हैं और राजनीतिक अस्थिरता से जूझ रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया कि हालांकि दोनों देशों में मजबूत न्यायिक निगरानी है, जो सरकार को नियंत्रण में रखने में मदद कर रही है। रिपोर्ट में कहा गया है कि चीन (76) ने पिछले दशक में भ्रष्टाचार के लिए 37 लाख से अधिक सार्वजनिक अधिकारियों को दंडित करके अपनी आक्रामक भ्रष्टाचार विरोधी कार्रवाई से सुर्खियां बटोरीं।

भ्रष्टाचार से देश एक भी राज्य और केंद्र शासित प्रदेश अछूता नहीं है। केंद्र हो या राज्यों में चाहे किसी भी राजनीतिक दल की सरकारें हों, किन्तु एक भी सत्तारुढ़ दल यह दावा नहीं कर सकता की कोई भी एक विभाग पूर्णतः भ्रष्टाचार से मुक्त हो सका है। देश की तरक्की मे बाधक बना यह मुद्दा सिर्फ शोर-शराबे तक ज्यादा सीमित है। जमीनी स्तर पर कोई भी राजनीतिक दल इसके जड़ सहित खात्मे की दिशा को लेकर गंभीर नहीं है। ऐसा नहीं है कि भ्रष्टाचार के मामलों सिर्फ नौकरशाह ही शामिल हैं। राजनेता भी इसमें पीछे नहीं हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो दोनों के गठजोड़ के कारण ही भ्रष्टाचार लगातार बढ़ता जा रहा है। केंद्र और राज्यों की सरकारें विकास और पारदर्शिता के चाहे जितने दावे कर लें, जब तक भ्रष्टाचार मौजूद है तब तक देश इस मुद्दे पर शर्मसार होता रहेगा।

पश्चिम एशिया

बड़े युद्ध का खतरा

पश्चिम एशिया में बड़े युद्ध का खतरा मडरा रहा है जिसका कारण इस्राइल, हिजबुल्ला और ईरान के बीच टकराव का विस्फोटक बिंदु तक पहुंचना है। पश्चिम एशिया में गंभीर स्थिति को देखते हुए इस क्षेत्र में पूर्ण युद्ध छिड़ने से आश्चर्य नहीं होगा। हिजबुल्ला के लंबे समय से प्रमुख रहे हसन नसरुल्ला की हत्या इस्राइल व लेबेनान के चरमपंथी समूह के बीच जारी टकराव बढ़ने का कारण है। इस घटनाक्रम से न केवल ईरान, बल्कि अमेरिका भी व्यापक व संभवत: विनाशकारी युद्ध में फंस सकते हैं। अपने नेता तथा 'कमांड ढांचे' के विनाश के बाद हिजबुल्ला महत्वपूर्ण मोड़ पर है। उसके एक दर्जन से अधिक सर्वोच्च कमांडर मारे गए हैं तथा उसका संचार नेटवर्क ध्वस्त हो गया है। इससे इस समूह को काफी आपरेशनल चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। लेकिन हिजबुल्ला के हार मान लेने की उम्मीद नहीं है। इस समूह में हजारों लड़ाके हैं तथा उसके पास दूर तक मार करने व सटीक हमला करने वाली मिसाइलें हैं जिनसे बड़े इस्राइली शहरों पर निशाना लगाया जा सकता है और उसने बदला लेने की प्रतिज्ञा की है। कतारों से दबाव बढ़ने के कारण पूरी संभावना है कि हिजबुल्ला इस्राइल के खिलाफ बड़े हमले का प्रयास करे जिससे इस्राइली वायु रक्षा प्रणाली निष्प्रभावी हो सकती है। यदि ऐसा हमला होता है और उसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में नागरिक हताहत हों तो इस्राइल की प्रतिक्रिया तेज और विनाशकारी होगी। वह लेबेनान की ढांचागत संरचना पर निशाना लगाएगा तथा युद्ध का विस्तार ईरान तक कर सकता है। इस स्थिति में पूरे क्षेत्र में तनाव फैल सकता है जिससे व्यापक अव्यवस्था पैदा होगी।

हिजबुल्ला की तरह ईरान के लिए भी नसरुल्ला का निधन बड़ा धक्का है। ईरान ने अभी तक हमास के राजनेता इस्माइल हानिया की हत्या का बदला नहीं लिया है और अब उस पर बदला लेने के लिए कट्टरपंथियों का भारी दबाव है। हथियारबंद समूहों के नेटवर्क के कारण ईरान का प्रभाव इस क्षेत्र के बाहर तक जाता है जिसे 'एक्सिस आफ रेजीस्टेंस' कहते हैं। इसमें हिजबुल्ला, यमन के हूती तथा सीरिया और ईराक के विभिन्न समूह शामिल हैं। हालांकि, तेहरान अपने इन 'मुहरों' का प्रयोग इस्राइल पर दबाव बनाने के लिए करेगा और वह पूर्ण युद्ध से बचने के लिए इसकी प्रतिक्रिया पर गौर करेगा। इस्राइल के इरादे अब पहले के किसी समय की तुलना में अधिक स्पष्ट हैं। नसरुल्ला की हत्या से संकेत मिलता है कि 21 दिन के युद्धविराम के लिए अंतरराष्ट्रीय दबाव के बावजूद इस्राइल अब अपना सैनिक अभियान रोकने वाला नहीं है। दबाव डालने वालों में उसका निकटतम सहयोगी अमेरिका भी है। इस्राइल का विश्वास है कि उसने हिजबुल्ला को रक्षात्मक स्थिति में ला दिया है और उसका इरादा समूह से मिसाइल खतरा समाप्त होने तक युद्ध जारी रखना है। व्यापक युद्ध के विनाशकारी परिणाम न केवल युद्ध में सीधे भाग लेने वाले पक्षों, बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए होंगे। पहले से आर्थिक बरबादी के कगार पर पहुंचा लेबेनान गहरे संकट में फंसेगा। इससे वैश्विक तेल सप्लाई प्रभावित होने से पूरी अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था प्रभावित हो सकती है। आगामी सप्ताह यह तय करने के लिए महत्वपूर्ण होंगे कि यह टकराव व्यापक क्षेत्रीय युद्ध में बदलता है अथवा राजनयिक प्रयासों से इसे और भड़कने से रोकने में सहायता मिलती है। वर्तमान समय में यह पूरा क्षेत्र अस्थिरता का शिकार है और टकराव का कोई निकट समाधान नजर नहीं आ रहा है। इस समय संयुक्त राष्ट्रसंघ तथा पश्चिमी देशों को सामने आ कर सुलह-समझौते के प्रयास करने चाहिए नहीं तो निश्चित रूप से पूरे क्षेत्र में आग लग जाएगी।

चीन की भ्रामक सैनिक शक्ति

तकनीकी प्रगति के बावजूद झाऊ वर्ग की पनडुब्बी डूबने जैसी घटनाओं ने यीन के सैनिक शक्ति के दावों और उसकी वास्तविकता के बीच व्यापक खाई पैदा हो गई है।

भूपिंदर सिंह
(लेखक, सेवानिवृत्त सेनाधिकारी हैं)

तकनीकी प्रगति के बावजूद झाऊ वर्ग की पनडुब्बी डूबने जैसी घटनाओं ने यीन के अपनी विशाल सैनिक शक्ति होने के दावों और उसकी वास्तविकता के बीच व्यापक खाई पैदा हो गई है। इससे स्पष्ट होता है कि चीनी रणनीति के केन्द्र में ही 'धोखाधड़ी' अंतर्निहित रूप से स्थापित है। यह बात खासकर सैनिक मामलों में शुरू से ही बनी हुई है। चीन के प्राचीन दार्शनिक शुन जू के 'आर्ट आफ वार', यानी युद्धकला में व्यापक रूप से धोखाधड़ी को एक 'जादुई हथियार' की तरह पेश किया गया है। इस प्रकार धोखाधड़ी वाले युद्ध की अवधारणा पहले से ही सामने आई थी। चीनी 'पीएलए नैवी सबमैरीन अकादमी' ने औपचारिक रूप से युद्ध में धोखाधड़ी के चार प्रकार बताए हैं। उसके मैनुअल 'एसेंसियल्स आफ सुन जू एंड आर्ट आफ वार एंड सबमैरीन आपरेशन्स' में इनको शामिल किया गया है।

इनके अनुसार, पहले 'दुश्मन को डराने के लिए अपना प्रदर्शन करो' तथा फिर 'दुश्मन को भ्रमित करने के लिए छद्म प्रदर्शन करो'। इसके बाद तीसरा सिद्धान्त 'दुश्मन को परेशान करने के लिए गतिशीलता पैदा करो' और अंत में 'दुश्मन को रोकने के लिए उसे धोखा दो' का स्थान आता है। इस प्रकार झूठ बोलना चीनी युद्धकला में एक प्राकृतिक आवश्यकता के रूप में सामने आता है।

भारत को अच्छी तरह गौर करना चाहिए कि चीनी पहले कैसे 1962 के भारत-चीन युद्ध के बारे में बात करते थे, पर वे 1967 में नाथूला दर्रे और चोला सीमा टकरावों में अपनी पराजय पर पूरी तरह खामोश रहे। इन झड़पों में लगभग 340 चीनी सैनिक मारे गए थे और 88 भारतीय सैनिक शहीद हुए थे, लेकिन चीन ने अपनी झूठ बोलने की शैली पर चलते हुए केवल 82 हताहत चीनी माने थे। इसी प्रकार चीनी 1979 के चीन-वियतनाम युद्ध में मारे गए चीनी सैनिकों के बारे में झूठ बोलते रहे या आंकड़ों के बारे में उन्होंने दुनिया भर में भ्रम पैदा करने का प्रयास किया। जानबूझ कर तथ्यों को छिपाने और झूठ बोलने की यह आदत 2020 में वास्तविक नियंत्रण रेखा-एलएसी पर भारत-चीन झड़प के मामले में भी दुहराई गई। जहां भारत ने पूरी ईमानदारी के साथ झड़पों में हताहत हुए अपने वीर जवानों की संख्या उजागर की, वहीं चीन अपने सैनिकों के हताहत होने की बात पर पर्दा डालता रहा।

यह इस तथ्य के बावजूद था कि अमेरिका ने हताहत चीनी सैनिकों की संख्या 20-35 बताई थी, जबकि रूस के अनुमान से चीन के लगभग 45 सैनिक मारे गए थे। आस्ट्रेलिया ने भी अनुमान लगाया था कि कम से कम 41 चीनी सैनिक भारतीय सैनिकों के साथ हुई झड़प में मारे गए थे। लगभग एक साल बाद चीन ने प्रकारान्तर से गलवान झड़पों में केवल चार सैनिकों का निधन स्वीकार किया और इसके लिए उनको वीरता पुरस्कार दिए गए। झूठ बोलने की अपनी आदत के अनुसार, चीनी हमेशा अपनी उपलब्धियों को बढ़ा-चढ़ा कर पेश करते हैं, जबकि अपने नुकसान को अनदेखा कर खासकर अपने ही नागरिकों को धोखा देने का प्रयास करते हैं।

इस प्रकार वे 'जानबूझ कर' अपने अजेय और वीर होने का भ्रम पैदा करते हैं, जबकि वास्तव में वे बहुत कमजोर हैं और उनमें वीरता जैसी कोई बात नहीं है। फर्जी दावे करने, अपनी विफलताओं को कम कर दिखाने तथा क्षमताओं को बढ़ा-चढ़ा कर पेश करने की 'संप्रभु इच्छा' को उन्होंने एक कला के रूप में विकसित किया है। इसका कारण यह है कि कोई तानाशाह सरकार किसी प्रकार भी स्वयं को कमजोर नहीं दिखाना चाहती है। यह बात आमतौर से तकनीकी प्रगति के उनके दावों तथा आधुनिकतम हथियार और प्लेटफार्म विकसित करने के उनके दावों में स्पष्ट दिखाई देती है।

वे स्वयं को तकनीक व हथियारों के विकास में अमेरिका या रूस से लगातार आगे दिखाते रहते हैं। लेकिन यथार्थ यह है कि वे अनिवार्य रूप से 'रिवर्स इंजीनियरिंग तकनीकों' पर निर्भर हैं। वे धड़ल्ले से दूसरे देशों की तकनीक चोरी करते हैं या उसे धोखाधड़ी कर दूसरो से हासिल करते हैं, लेकिन बड़ी खुशी से इसे अपनी 'स्वदेशी तकनीक' के रूप में पेश करते हैं।

उनके अधिकांश 'पांचवी पीढ़ी' के लड़ाकू विमान, इंटरकांटीनेंटल बैलिस्टिक मिसाइलें, हाइपरसोनिक तकनीकों तथा चीनी नाभिकीय पनडुब्बियां सार्वजनिक रूप से खबरों में तो रहती हैं, पर मूलत: उनका परीक्षण नहीं हुआ है और न वे किसी लड़ाई में कारगर पाई गई हैं। हालांकि, उनका औद्योगिक आधार काफी बड़ा है और रक्षा उद्योगों को भारी बजटीय आबंटन किया गया है, पर चीन के बाकी सभी दावों की तरह ये दावे भी भ्रामक रूप से यथार्थ की तुलना में ज्यादा शानदार दिखते हैं। इस संदिग्ध पृष्ठभूमि में हाल ही में चीन की नवीनतम नाभिकीय पनडुब्बी के डूबने की खबर आई। तथ्य यह है कि झाऊ क्लास की यह आक्रामक पनडुब्बी सेवा में आने के पहले ही डूब गई। इससे स्पष्ट होता है कि तकनीकी प्रगति के चीनी दावों और उनकी यथार्थ क्षमता के बीच कितनी बड़ी खाई मौजूद है। संयोग से अमेरिकन उप-विदेश सचिव कर्ट कैंपबेल ने पुष्टि की कि रूसी चीन को पनडुब्बी तकनीक विकसित करने में सहायता दे रहे थे और यह उनकी 'स्वदेशी तकनीक' पर निर्मित नहीं थी, जबकि चीन ने यही दावा किया था।

हालांकि, पनडुब्बी डूबने की यह घटना मई के प्रारंभ में हुई थी, पर चीन ने इसे कभी स्वीकार नहीं किया। उपग्रह से प्राप्त चित्रों से ही पता चला कि चीन की पहली नाभिकीय शक्ति चालित पनडुब्बी डूब गई है। निश्चित रूप से यह चीन के प्राथमिकता वाले आयुध विकास कार्यक्रमों को तगड़ा धक्का है क्योंकि इनका प्रयोग चीन अपने विस्तारवादी व वर्चस्ववादी इरादों के लिए करना चाहता है। इस घटना से हुई बदनामी छिपाने तथा एक और विमर्श तैयार करने के लिए चीन ने प्रशांत महासागर में एक इंटरकांटीनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल दागी। इस कदम का उद्देश्य सारी दुनिया का ध्यान डूबी पनडुब्बी से हटाने के लिए तथा अपनी क्षमता और शक्ति प्रदर्शित करने के लिए था। चूंकि प्रशांत महासागर में यह परीक्षण चार दशक बाद हुआ है, इसलिए स्पष्ट रूप से यह 'संकेत देने' के लिए किया गया है कि 'ड्रैगन के पंजे अब भी तेज हैं तथा दांत जहरीले हैं।'

संयोग से यह मिसाइल पीएलए की 'राकेट फोर्स' का हिस्सा है जो भयानक भ्रष्टाचार के मामलों, अधिकारियों को निकाले जाने तथा पिछले साल पूरे परिवर्तन का शिकार रही है। यह समस्या पीएलए नौसेना नेतृत्व में भी व्याप्त है जो डूबी पनडुब्बी की इन्चार्ज थी। पाकिस्तान या बांग्लादेश जैसे पुराने खरीदारों ने भी चीनी हथियारों के अधोमानक होने की शिकायतें की हैं। उनकी शिकायत खासकर नौसेना के लिए खरीदे हिस्से-पुर्जों के घटिया होने की रही है। विश्व स्तर पर सैनिक सप्लायर के रूप में रूस की स्थिति में गिरावट का लाभ स्वत: चीनी विनिर्माताओं को बिजनेस मिलने के रूप में सामने नहीं आया है, जबकि पहले आशा थी कि 'मेड इन चाइना' की बढ़ती छवि के कारण चीन को करोड़ों-करोड़ का लाभ होगा। लेकिन चीनी उत्पादों पर प्रतिक्रिया के कारण ऐसा नहीं हुआ। पाकिस्तान हथियार बाजार में अमेरिका वापस आ गया है, जबकि इस्लामाबाद चीनी हथियार निर्यात में 50 प्रतिशत से अधिक का खरीदार था।

इसके साथ ही चीनी अर्थव्यवस्था की गति धीमी पड़ने के कारण उस पर बहुत दबाव है। इस कारण बीजिंग हथियारों पर निवेश, खोज तथा उनको बेचने में गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा है। उसके दावों और यथार्थ के बीच अंतर के कारण स्थिति और खराब हो रही है। हालांकि, अभी यह कहना बहुत जल्दबाजी होगी कि चीन का 'सैनिक-औद्योगिक गठजोड़' निकट भविष्य में पूर्णत: विफल हो जाएगा, लेकिन चीन के बड़बोले दावों के लगातार ध्वस्त होने के कारण उसकी स्थिति खराब होती जा रही है।

हालांकि, चीन अभी भी परेशान, तानाशाह और दु:साहसी देशों के लिए 'मुख्य आधार' बना हुआ है, पर उसके अद्यतन तकनीक प्राप्त करने और हथियारों में उसके प्रयोग के दावे गंभीर संदेह के घेरे में आ गए हैं।

शून्य का आध्यात्मिक महत्व

> जैसे एक परमाणु भौतिक दुनिया के लिए और एक आत्मा आध्यात्मिक दुनिया के लिए है, वैसे ही शून्य दोनों दुनियाओं का प्रतीक है।

ब्रह्मकुमार निकुंज
(लेखक, आध्यात्मिक उपदेशक हैं)

शून्य वह संख्या है जिसे लोग अक्सर महसूस करते हैं, एक से ज़्यादा, है न? क्योंकि ज़्यादा शून्य का मतलब है ज़्यादा समृद्धि। हालांकि आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, शून्य वह बिंदु है जहां से अन्य सभी संख्याएं निकलती हैं। देखने में भी शून्य एक बीज, गर्भ या अंडे का प्रतीक है जिससे शुद्ध क्षमता निकलती है। चूंकि शून्य दिखने में एक वृत्त जैसा दिखता है, इसलिए यह अनंत काल, विकास और अनंत का प्रतीक है। जैसे एक परमाणु भौतिक दुनिया के लिए और एक आत्मा आध्यात्मिक दुनिया के लिए है, वैसे ही शून्य दोनों दुनियाओं का प्रतीक है।

पाइथागोरस ने शून्य के चिह्न को सभी चीज़ों के लिए कंटेनर और अन्य सभी मूल्यों के जन्म स्थान के रूप में देखा। शून्य की खोज ने हमारे गणना, गणना और संचार के तरीके को बदल दिया। ये सभी कार्य आज मानव गतिविधि के लगभग सभी क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं। शून्य को धनात्मक और ऋणात्मक पूर्णांकों के साथ एक सम संख्या के रूप में गिना जाता है। यह संख्या-मूल्य प्रणाली में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक हज़ार, सौ, दस या दस लाख जैसी संख्या में एक अंक के मूल्य और स्थान को परिभाषित करता है। एक तरह से, यह एक प्रतीक है जो शून्यता को परिभाषित करता है।

शून्य मानव जीवन के असंख्य क्षेत्रों में अपने योगदान के संदर्भ में मूल्यवान है, लेकिन इसका उपयोग धार्मिक और आध्यात्मिक दर्शन में रहस्यमय अवधारणाओं का वर्णन करने के लिए किया गया है। हिंदी में शून्य को %शून्य% कहा जाता है जिसका अर्थ है शून्य, जागरूकता की सर्वोच्च अवस्था जहाँ सब कुछ शून्य हो जाता है। आध्यात्मिक साधक इस अवस्था को मुक्ति या निर्वाण के रूप में देखते हैं जिसमें आत्मा सांसारिक जीवन के सभी छापों, प्रभावों और अशुद्धियों से मुक्त होकर अपनी मूल अवस्था में लौट आती है। शून्य एक अण्डाकार वृत्त की तरह दिखता है जो अनंतता का प्रतिनिधित्व करता है जो सृष्टि का शाश्वत चक्र है। सब कुछ नए सिरे से बनने से पहले शून्य या शून्य में लौट जाता है। इसलिए, अधिकांश आध्यात्मिक शिक्षक शून्य अवस्था प्राप्त करने पर जोर देते हैं, यानी सभी सांसारिक विचारों से मन को खाली करना और मुक्ति और शांति प्राप्त करने के लिए भौतिक शरीर की जागरूकता से अलग होना।

अंडाकार आभा से घिरे प्रकाश के बिंदु के रूप में आत्मा या सर्वोच्च सर्वशक्तिमान का अंडे के आकार का प्रतीक भी शून्य जैसा दिखता है। अपनी मूल अवस्था में, प्रत्येक आत्मा शून्य की तरह होती है और इसकी कोई सांसारिक पहचान या भूमिका नहीं होती है, लेकिन एक बीज की तरह, इसमें अनंत शक्तियां और गुण समाहित होते हैं, जो तब प्रकट होते हैं जब आत्मा इस संसार में कर्म के क्षेत्र में प्रवेश करती है।

सर्वशक्तिमान शाश्वत बीज है जो हमेशा जागरूकता की शून्य अवस्था में रहता है, हर चीज़ से अलग होता है, फिर भी अनंत दिव्य गुणों और शक्तियों से भरा होता है जो पूरी सृष्टि को सहारा देते हैं। जब भी सृष्टि क्षीण और पुरानी हो जाती है, तो वह इस शून्य की सर्वोच्च अवस्था से एक परिपूर्ण नई दुनिया का निर्माण करता है।

शून्य की तरह, आत्मा का भी मूल रूप से एक सम या सकारात्मक चरित्र होता है। जिस तरह 2 का ऋणात्मक - 2 होता है जिसका अर्थ है 2 की कमी, सकारात्मक गुणों की जागरूकता की कमी आत्मा में नकारात्मक या विषम लक्षणों के रूप में प्रकट होती है। गणना में शून्य की संख्या के बहुत ही विशेष कार्य होते हैं। शून्य में कुछ भी जोड़ा या घटाया जाए तो वह अपरिवर्तित रहता है। किसी भी संख्या को शून्य से गुणा करने पर शून्य प्राप्त होता है जबकि किसी भी संख्या को शून्य से भाग देने पर अनंत प्राप्त होता है।

दिलचस्प बात यह है कि जब हम किसी संख्या के बाद शून्य जोड़ते हैं, तो उसका मान दस गुना बढ़ जाता है। ये विशेषताएँ उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर को दी जा सकती हैं जो अनंत काल के चक्र में अपरिवर्तित रहता है।

वह कर्मों के फल का आनंद नहीं लेता है और उसकी शक्तियों में कुछ भी जोड़ा, घटाया, गुणा या भाग नहीं किया जा सकता है। जब हम खुद को उससे जोड़कर अपनी शक्तियों को गुणा करते हैं, तो हम भी उसके जैसे सभी दिव्य गुणों से भरे शून्य बन जाते हैं। तो आइए हम शून्य अवस्था में रहने और चेतना की उच्च अवस्था को प्राप्त करने का प्रयास करें ताकि सभी चिंताओं, तनावों और तनावों से मुक्त जीवन जी सकें।

आप की बात

खड़गे का विलाप

मल्लिकार्जुन खड़गे हमेशा ही मोदी के खिलाफ उटपटांग बयान देते रहते हैं। एक चुनावी सभा में तबीयत बिगड़ने और इलाज के बाद ठीक होने पर उन्होंने कह दिया कि मोदी को सत्ता से हटाए बिना मैं मरने वाला नहीं हूं। एक वरिष्ठ नेता का दूसरे वरिष्ठ नेता एवं देश के प्रधानमंत्री के बारे में इस तरह आपत्तिजनक कथन जनता को पसंद नहीं आयेगा। यह बयान खड़गे का विलाप ही कहा जा सकता है। दूसरी ओर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खड़गे की बीमारी की खबर मिलने पर फोन कर उनका हाल-चाल जाना एवं उनके अच्छे स्वास्थ्य की कामना भी की। पिछले 10 साल में विपक्षी नेताओं और उनके उकसावे पर समर्थकों ने मोदी के मरने के नारे तक लगाए और उनको भांति-भांति की गालियां दीं। लेकिन बुरा होने के बजाय देश-दुनिया में मोदी की ख्याति बढ़ी। खड़गे का बयान उनकी निराशा का प्रतीक भी है क्योंकि पिछले लोकसभा चुनाव में संविधान के नाम पर झूठ बोलने तथा जनता को आरक्षण के नाम पर भड़काने और बहकाने के बावजूद कांग्रेस सैकड़े तक नहीं पहुंच सकी। ऐसे बयान मोदी को और शक्ति प्रदान करेंगे तथा निश्चित रूप से वे 2029 में एक बार फिर भाजपा के प्रधानमंत्री उम्मीदवार बनेंगे। देखना होगा तब उनकी अध्यक्षता वाली पार्टी की क्या हालत होगी?

- **मनमोहन राजावत,** शाजापुर

नवरात्रि का संकल्प

हाल के दिनों में पूरे देश में दुष्कर्म की दिल दहलाने वाली खबरें आ रही हैए इन खबरों को पढ़कर व सुनकर तो अब वाकई में स्वयं को सुसभ्य समाज कहने में भी शर्म आती है। अपने आपको सभ्य कहने पर हंसी भी आती है, रोना भी आता है। जिस देश में शान से माता गंगा को पूजा जाता है, मां सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती का पूजन किया जाता है, वट सावित्री की पूजा की जाती है, नवरात्रि में धूमधाम से मां दुर्गा की आराधना करते हुए व्रत- उपवास करते हैं और मां गंगा की कसम खाई जाती है, उसी देश में मां स्वरूप बच्चियों व नारी का इतना अपमान, तिरस्कार हमारे सभ्य चेहरे पर कालिख के समान है। कह सकते हैं कि हम में से अनेक लोग केवल दिखावे वाली बगुला भक्ति ही करते हैं, यानी मुख में राम और मन में शैतान। हम जिस श्रद्धा, आस्था व विश्वास के साथ मां स्वरूपा की पूजा करते हैं, उसी श्रद्धा व विश्वास के साथ बच्चियों व नारियों का सम्मान करें तो ही सुसभ्य समाज कहलाने में गर्व महसूस कर सकते है। 3 अक्टूबर से नवरात्रि का पर्व शुरू हो रहा है । इस बार सभी पुरुषों को संकल्प लेना चाहिए कि हम ऐसा आचरण कदापि नहीं करें जो हमारे संस्कारों और उसूलों के विरुद्ध हो तथा बच्चियों की सुरक्षा करें।

- **हेमा हरि उपाध्याय,** खाचरोद

यूपीआई पर टैक्स

यूपीआई सिस्टम ने लेन-देन में क्रांति ला दी है। इससे लेन-देन फोन पर टैप करने जितना आसान हो गया है। अब वॉलेट रखने की जरूरत नहीं है, जेब में मोबाइल होना ही काफी है। मिर्च-धनिया जैसी साधारण चीजें खरीदनी हों या मॉल में बड़ी खरीदारी करनी होए यूपीआई पेमेंट ने तुरंत लेन-देन सहज बना दिया है। नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया के आंकड़ों के अनुसार, यूपीआई ट्रांजेक्शन में 57 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है और यह 100 अरब के आंकड़े को पार कर गया है। लेकिन इस पर टैक्स लगाने पर विचार किया जा रहा है। हालांकि, 75 फीसदी से ज्यादा लोगों ने संकेत दिया है कि अगर शुल्क लगाया जाता है तो वे यूपीआई का इस्तेमाल बंद कर सकते हैं और नकद लेन-देन पर वापस लौट सकते हैं। वैश्विक स्तर पर यूपीआई से भुगतान श्रीलंका, सिंगापुर, भूटान, यूएई, नेपाल, मॉरीशस और फांस सहित सात देशों में स्वीकार किए जा रहे हैं। अगर लेनदेन शुल्क लगाया गया तो यूपीआई अपनाने की गति धीमी हो सकती है और लोग नकदी या चेक जैसे पुराने तरीकों पर वापस लौट सकते हैं। इससे वित्तीय तरलता में संभावित रूप से कमी आ सकती है। इसे देखते हुए यूपीआई लेनदेन पर टैक्स लगाने का विचार ठीक नहीं लगता है।

- **दत्तप्रसाद शिरोडकर,** मुंबई

महिला सशक्तीकरण

पिछले कुछ दशकों से भारत में महिला सशक्तिकरण की दिशा में बहुत अच्छा कार्य हुआ है और सैना जैसे पुरुष-वर्चस्व वाले क्षेत्र में भी महिलाओं को उच्च पद दिए जाने लगे है। उधर महिला आरक्षण बिल भी पास हो गया है। जिसके अच्छे परिणाम अगले कुछ वर्षों में हमें देखने को मिलेंगे। मगर इन सब के बीच महिलाओं से क्रूरता, अत्याचार और भेदभाव की घटनाएं भी बढ़ती जा रही है। कठोर कानूनों के बावजूद अपराधियों के हौसले अभी बुलंद बने हुए हैं। इसके लिए अब खुद महिलाओं को भी दुर्गा वाहिनियां बनाकर आत्मरक्षा का प्रशिक्षण लेना होगा। आज इस्त्राइल में शत-प्रतिशत महिलाएं सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त हैं। जिसके परिणाम पूरी दुनिया के सामने हैं। हमारे देश में कम से कम आत्मरक्षा का प्रशिक्षण लेना सभी लड़कियों के लिए स्कूलों से विश्वविद्यालयों तक शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाया जाना चाहिए। इसके साथ ही पुलिस, अभियोजन व जिला स्तरीय न्यायपालिका में महिलाओं की उपस्थिति यथासंभव बढ़ाने के प्रयास करने चाहिए।

- **विभूति बुपक्या,** खाचरोद

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 17 अंक 195

बाजार की सहजता

बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) की बोर्ड बैठक में नियमन में कई बदलावों की घोषणा की गई। सेबी चेयरपर्सन के खिलाफ हितों के टकराव के आरोपों और खराब कार्यसंस्कृति के आरोपों के बीच नियामक काफी दबाव में था। ये दोनों ही विषय बोर्ड मीटिंग के एजेंडे में नहीं थे।

बोर्ड ने कई बदलाव पेश किए। उदाहरण के लिए म्युचुअल फंड के लिए एक नई प्रस्तावित परिसंपत्ति श्रेणी और पैसिव स्कीम के लिए अपेक्षाकृत हल्के मानक पेश किए गए। पैसिव स्कीम में वे म्युचुअल फंड आते हैं जो मानक सूचकांकों का अनुकरण करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सेबी का ध्यान कारोबारी सुगमता बढ़ाने पर है। नियामक के वक्तव्य में इसका इस्तेमाल कई बार किया गया। जो उपाय अपनाए गए हैं उनमें से कई पर अतीत में मशविरा पत्रों के माध्यम से चर्चा की जा चुकी है। सेबी के बोर्ड ने कम खुलासों, राइट इश्यू के लिए तेज प्रक्रिया, टी प्लस 0 सेटलमेंट (शेयरों के कारोबार का उसी दिन निपटान) का विस्तार और टी प्लस 0 सेटलमेंट साइकिल के तहत ब्लॉक हुए सौदों के लिए वैकल्पिक प्रणाली आदि पर सहमति जताई। उसने भेदिया कारोबार नियमन की रोकथाम का दायरा बढ़ाया। खुदरा निवेशकों को यह इजाजत होगी कि वे एकीकृत भुगतान इंटरफेस ब्लॉक व्यवस्था का इस्तेमाल कर सकेंगे जो प्राथमिक इश्यू के लिए रोकी गई राशि समर्थित ऐप्लीकेशन (एएसबीए) के समान होगी।

उदाहरण के लिए नई परिसंपत्ति श्रेणी 'निवेश रणनीति' को पहले चर्चा किए जा चुके ढांचे के अधीन रखा जा रहा है। इसका इरादा पारंपरिक म्युचुअल फंड और पोर्टफोलियो प्रबंधन सेवाओं के बीच के अंतर को पाटना है। 10 लाख रुपये की न्यूनतम सीमा तय करके वह यह सुनिश्चित करने का काम करेगी कि केवल अपेक्षाकृत अमीर निवेशक और जोखिम ले सकने वाले ही भागीदारी कर सकें। इससे गैर पंजीकृत योजनाओं को बाजार से बाहर करने में मदद मिलेगी। म्युचुअल फंड लाइट के ढांचे पर भी चर्चा हुई। यह विशुद्ध संपत्ति, पुराने प्रदर्शन और प्रायोजकों के मुनाफे की आवश्यकता को कम करके नए कारोबारियों के लिए पैसिव प्रबंधन वाले फंड में प्रवेश आसान बनाता है। न्यासियों पर अनुपालन का अधिक बोझ नहीं होगा और पैसिव योजनाओं की शुरुआत के लिए मंजूरी प्रक्रिया को सुसंगत बनाया जाएगा। इससे प्रतिस्पर्धा और निवेशकों के समक्ष निवेश विकल्प बढ़ेंगे। एक राइट इश्यू की प्रोसेसिंग की अवधि को कम करके अधिकतम 23 कार्य दिवस किया जा रहा है जो पहले औसतन 317 दिन होती थी। इससे अतिरिक्त फंड जुटाने में मदद मिलेगी। सूचीबद्ध कंपनियों के लिए कई खुलासा मानकों को सहज बनाने के अलावा परिणामों का मीडिया में विस्तृत विज्ञापन भी वैकल्पिक बना दिया गया है। सेबी ने सूचीबद्ध कंपनियों के लिए एकल फाइलिंग व्यवस्था पेश की है ताकि प्रासंगिक रिपोर्ट, दस्तावेज आदि को एक एक्सचेंज पर फाइल किया जा सके जिसे स्वचालित ढंग से अन्य एक्सचेंज पर भेजा जा सके।

अगर बोर्ड मीटिंग कारोबारी अवधि के बाद समाप्त होती है तो मीटिंग के नतीजों को जारी करने की अवधि को 30 मिनट से बढ़ाकर तीन घंटे कर दिया गया है। किसी सूचीबद्ध कंपनी के खिलाफ दावों से जुड़े मुकदमे या विवाद के प्रकटीकरण के लिए 24 घंटे के बजाय 72 घंटे का समय दिया जाएगा, बशर्ते कि ऐसी सूचना को डिजिटल डेटाबेस में बनाकर रखा जाए। यह समझदारी भरे बदलाव हैं।

संबद्ध व्यक्ति की परिभाषा को विस्तार दिया गया है जिससे भेदिया कारोबार नियमन का दायरा बढ़ेगा। अब इसके दायरे में कई और लोग आएंगे। उदाहरण के लिए किसी संबद्ध व्यक्ति के साथ आवास साझा करने वाला व्यक्ति या किसी संबद्ध व्यक्ति की भागीदारी वाली फर्म में भागीदार या कर्मचारी व्यक्ति को भी इसके दायरे में रखा जाएगा जो परोक्ष रूप से किसी भी तरह प्रतिभूति बाजार से संबद्ध हैं। यह दायरा बहुत व्यापक है और देखना होगा कि यह हकीकत में कितना कारगर साबित होता है।

माइक्रोफाइनैंस क्षेत्र में नए दौर की शुरुआत

बैंक, लघु वित्त बैंक, एनबीएफसी, एमएफआई और फिनटेक कंपनियां कर्ज लेने वालों को लुभाने और कर्ज देने पर तुली हुई हैं। बता रहे हैं तमाल बंद्योपाध्याय

सूचीबद्ध माइक्रोफाइनैंस कंपनी फ्यूजन फाइनैंस लिमिटेड ने हाल ही में कहा कि फंसे हुए ऋणों में इजाफे को देखते हुए उसे 2024-25 की सितंबर तिमाही में 500-550 करोड़ रुपये अलग रखने पड़ सकते हैं। पहली तिमाही में फ्यूजन ने 348 करोड़ रुपये अलग रखे थे, जिसे प्रोविजनिंग भी कहते हैं। 21 सितंबर को स्टॉक एक्सचेंजों को दी सूचना में फ्यूजन ने कहा, 'वित्त वर्ष 2025 की पहली तिमाही के नतीजे जारी होने के बाद से कंपनी का प्रबंधन इस बात पर नजर रख रहा है कि कर्ज लेने वाले उसे चुकाते किस तरह हैं। कर्ज चुकाने के रुझान बताते हैं कि कंपनी का 500 करोड़ से 550 करोड़ रुपये तक का कर्ज फंस सकता है, जिसके लिए उसे प्रोविजनिंग करनी पड़ सकती है। फंसे कर्जों से होने वाले घाटे के लिए जो रकम रखी जाएगी, उसमें वित्त वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही के नतीजे आने के बाद संशोधन हो सकता है।'

एक माइक्रोफाइनैंस विश्लेषक का अनुमान है कि सितंबर तिमाही में कंपनी की सालाना ऋण लागत 17 फीसदी रहेगी, जो जून तिमाही की 11.8 फीसदी से अधिक है। फ्यूजन ने जून तिमाही में कर्ज लेने और उसे चुकाने के रुझान को ध्यान में रखा।

कंपनी के तिमाही नतीजे की घोषणा करते समय फ्यूजन के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी देवेश सचदेव ने विश्लेषकों को बताया कि कर्ज लेने वाले किस तरह अपनी उधारी बढ़ा रहे हैं। अलग-अलग कंपनियों से चार से ज्यादा कर्ज लेने वालों की संख्या बढ़ी है। सचदेव ने कहा, 'हमारे कई ग्राहकों ने दो या ज्यादा कर्ज लिए हैं, जिन्हें चुकाने की उनकी क्षमता भी नहीं है। इसका असर हमारे पोर्टफोलियो पर दिखा है क्योंकि कुछ कर्जदार बार-बार कहने पर भी किस्त नहीं चुका पाए हैं।'

उन्होंने यह बात विश्लेषकों को स्लाइड संख्या 8 दिखाने के बाद कही। आखिर इस स्लाइड में क्या था?

स्लाइड के मुताबिक मार्च 2023 में फ्यूजन के कुल ग्राहकों में से 'यूनीक' यानी केवल उसी से कर्ज लेने वाले ग्राहकों की हिस्सेदारी 33.4 प्रतिशत थी। अब यह घटकर 30.9 प्रतिशत रह गई है। फ्यूजन के अलावा किसी एक संस्था से कर्ज लेने वाले ग्राहकों की हिस्सेदारी भी 30.1 प्रतिशत से घटकर 19.7 प्रतिशत रह गई है। फिक्र की बात यह है कि तीन, चार या इससे अधिक संस्थाओं से ऋण लेने वाले ग्राहकों की तादाद 6.1 प्रतिशत से बढ़कर 16.9 प्रतिशत हो गई।

इसके अलावा फ्यूजन से 40,000 रुपये तक का कर्ज लेने वालों की संख्या मार्च 2023 के 39.4 प्रतिशत से घटकर मार्च 2024 में 30.7 प्रतिशत रह गई है। मगर इसी बीच कम से कम 1 लाख रुपये तक का सूक्ष्म ऋण लेने वालों की संख्या 22.7 प्रतिशत से बढ़कर 32.2 प्रतिशत हो गई है।

कई लोग मानते हैं कि स्लाइड 8 ने मार्च महीने में 15.9 करोड़ खाते रखने वाले माइक्रोफाइनैंस उद्योग को चेतावनी दी है। इनमें से 8.6 करोड़ खाते यूनीक कर्जदारों के हैं और बाकी के हिस्से में एक से ज्यादा कर्ज हैं। सवाल यह है कि कितने प्रतिशत कर्जदारों ने पांच, छह या ज्यादा ऋण लिए हैं?

मुझे ऐसा एक उदाहरण दिखा, जिसमें एक महिला 14 कंपनियों से कर्ज ले चुकी थी और 15वें के लिए आवेदन कर चुकी थी। उसके सभी कर्ज की किस्तें कुल मिलाकर 45,000 रुपये महीने बनती हैं मगर उसकी महीने की आमदनी केवल 30,000 रुपये है। इसमें भी 12,000 रुपये उसे घर चलाने के लिए चाहिए, जिसके बाद कर्ज चुकाने के लिए उसके पास केवल 18,000 रुपये बचते हैं। तो उसके पास क्या चारा बचा? पुराने कर्ज चुकाने के लिए नए कर्ज लेना!

यह उदाहरण एक क्रेडिट ब्यूरो के प्रबंध निदेशक ने दिया था। ऐसे कई कर्जदार हैं मगर उनकी संख्या शायद ज्यादा नहीं होगी। वित्त वर्ष 2017 में कुल माइक्रोफाइनैंस कर्ज करीब 1.07 लाख करोड़ रुपये था, जो सालाना 22.1 प्रतिशत चक्रवृद्धि दर से बढ़ते हुए वित्त वर्ष 2024 में 4.34 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया। इसी दौरान यूनीक कर्जदारों की संख्या केवल 6.9 प्रतिशत बढ़ी और प्रत्येक कर्जदार पर औसत ऋण सालाना 14.3 प्रतिशत चक्रवृद्धि दर से बढ़ा।

माइक्रोफाइनैंस क्षेत्र के दो स्वानियामकीय संगठनों में से एक माइक्रोफाइनैंस इंस्टीट्यूशन नेटवर्क (एमफिन) के सीईओ आलोक मिश्रा इस चिंता को नकारते हुए कहते हैं कि प्रत्येक ऋणकर्ता पर औसत बकाया ऋण मोटे तौर पर मुद्रास्फीति के बराबर ही बढ़ता है। मार्च 2020 में यह 39,353 रुपये था और मार्च 2024 में 55,260 रुपये। अगर 5 प्रतिशत औसत मुद्रास्फीति मानी जाए तो मार्च 2024 में यह 47,833 रुपये होना चाहिए था। मुद्रास्फीति का हिसाब लगाने के बाद इसमें 7,000 रुपये की ही वृद्धि हुई है। क्या वाकई यह बहुत ज्यादा है?

वह कहते हैं कि 1.5 लाख रुपये से अधिक बकाया कर्ज वालों की हिस्सेदारी बढ़कर 4.7 प्रतिशत हो गई है मगर वास्तव में यह बहुत कम है। फिर भी एमफिन ने कामकाज में अनुशासन और कर्जदारों के कल्याण के लिहाज से सुरक्षा उपाय किए हैं। ये उपाय क्या हैं? परिसंपत्ति बिगड़ने की चुनौती कम करने के लिए एमफिन और दूसरे स्वनियामकीय संगठन सा-धन ने तय किया है कि किसी को भी उतना ही कर्ज दिया जाएगा, जिसे चुकाने में उसके परिवार की आधी आमदनी ही खर्च हो। यह भारतीय रिजर्व बैंक के निर्देश के मुताबिक है। साथ ही किसी भी व्यक्ति को चार से ज्यादा माइक्रोफाइनैंस कंपनियों से कर्ज नहीं लेने दिए जाएंगे तथा उसका कुल कर्ज 2 लाख रुपये से ऊपर नहीं होने दिया जाएगा।

कोविड महामारी के दौरान उद्योग की परिसंपत्ति गुणवत्ता बहुत घटी थी। मोतीलाल ओसवाल की एक रिपोर्ट के मुताबिक पार30+ बुक यानी 30 दिन से ज्यादा समय से नहीं चुकाए गए कर्ज की हिस्सेदारी दिसंबर 2019 के 1.3 प्रतिशत से बढ़कर कोविड की दूसरी लहर के दौरान जून 2021 में 14.8 प्रतिशत तक हो गई। बाद में इसमें नाटकीय रूप से कमी आई। कोविड लॉकडाउन से पहले नोटबंदी और वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) लागू होने से इस क्षेत्र में सुधार हुआ था। इसके बाद अप्रैल 2022 में रिजर्व बैंक की नई माइक्रोफाइनैंस नीति भी लागू हो गई।

अब ब्याज दर पर कोई बंदिश नहीं है और कर्ज देने वाले खुद दर तय कर सकते हैं। मगर उन्हें बोर्ड से मंजूर और पारदर्शी नीति पर चलना जरूरी है। नए नियमों ने बैंकों और अन्य वित्तीय इंटरमीडियरी को बराबर खड़ा कर दिया है। पहले बैंकों को सूक्ष्म ऋण संस्थानों से ज्यादा तवज्जो मिलती थी। अब नियम सूक्ष्म ऋणदाताओं के बजाय सूक्ष्म ऋण पर लागू होते हैं। सूक्ष्म ऋण को दोबारा परिभाषित करते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य, शादी-ब्याह जैसे किसी भी मकसद के लिए कर्ज दिया जा सकता है बशर्ते उसकी किस्तें परिवार की कुल आमदनी के 50 प्रतिशत से ज्यादा न हो जाएं।

लगभग सभी सूक्ष्म वित्त संस्थानों ने कोविड-19 के दौरान हुए घाटे की भरपाई के लिए ब्याज दरें बढ़ाई हैं। मगर घाटा भरने के बाद उसमें कमी कितनों ने की है? इस क्षेत्र में वृद्धि इसलिए नहीं हो रही कि लोग कर्ज मांग रहे हैं बल्कि इसलिए हो रही है कि ऋणदाता कर्ज देने पर तुले हुए हैं। अब तो यूनिवर्सल बैंक, स्मॉल फाइनैंस बैंक, एनबीएफसी, सूक्ष्म वित्त संस्थान और फिनटेक समेत हर कोई कर्ज देने के लिए दौड़ रहा है। जब किसी को पर्सनल लोन, शिक्षा ऋण, होम लोन और दोपहिया, ट्रैक्टर, सामान खरीदने के लिए कर्ज आसानी से मिल जाता है तो वह ज्यादा उधार लेने का मोह छोड़ नहीं पाता। लोग ऊंची से ऊंची ब्याज दर पर खूब कर्ज ले रहे हैं क्योंकि बैंक बड़ी एनबीएफसी को कर्ज दे रहे हैं और लागत बढ़ने की वजह से ब्याज दर भी चढ़ रही हैं। बडी एनबीएफसी छोटी एनबीएफसी को कर्ज देती हैं और यह सिलसिला ऐसे ही बढ़ता रहता है। ब्याज बढ़ता जाता है और लोगों की कर्ज चुकाने की क्षमता घटती रहती है।

ज्यादातर सूक्ष्म ऋणदाता नहीं मानते कि कोई दिक्कत है। परिसंपत्ति बिगड़ने के लिए वे भीषण गर्मी से लेकर बाढ़, चुनाव, कर्जमाफी और देश के विभिन्न हिस्सों में हो रहे आंदोलन तक तमाम वजह गिना देते हैं। मगर वे जरूरत से ज्यादा कर्ज देने की बात कबूल नहीं करते। पिछले वर्ष रेटिंग एजेंसी क्रिसिल लिमिटेड ने अनुमान लगाया था कि वित्त वर्ष 2023 और वित्त वर्ष 2025 के बीच इस क्षेत्र में 18 से 20 प्रतिशत वृद्धि होगी और माइक्रोफाइनैंस इकाइयां ज्यादा तेजी से बढ़ेंगी। क्रिसिल की हालिया रिपोर्ट के मुताबिक सूक्ष्म ऋण की लागत वित्त वर्ष 2024 के 2 प्रतिशत से बढ़कर वित्त वर्ष 2025 में 3-3.5 प्रतिशत तक हो सकती है।

एक अध्ययन के मुताबिक सूक्ष्म वित्त संस्थान इसलिए भी परेशान हैं कि औसतन 60 प्रतिशत कर्मचारी कंपनी छोड़ देते हैं। इससे कर्ज देने और लेने वाले के रिश्ते पर असर पड़ता है, जबकि माइक्रोफाइनैंस की कामयाबी की कुंजी यही है। इससे संस्थान को कर्ज वसूलने में भी दिक्कत आती है। रिजर्व बैंक यह देख रहा है और समय-समय पर टिप्पणी भी करता है। मगर क्या वह कोई कदम भी उठाएगा?

अच्छे दिनों के संकेत दे रहा सेमीकंडक्टर समझौता

भारत ने देश में सेमीकंडक्टर संयंत्र लगाने के लिए अमेरिका के साथ एक महत्त्वपूर्ण समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। यह संयंत्र बड़ी उपलब्धि है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा से जुड़ी आवश्यकताएं पूरी करने में अहम भूमिका निभाएगा। चीन बड़ा भू-सामरिक खतरा और तकनीकी चुनौती बनकर उभर रहा है, जिस कारण अमेरिका के लिए भारत अहम साझेदार बन गया है क्योंकि क्वाड सदस्य होने के नाते उसके हित काफी हद तक अमेरिका के हितों के अनुकूल हैं।

नया समझौता भारत सेमी, थर्डआईटेक और यूनाइटेड स्टेट्स स्पेस फोर्स (यूएसएसएफ) के बीच पहल का नतीजा है। इस समझौते के केंद्र में इन्फ्रारेड, गैलियम नाइट्राइड और सिलिकन कार्बाइड जैसी सामग्री है, जो सेमीकंडक्टर निर्माण के लिए जरूरी है। इसी आपसी सहयोग के साथ यह समझौता इसलिए भी अहम है क्योंकि इसमें अमेरिकी सेना की एक प्रमुख शाखा यूएसएसएफ तथा भारतीय उद्योग जुड़े हैं।

समझौते पर कारगर तरीके से अमल हुआ तो भारत के देसी उच्च-प्रौद्योगिकी उद्योग को काफी लाभ मिलने की उम्मीद है, जो नरेंद्र मोदी सरकार के राष्ट्रीय सेमीकंडक्टर अभियान के अनुरूप भी है। साझे उपक्रम का लक्ष्य ऐसा फैब्रिकेशन संयंत्र स्थापित करना है, जिससे सुरक्षित, निर्बाध और मजबूत आपूर्ति श्रृंखला तैयार हो।

इस सेमीकंडक्टर समझौते के कारण भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा आवश्यकताओं के लिए हर वर्ष अरबों डॉलर का सेमीकंडक्टर आयात बंद हो जाएगा। साथ ही देश सेमीकंडक्टर आपूर्ति श्रृंखला का प्रमुख केंद्र बन जाएगा। भारत सेमीकंडक्टर क्षेत्र में महत्वपूर्ण तकनीकी पड़ाव हासिल करने की राह पर पहले ही काफी आगे है, जिसका उदाहरण भारत सेमी है, जो संयुक्त उपक्रम की अहम साझेदार है। भारत सेमी का एक फैब्रिकेशन संयंत्र है जो सिलिकन कार्बाइड और गैलियम नाइट्राइड जैसी सामग्री मिलाकर कंपाउंड सेमीकंडक्टर तैयार करता है। यह सेमीकंडक्टर रक्षा एवं हरित प्रौद्योगिकियों से जुड़ी ऊंचे वोल्टेज तथा ऊंचे तापमान वाली गतिविधियों में पुराने सेमीकंडक्टरों से बेहतर काम करता है।

हर्ष पंत और कार्तिक बोम्माकांति

अमेरिकी-भारत फैक्टशीट के अनुसार फैब्रिकेशन संयंत्र का जोर राष्ट्रीय सुरक्षा, अत्याधुनिक दूरसंचार और हरित ऊर्जा के लिए संचार और इलेक्ट्रॉनिक पावर ऐप्लिकेशन पर होगा। यह फैब्रिकेशन संयंत्र भारत में अपनी तरह का पहला संयंत्र ही नहीं है बल्कि दुनिया में कहीं भी लग रहे उन शुरुआती संयंत्रों में से है, जिनमें फैब्रिकेशन के लिए कई प्रकार की सामग्री इस्तेमाल की जाती है। परिणामस्वरूप चिप निर्माण को बहुत रफ्तार मिलेगी और दोनों देशों को रक्षा के क्षेत्र में पारस्परिक लाभ मिलेंगे।

इस ऐतिहासिक समझौते के बाद भी दो अहम बातों का ध्यान रखना चाहिए। पहली बात, यूएसएसएफ, भारत सेमी और थर्डआईटेक के बीच सहयोग अमेरिका के निर्यात नियंत्रण नियमन पर ही निर्भर करता है। ये नियमन 2018 के निर्यात नियंत्रण सुधार अधिनियम (ईसीआरए) के स्वरूप में हैं जो अमेरिकी तकनीक को उन देशों में जाने से रोकता है, जिन्हें अमेरिका अपने हितों का विरोधी मानता है।

अमेरिकी कांग्रेस ने चीन को सेमीकंडक्टर और साइबर सुरक्षा से जुड़ी उन प्रतिबंधित और मौलिक तकनीकों तक पहुंचने से रोकने के लिए ईसीआरए पारित किया था, जो अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। इन प्रतिबंधों में तकनीकी क्षमताएं, संबंधित ज्ञान और वे विशिष्ट निर्देश भी शामिल हैं, जिनके दायरे में भारत और अमेरिका के बीच हाल ही में हुए सेमीकंडक्टर समझौते जैसे संयुक्त उद्यम भी आते हैं। तकनीक के निर्यात पर अंकुश के लिए अमेरिका के पक्ष को बेहद व्यापक संदर्भ में परिभाषित किया गया है।

इसके सिरे दूसरी चेतावनी से जुड़े हैं। ईसीआरए उन सामग्रियों पर ही नियंत्रण नहीं रखता है, जो अमेरिका में बनी हैं बल्कि यह कानून उन सामग्रियों पर भी नियंत्रण करता है, जिनका निर्यात उन देशों से हुआ है, जो किसी समय अमेरिका से मिली प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करते हैं। अगर अमेरिका से मिली तकनीक का 25 प्रतिशत से अधिक इस्तेमाल हो तब तो खास तौर पर नियंत्रण रहता है। इसे 25 प्रतिशत नियम भी कहा जाता है।

निर्यात पर नियंत्रण लगाने वाले ये प्रतिबंध 2020 की शुरुआत में ट्रंप सरकार के दौरान और भी सख्त हो गए। उच्च प्रौद्योगिकी खास तौर पर सेमीकंडक्टर से जुड़े प्रतिबंधों का असली निशाना तो चीनी ही रहा है मगर ईसीआरए का दायरा दूसरे देशों तक फैला होने के कारण दूसरे देश भी इसकी जद में आ सकते हैं।

उदाहरण के तौर पर अमेरिकी कंपनियों ने ईसीआरए की उन खामियों का फायदा उठाया, जिनसे उनके विदेशी संयंत्रों या सहयोगी कंपनियों को अपना माल हुआवे जैसी चीनी कंपनियों को बेचने की इजाजत मिल गई थी। नए संशोधन करते समय इन खामियों को दूर किया गया, जिससे अमेरिकी वाणिज्य विभाग को उन विदेशी संयंत्रों से वस्तु निर्यात पर भी प्रतिबंध लगाने की ज्यादा गुंजाइश मिल गई, जिनका अमेरिकी तकनीकी सामग्री या जानकारी से सीधे कोई ताल्लुक नहीं था मगर वे अमेरिका में तैयार डिजाइन तथा नक्शे पर बने थे। शुरुआती दौर में इस प्रतिबंध के निशाने पर ताइवान सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग कंपनी (टीएसएमसी) भी आई जिसने हुआवे को भारी मात्रा में निर्यात किया था।

भारत और अमेरिका के बीच सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन समझौते पर खुश होने की कई वजहें हैं, लेकिन भारत को भी ध्यान रखना होगा कि उसे अपने निर्यात नियंत्रण नियमों का तालमेल अमेरिका के नियमों के साथ बिठाना होगा। ऐसा नहीं हुआ तो भारत को अमेरिका के निर्यात प्रतिबंधों से नुकसान उठाना होगा, जिससे भविष्य में अमेरिका और भारत के बीच तनाव उत्पन्न हो सकता है। फिलहाल भारत-अमेरिका सेमीकंडक्टर समझौता अमेरिका की उच्च प्रौद्योगिकी रणनीति में बदलाव का महत्त्वपूर्ण प्रतीक है और यह बता रहा है कि आगे काफी कुछ बेहतर होने जा रहा है।

(हर्ष पंत ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन, नई दिल्ली में वाइस प्रेसिडेंट (अध्ययन एवं विदेश नीति) हैं और कार्तिक बोम्माकांति वहां सीनियर फेलो (राष्ट्रीय सुरक्षा एवं रक्षा) हैं)

आपका पक्ष

इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट का पुनर्चक्रण

इस समाचार पत्र में इलेक्ट्रॉनिक एवं इलेक्ट्रिक अपशिष्ट के पुनर्चक्रण से संबंधित केंद्र सरकार की नीति निर्धारण और इलेक्ट्रॉनिक एवं इलेक्ट्रिक उत्पादों के मैन्युफैक्चरिंग उद्योगों से संबंधित विषयों पर लेख प्रकाशित हुआ है। यह विषय केवल लाभ हानि, लागत और अपशिष्ट के मूल्यांकन तक सीमित नहीं है बल्कि पर्यावरण, अरबों रुपये की धातुओं का घरों, कार्यालयों, गोदामों और कारखानों में निर्मूल्य अवस्था में पड़े रहने और उन्हीं धातुओं के इलेक्ट्रॉनिक एवं इलेक्ट्रिक उत्पादन के लिए आयात करने से भी जुड़ा है। जो पीतल, तांबा बाजार में क्रमशः 450 और 700 रुपये प्रति किलोग्राम मिलता है उसे कबाड़ के रूप में 60 रुपये प्रति किलो में खरीदना इस उद्योग को कचरा उद्योग में परिवर्तित कर देता है। इसी कारण इलेक्ट्रॉनिक एवं इलेक्ट्रिक अपशिष्ट बेचने में कोई रुचि नहीं होती और यह वर्षों से बेकार पड़ा रहता है। वर्ष 2017-18 में

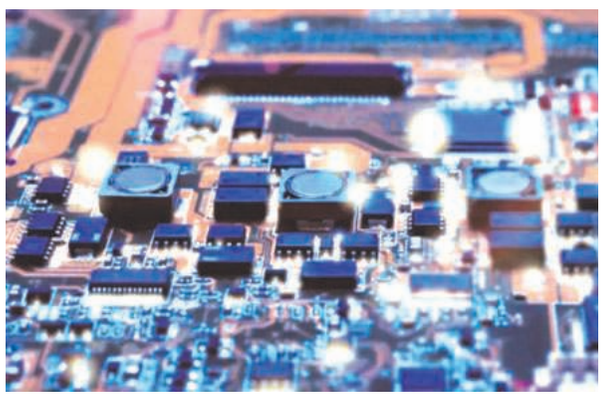

इलेक्ट्रॉनिक एवं इलेक्ट्रिक कचरे के पुनर्चक्रण के लिए सरकार को ठोस नीति बनाने की आवश्यकता है

इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट 7 लाख टन से बढ़कर वर्ष 2023-24 में 16 लाख टन हो गया। पब्लिक डोमेन में इस अपशिष्ट का मूल्यांकन वर्तमान में 1.66 अरब डॉलर से वर्ष 2032 में 5.1 अरब हो जाएगा परंतु यह मूल्यांकन सही नहीं है क्योंकि इसके अनुसार मूल्यवान धातुओं का मूल्य 2 रुपये प्रति किलो आता है जो अखबार की रद्दी 15 रुपये प्रति किलो से भी बहुत कम है। यह सब कहने का तात्पर्य यह है कि इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट के महत्त्वपूर्ण विषय को बहुत गैरजिम्मेदारी और लापरवाही से लिया जा रहा है। सीधी बात यह है कि इलेक्ट्रॉनिक एवं इलेक्ट्रिक उत्पादों के निर्माताओं को ही पुनर्चक्रण के लिए निर्धारित किया जाए और वह ही इसकी सभी प्रक्रियाओं को रिटेल श्रृंखला के माध्यम से संपन्न करें और इसको बाजारी मूल्यों से ही संचालित करें। तभी इलेक्ट्रॉनिक एवं इलेक्ट्रिक अपशिष्ट के पुनर्चक्रण को गति मिलेगा।

विनोद जौहरी, दिल्ली

बर्ड वॉचिंग स्थापित हो

बर्ड वॉचिंग व वन्यजीव तथा पक्षियों के संरक्षण करने वाली संस्थाओं द्वारा चीन और नेपाल सीमा से लगे उत्तराखंड के मुनस्यारी में जैव विविधता व पशु-पक्षियों के अदभुत संसार की वजह से बर्ड वॉचिंग वहां के लोगों की आजीविका का मुख्य साधन बन चुका है। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में मोर एवं मैना को राष्ट्रीय पक्षी का दर्जा प्राप्त है। इसके अलावा रंग बिरंगे कई प्रजाति के दुर्लभ पक्षी विद्यमान हैं। अधिकतर पक्षी तालाब, नदी के किनारे दिखाई देते हैं। कई प्रवासी पक्षी ऋतुकाल अनुसार आते हैं। प्रवासी पक्षियों का हर क्षेत्र में स्थान नियत रहता है। प्रजनन काल के पश्चात अपने चूजों को बड़ा होने के बाद अपने देश लौट जाते हैं। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ में भी बड़ी सिंचाई योजनाओं पर जहां पक्षी आते हैं। वहां पर पक्षी विहार चिह्नित कर लोगों की आजीविका तथा राजस्व हित बढ़ाने में इनके दर्शन करने हेतु विशेष ट्रैक बनाकर इसे भी अन्य उपलब्धियों में शामिल किया जाए। बर्ड वॉचिंग चिह्नित हो जाने से इनके अवैध शिकार पर भी रोक लग सकेगी साथ ही दुर्लभ प्रजाति का संरक्षण भी हो सकेगा।

संजय वर्मा, धार

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिजनेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in
पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो - पीटीआई

शल्य चिकित्सक वाइस एडमिरल आरती सरीन ने मंगलवार को सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा (एएफएमएस) का महानिदेशक पद संभाल लिया। वह यह पदभार संभालने वाली पहली महिला अधिकारी हैं। एएफएमएस महानिदेशक सशस्त्र बलों से संबंधित समग्र चिकित्सा नीति मामलों के लिए सीधे रक्षा मंत्रालय के प्रति उत्तरदायी है।

विचार

नवभारत टाइम्स

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली। बुधवार, 2 अक्टूबर 2024

प्रसाद पर राजनीति

सुप्रीम कोर्ट पहुंचते ही तिरुपति मंदिर में कथित मिलावटी घी वाले प्रसाद से जुड़े विवाद का रंग तो उतर गया पर देवी-देवताओं के राजनीति में इस्तेमाल का ज्यादा गंभीर मुद्दा सामने आ गया। सर्वोच्च अदालत ने ठीक ही इस पर सख्त रुख अपनाते हुए आंध्र प्रदेश के सीएम के रवैये की तीखी आलोचना की।

सबूत नहीं | तिरुपति के प्रसाद से जुड़े इस विवाद को आधार बनाते हुए जो पांच याचिकाएं दायर की गई हैं, उन पर सुप्रीम कोर्ट की सुनवाई हालांकि जारी है, लेकिन पहले ही दिन कोर्ट की नजर में यह तथ्य आ गया कि प्रसाद में मिलावटी घी के इस्तेमाल का कोई ठोस सबूत अभी तक नहीं पाया गया है। इससे न केवल यह पूरा विवाद ही निराधार साबित हो गया बल्कि यह सवाल भी सामने आया कि आखिर क्यों इस पूरे विवाद को तूल दिया गया था।

तिरुपति मंदिर : निराधार विवाद

भावनाओं से खिलवाड़ | तिरुपति मंदिर देश का एक ऐसा प्रमुख श्रद्धा केंद्र है, जहां से करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था जुड़ी है। मुख्यमंत्री का बयान आने के बाद इस पर स्वाभाविक ही प्रतिक्रियाएं आनी शुरू हो गईं। जिस तरह से आंध्र प्रदेश के सत्तारूढ़ दलों की ओर से मंदिर के शुद्धिकरण की कवायद की जाने लगी, उसे लोगों की धार्मिक भावनाओं के साथ खिलवाड़ ही कहा जा सकता है। हालांकि, अपने देश में इस तरह का खिलवाड़ कोई नई बात नहीं है, लेकिन सुप्रीम कोर्ट के सख्त रुख ने इसे बंद करने की जरूरत को फिर से रेखांकित जरूर किया है।

मंदिर के प्रबंधन का सवाल | एक याचिका में यह मांग भी की गई है कि हिंदू मंदिरों के प्रबंधन की जिम्मेदारी सरकार के हाथों में नहीं रहने देनी चाहिए। वैसे, यह कोई नई मांग नहीं है। मंदिरों के प्रबंधन का मुद्दा चूंकि समवर्ती सूची में आता है, इसलिए राज्यों में इस मामले में एकरूपता नहीं है। अगर तिरुपति मंदिर के प्रसाद से जुड़े ताजा विवाद से इस मांग को मजबूती मिलने की कोई उम्मीद रही हो, तो वह इस विवाद की असलियत सामने आने के बाद टूट चुकी है।

निजी प्रबंधन में दिक्कत | तिरुपति मंदिर के प्रबंधन से जुड़ा मसला चूंकि सुप्रीम कोर्ट के सामने है, इसलिए देखना होगा कि उस पर कोर्ट का क्या रुख रहता है, लेकिन जहां तक आम तौर पर मंदिरों में निजी प्रबंधन का सवाल है तो उसके साथ दो बड़ी दिक्कतें जुड़ी हैं। एक तो यह कि मंदिर की संपदा निजी हाथों में चली जाती है, जिस पर नागरिकों का कोई अप्रत्यक्ष नियंत्रण भी नहीं रह जाता। दूसरी दिक्कत श्रद्धालुओं के साथ भेदभाव से जुड़ी है। आज भी कई मंदिरों में जाति और लिंग के आधार पर प्रवेश से रोकने के उदाहरण मिलते रहते हैं, जिन्हें सही नहीं कहा जा सकता।

इन दिनों

बाइडन हैं सच्चे दोस्त

मृत्युंजय राय

जो बाइडन अपने पहले टर्म में जो काम पूरा नहीं कर पाए, वह दूसरे टर्म में उसे करना चाहते थे, लेकिन अमेरिका के राष्ट्रपति का यह ख्वाब अधूरा ही रह जाएगा। अमेरिका का अगला राष्ट्रपति ट्रंप या कमला हैरिस में से जो भी बने, भारत बाइडन को एक अच्छे दोस्त के रूप में याद रखेगा। अमेरिका-भारत के रिश्तों पर नजर रखने वालों का मानना है कि जिस तरह से जॉर्ज डब्लू बुश ने घरेलू स्तर पर बड़े विरोध के बावजूद भारत के साथ न्यूक्लियर डील की, उसी तरह से बाइडन ने भारत के साथ टेक्नॉलजी शेयरिंग का रास्ता खोला। यह बहुत महत्वपूर्ण कदम है, जिसके नतीजे आने वाले वर्षों में दिखेंगे। वैसे, जिस तरह से बुश ने अपने यहां न्यूक्लियर डील के विरोध की परवाह नहीं की थी, वैसे ही तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भी इस सौदे के लिए अपनी सरकार दांव पर लगा दी थी।

अमेरिकी दौरे पर पीएम नरेंद्र मोदी की मुलाकात बाइडन से भी हुई। उस दौरान Quad की मीटिंग भी हुई, जिसमें भारत भी महत्वपूर्ण पार्टनर है। इसमें दो अन्य देश- जापान और ऑस्ट्रेलिया हैं। अमेरिका में Quad की मीटिंग में बाइडन, मोदी, फुमियो किशिदा और एंथनी अल्बनीज शामिल हुए और इस मंच ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र को लेकर कई अहम कदम उठाने का एलान किया। इससे इस क्षेत्र में चीन की आक्रामकता को रोकने में मदद मिलने की उम्मीद है। बाइडन की एक और लेगेसी यह है कि राष्ट्रपति रहने के दौरान उन्होंने Quad को स्पष्ट दिशा दी है। दिलचस्प बात यह भी है कि Quad का आइडिया जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की ओर से आया था। उनसे भी भारतीय प्रधानमंत्री मोदी के रिश्ते काफी अच्छे थे।

मध्य पूर्व में I2U2 जैसे मंच में भी भारत अहम पार्टनर है। इसमें इंडिया, इस्राइल, USA और UAE शामिल हैं। यहां भी भारत को साथ लेकर चलने में अमेरिका की अहम भूमिका रही है। इन सबको देखते हुए यह कहना गलत नहीं होगा कि बाइडन ने दोनों देशों के रिश्तों को नए मकाम पर पहुंचाया। आज अमेरिका यह समझता है कि नए वर्ल्ड ऑर्डर में भारत की क्या भूमिका है। दूसरी ओर, अमेरिका और पश्चिमी देशों के साथ तालमेल रखते हुए रूस जैसे देशों के साथ भी भारत ने अच्छे संबंध बनाए हुए हैं और वह वैश्विक मंच पर ग्लोबल साउथ की भी आवाज उठाता रहा है। बेशक, इसका श्रेय मोदी सरकार की स्वतंत्र विदेश नीति को जाता है। लेकिन यह भी मानना होगा कि यूक्रेन और अन्य विवादास्पद मामलों में सहयोगी देशों के दबाव के बावजूद बाइडन ने भारत के साथ अच्छे रिश्ते बनाए रखे। इसलिए बाइडन को भारत अच्छे दोस्त के रूप में हमेशा याद रखेगा।

एकदा

रंगभेद का कारण

सन 1893 की बात है। तब सात दिनों तक अब्दुल्ला के साथ डरबन में रहने के बाद महात्मा गांधी उनके मुकदमों के लिए प्रिटोरिया पहुंचे थे। वह अकेले थे और शाम हो गई थी। स्टेशन पर उन्हें लेने के लिए कोई नहीं आया तो वह असमंजस में पड़ गए। धीरे-धीरे स्टेशन यात्रियों से खाली हो गया। महात्मा गांधी ठहरने के लिए होटल के बारे में जानकारी लेने को रेलवे के अधिकारी के पास पहुंचे। उस समय एक अमेरिकी नीग्रो वहां खड़ा था। गांधीजी को अकेले और लाचार देख उसने उन्हें विश्वास में लिया और एक पहचान वाले अमेरिकी होटल में ले गया। होटल मालिक जॉनसन इस शर्त पर एक कमरा देने के लिए तैयार हुए कि गांधीजी खाने के लिए डाइनिंग रूम में नहीं आएंगे क्योंकि होटल के ग्राहक केवल यूरोपीय होते हैं। गांधीजी के डाइनिंग प्लेस पर आने से यूरोपीय लोगों को बुरा लगेगा। हो सकता है कि कुछ लोग होटल छोड़कर भी चले जाएं। गांधीजी ने जॉनसन की बात मान ली और कहा कि वह रंगभेद और व्यावसायिक विवशता को समझते हैं। कल वह कोई और उपाय कर लेंगे। गांधीजी अपने कमरे में वेटर के आने का इंतजार कर रहे थे। थोड़ी देर बाद स्वयं जॉनसन आए और उन्होंने कहा, 'डाइनिंग रूम में आने से मना करने के लिए मैं शर्मिंदा हूं। मैंने अपने मेहमानों से बात की और उनसे पूछा कि यदि कोई कुली यहां खाना खाने के लिए आए तो उन्हें बुरा तो नहीं लगेगा। सभी ने कहा कि उन्हें कोई आपत्ति नहीं है।' गांधीजी ने जॉनसन को धन्यवाद दिया और डाइनिंग रूम में जाकर खाना खाया। उस रात गांधीजी देर तक सोचते रहे कि रंगभेद का कारण रंग नहीं अर्थ है।

Subrata Dhar

संकलन : **हरिप्रसाद राय**

साबरमती आश्रम में भजनों के ज़रिये अनुशासन लेकर आए महात्मा गांधी, बोया क्रांति का बीज

बापू ने जब संगीत से बुझाई दंगे की आग

अखिलेश झा

महात्मा गांधी के व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में संगीत वैसे ही था, जैसे उनके विचारों में सत्याग्रह और अहिंसा। उन्हें ऊर्जा शायद संगीत से ही मिलती थी। बापू जैसा दूसरा उदाहरण ढूंढना मुश्किल होगा, जिसने अपना पूरा जीवन सुबह-शाम अनुशासन के साथ प्रार्थना-संगीत में लगाया हो। जीवन ही क्या, अपनी अनंत यात्रा पर भी वह रामनाम के साहचर्य में ही रहे।

संगीत और अनुशासन | गांधीजी कहते थे कि यदि संगीत न होता, प्रार्थना न होती, तो जनसभाओं में लोगों को अनुशासित रखना असंभव हो जाता। उन्होंने जब साबरमती आश्रम की स्थापना की, तो भजन और संगीत पर भी बहुत ध्यान दिया। उन्होंने काका कालेलकर से आग्रह किया कि वह पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर से इस बारे में सलाह करें। पलुस्कर के प्रिय शिष्य महाराष्ट्र के मिरज के नारायण खरे थे। वह आश्रम के अनुशासन के लिए भी सब तरह से उपयुक्त थे। ऐसे में पलुस्कर ने अपने शिष्य को साबरमती आश्रम भेज दिया।

नई पहचान | गांधीजी के आश्रम में गाए जाने वाले भजन बाहर भी लोकप्रिय होने लगे। भजन चाहे कबीर के हों, मीरा, सूर, तुलसी या नरसी मेहता के, उनके साथ-साथ उन भजनों की एक पहचान गांधी भजन के रूप में भी बन गई। ग्रामोफोन रेकॉर्ड पर उन्हें गांधी भजन के रूप में दर्ज किया गया।

गांधी में कबीर | गांधीजी क्रांति का नारा नहीं देते थे, वह क्रांति के बीज बोते थे। क्रांति का एक ऐसा ही बीज उन्होंने बोया 'रघुपति राघव राजा राम' भजन में। उनकी उदारता और सहजता का सबसे बड़ा उदाहरण है इस भजन में किया गया प्रयोग, 'ईश्वर अल्लाह तेरो नाम'। यह कोई छोटा प्रयोग नहीं था। गांधीजी के विचारों में कई बार कबीर के पुट हमें दिखते हैं।

हर धर्म को जगह | प्रार्थना सभा में सबसे पहले बौद्ध धर्म का जापानी भाषा का मंत्र गाया जाता, जो उन्होंने वर्धा आश्रम के एक जापानी साधु से सीखा था। इसके बाद संस्कृत में भगवद्गीता के श्लोक का पाठ होता। फिर अरबी में कुरान की आयतें और फारसी भाषा में पारसियों के धर्म के मंत्र पढ़े जाते थे। फिर हिंदी या भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं-बोलियों में भजन गाए जाते। आखिर में रामधुन से प्रार्थना सभा का समापन होता था।

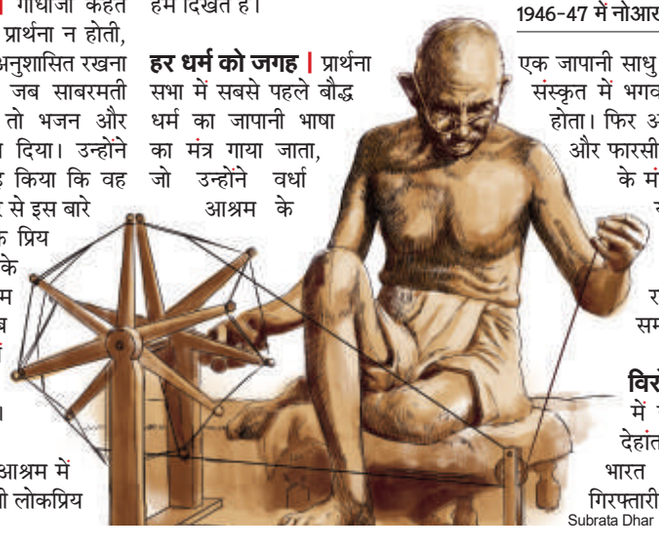

Subrata Dhar

विरोध का सामना | 1938 में नारायण मोरेश्वर खरे के देहांत के बाद और खासकर भारत छोड़ो आंदोलन की गिरफ्तारी से 1944 में रिहा होने के बाद प्रार्थना सभाओं का स्वरूप बदलने लगा। 1946-47 में सर्वधर्म सद्भाव का विरोध इस हद तक होने लगा कि उनकी प्रार्थना सभा बार-बार स्थगित करनी पड़ती थी।

1946-47 में नोआखाली प्रवास के दौरान बापू ने एक नए भजन का प्रयोग किया

गांधीजी का असर
- पुराने भजन दोबारा लोकप्रिय हुए
- सर्व धर्म समभाव का संदेश दिया
- प्रार्थना को आश्रम का आधार बनाया

जब बताया हिंदू का अर्थ | 1 अप्रैल, 1947 को दिल्ली की एक प्रार्थना सभा में जब उन्हें कुरान का पाठ करने से रोका गया, तो उन्होंने कहा था, 'मैं सच्चा सनातनी हिंदू हूं। मेरा हिंदू धर्म बताता है कि मैं हिंदू प्रार्थना के साथ-साथ मुसलमान प्रार्थना भी करूं, पारसी प्रार्थना भी करूं, ईसाई प्रार्थना भी करूं।' जब कुरान की आयतों की बारी आने पर नियमित रूप से व्यवधान होने लगा तो 17 सितंबर 1947 को गांधीजी ने प्रार्थना का क्रम बदल दिया। कुरान की आयत सबसे पहले रख दी गई। मकसद था कि यदि प्रार्थना नहीं होनी है, तो पूरी तरह न हो।

बदल गया संगीत | गांधीजी के विचारों ने संगीत को बेहद प्रभावित किया। दक्षिण भारत में के.बी. सुंदरम्बल, डी.के. पट्टम्माल, एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी से लेकर बंगाल के कमल दासगुप्ता, के.सी. डे, जुथिका रॉय, दिलीप कुमार रॉय, बिजनबाला घोष दस्तीदार जैसी संगीत की हस्तियों पर ऐसा असर पड़ा कि वे गांधीजी के भजन गाने के साथ उनके आदर्शों का भी पालन करते।

नोआखाली भजन | गांधीजी के संगीत के साथ प्रयोग की सबसे कठिन परीक्षा नोआखाली में हुई, जब उन्होंने नवंबर 1946 में वहां पहुंचकर दंगाइयों को शांत करने का प्रयास किया। वहां उन्होंने एक नए भजन का प्रयोग किया, 'भज मन राम-रहीम, भज मन कृष्ण-करीम'। इसे नोआखाली भजन भी कहा जाता है। दंगे तो रुक गए, पर भारत का विभाजन न रुक पाया। गांधीजी तब भी निराश न हुए। लोगों को तब तक भजन और संगीत के माध्यम से सही राह दिखाने का प्रयास करते रहे, जब तक अनंत शून्य के संगीत ने उन्हें अपने अंक में भर न लिया।

(लेखक ग्रामोफोन इतिहासकार और संस्कृतिकर्मी हैं)

चीन का लहसुन अटैक

चीन कुछ बनाता है, तो इतना ज्यादा कि पूरी दुनिया का बाजार उसी के प्रॉडक्ट से पट जाए। उसकी इस फितरत ने लहसुन को भी नहीं बख्शा। स्वास्थ्य के लिए हानिकारक यह लहसुन भारत में बैन के बाद भी बिक रहा। पिछले दिनों इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच ने पूछा, ऐसा कैसे? इसी बहाने पड़ताल लहसुन की...

2024 में चीन से आयात होने वाले लहसुन पर बैन लगाया था, अभी सीमा पार से तस्करी का अनुमान

भारत में चाइनीज लहसुन पर इसलिए लगा बैन

मिथाइल ब्रोमाइड
फफूंद से बचाने के लिए चाइनीज लहसुन में इसका इस्तेमाल होता है।

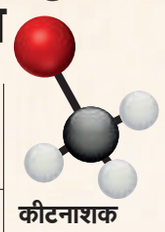

कीटनाशक
ज्यादा उपज के लिए बड़े पैमाने पर कीटनाशकों का उपयोग किया जाता है।

खराब क्वॉलिटी
देश के गुणवत्ता मानक पर खरा नहीं, कई बार टेस्ट में फेल हो चुका।

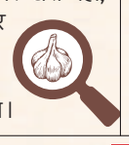

किसानों पर असर
चाइनीज सस्ता है, तो किसानों को नुकसान उठाना पड़ता है।

कैसे पहचानें देसी और चाइनीज

देसी की तुलना में चाइनीज लहसुन सस्ता होता है। इसी वजह से बैन के बाद भी धंधा रुक नहीं रहा।

देसी

तेज महक, ज्यादा झार, आकार में छोटा होता है, छिलका थोड़ा मोटा रहता है, रंग सफेद, खाने में तीखापन ज्यादा होता है।

चाइनीज

महक बेहद हल्की, आकार में बड़ा और छिलका पतला, रंग सफेद से लेकर हल्का गुलाबी तक, स्वाद में तीखापन नहीं।

14.3 खाने में भी आगे

चीन ने लहसुन उगाने के मामले में ही नहीं, खाने के मामले में भी बाकी देशों को बहुत पीछे छोड़ दिया है। आइए देखते हैं प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष होने वाली खपत का हालिया आंकड़ा, डेटा किलो में है...

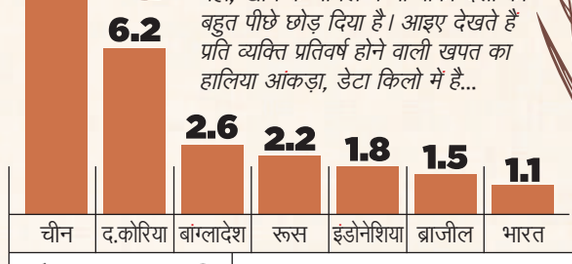

लहसुन की 'फैक्ट्री'

लहसुन की खेती में चीन ने 1990 के दशक से जबरदस्त छलांग लगाई। 2020 में उसने 22.5 लाख टन का निर्यात किया, जो रेकॉर्ड बना। इस वक्त दुनिया का करीब 3 तिहाई लहसुन केवल चीन में उग रहा है...

- **73.8%** चीन
- **10.4%** भारत
- **1.7%** बांग्लादेश
- **1.3%** द. कोरिया
- **1.2%** इजिप्ट

कंटेंट : शैलेंद्र पांडेय, ग्राफिक्स : अर्जुन सिंह

सेहत पर भारी

केमिकल्स और सिंथेटिक पदार्थों के अत्यधिक इस्तेमाल के कारण पेट से जुड़ी बीमारियां हो सकती हैं। दिल और गुर्दे के लिए खतरनाक, फंगल इंफेक्शन का खतरा।

चाइनीज लहसुन को छीलना आसान होता है, इस वजह से भी कई लोग इसे पसंद करते हैं। लेकिन, इसमें देसी जैसा स्वाद नहीं होता। हमारे देसी लहसुन की कलियां गंध और स्वाद में तेज होती हैं। इनमें औषधीय गुण होते हैं।

- **अनूठी विशाल**, फूड हिस्टोरियन

चाइनीज लहसुन के बड़े ग्राहक : इंडोनेशिया, वियतनाम, मलेशिया, रूस, पाकिस्तान, ब्राजील, थाईलैंड। 2020 में रूस ने 54 हजार टन लहसुन खरीदा था।

32.27 लाख मीट्रिक टन लहसुन का उत्पादन भारत में। राजस्थान, मध्य प्रदेश और यूपी में सबसे अधिक पैदावार।

'महकता' इतिहास

5000 साल से लहसुन इस्तेमाल कर रहा इंसान, भारत और मिस्र की सभ्यता में जिक्र।

4500 साल पहले बेबीलोन सभ्यता में लहसुन खाना शुरू किया गया।

2000 साल से चीनी खानपान का अभिन्न अंग बना हुआ है।

850 ईसा पूर्व यूनान के प्राचीन कवि होमर ने दावा किया कि लहसुन में औषधीय गुण हैं।

1762 में Marseille में प्लेग फैला। तब 4 चोर सजा से इसलिए बच गए, क्योंकि उन्होंने लहसुन से ऐसी दवा बनाई, जिसने उन्हें प्लेग से बचाकर रखा।

THE SPEAKING TREE
और पढ़ने के लिए देखें
hindi.speakingtree.in

सत्य के साम्राज्य में अहिंसा ही राज कर पाती है

महात्मा गांधी

आपने मुझसे पूछा है कि मैं सत्य को ईश्वर क्यों समझता हूं। हिंदू शास्त्रों में जिन्हें ईश्वर के सहस्र नाम कहा जाता है, बचपन में मुझे उनका जप करना सिखाया गया था। लेकिन इन सहस्र नामों में ईश्वर की सारी नामावली पूरी नहीं हो जाती। मेरे खयाल में यही सत्य है कि जितने प्राणी हैं उतने ही ईश्वर के नाम हैं। और इसीलिए हम यह भी कहते हैं कि ईश्वर अनाम है। चूंकि ईश्वर के अनेक रूप हैं, इसीलिए हम उसे अरूप भी समझते हैं। चूंकि वह हमसे कई वाणियों में बात करता है, इसीलिए हम उसे अवाक समझते हैं। इसी तरह जब मैंने इस्लाम का अध्ययन किया तब मुझे पता लगा कि इस्लाम में भी ईश्वर के अनेक नाम हैं।

जो लोग कहते थे कि ईश्वर प्रेम है, उनके साथ मैं भी कहता था कि ईश्वर प्रेम है। लेकिन मैं अपने हृदय की गहराई में यही कहा करता था कि ईश्वर प्रेमरूप होगा, पर सबसे ज्यादा सत्यरूप है। लेकिन इससे दो कदम आगे बढ़ा। मैंने कहा कि ईश्वर न केवल सत्यरूप है बल्कि सत्य ही ईश्वर है। ईश्वर सत्य है और सत्य ही ईश्वर है, इन दोनों वाक्यों में सूक्ष्म भेद को आप समझ लेंगे। इस नतीजे पर मैं सत्य की 50 वर्ष की दीर्घ, अनवरत और कठिन खोज के बाद पहुंचा हूं। इसके बाद मुझे पता चला कि सत्य तक पहुंचने का निकटतम मार्ग प्रेम है। लेकिन मैंने यह भी पाया कि अंग्रेजी भाषा में Love (प्रेम) शब्द के अनेक अर्थ हैं। और विकार के अर्थ में मानव प्रेम तो एक मलिन चीज है। मैंने यह भी देखा कि अहिंसा के अर्थ में प्रेम के पुजारियों की संख्या दुनिया में गिनी-चुनी हैं। लेकिन सत्य के बारे में दो अर्थ नहीं है। नास्तिकों तक ने सत्य की आवश्यकता या शक्ति स्वीकार की है। लेकिन सत्य को ढूंढ निकालने की अपनी लगन में नास्तिकों ने ईश्वर के अस्तित्व से भी इनकार करने में संकोच नहीं किया है। और अपने नजरिए से उन्होंने ठीक ही किया है।

इस तरह सोचते हुए मेरी समझ में आया कि यह कहने के बजाय मुझे यह कहना चाहिए कि सत्य ही ईश्वर है। इस संबंध में मुझे चार्ल्स ब्रैडलो का नाम याद आता है। वह अपने आपको नास्तिक बताया करते थे। पर उनके बारे में कुछ जानता हूं, इसलिए उन्हें कभी नास्तिक नहीं कहूंगा। मैं उन्हें ईश्वर-भीरू मनुष्य कहूंगा। हालांकि मैं जानता हूं कि वह इसे स्वीकार नहीं करेंगे। उनसे यदि मैं यह कहूं कि 'मिस्टर ब्रैडलो, आप एक सत्यभीरू मनुष्य हैं, इसीलिए ईश्वर-भीरू मनुष्य हैं, तो उनका मुंह लाल हो जाएगा।'

ईश्वर सत्य है, यह कहने में एक दूसरी कठिनाई है कि ईश्वर का नाम करोड़ों लोगों ने लिया है और उसके नाम पर अनगिनत अत्याचार किए हैं। यह बात नहीं है कि सत्य के नाम पर वैज्ञानिक लोग क्रूरताएं नहीं करते। मैं जानता हूं कि सत्य और विज्ञान के नाम पर पशुओं की चीर-फाड़ के सिलसिले में उन पर कैसी अमानुषिक निर्दयताएं की जाती हैं। सारांश यह कि ईश्वर का वर्णन किसी भी तरह किया जाए, उसमें कई कठिनाइयां हैं। लेकिन मनुष्य का मन एक सीमित वस्तु है और जब आप एक ऐसी सत्ता की कल्पना करते हैं, जो मनुष्य की समझने की शक्ति से परे है, तब आपको इन सीमाओं के भीतर रहकर ही प्रयत्न करना पड़ता है।

(साभार : यंग इंडिया में 31 दिसंबर 1931 को प्रकाशित लेख)

SBM ने खोला कचरे से कमाई का रास्ता

तोखन साहू

स्वच्छ भारत मिशन (SBM) की शुरुआत 10 साल पहले हुई थी। 1.45 अरब लोगों के देश में किसी भी योजना को लागू करने के लिए सभी स्टेकहोल्डर्स के बीच समन्वय की जरूरत होती है। दशक भर की यात्रा पर नजर डालें तो स्वच्छ भारत मिशन ने कई उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं।

हर क्षेत्र में असर | स्वच्छ भारत मिशन का मकसद था कि यह देश के हर कोने तक पहुंचे। स्वच्छता का असर स्वास्थ्य और लोगों की सुरक्षा पर भी पड़ता है। इस मिशन ने सभी क्षेत्रों पर अपना असर छोड़ा है। स्थानीय सरकार और लोगों के बीच सहयोग पर ध्यान केंद्रित करके स्वच्छ भारत मिशन ने ग्रामीण क्षेत्रों में असर दिखाया है।

शौचालय बनाने पर ध्यान | मिशन ने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया है कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता का अंतराल कम हो और उपलब्ध सेवाएं बराबर मिलें। SBM-ग्रामीण ने खुले में शौच को खत्म करने, 10 करोड़ से अधिक शौचालयों का निर्माण करने और स्वच्छता जागरूकता अभियानों का नेतृत्व करने के लिए स्वयं सहायता समूहों (SHG) को सशक्त बनाने पर ध्यान केंद्रित किया।

अंबिकापुर की मिसाल | इन प्रयासों से महत्वपूर्ण बदलाव आया है। छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर शहर का एक प्रसिद्ध मामला है। अंबिकापुर की महिलाओं के नेतृत्व वाली SHG ने अपना खुद का डिसेंट्रलाइज्ड वेस्ट मैनेजमेंट सिस्टम बनाया है। इस योजना से मौके पर ही कचरे का निपटारा कर दिया जाता है। इससे लैंडफिल साइट तक कम कचरा पहुंच रहा। स्वयं सहायता समूह ने अपने सॉलिड लिक्विड रिसोर्स मैनेजमेंट (SLRM) को बेहतर बनाया है। इस पहल से स्थानीय निकाय को आमदनी हो रही है।

स्थिति में सुधार | अंबिकापुर का मामला ऐसे कई मूल मूल्यों को उजागर करता है, जिन्हें स्वच्छ भारत मिशन ने भारत की हर नगरपालिका में बनाए रखने की कोशिश की है - सहयोग, श्रम की गरिमा और इनोवेशन। पिछले एक दशक में मिशन की कुछ सबसे जरूरी प्राथमिकताएं सीवेज कर्मचारियों की कार्य स्थिति में सुधार लाना, सीवेज की सफाई को पूरी तरह से स्वचालित बनाना, हाथ से कचरा ढोने की प्रथा को रोकना और अपशिष्ट निपटान के पीछे के अर्थशास्त्र को

AI Image

कॉमन रूम

उलट कर देशभर में लैंडफिल को ठीक करना रही हैं।

जीरो डंप साइट | 2022 में शुरू किए गए लक्ष्य जीरो डंप साइट चुनौती के तहत, देश के सभी शहरी स्थानीय निकायों ने मौजूदा डंप साइट को बंद करने, वैज्ञानिक लैंडफिल को बनाए रखने और देशभर में सभी अवैध डंप साइट को ठीक करने की दिशा में काम किया है।

लक्ष्य पूरे हो रहे | स्वच्छ भारत मिशन ने कचरे से कमाई पर बहुत ध्यान दिया है। इसका मतलब है कि नए वेस्ट मैनेजमेंट के जरिये कचरे को फिर से इस्तेमाल की जा सकने वाली चीजों में बदलना। इस पहल ने रीसाइक्लिंग, कचरे से खाद, बायोगैस और बिजली बनाने को प्रोत्साहित किया है। इससे कचरे का निपटारा पहले से बढ़ गया है। इस तरह से लैंडफिल दबाव को कम करने में मदद मिली है। साथ ही, आर्थिक और पर्यावरणीय दृष्टि से भी फायदा हो रहा है।

मंत्रालयों में सहयोग | स्वच्छ भारत मिशन के दूसरे चरण के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए विभिन्न मंत्रालयों के बीच जिस तालमेल से काम हो रहा, वह देखना उत्साहजनक है। कचरे से बिजली बनाने के लिए SBM ने बिजली मंत्रालय के साथ काम शुरू किया। इसका उद्देश्य था शहरी कचरे से ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा देना। इसी तरह, भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने सड़क निर्माण में अपशिष्ट प्लास्टिक का उपयोग करना शुरू कर दिया। कृषि मंत्रालय ने शहरी कम्पोस्ट योजना की शुरुआत के साथ नगर निगम के ठोस कचरे से खाद के उपयोग को बढ़ावा देना शुरू किया।

नागरिकों की भागीदारी | मिशन का शायद सबसे उत्साहजनक पहलू नागरिकों की उत्साही भागीदारी रही है। यह मिशन वास्तव में जन आंदोलन बन गया है।

(लेखक आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय के राज्यमंत्री हैं)

आर.एन.आई. नं. 510/57© सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित। स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड के लिए राजीव यादव द्वारा, 7 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा **टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, साइट IV, औद्योगिक क्षेत्र साहिबाबाद** और प्लॉट नंबर 7-8, सेक्टर M-11, ट्रांसपोर्ट हब, इंडस्ट्रियल मॉडल टाउनशिप, मानेसर, हरियाणा से मुद्रित। फोन : 23302000 फैक्स: 23492047, पंजीकृत कार्यालय : दादाभाई नौरोजी रोड, मुंबई-400001। विमान सेवा शुल्क : 1 रु. प्रति कॉपी। नेपाल में कुल मूल्य : सोमवार से शनिवार : नेपाली 5 रु. ; रविवार : नेपाली 6 रु.
संपादक (दिल्ली मार्केट) : आशीष पांडे (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी)

राष्ट्रीय सहारा

नई दिल्ली ● बुधवार ● 2 अक्टूबर ● 2024

www.rashtriyasahara.com

आस्था पर सियासत

तिरुपति मंदिर लड्डू विवाद पर सुप्रीम कोर्ट ने आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू को फटकार लगाई है। शीर्ष अदालत ने कहा कि आप संवैधानिक पद पर हैं। हम उम्मीद करते हैं कि भगवान को राजनीति से दूर रखा जाए। राजनीति और धर्म को मिलाने की अनुमति नहीं दी जा सकती। नायडू ने दावा किया था कि पिछली सरकार के दौरान तिरुपति लड्डू बनाने में इस्तेमाल किया गया घी शुद्ध होने की बजाय जानवरों की चर्बी से युक्त था। अदालत का सवाल है कि जांच जारी है तो रिपोर्ट आने से पहले आप मीडिया में क्यों गए। लड्डू का स्वाद खराब होने की श्रद्धालुओं की शिकायत की बात उठने पर राज्य सरकार से सवाल किया कि आप कह सकते हैं कि टेंडर गलत

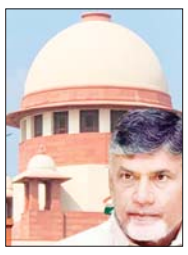

तरीके से दिया गया, मगर यह कहना कि मिलावटी घी प्रयोग किया गया, इसका सबूत कहां है। सबसे पहले आंध्र प्रदेश के सेशाचालम पर्वत पर स्थित तिरुमला तिरुपति देवस्थानम के अधिकारी ने शुद्ध घी में वनस्पति तेल की मिलावट की बात उठाई। बाद में इसमें जानवरों की चर्बी होने की बात कर उन्होंने विवाद पैदा किया। नायडू सरकार द्वारा दावा किया गया कि प्रसाद में मछली का तेल और बीफ चर्बी का इस्तेमाल परीक्षण के नमूनों में पाया गया। हालांकि यह लड्डू मंदिर परिसर की गुप्त रसोई पोटू में बड़ी संख्या में तैयार किया जाता है। यही पवित्र लड्डू रोज हजारों की संख्या में आने वाले श्रद्धालुओं को प्रसाद के तौर पर पहले मुफ्त दिया जाता था, बाद में विभिन्न नियमों के साथ इसकी कीमत तय कर दी गई। यह बहुसंख्य देशवासियों की आस्था से जुड़ा मामला है। हालांकि तत्कालीन मुख्यमंत्री जगनमोहन रेड्डी ने चंद्रबाबू पर राजनीति के लिए भगवान का प्रयोग करने और जनता का ध्यान सरकार के कामों से हटाने का आरोप लगाया। मंदिर की पवित्रता को ठेस लगाने वाली ये खबरें श्रद्धालुओं के लिए किसी सदमे से कम नहीं कही सकतीं। मगर जैसा शीर्ष अदालत ने कहा है कि धर्म को राजनीति से मिलाने की जरूरत नहीं है। आस्था-विश्वास के प्रति राजनीतिज्ञों को विशेष सतर्कता बरतनी सीखनी चाहिए। राजनीतिक लाभ के लोभ में धर्म का दुरुपयोग, जनता को दिग्भ्रमित करने और समुदायों के दरम्यान दरारें डालने वालों पर सख्ती की जानी आवश्यक है। सनसनी फैलाने वाले दोषमुक्त नहीं हो सकते। यदि वास्तव में किसी भी तरह की मिलावट हुई है, तो आस्था के साथ खिलवाड़ करने वालों को बख्शा नहीं जाना चाहिए।

महायुद्ध की आशंका

पश्चिम एशिया में करीब 1 वर्ष से जारी संघर्ष अब निर्णायक दौर में प्रवेश करता दिखाई दे रहा है। इस्राइल के हमले में लेबनान में हिजबुल्लाह के नसरुल्लाह और उसके नंबर दो अली कराकी के मारे जाने के बाद इस संघर्ष के महायुद्ध में तब्दील होने की आशंकाएं बढ़ गई है। इस बीच सोमवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से टेलीफोन पर बातचीत की। दोनों नेताओं के बीच पश्चिम एशिया के हालात पर चर्चा हुई। इस्राइल और फिलीस्तीन के बीच जारी संघर्ष के विस्तार होने की आशंकाओं के मद्देनजर यह बातचीत बेहद महत्त्वपूर्ण मानी जा रही है। मोदी ने अपनी इस्राइली समकक्ष से कहा कि दुनिया में आतंकवाद के लिए कोई जगह नहीं है। वस्तुतः हमास के प्रमुख नेता इस्माइल हानिया की हत्या के बाद

नसरुल्लाह के मारे जाने के बाद परिदृश्य पूरी तरह बदल गया है। सबसे अधिक चिंताजनक स्थिति यह हो सकती है कि ईरान, हमास, इराक, हिज्बुल्लाह और सीरिया में सक्रिय ईरान समर्थक हथियारबंद गुट मिलकर इस्राइल पर हमला बोले, जिसके जवाब में इस्राइल की ओर से कई देशों में एक साथ सैनिक कार्रवाई की जाए। इस मुहिम में इस्राइल को अमेरिका, ब्रिटेन सहित कुछ अन्य यूरोपीय देशों की ओर से सक्रिय समर्थन मिलेगा। सबसे भयावह परिदृश्य पश्चिम एशिया में महायुद्ध का हो सकता है। इसके विश्व युद्ध में तब्दील होने की आंशिक ही सही लेकिन आशंका है। ऐसा परिदृश्य उस समय बनेगा जब इस्राइल ईरान के परमाणु केंद्रों को नष्ट करने के अपने पुराने मंसूबे पर अमल करने का दुस्साहस करे। वास्तव में इस्राइल अपने लिए सबसे बड़ा खतरा ईरान को मानता है। इस्राइली प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने सोमवार को ईरान के लोगों से कहा कि हर दिन आप एक ऐसी शासन को देखते हैं जो आपको अपने अधीन कर लेता है। अगर उन्हें आपकी परवाह है तो वह मध्य पूर्व में बेवजह के युद्धों पर अरबों डॉलर बर्बाद करना बंद कर देगा। इस्राइल को इस हकीकत का पता है कि यदि ईरान परमाणु हथियार बना लेता है तो इससे पश्चिमी एशिया में शक्ति संतुलन पूरी तरह बदल जाएगा। यह इस्राइल ही नहीं बल्कि अमेरिका के लिए भी एक बड़ी चुनौती होगी। मध्य-पूर्व की राजनीतिक अस्थिरता भारतीय हितों को भी प्रभावित कर सकती है। इसलिए प्रधानमंत्री मोदी शांति और स्थिरता के लिए युद्धरत दोनों पक्षों से संवाद कर रहे हैं।

शास्त्री जयंती/श्वेता गोयल

नैतिकता की मिसाल

भारत के प्रधानमंत्री बनने से पहले लालबहादुर शास्त्री भारत सरकार में विदेश मंत्री, गृह मंत्री और रेल मंत्री जैसे महत्त्वपूर्ण पद संभाल चुके थे। एक बार वे रेल के ए.सी. कोच में सफर कर रहे थे। उस दौरान वे यात्रियों की समस्या जानने के लिए जनरल बोगी में चले गए। वहां उन्होंने प्रत्यक्ष अनुभव किया कि यात्रियों को कितनी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इससे वे काफी नाराज हुए और उन्होंने जनरल डिब्बे के यात्रियों को भी सुविधाएं देने का निर्णय लिया। रेल के जनरल डिब्बों में पहली बार पंखा लगवाते हुए रेलों में यात्रियों को खानपान की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए पैंट्री की सुविधा भी उन्होंने शुरू करवाई।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 1940 के दशक में लाला लाजपत राय की संस्था 'सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसायटी' द्वारा गरीब पृष्ठभूमि वाले स्वतंत्रता सेनानियों के परिवारों को जीवन यापन हेतु आर्थिक मदद दी जाया करती थी। उसी समय की बात है, जब लालबहादुर शास्त्री जेल में थे। उन्होंने उस दौरान जेल से ही अपनी पत्नी ललिता को एक पत्र लिख कर पूछा कि उन्हें संस्था से पैसे समय पर मिल रहे हैं, या नहीं और क्या इतनी राशि परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त है? पत्नी ने उत्तर लिखा कि उन्हें प्रति माह पचास रुपये मिलते हैं, जिनमें से करीब चालीस रुपये ही खर्च हो पाते हैं, शेष राशि वह बचा लेती हैं।

पत्नी का यह जवाब मिलने के बाद शास्त्री जी ने संस्था को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने धन्यवाद देते हुए कहा कि अगली बार से उनके परिवार को केवल चालीस रुपये ही भेजे जाएं और बचे हुए दस रुपये से किसी और जरूरतमंद की सहायता कर दी जाए। शास्त्री जी के प्रधानमंत्री रहते भारत और पाकिस्तान का युद्ध हुआ तो देशवासियों में हौसला बनाए रखने के लिए उन्होंने जय जवान किसान का उद्घोष किया। दो अक्तूबर, 1904 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में जन्मे भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की आज हम 120वीं जयंती मना रहे हैं, जिनकी 11 जनवरी 1966 की रात मौत हो गई थी। उनके पद्चिह्नों पर चलने का संकल्प लेना ही सच्चे अर्थों में उन्हें हमारी श्रद्धांजलि होगी।

ग्रामोदय से राष्ट्रोदय तक

मोदी सरकार

कमलेश पासवान

दो अक्टूबर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्मदिन के अवसर पर पूरा विश्व युद्ध, तनाव और अनिश्चितता के माहौल में शांति एवं सद्भावना के सिद्धांत पर चलने वाले महात्मा गांधी सरीखे व्यक्तित्व की कमी महसूस कर रहा है। शांति एवं सद्भावना के अग्रदूत, ग्राम स्वराज और पंचायती राज प्रणाली के विचारक महात्मा गांधी के विचार आज के परिप्रेक्ष्य में भी उतने ही उपयुक्त और मूल्यवान हैं, जितने उनके जीवनकाल के दौरान थे। संयोगवश आज 'जय जवान जय किसान' नारे के जनक व भारत के दूसरे प्रधानमंत्री भारत रत्न लाल बहादुर शास्त्री का भी जन्मदिवस है।

वास्तव में सशक्त आदर्श ग्राम या ग्राम स्वराज की गांधीवादी दृष्टि तथा 'राष्ट्र प्रथम' के सिद्धांत के महत्त्व की पहचान हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने की है। गांवों को समृद्ध बनाने का जो सपना इन महान विभूतियों ने देखा उन्हीं के विजन और सिद्धांतों के आधार पर प्रधानमंत्री मोदी ने विकसित भारत का संकल्प दोहराया है। उनका दृढ़ विश्वास है कि विकसित भारत का रास्ता गांवों से ही गुजरता है। अर्थव्यवस्था का विकास काफी हद तक ग्रामीण क्षेत्रों की प्रगति पर आधारित है जिसे ध्यान में रखते हुए मोदी सरकार ने 2014 की शुरुआत से ही कई नई महत्त्वपूर्ण योजनाओं की शुरुआत की तथा पहले से चल रही योजनाओं में आमूल-चूल परिवर्तन के साथ योजनाओं को लागू किया जिनमें प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना, प्रधानमंत्री जन-मन योजना, दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, मनरेगा, प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण, राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम, सांसद आदर्श ग्राम योजना, मिशन अंत्योदय, दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना आदि प्रमुख योजनाएं आत्मनिर्भर गांव का आधार बन गई हैं।

इनके स्पष्ट परिणाम भी नजर आ रहे हैं, भारत आज कई विकासशील देशों का पछाड़ कर विश्व की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में ग्रामीण विकास मंत्रालय गरीबी दूर करने तथा ग्रामीण आबादी विशेष रूप से गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे लोगों को बेहतर जीवन स्तर मुहैया करा कर उनका विकास करने को कृतसंकल्प है। प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के तहत बनाई गई ग्रामीण सड़कें आर्थिक विकास को गति दे रही हैं। पीएमजीएसवाई योजना में अगस्त, 2024 तक 8 लाख 23 हजार 739 किलोमीटर सड़क बनाने की स्वीकृति दी गई थी जिसमें से 7 लाख 65 हजार 911 किमी. सड़क बन चुकी हैं। ग्रामीण विकास को गति देने के लिए नई प्रौद्योगिकी के अंतर्गत भी कई पहल की गई हैं। ग्रामीण विकास मंत्रालय ने उत्तर प्रदेश राज्य में फुल डेप्थ रिक्लेमेशन (एफडीआर) नाम से सड़क निर्माण क्षेत्र में नवीन प्रणाली की

शुरुआत की है। कम लागत के विकल्प और थिनर सरफेस कोर्स के लिए एक स्थायी तकनीक से युक्त एफडीआर के तहत अरुणाचल प्रदेश, बिहार, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, केरल, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, ओडिशा और उत्तर प्रदेश में कुल 9,734 किमी. लंबाई की मंजूरी दी है।

मनरेगा योजना को व्यावहारिक बनाने के परिणाम जगजाहिर है। 2006-07 से 2013-14 तक इस योजना में 2 लाख 13 हजार 220 करोड़ रुपये खर्च किए गए जबकि मोदी सरकार ने 2014-15 से 2024-25 तक इसमें 246 प्रतिशत की बढ़ोतरी करके मनरेगा के लिए 7 लाख 40 हजार 669 करोड़ रुपये जारी किए जिससे ग्रामीणों क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़े। ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए मोदी सरकार ने कई योजनाएं शुरू की हैं। नमो ड्रोन दीदी, लखपति दीदी, महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना ने ग्रामीण महिलाओं में आत्मविश्वास का संचार किया है। प्रधानमंत्री मोदी ने 77वें स्वतंत्रता दिवस के संबोधन में कृषि तकनीक के बारे में बात करते हुए ग्रामीण विकास के क्षेत्र में विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षमता का लाभ उठाने की वकालत की थी। कहा था कि स्वयंसहायता समूहों को 15,000 महिलाओं को ड्रोन के संचालन और मरम्मत के लिए ऋण देकर प्रशिक्षित किया जाएगा। इन महिला स्वहायता समूहों द्वारा ड्रोन के उड़ान कार्यक्रम के संचालन को तेजी से मूर्तरूप दिया जा रहा है। स्टार्टअप ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम भी ग्रामीणों को नये उद्योगों के लिए सहायता प्रदान कर रहा है। सरकार ने लखपति दीदी बनाने के लक्ष्य को एक करोड़ से बढ़ाकर तीन करोड़ कर दिया है। मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल में पहले सौ दिनों के लिए ग्यारह लाख लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य रखा गया था। लक्ष्य को समय से पहले ही पूरा कर लिया गया है।

ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा प्रधानमंत्री मंत्री ग्रामीण आवास योजना के अंतर्गत लगभग 3 करोड़ आवासों की स्वीकृति और 99.9 प्रतिशत लक्ष्यों की प्राप्ति अपने आप में विश्व रिकार्ड है। मंत्रालय ने दीन दयाल उपाध्याय अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत स्वयं सहायता समूह की ग्रामीण महिला उद्यमियों को टिकाऊ परिवहन के रूप में इलेक्ट्रिक साइकिल प्रदान करने के लिए MOU किया है जिससे ग्रामीण परिवहन को न केवल वाहनों की भीड-भाड़ से मुक्ति मिलेगी, बल्कि परिवहन के क्षेत्र में कॉर्बन उत्सर्जन को भी कम किया जा सकेगा। ग्रामीण विकास मंत्रालय अपनी महत्त्वाकांक्षी योजनाओं के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्र से जुड़ी स्वेरोजगार, विकास, सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र से जुड़ी अनेक योजनाओं में भी सक्रिय भागीदारी निभा रहा है।

कई मंत्रालयों द्वारा संयुक्त रूप से चलाई जा रही प्रधानमंत्री जन-मन योजना के तहत प्रधानमंत्री मोदी ने आदिवासी ग्रामीण भाई-बहनों के लिए सबको पक्का घर, हर घर नल से जल, गांव-गांव सड़क, हर घर बिजली, बेहतर शिक्षा, कौशल विकास, सबके लिए अस्पताल, गांवों तक मोबाइल मेडिकल यूनिट, सबको पोषण आहार, उन्नत आजीविका तथा दूर-दराज गांव तक मोबाइल नेटवर्क जैसी 11 बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने का सहराहनीय संकल्प लिया है। यदि सरकार की नीतियों, कार्यक्रमों और योजनाओं तथा उनके परिणामों को दलगत राजनीति के चश्मे से हट कर देखा जाए तो स्पष्ट नजर आता है कि पिछले 10 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में सरकार की योजनाओं से हर वर्ग, धर्म और क्षेत्र का अद्भूत और सर्वांगीण विकास हुआ है।

(लेखक केंद्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री हैं)

> शांति एवं सद्भावना के अग्रदूत, ग्राम स्वराज और पंचायती राज प्रणाली के विचारक महात्मा गांधी के विचार आज के परिप्रेक्ष्य में भी उतने ही उपयुक्त और मूल्यवान हैं, जितने उनके जीवनकाल के दौरान थे। संयोगवश आज 'जय जवान जय किसान' नारे के जनक व भारत के दूसरे प्रधानमंत्री भारत रत्न लाल बहादूर शास्त्री का भी जन्मदिवस है। सशक्त आदर्श ग्राम या ग्राम स्वराज की गांधीवादी दृष्टि तथा 'राष्ट्र प्रथम' के सिद्धांत के महत्त्व की पहचान प्रधानमंत्री मोदी ने की है

भुना आलू
डायबिटीज और रक्तचाप में फायदेमंद

- धारणा है कि डायबिटीज पीड़ितों के लिए आलू दुश्मन है, लेकिन एक नये अध्ययन में सामने आया है कि आलू कम मात्रा में खाया जाए और इसे सही तरीके से पकाया जाए तो यह डायबिटीज के मरीजों के लिए सुपरफूड हो सकता है
- अमेरिका के लास वेगास में नेवादा यूनिवर्सिटी की असिस्टेंट प्रोफेसर नेदा अखावन के नेतृत्व में की गई स्टडी में पाया गया है कि आलू से दिल की सेहत सुधरती है, और ब्लड प्रेशर संतुलित रहता है। कमर की मोटाई कम करने भी यह मददगार है

(स्रोत : मीडिया इन्पुट्स)

दवा प्राधिकरणों ने अनेक मिलावटी दवाओं की सूची जारी की हैं, जो बाजार में खरीदी-बेची जा रही हैं। सीएनबीसी की एक रिपोर्ट के मुताबिक, इस सूची में ब्लड प्रेशर में आम इस्तेमाल होने वाली दवा टेलमा भी शामिल है। कल्पना ही की जा सकती है कि ब्लड प्रेशर की एक घटिया दवा शरीर के महत्त्वपूर्ण अंग पर कितना बुरा असर डाल सकती है। यह आपराधिक अनदेखी है। इस पर क्या कार्रवाई की जा रही है?

एम.के. वेणु, पत्रकार
@mkvenu1

भारत का आर्थिक विकास गतिमान

वित्तीय अनुमान | प्रह्लाद सबनानी

आज जब विश्व में कई विकसित एवं विकासशील देशों की अर्थव्यवस्थाओं में भिन्न प्रकार की आर्थिक समस्याएं दिखाई दे रही हैं, लेकिन वैश्विक स्तर पर कई प्रकार की विपरीत परिस्थितियों के बीच भी भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व में सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बनी हुई है। कई विदेशी एवं निवेश संस्थान भारत के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि के संबंध में अपने पूर्वानुमानों में संशोधन कर रहे हैं।

विशेष रूप से कोरोना महामारी के पश्चात भारत ने आर्थिक विकास के क्षेत्र में तेज रफ्तार पकड़ ली है। भारत में आर्थिक क्षेत्र में सुधार कार्यक्रमों को लागू किया गया है। स्टैंडर्ड एवं पूअर (एसएंडपी) नामक विश्वविख्यात क्रेडिट रेटिंग संस्थान ने हाल में अपने एक प्रतिवेदन में बताया है कि भारत कैलेंडर वर्ष 2024 में एवं इसके बाद के वर्षों में 6.7 प्रतिशत की आर्थिक विकास दर के साथ 2031 तक विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा तथा भारतीय अर्थव्यवस्था का वैश्विक अर्थव्यवस्था में योगदान वर्तमान के 3.6 से बढ़कर 4.5 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच जाएगा। भारत में प्रति व्यक्ति आय भी बढ़कर उच्च मध्यम आय समूह की श्रेणी की हो जाएगी। भारत के सकल घरेलू उत्पाद का आकार भी वर्तमान के 3.92 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 7 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो जाएगा। हालांकि एसएंडपी ने भारत में आर्थिक विकास दर के 6.7 प्रतिशत प्रति वर्ष बढ़ने का अनुमान लगाया है जबकि वित्तीय वर्ष 2023-24 में भारत की आर्थिक विकास दर के 7.3 प्रतिशत के अनुमान के विरुद्ध 8.2 प्रतिशत की रही है। भारत सरकारी क्षेत्र के साथ ही निजी क्षेत्र भी पूंजीगत खर्च बढ़ाने पर ध्यान देता दिखाई दे रहा है। इससे आगे आने वाले समय में केंद्र सरकार पर पूंजीगत खर्चों में वृद्धि करने संबंधी दबाव कम होगा और केंद्र सरकार का बजटीय घाटा और अधिक तेजी से कम होगा जिससे अंततः विदेशी निवेशक भारत में अपना निवेश बढ़ाने के लिए आकर्षित होंगे।

इसी प्रकार, विश्व बैंक एवं अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भी 2024, 2025 एवं 2026 में भारत के आर्थिक विकास संबंधी अपने अनुमानों को बढ़ाया है। विश्व बैंक का तो यह भी कहना है कि भारत ने कैलेंडर वर्ष 2023 में विश्व के आर्थिक विकास में 16 प्रतिशत का योगदान दिया और इस प्रकार भारत अब विश्व में आर्थिक विकास के इंजिन के रूप में कार्य करता हुआ दिखाई दे रहा है। भारत ने 2023

में 7.2 प्रतिशत की आर्थिक विकास दर हासिल की थी, जो विश्व की अन्य उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं द्वारा इसी अवधि में हासिल की गई विकास दर से दुगुनी थी। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भारत की आर्थिक विकास दर के 2024 के अपने पूर्व अनुमान 6.7 प्रतिशत की विकास दर को बढ़ा कर 7 प्रतिशत कर दिया है। ओईसीडी देशों के समूह ने भी 2024 एवं 2025 में वैश्विक स्तर पर आर्थिक प्रगति के अनुमान जारी किए हैं। इन अनुमानों के अनुसार, वैश्विक स्तर पर 2024 एवं 2025 में सकल घरेलू उत्पाद में 3.2 प्रतिशत की वृद्धि हासिल की जा सकेगी।

वहीं भारत की आर्थिक विकास दर 2024 के 6.7 प्रतिशत से बढ़कर 2025 में 6.8 प्रतिशत रहने की संभावना व्यक्त की गई है। चीन की आर्थिक विकास दर 2024 में 4.9 प्रतिशत से घट कर 2025 में 4.5 रहने की संभावना है। इसी प्रकार रूस एवं अमेरिका की आर्थिक विकास दर भी 2024 में क्रमशः 3.7 प्रतिशत एवं 2.6 प्रतिशत से घट कर 2025 में क्रमशः 1.1 प्रतिशत एवं 1.6 प्रतिशत रहने की संभावना व्यक्त की गई है। कुल मिलाकर आज विश्व के लगभग समस्त वित्तीय एवं निवेश संस्थान आने वाले वर्षों में भारत की आर्थिक विकास दर बढ़ने के अनुमान लगा रहे हैं।

वैश्विक स्तर पर वित्तीय संस्थानों द्वारा भारत के आर्थिक विकास दर के संबंध में लगाए जा रहे अनुमानों के अनुसार यदि भारत आने वाले वर्षों में प्रति वर्ष 6.7 प्रतिशत की आर्थिक विकास दर हासिल करता है तो भारत 2031 तक विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। इसके ठीक विपरीत भारत ने वित्तीय वर्ष 2023-24 में 8.2 प्रतिशत की आर्थिक विकास दर हासिल की थी एवं भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमान के अनुसार भारत वित्तीय वर्ष 2024-25 में 7 प्रतिशत से अधिक की आर्थिक विकास दर हासिल करेगा, इस प्रकार तो भारत 2031 के पूर्व ही विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। विश्व बैंक की आर्थिक संभावना रिपोर्ट 2024 ने वैश्विक अर्थव्यवस्था के बारे में तार्किक आशावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। 2024 में वैश्विक अर्थव्यवस्था में स्थिरता के संकेत जरूर दिए हैं परंतु कोविड महामारी से पहले के विकास के स्तरों की तुलना में वैश्विक स्तर पर विकास अभी भी धीमा बना हुआ है। वैश्विक स्तर पर मौजूदा चुनौतियों से निपटने के लिए सभी देशों को मिल कर प्रभावी उपाय करने होंगे। यहां भारत की 'वसुधैव कुटुंबकम' एवं 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' जैसी भावनाओं के साथ, वैश्विक स्तर पर आर्थिक विकास के लिए, यदि सभी देश मिल कर आगे बढ़ते हैं, तो भारत के साथ-साथ पूरे विश्व में भी खुशहाली लाई जा सकती है।

बुढ़ापा | श्रीराम शर्मा आचार्य

बुढ़ापा क्यों और कैसे आता है? इससे निजात कैसे पाई जाए? इस विषय पर देश-विदेश की विभिन्न शोधशालाओं में गहन अनुसंधान चल रहे हैं। अधिकांश मामलों में देखा जाता है कि व्यक्ति की वायोलजिकल एज (कायिक आयु) उसकी क्रोनोलजिकल एज (मियादी आयु) से बढ़ी-चढ़ी होती है। आखिर, उसका कारण क्या है? बुढ़ापा असमय क्यों आ धमकता है? इन सभी बातों के सूक्ष्मता से अध्ययन के लिए 'जरा विज्ञान' अथवा 'जेरानटोलजी' नामक विज्ञान की शाखा की शुरुआत की गई जिसमें वैज्ञानिक इस बात को खोजते हैं कि क्या इस स्थिति को कुछ काल तक टाला जा सकता है? किंतु ऐसा तभी संभव है जब वैज्ञानिक इसके कारणों का पता लगा सकें और इसके पीछे काम करने वाले कारणों को उद्घाटित कर सकें। इस दिशा में प्रयास जारी हैं। कुछ वैज्ञानिकों का कहना है कि शरीर में जल्दी ही अशक्तता के लक्षण प्रकट होने का कारण शरीर कोशिकाओं में होने वाली म्यूटेशन की प्रक्रिया है। इस सिद्धांत के अनुसार म्यूटेशन से प्रभावित कोशिकाएं फिर अपनी ही जैसी कोशिकाओं को जन्म देने लगती हैं जिनकी क्रियाएं असामान्य होती हैं, फलतः शरीर में विपरीत लक्षण प्रकट होने लगते हैं। एक अन्य मत के अनुसार ऐसा क्रॉस लिंकिंग के कारण होता है जिसमें महत्त्वपूर्ण अणुओं के बीच बड़े पैमाने पर बंध (बौण्ड) का निर्माण हो जाता है। इन बंधों के कारण कोशिकाएं आगे अपने सहज स्वाभाविक क्रियाकलाप जारी नहीं रख पातीं और त्वचा, रक्त वाहिनियां कठोर बनने लगती हैं। ऐसा व्यक्ति के स्वयं के रहन-सहन, चिंतन-मनन एवं पर्यावरण प्रभाव के कारण होता है। उनके अनुसार अचिन्त्य चिंतन का दुष्प्रभाव आरंभ में तंत्रिका कोशिकाओं पर पड़ता है और बाद में फिर अन्य तंत्रों की कोशिकाएं प्रभावित होती चली जाती हैं। बुढ़ापे के अन्य कारणों को खोजने व उनका हल निकालने की दिशा में अल्बर्ट आइंस्टीन आयुर्विज्ञान महाविद्यालय-अमेरिका, मेंटल हेल्थ फाउंडेशन-लंदन एवं योरोपीय अनुसंधान विश्वविद्यालय-स्विट्जरलैंड के शरीर शास्त्रियों ने सराहनीय कार्य किए हैं। उनका कहना है कि शरीर कोशिकाओं की संख्या में ह्रास व उनकी जीवन अवधि में कमी ही संभवतः बुढ़ापे का मुख्य कारण है।

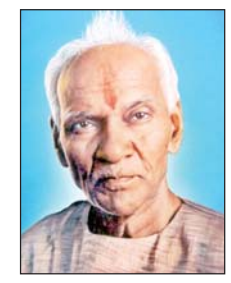

रीडर्स मेल

पाठ्यक्रम में यौन शिक्षा जरूरी

यौन शिक्षा के बारे में बात करना हमारे देश में आज भी बुरा माना जाता है। केंद्र सरकार ने यौन शिक्षा को छठी क्लास से बारहवीं तक के सिलेबस में शामिल करने के लिए 2007 में कहा था लेकिन आज तक देश के लोगों ने यौन शिक्षा को नहीं अपनाया। उनका मानना है कि स्कूलों में यौन शिक्षा होने से भारतीय संस्कृति और सभ्यता पर नकारात्मक असर पड़ेगा। लेकिन यौन शिक्षा के माध्यम से न केवल यौन संक्रमित बीमारियों से बचा जा सकता है, बल्कि असुरक्षित यौन संबंधों से भी बचा जा सकता है। आंकड़ों पर गौर करें तो वर्तमान में 27 से 30 फीसद गर्भपात नाबालिग लड़कियां करवाती हैं। ऐसे में उन्हें सही यौन शिक्षा मिलेगी तो गर्भपात के जंजाल से आसानी से बच पाएंगी। समय रहते बच्चों को यौन शिक्षा नहीं दी जाएगी तो वे अपने प्रश्नों का हल ढुंढने के लिए इधर-उधर का रुख करेंगे जो उनके मानसिक विकास में बाधा डाल सकता है।

संदीप कुमार, मधुपुर, झारखंड

टेस्ट मैच भी रोमांचक हो सकता है

क्रिकेट के टी-20 फॉर्मेट की लोकप्रियता में टेस्ट मैच की नीरसता और भारी हो गई। अब 5 दिनों तक कामेंट्री सुनने का जमाना भी लद गया। क्रिकेट प्रेमी ब्रेकिंग न्यूज देख कर ही तसल्ली कर लेते हैं। बावजूद इसके हालात के मद्देनजर कप्तान फैसला ले तो टेस्ट मैचों में भी टी-20 जैसी रोमांचकता लाई जा सकती है। कानपुर में भारत बांग्लादेश के बीच दूसरा मैच लगभग बरसात के साये में था। दो दिन जो खेल हुआ उसके चलते यही कयास लगाए जा रहे थे कि निर्णय की संभावनाएं क्षीण रहेंगी। मगर भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने ताबड़तोड़ बल्लेबाजी, विराट कोहली ने रिकॉर्डधारी संयम का परिचय देते हुए मैच को रोमांचक बना दिया। पहली पारी की तरह दूसरी में भी अश्विन, बुमराह, जड़ेजा आदि ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर बांग्लादेश को डेढ़ सौ का आंकड़ा नहीं पार करने दिया। भारत ने जीत के लिए जरूरी मामूली 95 रनों के लिए तीन महत्त्वपूर्ण विकेट खोए लेकिन टेस्ट मैच 7 विकेट से जीत कर शृंखला में क्लीन स्वीप कर विश्व क्रिकेट में अपनी धाक कायम रखी। भारतीय टीम को बधाई...।

अमृतलाल मारू 'रवि', इंदौर, मप्र

मिथुन सम्मान के हकदार

'डिस्को डांसर' 74 वर्षीय पदमश्री एवं फिल्मफेयर अवार्ड विजेता गौरांग चक्रवर्ती उर्फ मिथुन चक्रवर्ती अभिनेता, निर्माता, पूर्व सांसद एवं तीन बार के राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता को फिल्म जगत का सर्वोच्च सम्मान दादा साहब फाल्के प्रदान किया जाएगा। यह ऐसे इंसान का सम्मान है जिसने संघर्षों को झेला है और शिखर पर पहुंच लोगों के दिलों पर राज किया है। मिथुन नक्सलवाद से प्रभावित होकर सीपीआई (एमएल) में भी शामिल हुए थे और मार्शल आर्ट में ब्लैक बेल्ट लेकर फिल्मों में जोरआजमाइश की और सफलता के शिखर पर पहुंचे। मिथुन ऐसे कलाकार रहे हैं, जिन्हें 1976 में उनकी पहली फिल्म मृणाल सेन निर्देशित 'मृगया' में अभिनय के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, जिनकी धाक राज कपूर के बाद रूस में भी खूब सुनाई दी थी। मिथुन की 'डिस्को डांसर' ने रूस, चीन भारत और अनेकों देश में धूम मचाई थी। आज मिथुन चक्रवर्ती सफल उद्योगपति हैं, और 'डांस इंडिया डांस' के ग्रैंड मास्टर के रूप में धाक जमाए हुए हैं। प्रधानमंत्री और गृह मंत्री ने मिथुन चक्रवर्ती को शुभकामनाएं प्रेषित की हैं। वे इस सम्मान के सही मायने में हकदार हैं।

वीरेंद्र कुमार जाटव, दिल्ली
letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा ● राष्ट्रीयता ● कर्तव्य ● समर्पण

सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **जिया कादरी** द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, सातवां तल, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित।
। **समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - रत्नेश मिश्र*** ।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, **फैक्स** - 23352370, **दूरभाष - नोएडा प्रेस** 0120-2444755, 2444756 **फैक्स** - 2550750

वर्ष-34, अंक 49

आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026

*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्

भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान हैं।

राजनीति में धर्म का मिश्रण

लोकतन्त्र में राजनीति में जब भी धर्म या मजहब का मिश्रण होता है तो उसके परिणाम बहुत भयंकर होते हैं। भारत के सन्दर्भ में इसका रौद्र रूप हमने 1947 में राष्ट्र के दो टुकड़े होते हुए देखा। इसकी वजह यह थी कि ब्रिटिश भारत में मोहम्मद अली जिन्ना की पार्टी मुस्लिम लीग ने 1945 के प्रान्तीय एसेम्बलियों के चुनाव में इस्लाम धर्म का खुलकर उपयोग किया था और भारतीय मुसलमानों को हिन्दोस्तान के दो टुकड़े करने के लिए भरपूर तरीके से बरगलाया था। जिस संयुक्त पंजाब राज्य में 1936-37 के एसेम्बली चुनाव में लीग को केवल दो सीटें मिली थीं उसी पंजाब में 1945 के चुनावों में उसकी पार्टी की सर्वाधिक सीटें आ गई थीं। पंजाब में तो खुलकर लीगी नेताओं व उनके समर्थकों ने 'पैगम्बर हजरत मुहम्मद सलै अल्लाह अलै वसल्लम' के नाम पर वोट मांगे थे और मुसलमानों से कहा था कि उनका हर वोट रसूल-अल्लाह को दिया गया वोट होगा और जो लोग लीग को वोट नहीं देंगे वे इस्लाम की राह के नहीं हैं। जिन्ना की पार्टी ने इन चुनावों में जो-जो कहा था उसे यहां लिखना इसलिए असंभव हो क्योंकि जिन्ना ने पाकिस्तान सिर्फ गांधी जी से विरोध के चलते ही नहीं बल्कि अंग्रेज सरकार के दलाल होने की वजह से बनाया था। इस काम में उसने धर्म का खुलकर प्रयोग किया जबकि बजाते खुद जिन्ना इस्लाम धर्म की किसी भी रवायत से नावाकिफ था। अत: सनद रहनी चाहिए कि 1947 में भारत का बंटवारा राजनीति में धर्म के मिश्रण की वजह से ही हुआ था। इससे पहले अगर हम दुनिया का इतिहास देखें तो 18वीं सदी में फ्रांसीसी क्रान्ति से पहले राज्य का मतलब राजा या शहंशाह ही होता था।

इस क्रान्ति के बाद ही 'रैयत' को 'नागरिकों' का दर्जा मिला और उनके अधिकारों की बात होने लगी। इस क्रान्ति ने धर्म को राज्य से अलग रखकर देखने की दृष्टि भी दुनिया को दी वरना इससे पहले की दुनिया के उस दौर को अंधेरा दौर (डार्क एजेज) कहा जाता है जब राज्य के ऊपर धर्म का प्रादुर्भाव रहता था। मगर भारत में धर्म का मतलब मजहब से नहीं होता है और धर्म को कर्त्तव्य या दायित्व के रूप में लिया जाता है। जिस प्रकार न्यायपालिका का धर्म न्याय करना होता है उसी प्रकार सैनिक का धर्म राष्ट्र की रक्षा करना होता है। अत: सर्वोच्च न्यायालय के दो न्यायमूर्तियों बी.आर. गवई व के.वी. विश्वनाथन ने तिरुपति बालाजी के प्रसाद लड्डू में मिलावट के सम्बन्ध में दायर याचिकाओं की सुनवाई करते हुए जो टिप्पणी की है वह देश के राजनीतिज्ञों के मुंह पर करारे तमाचे की तरह है। विद्वान न्यायाधीशों ने टिप्पणी की कि 'कम से कम भगवान को तो राजनीति से अलग रखिये'। राजनीति सामाजिक व आर्थिक सिद्धान्तों को लेकर होती है क्योंकि प्रजातन्त्र में नागरिकों की समस्याएं राष्ट्रीय चुनौतियों का मुकाबला करने हेतु ही विभिन्न राजनैतिक दलों का गठन किया जाता है।

सर्वोच्च न्यायालय के दो न्यायमूर्तियों बी.आर. गवई व के.वी. विश्वनाथन ने तिरुपति बालाजी के प्रसाद लड्डू में मिलावट के सम्बन्ध में दायर याचिकाओं की सुनवाई करते हुए जो टिप्पणी की है वह देश के राजनीतिज्ञों के मुंह पर करारे तमाचे की तरह है। विद्वान न्यायाधीशों ने टिप्पणी की कि 'कम से कम भगवान को तो राजनीति से अलग रखिये''। राजनीति सामाजिक व आर्थिक सिद्धान्तों को लेकर होती है क्योंकि प्रजातन्त्र में नागरिकों की समस्याएं राष्ट्रीय चुनौतियों का मुकाबला करने हेतु ही विभिन्न राजनैतिक दलों का गठन किया जाता है।

भारत का संविधान बहुत स्पष्ट रूप से अपना धर्म मानने की इजाजत निजी तौर पर हर नागरिक को देता है। धर्म को भारतीय संविधान में पूरी तरह निजी मामला समझा गया है। ईश्वर और मनुष्य के बीच का सम्बन्ध उसका निजी मामला ही होता है जिसे हम आत्मा-परमात्मा भी कहते हैं। परमात्मा की प्राप्ति के लिए कोई नागरिक किस धार्मिक शैली या पूजा-पाठ को अपनाता है इसमें राज्य किसी प्रकार की दखलंदाजी नहीं कर सकता बशर्ते वह मानवता के दायरे में हो। मगर तिरुपति बालाजी के प्रसाद लड्डू के मामले में आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री ने अपने राजनैतिक अंक बढ़ाने की गरज से घोषणा कर दी कि जिस घी से लड्डू तैयार किये जाते हैं वह घनघोर रूप से मिलावटी है।

मजेदार बात यह है कि जनाब नायडू साहब ने इस प्रकरण की जांच करने के लिए एक विशेष जांच दल भी गठित कर दिया। इस जांच दल की रिपोर्ट आने से पहले ही उन्होंने सार्वजनिक तौर पर बयान दे दिया कि लड्डू के घी में जानवरों की चर्बी मिली हुई है। जुलाई महीने में घी की प्रयोगशाला रिपोर्ट आयी कि यह मिलावटी है। इसके बाद आन्ध्र सरकार ने यह जांच करने लिए विशेष जांच दल का गठन कर दिया कि इस घी का प्रयोग लड्डू बनाने में हुआ है अथवा नहीं। मगर जांच का निष्कर्ष आने से पहले ही सितम्बर महीने में मुख्यमन्त्री ने पत्रकारों से कह दिया कि लड्डू में मिलावटी घी का उपयोग हुआ है। जबकि जिस घी से लड्डू तैयार किये गये थे उनमें जांच हुए घी का प्रयोग हुआ ही नहीं था।

तिरुपति देवस्थानम ट्रस्ट को घी सप्लाई करने वाले पांच ठेकेदार हैं। लड्डू बनाते समय इन पांचों का घी इस्तेमाल होता है। अत: यह जानना मुश्किल है कि किसके घी से लड्डू तैयार किये गये। जबकि नायडू के वक्तव्य से देश के करोड़ों लोगों की भावनाएं आहत हुईं। न्यायमूर्तियों ने सरकारी वकील से यह भी पूछा कि क्या किसी लड्डू को भी जांच के लिए भेजा गया है तो उन्हें इस बाबत कोई जानकारी ही नहीं थी। सर्वोच्च न्यायालय सवाल खड़ा कर रहा है कि आखिरकार सितम्बर महीने में सार्वजनिक रूप से नायडू के वक्तव्य की मंशा क्या थी? सब जानते हैं कि जून महीने से पहले आन्ध्र प्रदेश में नायडू की मुखालिफ पार्टी वाईएसआर कांग्रेस के नेता श्री जगनमोहन रेड्डी की सरकार थी। चुनावों में तेलगू देशम को तूफानी सफलता मिली जो कि नायडू की पार्टी है। क्या राजनैतिक हिसाब-किताब पूरा करने के लिए तिरुपति बालाजी के प्रसाद को केन्द्र में रखा गया। शायद इसी वजह से न्यायमूर्तियों ने नायडू सरकार के वकील से कहा कि यह सब देखते हुए क्या प्रसाद की जांच का काम किसी स्वतन्त्र जांच एजेंसी को नहीं दे दिया जाना चाहिए। इस मामले की अगली सुनवाई कल 3 अक्तूबर को ही फिर से होगी।

आदित्य नारायण चोपड़ा

Adityachopra@punjabkesari.com

आज भी प्रासंगिक हैं गांधी के विचार

विजय गोयल

पूर्व केन्द्रीय मंत्री

shrivijaygoel@gmail.com

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को आज याद करते हुए हम भारतवासियों को गर्व की अनुभूति होती है। गांधी जी ऐसे व्यक्ति हैं जिनके विचारों की प्रासंगिकता गुजरते समय के साथ और भी प्रासंगिक हो रही है। आज पूरी दुनिया को उनके दिखाए रास्ते पर चलने की जरूरत महसूस हो रही है। अलग-अलग मुद्दों से जूझते हुए विश्व को गांधी विचारों में ही समाधान मिलता प्रतीत हो रहा है।

शिक्षा समाज को दिशा प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के अंधकारपूर्ण जीवन में रोशनी उत्पन्न होती है। भारत में शिक्षा की प्राचीन परम्परा रही है। अंग्रेजों के आगमन से हमारी शिक्षा की समृद्ध परंपरा टूट गई। उसके बाद से हम अंग्रेजों द्वारा बनाई गई शिक्षा नीति पर चलते रहे। राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गांधी का उदय होता है। गांधीजी एक तरफ स्वतंत्रता के लिए अहिंसक संघर्ष कर रहे थे तो दूसरी तरफ वे अपने रचनात्मक कार्यक्रमों के जरिए भारतीय समाज के बिखरे ताने-बाने को सहेजने की कोशिश कर रहे थे। गांधी जी शिक्षा को प्रमुख कारक मानते थे, बेहतर समाज निर्माण के लिए।

गांधी जी की इसी परंपरा को आगे बढ़ाने की कोशिश करेगी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। प्रधानमंत्री मोदी इसके जरिए बापू के मनोनुकूल शिक्षा व्यवस्था लागू करने का प्रयास कर रहे हैं। मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करना इसकी सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है। इसके साथ ही प्राथमिक स्तर पर ही बच्चों को हुनरमंद बनाने की कोशिश की जाती है। अर्थात अक्षर ज्ञान के साथ-साथ बुद्धि और श्रम का समन्वय। यह गांधी जी के सपनों को साकार करने में सार्थक होगा।

गांधी जी कहते थे कि स्वदेशी के जरिए ही भारत आत्मनिर्भर और मजबूत देश बन पाएगा। यहां गांधी जी के कथन पर गौर करना आवश्यक है- ''स्वदेशी की भावना का अर्थ है हमारी वह भावना जो हमें दूर को छोड़कर अपने समीपवर्ती प्रदेश का ही उपयोग और सेवा करना सिखाती है...। अर्थ के क्षेत्र में मुझे अपने पड़ोसियों द्वारा बनाई गई वस्तुओं का ही उपयोग करना चाहिए और उन प्रयोगों की कमियां दूर करके उन्हें ज्यादा सम्पूर्ण और सक्षम बनाकर उनकी सेवा करनी चाहिए। मुझे लगता है कि यदि स्वदेशी को व्यवहार में उतारा जाए तो मानवता के स्वर्णयुग की अवतारणा की जा सकती है।''

गांधी जी चाहते थे कि स्वदेशी के जरिए देश स्वावलंबी बने। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में उस दिशा में हमने लंबे अरसे बाद कदम बढ़ा दिया है। जिसके सकारात्मक परिणाम हमारे सामने आने शुरू हो गए हैं। आज स्वदेशी के लिए लोगों में जागृति आयी है, यह अत्यंत संतोषजनक है। महात्मा गांधी के सपनों के भारत में स्वच्छ भारत की कल्पना थी। जिसमें चारों तरफ स्वच्छता हो, ताजगी हो। आजादी के सात दशक बाद भी हम अपने गांव को स्वच्छ और स्वस्थ नहीं बना पाएं हैं लेकिन गांधीजी को श्रद्धांजलि देते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत 2 अक्तूबर 2014 को गांधी जयंती के अवसर पर की। स्वच्छ भारत अभियान की अवधारणा के अनुसार शौचालय, कचरा प्रबंधन, गांवों की सफाई एवं प्रचूर मात्रा में पेयजल सुविधा सुलभ होनी चाहिए।

आज विश्व में पर्यावरण संरक्षण बहस का मुद्दा बना हुआ है। पर्यावरण की चिंताजनक स्थिति को लेकर दुनिया के कई भागों में बुद्धिजीवियों और पर्यावरण कार्यकर्ता सड़कों पर उतरे हैं और वातावरण के प्रदूषण पर विराम लगाने की बातें उन्होंने की हैं। धरती, आसमान और जल सबको हमने गंदा कर दिया है। यदि हम भारत के पौराणिक ग्रंथों, विभूतियों की जीवनियों का अवलोकन करें तो पाएंगे कि प्राचीनकाल पर्यावरण संरक्षण के प्रति कितना सजग था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी पर्यावरण पर समग्र चिन्तन किया है। यद्यपि बापू के जीवनकाल में पर्यावरण शब्द चलन में नहीं था लेकिन युगद्रष्टा गांधी की सोच इतनी दूरदर्शी थी कि उन्होंने उस समय में आज की स्थिति पर चिंता और चिंतन आरंभ कर दिया था। गांधी जी का मानना था कि ''विश्व के पास सबकी जरूरतें पूरा करने के लिए कुछ न कुछ है, पर किसी के लालच की पूर्ति के लिए कुछ भी नहीं है।'' बापू ने पर्यावरण को नुक्सान पहुंचाने के विभिन्न कारकों और उसे संरक्षित रखने के विभिन्न उपायों पर अपने विचार रखे हैं।

अपने लेख 'स्वास्थ्य की कुंजी में उन्होंने स्वच्छ वायु पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। इसमें उन्होंने कहा है कि तीन प्रकार के प्राकृतिक पोषण की आवश्यकता होती है-हवा, पानी और भोजन लेकिन स्वच्छ वायु सबसे आवश्यक है।

गांधी जी के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि उनके विचार व्यवहार की कसौटी पर उनके द्वारा आजमाए गए हैं। समय के बीतने के बावजूद उसकी प्रासंगिकता बनी हुई है। आज दुनिया के सामने गांधी का रास्ता सर्वोत्तम और सतत् है। उनके जन्मदिवस पर उनके कार्यों को आत्मसात करना ही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

दवाएं खुद बीमार हों तो मरीजों का क्या होगा?

रोहित माहेश्वरी

दवाएं बीमारी के वक्त शरीर को स्वस्थ बनाने के साथ गंभीर स्थिति में जीवन रक्षक होती हैं। स्वास्थ्य के लिए वरदान समझी जाने वाली यही दवाएं यदि मुनाफाखोरी का जरिया बन जाएं तो सेहत की दुश्मन बन जाती हैं। सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन यानी सीडीएससीओ की ताजा मासिक रिपोर्ट में जिन गुणवत्ता रहित दवाओं का उल्लेख किया है उनमें कई दवाओं की क्वालिटी खराब है तो वहीं दूसरी ओर बहुत सी दवाएं नकली भी बिक रही हैं। जिन्हें बड़ी कंपनियों के नाम से बेचा जा रहा है। इससे उन मरीजों की सुरक्षा संबंधी चिंताएं बढ़ जाएंगी जो इन दवाओं का इस्तेमाल कर रहे थे।

लोगों द्वारा आमतौर पर ली जाने वाली पेरासिटामोल भी जांच में फेल पायी गई। आम धारणा रही है कि गाहे-बगाहे होने वाले बुखार-दर्द आदि में इस दवा का लेना फायदेमंद होता है। निश्चय ही केंद्रीय औषधि नियामक की गुणवत्ता रहित दवाओं की सूची में इसके शामिल होने से लोगों के इस विश्वास को ठेस पहुंचेगी। इस सूची में पेरासिटामोल के अलावा हाइपरटेंशन, डायबिटीज, कैल्शियम सप्लीमेंट्स, विटामिन-डी3 सप्लीमेंट्स, विटामिन बी कॉम्प्लेक्स, विटामिन-सी, एंटी-एसिड, एंटी फंगल, सांस की बीमारी रोकने वाली दवाएं भी शामिल हैं। इसमें दौरे व एंग्जाइटी का उपचार करने वाली दवाएं भी शामिल हैं। ये दवाएं बड़ी कंपनियों द्वारा भी उत्पादित हैं।

बताते हैं कि फेल होने वाली दवाओं में पेट में इंफेक्शन रोकने वाली एक चर्चित दवा भी शामिल है। यद्यपि सीडीएससीओ ने 53 दवाओं की गुणवत्ता की जांच की थी लेकिन 48 दवाओं की सूची ही अंतिम रूप से जारी की गई। वजह यह बताई जा रही है कि सूची में शामिल पांच दवाइयां बनाने वाली कंपनियों के दावे के मुताबिक ये दवाइयां उनकी कंपनी की नहीं हैं वरन् बाजार में उनके उत्पाद के नाम से नकली दवाइयां बेची जा रही हैं।

इसी साल अगस्त में केंद्र सरकार ने 156 फिक्स्ड डोज कॉम्बिनेशन यानी एफडीसी दवाओं की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया था। दरअसल, ये दवाइयां आमतौर पर सर्दी व बुखार, दर्द निवारक, मल्टी विटामिन और एंटीबायोटिक के रूप में इस्तेमाल की जा रही थी। मरीजों के लिये नुक्सानदायक होने की आशंका में इन दवाइयों के उत्पादन, वितरण व उपयोग पर रोक लगा दी गई थी। सरकार ने यह फैसला दवा टेक्निकल एडवाइजरी बोर्ड की सिफारिश पर लिया था। जिसका मानना था कि इन दवाओं में शामिल अवयवों की चिकित्सकीय गुणवत्ता संदिग्ध है।

दरअसल, एक ही गोली को कई दवाओं से मिलाकर बनाने को फिक्स्ड डोज कॉम्बिनेशन ड्रग्स यानी एफडीसी कहा जाता है। बहरहाल, सामान्य रोगों में उपयोग की जाने वाली तथा जीवन रक्षक दवाओं की गुणवत्ता में कमी का पाया जाना मरीजों के जीवन से खिलवाड़ ही है। जिसके लिये नियामक विभागों की जवाबदेही तय करके घटिया दवा बेचने वाले दोषियों को दंडित किया जाना चाहिए।

बीते मार्च में दिल्ली पुलिस ने नकली दवाओं के एक बड़े गिरोह को पकड़ा। पुलिस ने आरोपियों के पास से कैंसर की अलग-अलग ब्रांड की नकली दवाएं बरामद कीं। इनमें सात दवाएं विदेशी और दो भारतीय ब्रांड की थी। आरोपी कीमोथैरेपी के इंजेक्शन में पचास से सौ रुपये की एंटी फंगल दवा

भरकर एक से सवा लाख रुपये में बेच रहे थे। इससे कुछ दिन पहले ही तेलंगाना में औषधि नियंत्रक प्रशासन ने चाक पाउडर से भरी डमी गोलियां बरामद की थी। इसी तरह गाजियाबाद में नकली दवा बनाने वाली एक फैक्ट्री पकड़ी गई थी। देश के अलग-अलग हिस्से से आए दिन गुणवत्ताविहीन और मिलावटी दवाओं के कारोबार से जुड़े मामले प्रकाश में आते रहते हैं।

दवा निर्माण एक चरणबद्ध प्रक्रिया है। ये नैदानिक परीक्षण के बाद उपभोक्ताओं तक पहुंचती हैं। दवा कंपनियों में प्रयोगशालाएं होती हैं, जहां प्रत्येक चरण का आकलन कर दवा को अंतिम रूप दिया जाता है। भारतीय भेषज संहिता (आईपीसी) और भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त अन्य फार्मूले से दवाओं का निर्माण, परीक्षण और संधारण होता है। हर दवा निर्माता कंपनी के लिए तय प्रोटोकॉल का पालन अनिवार्य है।

देश में नकली और मिलावटी दवाओं पर रोक लगाने के लिए औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 में दंड और जुर्माने का प्रावधान है। इसके अंतर्गत नकली दवाओं से रोगी की मौत या गंभीर चोट पर आजीवन कारावास की सजा है। मिलावटी या बिना लाइसेंस दवा बनाने पर पांच साल की सजा का प्रावधान है। इस अधिनियम के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन दवाओं, सौंदर्य प्रसाधनों और चिकित्सा उपकरणों का राष्ट्रीय नियामक है। कई बार तो पर्चे पर लिखी दवा का नाम उच्च शिक्षित व्यक्ति भी नहीं पढ़ पाता। इसके लिए नियामकों द्वारा समय-समय पर चिकित्सकों को दवाओं के नाम स्पष्ट अक्षरों में लिखने के निर्देश दिए गए हैं।

पिछले साल दवाओं में क्यूआर कोड लगाए जाने की पहल शुरू हुई है। यह सभी दवाओं में अनिवार्य किया जाना चाहिए। इससे दवाओं की कालाबाजारी थमेगी। दवाओं की गुणवत्ता तय करने में फार्माकोविजिलेंस कार्यक्रम काफी मददगार साबित हो सकता है। इसमें दवाओं के प्रतिकूल प्रभावों का अध्ययन कर उन्हें गुणवत्तापूर्ण बनाया जाता है। घटिया दवाओं से जुड़े मामलों की जितनी अधिक शिकायतें होंगी, कानूनी शिकंजा उतना ही सख्त होगा। दवा उद्योग में संदिग्ध गतिविधियों को रोकने के लिए केंद्र सरकार शिकायत प्रणाली को मजबूत कर रही है।

इस साल मार्च में दवा कंपनियों के लिए यूनिफॉर्म कोड फार फार्मास्यूटिकल मार्केटिंग प्रैक्टिस (यूसीएमपी), 2024 लागू किया गया है। इसके तहत अब दवा कंपनियों को अपनी वेबसाइट पर शिकायत करने की व्यवस्था देनी होगी। कंपनियां चिकित्सकों को प्रचार के नाम पर उपहार नहीं दे सकेंगी। आयोजन में विशेषज्ञ के तौर पर आमंत्रित किए जाने वाले चिकित्सकों को ही आने-जाने एवं ठहरने की सुविधा दी जा सकती है। ऐसे आयोजनों के खर्च का ब्यौरा भी यूसीएमपी के पोर्टल पर साझा करना होगा।

एक अनुमान के मुताबिक जल्द ही भारतीय दवा बाजार 60.9 अरब डॉलर के स्तर को पार कर जाएगा। ऐसे में अपने मुनाफे के लिए लोगों की सेहत से खिलवाड़ करने वालों पर समय रहते सख्त कार्रवाई करनी होगी। नकली दवाओं को बनाना-बेचना भ्रष्टाचार ही नहीं मानवीय सेहत के लिए एक बड़ा खतरा भी है। ऐसे में नियामकीय व्यवस्था को मजबूत बनाकर ही नकली और मिलावटी दवाओं से निजात मिलेगी। दुर्भाग्यपूर्ण है कि मानवीय मूल्यों में इस हद तक गिरावट आई है कि लोग अपने मुनाफे के लिये दुखी मरीजों के जीवन से खिलवाड़ करने से भी नहीं चूक रहे हैं।

बुजुर्ग सलाहकार बनें, निर्णायक नहीं

विजय मारू

पिछले दिनों दिल्ली के सिरीफोर्ट सभागार में श्री विजय कौशल जी महाराज से श्रीराम कथा सुनने का सौभाग्य मिला। एक शाम को अपने प्रवचन में वे हर घर में चल रहे जेनरेशन गेप, बड़ों-छोटों के बीच समन्वय की कमी पर बोल रहे थे। उन्होंने बहुत ही महत्वपूर्ण बात कही कि घर के बड़े-बुजुर्ग सलाहकार बनें, निर्णायक नहीं। मुझे उनकी यह बात मन को छू गई। मेरे आज के लेख का यही शीर्षक है।

इन दिनों बहुत से व्हाट्सएप ग्रुप पर ऐसे पोस्ट भी प्रचलित हैं जिनमें मैसेज यही होता है कि घर का वातावरण ठीक रखने के लिए बड़ों को बच्चों के निर्णय पर टीका-टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। दुख तो उस समय होता है जब हम जानते हुए भी गलत निर्णय को सही दिशा नहीं दे पाते। ऐसी कहानियां आज घर-घर की हैं। कोई बिरले खुशकिस्मत परिवार होंगे जहां सब कुछ ठीक-ठाक हो, पिता और बेटे बैठकर अपने निर्णय सकारात्मक वातावरण में लेते हों। अब तो काफी परिवार ऐसे मिल जाएंगे जहां पर दो जेनरेशन एक साथ रहती ही नहीं हैं।

हम यहां बात करेंगे उन परिवारों की जहां पर तीन जेनरेशन बेटा, पिता और पोता साथ रहते हैं। आजकल के माता-पिता जिस तरीके से अपने बच्चों को पालते हैं और जिस तरीके से वह खुद पले थे, कोई 30-35 साल पहले, उसमें बहुत अंतर आ गया है। पहले के समय में ज्यादातर संयुक्त परिवार होते थे केवल एक भाई का परिवार ही नहीं पलता था। सभी भाइयों के अपने-अपने बच्चे भी होते थे और सब मिलजुल कर रहते थे। उन्हें घर का बड़ा बच्चों की किसी गलती पर डांट भी देता था तो कोई दूसरा टोकता नहीं था। आज की स्थिति बिल्कुल ही बदल गई है। छोटे-छोटे परिवार होने लगे, चाचा-ताऊ तो ज्यादातर परिवार में मिलेंगे ही नहीं।

कई बार यह भी देखा गया कि एक भाई के बच्चों को अगर दूसरे भाई की पत्नी ने कुछ बोल दिया तो इसी बात पर अनबन होने लगती है। पेसेन्स या धैर्य नाम की चीज तो आजकल के नौजवानों में मिलनी मुश्किल है। ऐसे में दादा-दादी क्या बोल दें यह तो किसी को बर्दाश्त ही नहीं होता है। बड़ों के अनुभव और उसके आधार पर उनकी डिसिप्लिन भरी बात को मानने को कोई भी तैयार नहीं होता है, जबकि सभी को पता है कि घर में बुजुर्ग हर समय परिवार के सुख का ही ख्याल रखेंगे, कभी भी किसी को दुखी नहीं होने देंगे। मन में यही विचार आता है कि शायद

आजकल के नौजवानों को हम बुजुर्ग ही पेशेंस सिखाना भूल गए हैं। यह गलती भी तो हम बुजुर्गों की ही हैं। ऐसे वातावरण में सबसे सही निर्णय तो यही होगा कि हम ज्यादा रोक-टोक ना करें छोटों के काम पर। सही-सही परिदृश्य प्यार से छोटों के सामने रख दें और फिर निर्णय उन्हीं को लेने दें।

आजकल तो छोटी उम्र के बच्चों में भी यह भावना आ गयी है कि घर में बड़ों से ज्यादा अच्छी सलाह उनको मित्रों से मिलेगी और इस टेक्नोलॉजी के युग में सब कुछ तो गूगल महाराज ही बता देते हैं। फिर बड़ों का दिया हुआ ज्ञान किस काम का। जब बड़े कोई बात बोलते हैं तो तुरंत गूगल में जाकर पहले उस बात की सत्यता को जानने की कोशिश करते हैं बच्चे। उस समय उनके मन में यह विचार नहीं आता है कि बड़ों की जो भावना है वह उनके केवल ज्ञान से ही अर्जित नहीं की गई है बल्कि उनके इतने वर्षों के अनुभवों से भी वह अपना विचार रख रहे हैं। बहुत बार तो यह भी देखने को मिलता है कि बड़ों ने कोई बात कहीं और उसके जवाब में उन्हें तुरंत मोबाइल पर गूगल द्वारा उस विषय पर कुछ और मत बता दिया जाता है और यह दर्शाया जाता है कि बड़ों ने जो बताया वह गलत है।

हम ऐसी स्थिति आने ही क्यों दें? क्यों हम अपने अंदर ऐसी भावना जागृत होने दें जिससे कि हमें कोई अपराध बोध हो? अच्छा तो हो कि हम जो भी सुझाव देना चाहते हैं वह इस तरीके से दें कि सामने वाले को भी खराब ना लगे और वह उस पर विचार करने पर विवश हो जाए। एक उदाहरण दें तो हम बोल सकते हैं कि मेरे विचार में शायद इस प्रॉब्लम को इस तरह सॉल्व किया जा सकता है। वैसे यह तो केवल मेरा विचार है, तुम ही इस पर पूरी रिसर्च करके डिसीजन ले लों। सारा खेल तो होता है कि हमारी बातें किस तरीके से आगे बढ़ती हैं, किस टोन में बात हम करते हैं। यही सब बहुत जिम्मेदारी के साथ हमें भी निभाना होगा। हम बड़े जरूर हैं लेकिन यह मानकर चलें कि जेनरेशन गैप तो है और इस जेनरेशन गैप में जो दिक्कतें आ रही हैं उसके लिये बहुत हद तक हम स्वयं जिम्मेदार हैं, शायद। पहले ऐसा नहीं होता था। उसका एक मूल कारण हमारा संयुक्त परिवार था।

आजादी की यज्ञ वेदी में अपनी भेंट...

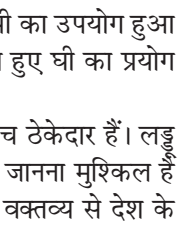

गीता पाढा

राष्ट्रवाद की भावना जिनके रोम-रोम में समायी थी,
अंग्रेजों की जेल भी जिनके हौसलों को न तोड़ पायी थी,
आजादी की यज्ञ वेदी में अपनी भेंट चढ़ायी थी,
भारतवर्ष के कोने-कोने में ''महात्मा गांधी और-
लाल बहादुर शास्त्री जी'' ने आजादी की अलख जगायी थी...!!

उदयपुर में तेंदुए ने एक और महिला को बनाया शिकार

उदयपुर (राजस्थान), (भाषा): उदयपुर जिले में एक संदिग्ध तेंदुए के हमले में मंगलवार सुबह एक और महिला की मौत हो गई। हाल के दिनों में उदयपुर में तेंदुए के हमलों में सात लोग मारे जा चुके हैं। तेंदुए के बढ़ते घातक हमलों से चिंतित वन विभाग ने तेंदुए को गोली मारने का आदेश दिया है। अधिकारियों के अनुसार ताजा घटना गोगुंदा थाना इलाके केलवो का खेड़ा गांव में हुई जब कमला कंवर (55) अपने मवेशियों को चारा डाल रही थी तभी जंगली जानवर ने उन पर हमला कर दिया। उन्होंने बताया कि महिला की चीख-पुकार सुनकर परिवार के अन्य लोग जब वहां पहुंचे तो जानवर महिला को छोड़कर वहां से भाग गया, हालांकि गर्दन पर गहरी चोट होने के कारण महिला ने दम तोड़ दिया।

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83

पंजाब केसरी

दिल्ली कार्यालय :

फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com

स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रैस, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

हिन्दुस्तान 1936 सत्य • सार्थक • सदैव

बुलडोजर और न्याय

देश भर में 'बुलडोजर कार्रवाई' को लेकर जारी बहस के बीच 'जमीयत उलेमा-ए-हिंद' की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को अपना फैसला तो सुरक्षित रख लिया, मगर मामले की सुनवाई के दौरान की गई उसकी टिप्पणियां कुछ कम मानीखेज नहीं हैं। अदालत ने न सिर्फ यह कहा कि किसी के आरोपी होने या दोषी करार दिए जाने पर भी उसकी संपत्ति को ध्वस्त नहीं किया जा सकता, बल्कि अंतिम आदेश तक ऐसी कार्रवाइयों पर रोक लगाते हुए उसने यह भी साफ किया कि किसी अतिक्रमण को गिराए जाने से पहले संबंधित पक्ष को नोटिस दिया जाना चाहिए और इसके दस्तावेजी सुबूत भी होने चाहिए। यानी लक्षित संपत्ति पर नोटिस चिपकाने के साथ रजिस्टर्ड डाक से भी इसे भेजा जाना चाहिए। न्यायमूर्ति बीआर गवई और केवी विश्वनाथन की खंडपीठ ने अपने अंतिम फैसले में बुलडोजर कार्रवाई पर विस्तृत दिशा-निर्देश जारी करने के साफ संकेत दिए हैं। उम्मीद है, इसके बाद किसी किस्म की गफलत या बदनीयती के लिए कोई गुंजाइश नहीं रहेगी।

इसमें कोई दोराय नहीं कि देश में सार्वजनिक स्थलों के अतिक्रमण और उन पर अवैध निर्माण की बेशुमार घटनाएं हैं और अदालत ने इस मामले में राज्य प्रशासन को कानून-सम्मत कदम उठाने और ऐसी जगहों को खाली कराने की छूट पहले ही दे रखी है। मगर विडंबना यह है कि बुलडोजर कार्रवाई को जिस तरह पिछले कुछ महीनों व वर्षों में कानून-व्यवस्था के पर्याय के तौर पर पेश किया गया और एक खास समुदाय के खिलाफ हुई कार्रवाइयों पर गैर-जिम्मेदाराना सियासत की गई, उससे देश-दुनिया में यही संदेश गया कि अल्पसंख्यक समुदायों को निशाना बनाया जा रहा है और ऐसे में, जायज कार्रवाइयां भी संदेह के घेरे में आ गईं। शीर्ष अदालत ने उचित ही यह स्पष्ट किया है कि हम एक धर्मनिरपेक्ष देश हैं और यहां पर आपराधिक कानून धर्म से प्रेरित नहीं हो सकते। अवैध निर्माण चाहे जिस भी धर्म से वाबस्ता हो, उसे हटाया ही जाना चाहिए।

उम्मीद है, सुप्रीम कोर्ट का निर्णायक फैसला आने के बाद बुलडोजर की राजनीति पर लगाम लगेगी और प्रशासनिक जवाबदेही भी सुनिश्चित हो सकेगी।

किसी भी अवैध निर्माण को गिराने की एक तय प्रक्रिया होती है, जिसके तहत कार्रवाइयां रसूखदार लोगों के विरुद्ध भी हुई हैं। नोएडा में ट्विन टावर को गिराए जाने की बात बहुत पुरानी नहीं है। मगर किसी व्यक्ति के आपराधिक कृत्य की सजा पूरे परिवार को देना नैसर्गिक न्याय के विपरीत है। इसलिए शीर्ष अदालत ने यह संकेत किया है कि प्रशासन ने अवैध तोड़-फोड़ की कार्रवाई की, तो पीड़ित को संपत्ति वापस करनी पड़ेगी। अगर रोडमैप में यह बात स्पष्टता से सामने आई, तो आइंदा अधिकारी व सत्तारूढ़ राजनेता फौरन बुलडोजर निकालने से पहले कई बार सोचेंगे। ऐसे मामलों में जिम्मेदारी तय करने की पुख्ता व्यवस्था होनी ही चाहिए। न्यायप्रिय व्यवस्थाओं में कानून नागरिकों के संरक्षण के लिए होते हैं। जब किसी का घर या कोई अन्य स्थायी निर्माण गिराया जाता है, तब उससे न सिर्फ उसे आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है, बल्कि उसकी सामाजिक क्षति भी होती है। एक बहुलवादी समाज में इससे दीर्घकालिक विलगाव पैदा होता है। हिमाचल की घटना एक ताजा मिसाल है। वहां एक मस्जिद में अवैध निर्माण को लेकर सांप्रदायिक तनाव गहरा उठा था, जबकि यह काम वहां के स्थानीय निकाय का था, जिसने उस अवैध निर्माण के प्रति लापरवाही बरती। यह सुखद है कि मस्जिद प्रबंधन ने खुद उस निर्माण को हटा लेने का एलान किया और हालात सामान्य हुए। उम्मीद है, सुप्रीम कोर्ट का निर्णायक फैसला आने के बाद बुलडोजर की राजनीति पर लगाम लगेगी और प्रशासनिक जवाबदेही भी सुनिश्चित हो सकेगी।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 1 अक्तूबर, 1949

नए आंदोलन की जरूरत

महात्मा गांधी का स्निग्ध शीतल संदेश उनकी ८१वीं जयन्ती के अवसर पर न केवल भारत को वरन् समस्त विश्व को आत्मनिरीक्षण, नव-संकल्प, स्वार्थ-विरति तथा कर्मण्यता की प्रेरणा देता है।

जब संसार के आकाश पर छाई हुई काली घटाएं तीसरे महायुद्ध का अशुभ संकेत कर रही हैं, महात्मा गांधी की मूक वाणी प्रश्न करती है- यह सब क्या है, तू किस ओर जा रहा है? वह करुणाप्लावित स्वर में कहती है : लौट आ, यह कल्याण का मार्ग नहीं, इसमें क्षणिक कल्याण भी नहीं, यह पतन का, मानवता से दानवता में अवतरित होने का, चिरकलंकमय, विनाश का मार्ग है। किंकर्तव्यविमूढ़ संसार उस वाणी को सुनता है। उसके प्रबल सत्य के वेग को अनुभव करता है, किंतु बार-बार प्रमाद के वशीभूत होकर उससे विमुख हो जाता है। भारत की पैंतीस कोटि जनता के घोर जीवन-संघर्ष और मानवकृत कष्टों को देखकर हमारे अंतराल में समाहित राष्ट्रपिता प्रश्न करते हैं- ''क्या इसी के लिए मैंने चालीस वर्ष तक तुम्हारी सेवा की और अपने भौतिक शरीर के रक्त-मांस के एक-एक कण की आहुति दी? क्या तुम्हारी बार-बार की प्रतिज्ञाओं का यही परिणाम है? क्या तुमने और मैंने इसी स्वराज्य के लिए दीर्घकाल तक संघर्ष किया था? क्या तुम इतने गिरे हुए हो कि अपनी नैतिक दुर्बलताओं से एक क्षण के लिए भी ऊपर नहीं उठ सकते? क्या तुम अपने इसी आचरण द्वारा मेरे संदेश का प्रचार करना चाहते हो? तब तो तुम मेरी निन्दा और लज्जा के कारण हो, तुमने मुझे धोखा दिया।''

भारत आज अन्न, वस्त्र और निवास के अभाव से पीड़ित है। ये उसके मुख्य कष्ट हैं। इनके चारों ओर भ्रष्टाचार और चोरबाजारी जैसे दुर्गुण छा गये हैं, जिन्होंने हमारे वैयक्तिक जीवन को पतित करके उसे जटिल और घोर संघर्षमय बना दिया है। ... यों तो स्वार्थ आदि दुर्गुणों का अस्तित्व मनुष्य के स्वभाव और संस्कारों के साथ बंधा हुआ है, फिर भी उसका इतना प्राबल्य गत महायुद्ध के परिणामस्वरूप हुआ, वर्तमान के सब कष्टों का सीधा कारण यही है। युद्ध एक अशुभ आयोजन था; उससे और क्या निकल सकता था? फिर भी मनुष्य सीखा नहीं। वह तीसरे और भीषणतर युद्ध की ओर सब बंधन तोड़कर भागा चला जा रहा है।

शक को ऐतबार से जवाब दीजिए

ठीक सौ साल पहले गांधीजी सांप्रदायिक हिंसा रोकने के लिए अनशन पर बैठे हुए थे। भोजन करना तो दूर, उनके लिए जीना भी मुश्किल हो गया था। गांधी जयंती विशेष...

यहां स्कैन करें

गोपाल कृष्ण गांधी | पूर्व राजनयिक व चिंतक

वह 2 अक्तूबर, 1924 के दिन, आज से ठीक सौ साल पहले दिल्ली में थे। हर जगह यही चर्चा थी कि मोहनदास करमचंद गांधी पूरे 21 दिन के अनशन पर बैठे हैं। यहां बड़ी आसानी से मैंने लिख दिया है- 21 दिन। वैसे, 21 घंटों के लिए भी अगर कोई आदमी भूखा रहे, तो उसका तन-मन शिथिल पड़ जाए।

21 दिन तक कुछ खाए बिना रहने का फैसला या इरादा उन्होंने 17 सितंबर, 1924 को ही जाहिर कर दिया था। इसकी वजह थी, अविभाजित हिन्दुस्तान के पश्चिमोत्तर प्रांत के कोहाट इलाके में भयानक दंगे हुए थे। खासकर, 9 और 10 सितंबर, 1924 को वहां के हिंदू समाज पर भारी हिंसा हुई थी। अपहरण और जबरन विवाह की खबरें आई थीं। तकरीबन कोहाट का सारा हिंदू समाज जान बचाने के लिए वहां से रावलपिंडी की ओर चल पड़ा था। गांधीजी उस समय अहमदाबाद में थे और दिल्ली जाने वाले थे। दिल्ली में उनका मुकाम था वरिष्ठ नेता मौलाना मोहम्मद अली का दरियागंज वाला मकान। वहां से उन्होंने अपने अभिन्न साथी सरदार वल्लभभाई पटेल को खत (गुजराती) में लिखा- 'भाई श्री वल्लभभाई, मेरा फैसला, आपको यह खत मिले, उससे पहले मालूम हो जाएगा। आप बब्बर शेर हैं और... आप घबराएंगे नहीं। मेरा इरादा है कि मेरा अनशन यहीं पूरा होगा...।' गांधीजी ने दो दिन बाद अपना फैसला देश के सामने रखा। मौलाना मोहम्मद अली से कहा, 'मेरे फैसले से आपको पीड़ा होगी। मैं जानता हूं, आप अपने को संभालेंगे। आपकी आंखों में आंसू देख मैं खुद टूट सा जाऊंगा।'

दरअसल, हिंदू-मुस्लिम हिंसा उनके लिए असह्य थी। उनके अंतरमन को खोखला कर देती थी। अंग्रेजों से आजादी जब मिले, तब मिले, पर सांप्रदायिकता से मुक्ति रुक नहीं सकती थी। यहां बात सिर्फ हिंदू-मुस्लिम हिंसा की नहीं थी। बात हिंसा और अहिंसा की थी। क्या हिन्दुस्तान खुद के खून के लेप में लिपटा रहेगा? अंधी सांप्रदायिक हिंसा देखकर भोजन करना तो दूर, गांधीजी के लिए जीना भी मुश्किल हो गया था।

21 दिन के फैसले की खबर सुनते ही कस्तूरबा और तीसरे पुत्र रामदास भागे-भागे दिल्ली आए। वल्लभभाई पटेल को तो आना ही था। राज गोपालाचारी जी भी पहुंच गए थे। पंडित मोतीलाल नेहरू, देशबंधु चित्तरंजन दास, डॉक्टर एनी बेसेंट भी अपनी-अपनी जगह से आए। ईसाई मित्र दीनबंधु एंड्रूज भी पहुंचे। चिंता ऐसी फैली कि जगह-जगह से नेता और लोग पहुंच गए गांधीजी की निजी सेवा करने के लिए। सब चिंतित थे कि 21 दिन कैसे कटेंगे? कैसे पूरा होगा यह अनशन? कैसे पूरा होगा गांधीजी का इरादा?

गांधीजी ने अपने चौथे पुत्र देवदास को अहमदाबाद में ही बने रहने के लिए कहा, ताकि *यंग इंडिया* अखबार के संपादन और मुद्रण के काम देखने में कोई परेशानी नहीं आए। 18 सितंबर को गांधीजी ने देवदास को पोस्टकार्ड में लिखा, 'इस उपवास से मुझे यकीन है कि मैं निकल आऊंगा। मुझे यह भी यकीन है कि उपवास के दौरान भी मेरा चरखा रुकेगा नहीं....। तुम अपना संयम बनाए रखना।' अनशन के दौरान हर रोज उन्होंने देवदास को एक पोस्टकार्ड भेजा था।

19 सितंबर को डॉक्टर अंसारी ने गांधीजी के दिल और फेफड़ों की जांच की, सब अंग ठीक काम कर रहे थे। 21 सितंबर को गांधीजी ने देवदास को लिखा, 'मैं खुश हूं, अनशन का असर अब तक मालूम नहीं पड़ रहा है।' 22 सितंबर को लिखा, 'मुझे समझ नहीं आ रहा कि मेरे हाथों में अब तक इतनी ताकत कैसे बनी हुई है। ईश्वर सर्वज्ञ हैं। इस अनशन में मैंने द्रौपदी, दमयंती, सीता को भी औरों के साथ बराबर याद किया है।'

24 सितंबर को गांधीजी ने अपने सबसे छोटे पुत्र देवदास को लिखा, 'जिस तरह मेरी लोग सेवा कर रहे हैं, उसका विवरण मैं दे नहीं सकता। मुझे यकीन है कि अनशन ठीक से बीत जाएगा। मेरी सेहत जिस तरह साथ दे रही है... यकीन नहीं होता। ईश्वर के तरीके गजब के हैं...।' 26 सितंबर को देवदास को गांधीजी लिखते हैं, 'मीटिंग (कौमी एकता के लिए) चल रही है...। मुझे अब एक दूसरे मुकाम (सुल्तान सिंह जी के निवास) में लाया गया है। एकता के लिए नेताओं ने एलान किए हैं, यकीन दिलाया है, प्रतिज्ञाएं की हैं, तिस पर भी अनशन चूंकि 21 दिन के लिए है, तो चलता रहा।' 1 अक्तूबर को उन्होंने लिखा, 'अनशन के चौदह दिन पूरे हुए, ईश्वर की अनुकंपा असीम है।'

2 अक्तूबर- आज से ठीक सौ साल पहले- अहमदाबाद में देवदास बीमार पड़ गए, तो खबर उनके पिता तक पहुंच गई। गांधीजी ने पत्र लिखा, 'तुम्हें क्यों बुखार हुआ है?' अनशन पर बैठे पिता ने पुत्र को समझाया, 'अपनी शक्ति से बाहर काम मत करो। मेरी सेहत ठीक है। हां, कमजोरी जरूर है, सो तो होगी ही, पर उसके अलावा और कुछ नहीं...।' इस दिन अनशन के पंद्रह दिन पूरे हुए थे। तब तक अनशन का असर दिखने लगा था। देश भर में सांप्रदायिकता के खिलाफ माहौल बना था। बड़ी संख्या में लोग कोहाट की हिंसा से शर्मिंदा थे। वैसे, यह अनशन गांधीजी का आखिरी अनशन नहीं था और न ही इससे देश में सांप्रदायिकता का ही अंत हुआ।

सोचकर देखिए, आज सौ साल पुरानी उस 2 अक्तूबर के बाद भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश में स्थिति कैसी है? मैं सरकारों की बात नहीं कर रहा हूं, समाज की, अवाम की बात कर रहा हूं।

कोहाट के हादसे से यह लेख शुरू हुआ है, जहां हिंदू समाज पर अत्याचार हुआ था, लेकिन हम भूले नहीं कि अत्याचार एकतरफा कहानी नहीं है। इस उप-महाद्वीप की हर कौम के हाथ लाल हैं, तो आज क्या हम भय-मुक्त हैं? क्या हमारी हमदर्दी सिर्फ हमारे लोगों या अपने परिवार भर के लिए है? क्या हमारे हमसफर सिर्फ हमारे अपने लोग हैं? अगर हां, तो भविष्य इस उप-महाद्वीप के लिए बहुत कठिन होगा, पर मैं नहीं मानता कि बात ऐसी है। बहुत कुछ अच्छा भी है।

हमारे ओलंपिक स्वर्ण विजेता खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने भाला फेंकने में इस बार जब रजत जीता और पाकिस्तान के अरशद नदीम ने स्वर्ण, तब नीरज की माता ने सरलता से कहा कि हमें बुरा नहीं लग रहा है।...अरशद भी हमारा ही लड़का है, मेहनत करता है।

यह प्रकरण मुझे विश्वास दिलाता है कि हम सिंधु-गंगा-पद्मा की उपज अविश्वास पर विश्वास का, शक पर ऐतबार का और नफरत पर मोहब्बत का 'भाला' टिकाएंगे। साथ ही, गांधीजी की सालगिरह पर उनके अडिग विश्वास में अपना विश्वास बसाएंगे।

(ये गांधीजी के पौत्र-लेखक के अपने विचार हैं)

बापू हमसे सदा कहा करते थे कि मुझे अपना गुरु न मानो

यहां स्कैन करें

मीरा बहन | स्वतंत्रता सेनानी

आज बापू के असीम स्नेह का स्मरण कर मेरा मस्तक आदर से झुका जा रहा है और हृदय गद्‌गद हो रहा है। मैं अपने मन के भाव शब्दों में कैसे व्यक्त करूं? कितने ही हफ्तों से मेरी यही मनोदशा चली आ रही है, किंतु आज 7 नवंबर, 1948 को मैंने बिना लिखे लेखनी न छोड़ने का निश्चय कर लिया है। आज से 23 साल पहले ठीक आज ही के दिन सवेरे पौने आठ बजे मैं साबरमती पहुंची थी और मुझे बापू के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। ...आज मेरा शरीर उनके नम्र स्पर्श की सुखानुभूति नहीं कर सकता, किंतु उनकी आत्मा अब भी विद्यमान है। ... बापू हमसे सदा कहा करते थे कि मुझे 'गुरु' न मानो, आज की दुनिया में कोई भी इस उच्च पद के योग्य नहीं है; ईश्वर ही एकमात्र सच्चा 'गुरु' है। 'उसे गुरु बनाओ और वह तुम्हें कभी धोखा नहीं देगा', यही उनका उपदेश था। फिर भी बापू गुरुओं के गुरु थे, क्योंकि वह हमें ईश्वर को ढूंढ़ना और एकमात्र उसी के ऊपर निर्भर रहना सिखाते थे।...

इंग्लैंड के एक गांव में पालन-पोषण होने के कारण मैं ग्रामीण जीवन से परिचित रही हूं। इसके अतिरिक्त मुझमें जन्म से ही प्रकृति के लिए गहरा प्रेम रहा है। 15 वर्ष की अवस्था में मैंने पहली बार बीथोवेन का संगीत सुना था। उसके उपरांत मेरी अंतरात्मा में दैवी शक्ति के अस्तित्व का भान हुआ और प्रभु की आराधना मेरे लिए एक वास्तविकता बन गई। बीथोवेन के संगीत ने मुझे रोमां रोलां की ओर प्रेरित किया और रोमां रोलां के जरिये मैं बापू तक पहुंची। ये सीढ़ियां आसानी से नहीं चढ़ी गईं, बल्कि इसके विपरीत मुझे शोरगुल, अंधकार, आशा-निराशा- इन सभी से होकर गुजरना पड़ा और इनके बाद ही मेरी संतप्त आत्मा को सत्य का प्रकाश दिखाई दिया और मैं अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकी।...

मां से मैंने विक्टोरिया स्टेशन पर और पिता से पेरिस में विदा ली और जैसा कि प्रारब्ध में लिखा था, मैं उनसे फिर कभी न मिल सकी।

आशा तो यही की जा सकती थी कि मेरे माता-पिता मुझे भारत जाने के लिए हतोत्साहित करेंगे- विशेषतः इसलिए कि एक एडमिरल और पूर्वी एण्डीज स्क्वाड्रन के भूतपूर्व प्रधान सेनापति होने के कारण मेरे पिता का उच्च ब्रिटिश अधिकारियों से घनिष्ठ संबंध था, किंतु पता नहीं कैसे वह मुझे प्रेरित करने वाली भावना के आध्यात्मिक स्वरूप को समझ गए और उन्होंने एक शब्द भी उसके विरोध में नहीं कहा। ...शरद् ऋतु में मैं रोमां रोलां और उनकी बहन से विदा लेने अंतिम बार ह्विवेनव गई। उसके पश्चात मैं लंदन गई और थोड़ा-सा सामान बांधकर भारत के लिए चल पड़ी। मां से मैंने विक्टोरिया स्टेशन पर और पिता से पेरिस में विदा ली और जैसा कि प्रारब्ध में लिखा था, मैं उनसे फिर कभी न मिल सकी। 25 अक्तूबर, 1925 को मैं मारशेल्स में पीऐंडओ के स्टीमर पर सवार हुई।... बारह दिन बाद मैं बंबई उतरी और 7 नवंबर को सबेरे रेल से अहमदाबाद पहुंची। स्टेशन पर कुछ मित्र गाड़ी की खिड़कियों में झांक-झांककर देखने लगे और इससे पहले कि कुछ समझ सकूं, मैं डिब्बे से बाहर आ चुकी थी और एक व्यक्ति द्वारा, जिसने अपना परिचय वल्लभभाई पटेल कहकर दिया था, एक कार में बैठाई जा रही थी। एक दूसरा व्यक्ति, जिसने अपने को महादेव देसाई बताया, मेरे सामान की देखभाल करने के लिए लौट गया। कार चल पड़ी।...

मैं आशा और प्रतीक्षा में चुपचाप बैठी रही। तभी एकाएक मेरे साथी ने कहा- 'आप वे दरख्त देख रही हैं और उनके आगे कुछ मकान? वही आश्रम है।' दूसरे ही क्षण कार इमली के एक बड़े वृक्ष के नीचे जा खड़ी हुई और मैं एक उद्यान की पक्की पगडंडी पर पैदल चलने लगी। हम एक छोटे-से फाटक से होकर गुजरे, फिर दो सीढ़ी चढ़कर एक बरामदे में पहुंची और फिर एक द्वार से होकर एक कमरे में। प्रवेश करते ही मैंने देखा कि एक छोटा-सा दुबला-पतला व्यक्ति अपनी सफेद गद्दी से उठकर मेरी ओर बढ़ रहा है। मैं जानती थी कि यही बापू हैं, किंतु मेरा रोम-रोम आदर और हर्ष से इतना भरा हुआ था कि मैं एक स्वर्गिक प्रकाश के अतिरिक्त और कुछ देख या अनुभव नहीं कर सकी।... मैं अपने लक्षित स्थान पर पहुंच गई थी- उस स्थान पर, जहां से मुझे यात्रा आरंभ करनी थी।

(गांधी जयंती के अवसर पर हिन्दुस्तान में प्रकाशित आलेख का संपादित अंश)

मनसा वाचा कर्मणा

उपदेशों को जीवन में उतारें

चाहे आप कर्म मार्ग अपनाएं, भक्ति मार्ग अपनाएं या ज्ञान मार्ग; ये तीनों, यानी ज्ञान, भक्ति और कर्म परम लक्ष्य को पाने के साधन हैं। ऐसे ज्ञानी लोग बहुत कम होते हैं, जो सिर्फ अपने ज्ञान, अपनी विद्या की मदद से पूर्णता प्राप्त करते हैं। वे विविधता में एकता को बाहर ही नहीं, बल्कि अपने भीतर भी देख सकते हैं। इसी तरह, निःस्वार्थ भाव से काम करने वाला कर्मयोगी परिणामों की ज्यादा परवाह नहीं करता। वह बस अपना कर्तव्य करता है और परिणाम ईश्वर पर छोड़ देता है। मगर हम जैसे कमजोर लोगों के लिए, चाहे आप राजनीतिक क्षेत्र में काम करते हों या सामाजिक क्षेत्र में या किसी अन्य क्षेत्र में, अगर आपको सफलता प्राप्त करनी है, अपनी जिम्मेदारियां पूरी तरह निभानी हैं, तो भक्ति और कर्म का मेल होना ही चाहिए।

मैं जानता हूं कि अतीत में धर्म ने देश में चमत्कार किए हैं, धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि राजनीतिक नजरिये से भी। यह भारत के पूर्ण एकीकरण का स्रोत और साधन रहा है। संगम में डुबकी लगाने के लिए हजारों लोग अलग-अलग हिस्सों से प्रयाग, इलाहाबाद जाते हैं। इसी प्रकार, हजारों लोग रामेश्वरम तथा भगवान वेंकटेश्वर के मंदिर जाते हैं। अगर धर्म का सही तरीके से पालन किया जाए, तो यह न केवल लोगों को वास्तविक संतुष्टि दे सकता है, बल्कि देश में एक महान परिवर्तन और क्रांति भी ला सकता है। निस्संदेह, देव-दर्शन से बहुत शांति मिलती है। लेकिन भीतर का दर्शन भी महत्वपूर्ण है। भगवान वेंकटेश्वर के दर्शन कर हम क्षण भर के लिए खुश हो जाते हैं और बाहर आते ही जान-बूझकर या किसी गुप्त उद्देश्य या मकसद से ऐसे काम कर बैठते हैं, जो नैतिकता के नियमों के विरुद्ध हैं। धर्म का पालन भीतर से भी होना चाहिए।

मुझे बहुत खुशी है कि इस समय देश में ऐसी इच्छा दिखती है। खास तौर पर हमारी युवा पीढ़ी को- मैं हिंदुओं की बात कर रहा हूं- *गीता, महाभारत* और *रामायण* के बारे में कुछ न कुछ जानना चाहिए। हमारे कितने युवा, खास तौर पर लड़कों ने पूरी *गीता*, पूरी *रामायण* और पूरी *महाभारत* पढ़ी है? उन्होंने नहीं पढ़ी है। वे ऐसा नहीं करते हैं। गांधीजी ने एक बार कहा था कि 'मैं उस लड़के को हिंदू नहीं मानता, जिसने पूरी *रामायण* और पूरी *भगवद् गीता* नहीं पढ़ी है।' वास्तव में, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हर हिंदू लड़के को संस्कृत सीखनी चाहिए, ताकि वह *भगवद् गीता* व *महाभारत* पढ़ सके।

अगर धर्म का सही तरीके से पालन किया जाए, तो यह न केवल लोगों को वास्तविक संतुष्टि दे सकता है, बल्कि देश में एक महान परिवर्तन और क्रांति भी ला सकता है।

यह महत्वपूर्ण है कि हमें जीवन-मूल्यों पर विशेष जोर देना चाहिए। जब हम पूजा करते हैं और मंदिर जाते हैं, तो हमें जीवन के दर्शन को और अपने महान ऋषियों और उनके उपदेशों को अपने दैनिक जीवन में उतारना भी चाहिए।

लालबहादुर शास्त्री, जयंती पर विशेष

आशुतोष राणा | अभिनेता

भारत मात्र भूखंड नहीं, भावखंड भी है। मुझे विश्वास है कि हम मात्र अपनी भूमि को ही नहीं, अपने भावों को भी स्वच्छ रखेंगे। अपनी दृष्टि के साथ अपनी सृष्टि को भी उज्ज्वल रखेंगे।

गांधी के सूत्र हमेशा रहेंगे प्रासंगिक

भारत कल भी महात्मा गांधी के बताए अहिंसा के रास्ते पर चला, आज भी चल रहा है और भविष्य में भी इसी राह पर चलने को संकल्पित है। तभी तो वैश्विक शांति स्थापित करने में भारत की भूमिका हर कोई स्वीकार करता है। यह भूलना नहीं चाहिए कि महात्मा गांधी के मार्ग से ही भारत आजाद हुआ। हम चूंकि बापू द्वारा दिखाए गए रास्ते पर ही आगे बढ़ते रहे, इसलिए हम विश्व की शीर्ष पांच अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो चुके हैं, जबकि हमारे साथ आजाद हुआ पड़ोसी देश गांधी की नीतियों को नकारने के कारण आज धरातल पर लोट रहा है। वह तो अब हमसे तुलना के लायक भी नहीं रहा।

आज भी हमारी संस्कृति और संस्कार विश्व-शांति को ही आगे बढ़ाने और मानव सेवा हेतु उत्सुक हैं। इतना ही नहीं, हम उपद्रवियों और आतंकियों से देश व दुनिया को सुरक्षित करने हेतु सदैव प्रयासरत रहते हैं। *अहिंसा परमो धर्म* की जरूरत अब हर कोई शिद्दत से महसूस करता है। बेशक, दुनिया के कुछ देश या तो युद्धरत हैं या युद्ध की तैयारियों में जुटे हैं, तो कुछ राजनीतिक व कूटनीतिक तरीके से मतभेद पैदा कर रहे हैं, लेकिन कुल मिलाकर सभी अमन और चैन की बात ही करते हैं। यही कारण है कि भारत का कद वैश्विक मंचों पर अनवरत बढ़ रहा है। महात्मा गांधी मितव्ययी बनने की खूब वकालत किया करते थे और यह अपेक्षा रखते थे कि हर कोई मितव्ययिता का परिचय देगा। यह सूत्र आज भी अहम बना हुआ है। अगर हम बेहिसाब खर्च करेंगे, तो न सिर्फ अपने संसाधनों का दुरुपयोग करेंगे, बल्कि असमानता का क्रूर प्रदर्शन भी करेंगे। यह समाज के एक तबके में असंतोष का कारक बन सकता है। यही कारण है कि बापू कहा करते, कम में गुजारा करना चाहिए।

बहरहाल, ऐसे वक्त में, जब कुछ खास वर्गों द्वारा महात्मा गांधी पर वैचारिक हमले बढ़ गए हैं, बापू के सूत्र कहीं अधिक प्रमुखता से हमारे बीच अपनी मौजूदगी स्थापित करते हैं। देखा जाए, तो समता और न्याय की जो वकालत बापू किया करते थे, वही किसी समाज को तरक्की के पायदान पर ऊपर उठा सकता है, अन्यथा वंचित तबकों का रोष समाज की प्रगति में बाधक बन सकता है। महात्मा गांधी ने अपने सादा जीवन से आदर्शों की ऐसी लकीर खींची है, जिसको पीछे छोड़ना किसी भी देश व समाज के लिए नामुमकिन है। हमारी खुशकिस्मती रही कि गांधी हमारे यहां पैदा हुए। वह सदैव 'महात्मा' के रूप में हमारे बीच जीवित रहेंगे।

शकुंतला महेश नेनावा, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम
गांधी जयंती

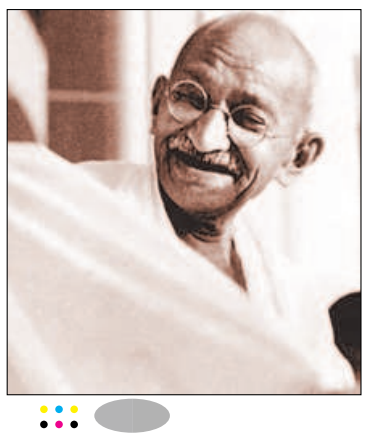

उन्हें इंसान ही रहने दें, देवता न बनाएं

इसमें कोई शक नहीं है कि महात्मा गांधी एक महान व्यक्तित्व थे। इस प्रकार के दिव्य पुरुष युगों में होते हैं, लेकिन यह भी कटु सच्चाई है कि ऐसे व्यक्ति बहुत हठी होते हैं और 'जो सोच लिया, वही करना है' की मानसिकता को जीते हैं। ऐसे में, मनुष्य होने के नाते उनके निर्णय गलत भी हो सकते हैं।

सन् 1857 में स्वतंत्रता की पहली लड़ाई के विफल होने के बाद पूरे देश में ब्रिटिश हुकूमत बाकायदा स्थापित हो गई। उस समय अंग्रेज हमें टुकड़ों-टुकड़ों में बांटने में सफल हो गए थे। इसके बाद आजादी पाने की इच्छा भले सबके मन में थी और सभी अपनी-अपनी तरह से लड़ भी रहे थे, लेकिन उनको सफलता नहीं मिल पा रही थी। लंबे समय तक यही स्थिति बनी रही और विदेश में आहत हुए गांधी वापस देश लौटे। उन्होंने देश की स्थिति को जाना और यह भी जाना कि अंग्रेज कभी नहीं चाहेंगे कि हिंदू-मुसलमान साथ आएं। उनको डर था कि अगर भारत धर्म से उठकर ऊपर आ गया, तो उनका टिकना मुश्किल हो जाएगा। इस स्थिति में जब गांधी जी ने स्वतंत्रता संग्राम छेड़ा, तब मुस्लिमों को अपनी तरफ करने के लिए उनसे ऐसे समझौते भी किए, जो अनुचित कहे जाएंगे। उनके सामने अर्जुन की आंखों सा एक ही लक्ष्य था आजादी, जिसके लिए उन्होंने अपने अहिंसा के मंत्र को भी एक तरफ कर दिया और दूसरे विश्व युद्ध में भारत की सेना को अंग्रेजों की तरफ से लड़ने के लिए तैयार किया। इतना ही नहीं, हमें आजादी अनगिनत शहादत के बाद मिली, पर हम आज भी यही कहते हैं, *दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल, साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल!*

बेशक, गांधीजी ने घर-घर में चेतना जगाई, बंटे हुए भारत को एक सूत्र में बांधने का काम किया, लेकिन वह ताउम्र अपने कुछ आदर्शों में कैद रहे और उन आदर्शों के कारण ही उनकी हत्या भी हुई। गांधीजी मानव थे, पुरुषोत्तम नहीं और न ही महामानव। अतः कुछ गलतियां उनके अनुसार भले ही देशहित में रही हों, लेकिन उनके साथियों को शायद ही पसंद आईं। वह त्याग को सर्वोपरि मानते थे, कहते थे कि वह वीतरागी हैं, पर उनके त्याग की परिभाषा भी अनुराग से ग्रसित थी। उनका नेहरू जी के प्रति विशेष अनुराग स्पष्ट था। वह समाज सुधारक थे, छुआछूत इत्यादि कुरीतियों के सख्त खिलाफ थे, लेकिन इस दिशा में वह स्वयं अपनी संतान को सुधार न सके। निस्संदेह, गांधीजी की सोच पल-प्रतिपल देश को राह दिखाएगी, लेकिन हमें हंस बनकर दुग्ध ग्रहण करना है और जल छोड़ देना है।

सुरेश चौधरी, टिप्पणीकार

www.jagran.com
राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
बुधवार 2 अक्टूबर, 2024

दैनिक जागरण

योजना और लक्ष्य के बीच अनुशासन सबसे अहम कड़ी है

बुलडोजर कार्रवाई

यह अच्छा है कि सुप्रीम कोर्ट ने बुलडोजर कार्रवाई पर दिशानिर्देश जारी करने की बात कहते हुए यह भी कहा कि मंदिर हों या दरगाह, उनका निर्माण सड़क पर नहीं किया जा सकता। विडंबना यह है कि सड़कों के साथ रेलवे ट्रैक और अन्य सार्वजनिक स्थलों पर भी अवैध तरीके से धार्मिक स्थलों का निर्माण किया जाता है। यह किसी से छिपा नहीं कि किस तरह सरकारी या निजी भूमि पर कब्जे के लिए धार्मिक स्थलों का अवैध निर्माण किया जाता है। अब तो इसकी चपेट में वन भूमि भी आ रही है। चूंकि आस्था के नाम पर ऐसे अवैध स्थलों को हटाने से बचा जाता है, इसलिए उनका निर्माण बेरोक-टोक जारी है। तथ्य यह भी है कि सुप्रीम कोर्ट ने बहुत पहले यह आदेश दिया था कि यातायात में बाधक बनने वाले धार्मिक स्थलों को हटाया जाए, लेकिन उस पर अमल अब तक नहीं किया जा सका है। उचित यह होगा कि सुप्रीम कोर्ट यह देखे कि ऐसा क्यों है? अवैध तरीके से अथवा अतिक्रमण कर बनाई गई इमारतों के खिलाफ सख्ती दिखाई ही जानी चाहिए। इसी से अतिक्रमण और अवैध निर्माण की राष्ट्रव्यापी समस्या का समाधान किया जा सकता है। इस समस्या के लिए केवल अवैध निर्माण या अतिक्रमण करने वाले ही दोषी नहीं हैं। इसके लिए सरकारी विभाग भी दोषी हैं, जो नियम विरुद्ध निर्माण होने देते हैं। ऐसी कोई व्यवस्था बननी ही चाहिए, जिससे देश में अवैध निर्माण थमे-वह चाहे धार्मिक स्थलों के रूप में हो या फिर अन्य किसी तरह के निर्माण के रूप में।

बीते कुछ समय से बुलडोजर कार्रवाई पर इसलिए सवाल उठ रहे हैं, क्योंकि कई राज्यों में संगीन अपराधों में लिप्त अभियुक्तों के घरों, दुकानों आदि पर बुलडोजर चलाए गए। इस पर संबंधित सरकारों और उनके पुलिस-प्रशासन की ओर से यह दलील दी जाती है कि इस तरह की कार्रवाई किसी व्यक्ति के अपराध में लिप्त होने के कारण नहीं, बल्कि इसलिए की जाती है कि उसका घर या व्यावसायिक स्थल बिना नक्शे के या अतिक्रमण करके बना पाया गया होता है। यह दलील निराधार नहीं, लेकिन सच यह है कि अपने देश में बड़ी संख्या में घर और अन्य इमारतें स्थानीय निकायों की ओर से स्वीकृत नक्शे के बिना बनाई जाती हैं। यह भी एक सच्चाई है कि जिस इलाके में किसी संदिग्ध अपराधी या अभियुक्त का घर अथवा व्यावसायिक भवन अवैध तरीके से बना होता है, वहीं अन्य लोगों के भी बने होते हैं, लेकिन वे बुलडोजर कार्रवाई से बचे रहते हैं। इसी कारण अनधिकृत निर्माण के खिलाफ बुलडोजर कार्रवाई को न्याय के मूल सिद्धांतों के खिलाफ कहा जाता है। बुलडोजर कार्रवाई के जरिये जब किसी अभियुक्त का घर गिराया जाता है तो उसके स्वजन भी सड़क पर आ जाते हैं। यह भी न्यायसंगत नहीं। आशा है कि सुप्रीम कोर्ट इस पहलू को भी देखेगा और अवैध निर्माण एवं अतिक्रमण को भी सहन नहीं करेगा।

नशामुक्त हिमाचल

हिमाचल प्रदेश में नशे की बढ़ती समस्या से हर वर्ग चिंतित है। राज्य में नशे का चलन तेजी से बढ़ रहा है और अब तो इसके कारण युवाओं की मौत के मामले भी सामने आ रहे हैं। नशे के विरुद्ध कई अभियान चलाए जाने के बाद भी इस पर रोक नहीं लग पा रही है। पहले कम मात्रा में चिट्टे, चरस एवं अन्य नशीले पदार्थों की बरामदगी हो रही थी, लेकिन पिछले कुछ समय से बड़ी मात्रा में इनकी बरामदगी हो रही है। चिंता इस बात की है कि प्रदेश की युवा पीढ़ी नशे के दलदल में धंसती जा रही है और उसे बचाने के लिए त्वरित कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। चिट्टे की आपूर्ति रोकने के लिए सख्त कदम उठाने आवश्यक हैं। इस समस्या की गंभीरता को देखते हुए प्रदेश सरकार भी जल्द ही नशामुक्त हिमाचल अभियान चलाएगी। कहा जा रहा है कि इसमें त्रिस्तरीय रणनीति के तहत काम होगा। नशे की रोकथाम के साथ नशा करने वालों की शीघ्र पहचान और पीड़ित लोगों को समाज की मुख्यधारा में लाने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। राज्य में नशे की आपूर्ति को नियंत्रित करने के साथ इसकी मांग को कम करने के लिए काम किया जाएगा। प्रशासन एवं पुलिस नशा तस्करों पर शिकंजा कसने के लिए सक्रियता से कार्य कर रहे हैं, लेकिन लोगों की सहभागिता के बिना अपेक्षित सफलता मिलना संभव नहीं है। आपके आसपास कोई ऐसी गतिविधि में संलिप्त है तो उसकी जानकारी पुलिस को दें। भावी पीढ़ी को जागरूक करने के लिए शिक्षण संस्थानों में विशेष सेमिनार, जागरूकता शिविरों का आयोजन किया जाना चाहिए। सभी के प्रयास से ही नशामुक्त हिमाचल का संकल्प पूरा होगा। नशा मुक्त समाज ही विकसित देश का सपना पुरा कर सकता है।

नशे की गंभीर होती समस्या को रोकने के लिए प्रदेश में व्यापक अभियान चलाना समय की मांग है

गांधीजी की कल्पना का भारत

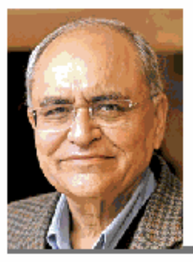

बलबीर पुंज

आज के गांधीवादी बड़ी चतुराई के साथ इसकी अनदेखी करना पसंद करते हैं कि गांधीजी गोसंरक्षण के पक्षधर और मतांतरण के प्रबल विरोधी थे

अवधेश राजपूत

गांधीजी की 155वीं जयंती पर बापू का स्मरण स्वाभाविक है। स्वाधीनता तक उन्होंने देश की नियति और दिशा, दोनों निर्धारित की थीं। आज जब देश में उनके नाम पर राजनीति करने वाले भारत को एक राष्ट्र न मानकर राज्यों के समूह के तौर पर परिभाषित करते हैं, तब गांधीजी की कल्पना में 'भारत क्या है', उस पर विचार आवश्यक हो जाता है। गांधीजी ने 'हिंद स्वराज' में लिखा था...अंग्रेजों ने सिखाया है कि आप एक राष्ट्र नहीं थे और एक-राष्ट्र बनने में आपको सैकड़ों वर्ष लगेंगे। यह बात बिल्कुल निराधार है। दो अंग्रेज जितने एक नहीं, उतने हम भारतीय एक थे और एक हैं...।' इस संबंध में गांधीजी की विरासत पर दावा करने वालों के विचार में आए परिवर्तन का कारण, उनका वह औपनिवेशिक चिंतन और वामपंथी दर्शन है, जिसमें भारतीय सांस्कृतिक पहचान के प्रति अकूत घृणा और प्रत्येक विषय पर भारतीय दृष्टिकोण का गहरा अभाव है।

गांधीजी आस्थावान सनातनी हिंदू थे। वह 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदंति' के दर्शन से प्रेरणा पाते थे और उन्होंने रामराज्य को सुशासन का पर्याय माना। अक्सर वामपंथियों, स्वयंभू गांधीवादियों के साथ मुस्लिम नेताओं का एक वर्ग अयोध्या में विवादित ढांचे के ध्वंस को 'कलंक' बताता है। वास्तव में वह विशुद्ध गांधीवादी समाधान था। गांधीजी ने 'यंग इंडिया' में एक प्रश्न का इस प्रकार उत्तर दिया था, 'अगर 'अ' का कब्जा अपनी जमीन पर है और कोई शख्स उस पर कोई इमारत बनाता है, चाहे वह मस्जिद ही हो, तो 'अ' को यह अख्तियार है कि वह उसे गिरा दे। अगर उसे उखाड़ डालने की इच्छा या ताकत 'अ' में न हो, तो उसे यह हक बराबर है कि वह अदालत में जाए और उसे अदालत द्वारा गिरवा दे।'

गांधीजी ने सदैव भारतीय समाज को स्वावलंबी बनाने हेतु खादी और कुटीर उद्योग के लिए प्रोत्साहित करने के साथ गोसंरक्षण पर बल दिया। मतांतरण का विरोध किया। अपने बाल्यकाल का स्मरण करते हुए उन्होंने लिखा था कि कैसे ईसाई मिशनरी स्कूलों के बाहर खड़े होकर हिंदुओं और उनके देवी-देवताओं के बारे में अपशब्द बोलते थे और हिंदुओं को ईसाई बनाकर गोमांस खाने आदि के लिए विवश करते थे। विडंबना यह है कि वर्तमान समय में स्वयंभू गांधीवादी छल-बल-लालच प्रेरित मतांतरण के प्रत्यक्ष-परोक्ष समर्थन में, जबकि गोरक्षा के विरोध में खड़े नजर आते हैं। यह भी विडंबना है कि कथित गांधीभक्त यह बताना पसंद नहीं करते कि बापू हर किस्म के अन्याय के विरोधी थे।

कुछ आलोचक गांधीजी को विभाजन और उसकी रक्तरंजित विभीषका के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं। हालांकि सच यह है कि देश को इस त्रासदी से बचाने के लिए उन्होंने भरसक प्रयास किए थे। उनकी नीयत एवं दृष्टि निष्कलंक, परंतु नीति त्रुटिपूर्ण थी। वह सोचते थे कि तुष्टीकरण से विभाजन की पक्षधर मजहबी मानसिकता परास्त हो जाएगी, इसलिए उन्होंने खिलाफत आंदोलन का नेतृत्व करने के साथ जिन्ना को अविभाजित भारत का प्रधानमंत्री बनाने का प्रस्ताव तक दिया। जब इस्लाम के नाम पर विभाजन अपरिहार्य हो गया, तब उन्होंने दूरदर्शी नीति अपनाते हुए पाकिस्तान में बसने की इच्छा जताई थी। यदि ऐसा होता, तो तीन संभावनाएं बन सकती थीं। पहला, वह पाकिस्तान में आम नागरिक की भांति रहते। दूसरा, जिन्ना उन्हें गिरफ्तार करके जेल में डाल देते। तीसरा, किसी झूठे मामले में फंसाकर गांधीजी को फांसी पर लटका देते। इन तीनों सूरतों में पाकिस्तान कुछ वर्षों में ही बिखर सकता था, क्योंकि उस समय जिन क्षेत्रों को मिलाकर पाकिस्तान बनाया गया था, वहां तब मुस्लिम लीग से कहीं अधिक गांधीजी की स्वीकार्यता और लोकप्रियता थी।

आखिर गांधीजी ने विभाजन को क्यों स्वीकार किया? जब खिलाफत आंदोलन जनित सांप्रदायिक दंगों में हिंदुओं पर कई जगह जिहादियों का कहर टूटा, तब गांधीजी को शायद संकेत मिल गया था कि देश की अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने का वांछित सामर्थ्य, शौर्य और संकल्पबल तत्कालीन हिंदू समाज में नहीं था। इस संबंध में उन्होंने 'यंग इंडिया' के एक आलेख में हिंदुओं को 'दब्बू' और मुसलमानों को 'धींग' कहकर संबोधित किया था। इसी पृष्ठभूमि में कांग्रेस से त्यागपत्र देकर डा. केशव बलिराम हेडगेवार ने भारतीय समाज को सुरक्षित और संगठित करने हेतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की थी।

इसमें संदेह नहीं कि गांधीजी ने स्वतंत्रता आंदोलन में महती भूमिका निभाई और उसके मुख्य कर्णधार रहे, परंतु इसका श्रेय अकेले उन्हें देना असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों के साथ अन्याय होगा। उन्होंने अपने बहुआयामी व्यक्तित्व के साथ नूतन प्रयोग करके न केवल स्वाधीनता की लौ जलाए रखी, बल्कि ब्रिटिश कुटिलता को कई अवसरों पर निष्प्रभावी भी किया। वर्ष 1932 का पूना समझौता इसका जीवंत प्रमाण है। तब दलित, शेष हिंदू समाज से अलग न हो, इसके लिए गांधीजी ने आमरण अनशन किया था। ऐसा करके उन्होंने हिंदू समाज को एकजुट किया। स्वतंत्र भारत में दलितों-वंचितों के लिए वर्तमान आरक्षण उसकी अभिव्यक्ति है। गांधीजी कभी स्वयं के लिए और अपने परिवार हेतु महत्वाकांक्षी नहीं रहे। इस पृष्ठभूमि में जो राजनीतिक दल गांधीजी की विरासत-चिंतन पर अधिकार जमाकर राजनीति करते हैं, उनकी स्थिति किसी से छिपी नहीं है। अब वामपंथी भी खुद को गांधीवादी बताने लगे हैं। जहां बापू भारत की एकता-अखंडता के पक्षधर रहे, वहीं वामपंथी इसके विरुद्ध थे। गांधीजी अहिंसक थे, तो वामपंथियों की कार्यशैली के केंद्र में हिंसा है। भारत छोड़ो आंदोलन में गांधीजी के लिए भी वामपंथियों ने ओछे शब्दों का उपयोग किया था। वामपंथियों द्वारा गांधीजी का नाम अलापना उनकी कुटिल राजनीति का हिस्सा है, क्योंकि वे इसके माध्यम से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को कठघरे में खड़ा करना चाहते हैं, जो उनके भारत-हिंदू विरोधी एजेंडे की पूर्ति में अवरोध बना हुआ है। समग्रता में देखा जाए तो कांग्रेस सहित तमाम स्वयंभू गांधीवादियों के बजाय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं उसके सहयोगी संगठन और सत्तारूढ़ भाजपा के नीति-विचार बापू के सनातनी-राष्ट्रवादी दर्शन के कहीं अधिक निकट नजर आते हैं।

(स्तंभकार 'ट्रिस्ट विद अयोध्याः डिकालोनाइजेशन आफ इंडिया' के लेखक हैं)

response@jagran.com

महंगी पड़ती राजनीतिक क्षुद्रता

राजीव सचान

जब पक्ष-विपक्ष जनता को बहकाने की राजनीति करने लगते हैं, तब आवश्यक सुधार करना और कठिन हो जाता है

संविधान के समक्ष नकली खतरे का झूठा प्रचार। फाइल

राजनीति का काम है लोगों को दिशा देना और उन्हें जागरूक करना, लेकिन पिछले कुछ समय से अपने देश में इसके ठीक उलट हो रहा है। राजनीति लोगों को ऐसे विषयों पर गुमराह करने का जरिया बनी हुई है, जिनका कोई आधार ही नहीं बनता। इन दिनों पक्ष-विपक्ष के नेता देश की जनता को यह समझाने में लगे हुए हैं कि भारत का संविधान खतरे में है और प्रतिपक्षी दल आरक्षण खत्म करने की भी तैयारी में हैं। एक तरह से लोगों को यह यकीन दिलाया जा रहा है कि कौआ उनका कान ले गया है और उन्हें बिना यह देखे-समझे कौए के पीछे दौड़ना चाहिए कि उनका कान सलामत है या नहीं? संविधान और आरक्षण के खतरे में होने का शिगूफा लोकसभा चुनाव के समय छेड़ा गया था। बहुत से लोग इस शिगूफे का शिकार भी हुए। पता नहीं अब उन्हें भान हुआ या नहीं कि उनके सामने भय का भूत खड़ा किया गया था, लेकिन राजनीतिक दलों की लोगों को बहकाने की राजनीति अब भी जारी है।

लोकसभा चुनाव के समय संविधान और आरक्षण के लिए खतरा पैदा होने का हौवा कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों ने खड़ा किया था। इस दुष्प्रचार के चलते राजनीतिक नुकसान उठाने के बाद से भाजपा भी यह कहने में लगी हुई कि संविधान और आरक्षण को असली खतरा कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों से है। विडंबना यह है कि इस झूठे प्रचार पर अंध विरोधी और अंध समर्थक किस्म के कुछ लोग यकीन भी कर रहे हैं, जबकि सच यह है कि न तो संविधान खत्म किया जा सकता है और न ही आरक्षण समाप्त किया जा सकता है। कम से कम वर्तमान परिस्थितियों में तो यह संभव नहीं और किसी की ओर से ऐसी कोई कोशिश करने का मतलब है जानबूझकर राजनीतिक आत्मघात करना। देश का कोई भी दल इतना नादान नहीं हो सकता कि वह संविधान खत्म करने या फिर आरक्षण को समाप्त करने का सोचे और फिर भी यह समझे कि वह राजनीतिक रूप से प्रासंगिक बना रह सकता है।

निःसंदेह संविधान में संशोधन किया जा सकता है और देश, काल एवं परिस्थितियों को देखते हुए किया भी जाना चाहिए। ऐसा किया भी गया है और चूंकि कांग्रेस लंबे समय तक सत्ता में रही है, इसलिए उसने ही सबसे अधिक संविधान संशोधन किए हैं। आपातकाल के जरिये संविधान को धता बताने का कलंक भी उसके माथे पर है, लेकिन दुष्प्रचार की राजनीति के जरिये वही यह प्रचारित कर रही है कि भाजपा संविधान के लिए खतरा बन गई है। संविधान के किसी प्रविधान की समीक्षा की मांग करने में कोई हर्ज नहीं, लेकिन आज जैसा राजनीतिक माहौल है, उसमें यदि कोई ऐसी मांग करे तो उसके विरोधी तत्काल उसे संविधान विरोधी करार देंगे। इसी तरह यदि किसी ने भूले से भी कह दिया कि आरक्षण की समीक्षा होनी चाहिए, ताकि वह अधिकाधिक पात्र लोगों को मिल सके तो उसे आरक्षण विरोधी करार देने में क्षण भर की भी देर नहीं की जाएगी। आखिर यह क्यों नहीं देखा जाना चाहिए कि आरक्षण का लाभ पात्र लोगों को सही तरह से कैसे मिले?

यह देखना दुखद है कि एससी-एसटी आरक्षण के उपवर्गीकरण की उचित मांग का जो भी समर्थन कर रहे हैं, उन्हें संविधान और सामाजिक न्याय विरोधी करार देने में संकोच नहीं किया जा रहा है। आखिर यह कैसा सामाजिक न्याय है कि एससी-एसटी समाज की जिन सबसे अधिक पिछड़ी जातियों को आरक्षण का लाभ देना सुनिश्चित किया जाना सभी दलों का साझा ध्येय होना चाहिए, उन्हें उससे वंचित करने को ही संविधानसम्मत बताया जा रहा है। वास्तव में यह सामाजिक अन्याय की ही मिसाल है। यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति इसीलिए बनी है, क्योंकि आरक्षण पर क्षुद्र राजनीति की जा रही है। जैसे आरक्षण के समक्ष नकली खतरा खड़ा कर दिया गया है, उसी तरह संविधान के समक्ष भी।

आज पक्ष-विपक्ष में से यदि कोई संविधान के किसी प्रविधान में संशोधन की न्यायसंगत मांग भी करे तो उसे फौरन ही संविधान का शत्रु करार दिया जाएगा। इतना ही नहीं, ऐसा करने वाले यह हल्ला मचाते हुए भीमराव आंबेडकर की फोटो के साथ सड़कों पर उतर आएंगे कि बाबा साहेब के बनाए संविधान को खत्म करने की साजिश रची जा रही है। 2014 में जब मोदी सरकार ने सत्ता में आने पर जजों की नियुक्ति की मौजूदा गैर-संवैधानिक व्यवस्था को खत्म कर न्यायिक नियुक्ति आयोग बनाने की पहल की थी तो सभी विपक्षी दलों ने उसका समर्थन किया था। संबंधित संविधान संशोधन विधेयक पर संसद और विधानसभाओं ने खुशी-खुशी मुहर भी लगा दी थी, लेकिन जैसी आशंका थी, सुप्रीम कोर्ट ने उसे असंवैधानिक करार दिया और जजों के द्वारा जजों की नियुक्ति की गैर-लोकतांत्रिक व्यवस्था बनाए रखी। यह किसी भी दृष्टि से संविधानसम्मत नहीं है, लेकिन आज कोई सोच भी नहीं सकता कि जजों की नियुक्ति की कलेजियम व्यवस्था में बदलाव की कोई पहल हो सकती है। यदि इसका कोई निष्कर्ष निकलता है तो यही कि जब पक्ष-विपक्ष के दल क्षुद्रता भरी राजनीति करने लगते हैं, तब आवश्यक सुधार करना और भी कठिन हो जाता है। हमारे राजनीतिक दल इन दिनों जनता को जानबूझकर बहकाने और सीधे शब्दों में कहें तो बेवकूफ बनाने वाली जैसी राजनीति करने में लगे हैं, उसे देखते हुए इसके आसार नहीं कि विभिन्न क्षेत्रों में जरूरी सुधारों की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है। आसार इसलिए कम हैं, क्योंकि दोनों ही पक्ष के शीर्ष नेता भी इसी राजनीति का परिचय देने में लगे हुए हैं। इससे भी खराब बात यह है कि मीडिया का एक हिस्सा और विशेषकर यूट्यूब के जरिये पत्रकारिता करने वाले इसमें सहायक बने हुए हैं।

(लेखक दैनिक जागरण में एसोसिएट एडिटर हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

राग-द्वेष से मुक्ति

इस समय संसार कलह से त्रस्त है। परस्पर प्रेम और सम्मान का अभाव हो तब ऐसा होना बहुत स्वाभाविक है। ऐसी स्थिति राग और द्वेष से उपजी जीवनशैली के कारण ही निर्मित हुई है। राग और द्वेष असल में मोह के दो पुत्र हैं, जिनसे पुनः घृणा और निंदा नामक दो विषाक्त पुत्री उत्पन्न होती हैं। उनके विषवमन से प्रेम, दया और करुणा आदि मानवीय मूल्य दग्ध हो जाते हैं। संसार के नश्वर पदार्थों में आसक्ति ही राग है और सत्य को जानते-समझते हुए भी उसकी उपेक्षा कर देना ही द्वेष है। राग-द्वेष के कारण ही मनुष्य सांसारिक प्रपंच में उलझकर परमार्थिक ज्ञान से वंचित हो जाता है। जिस वस्तु-व्यक्ति आदि से राग हो जाए तो उसमें दोष होते हुए भी दिखाई नहीं देते और जिससे द्वेष हो जाए, उसमें सद्गुण होने पर भी उसे उपेक्षित कर दिया जाता है। जो संसार निरंतर गतिमान और परिवर्तित हो रहा है, उसे स्थिर मानने से ही राग-द्वेष जैसे विकार हमें विकृत करते रहते हैं। राग-द्वेष से किए गए कार्य का परिणाम कभी कल्याणकारी नहीं होता। राग-द्वेष काले सर्प के दो विषैले दांत हैं, जिनके दंश से सामाजिक जीवन की पारस्परिक संवेदना पर ग्रहण लग जाता है। इस भयावह विष के दुष्प्रभाव को केवल विवेक ही नष्ट कर सकता है, जिसकी प्राप्ति का मूल स्रोत है-सत्संग।

आज भौतिकतावादी जीवनशैली में व्यक्ति ऐसा त्रस्त-व्यस्त और भ्रमित हो गया है, जिसके कारण वह अपनी संस्कृति-संस्कार और सत्संग आदि से वंचित होकर केवल जीवन को पशुवत ढो रहा है। अंतःकरण में राग-द्वेष की विषबेल तभी पनपती है, जब परमार्थपथ भ्रष्ट हो जाता है। सत् का तात्पर्य है-जो शाश्वत और धर्मयुक्त है, उससे हमारा संग या योग हो जाए। लोकोपकारी सदुपदेशों को हम मन, वचन और कर्म में धारण करें, जिससे सर्वत्र मानवीय मानबिंदुओं के संरक्षण का सुंदर स्वरूप सबके आनंद का संवर्धन करे।

आचार्य नारायण दास

सूखे की चपेट में अफ्रीका

सुधीर कुमार

बोत्सवाना, लेसोथो, नामीबिया, मलावी, जांबिया, जिंबाब्वे के लोग पानी, भोजन और आजीविका के खतरे से जूझ रहे हैं

गंभीर सूखे की स्थिति के बीच भुखमरी का सामना कर रहे अपने निवासियों को मांस उपलब्ध कराने के लिए अफ्रीकी देश नामीबिया ने 83 और जिंबाब्वे ने 200 हाथियों को मारने की घोषणा की है। बढ़ते तापमान और सूखे के कारण भोजन और पानी के लिए अफ्रीका में मनुष्यों और वन्यजीवों के बीच संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है। यह परिदृश्य चार्ल्स डार्विन के 'योग्यतम की उत्तरजीविता' सिद्धांत को प्रदर्शित करती है, जहां केवल सबसे सक्षम और अनुकूलित जीव ही जीवित रह सकते हैं।

संयुक्त राष्ट्र विश्व खाद्य कार्यक्रम के अनुसार, अफ्रीका इस समय गंभीर सूखे का सामना कर रहा है। अफ्रीका के छह देश-बोत्सवाना, लेसोथो, नामीबिया, मलावी, जांबिया और जिंबाब्वे के लाखों लोग पानी, भोजन और आजीविका के खतरे से जूझ रहे हैं। नामीबिया ने विगत 22 मई को सूखे के कारण राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा की थी। इस सूखे की भयावहता इतनी है कि नामीबिया की लगभग सभी प्रमुख फसलें नष्ट हो चुकी हैं। चारे की गंभीर कमी और तापमान में वृद्धि के कारण मवेशी मर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार, नामीबिया के लगभग 84 प्रतिशत खाद्य संसाधन पहले ही समाप्त हो चुके हैं, जिससे देश में व्यापक खाद्य संकट उत्पन्न हो गया है। यह संकट इतना विकराल है कि लोग अपनी भूख मिटाने के लिए जंगली जानवरों का शिकार करने पर मजबूर हो गए हैं। नामीबिया का संविधान नागरिकों को आपातकालीन स्थितियों में प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग की अनुमति देता है, जिसके चलते भोजन के लिए जंगली जानवरों का शिकार करना यहां एक कानूनी विकल्प बन गया है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि अक्टूबर 2024 से मार्च 2025 के बीच नामीबिया में खाद्य सुरक्षा की स्थिति और भी गंभीर हो जाएगी और इस दौरान 12.6 लाख लोग गंभीर खाद्य असुरक्षा का सामना करेंगे। जिंबाब्वे भी इसी तरह की आपदा से जूझ रहा है। वहां अल नीनो के कारण सूखा पड़ा है, जिसने देश की आधी से अधिक फसलें बर्बाद कर दी हैं। भोजन की कमी को देखते हुए सरकार ने दो सौ हाथियों को मारकर खाने का आदेश दे दिया है।

वन्यजीवों को मारकर खाने का यह निर्णय न केवल मानव जीवन के लिए एक अस्थायी समाधान है, बल्कि देश की जैव विविधता और पर्यावरण पर दीर्घकालिक नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। ऐसे में अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए जरूरी है कि वह मानवीय सहायता के माध्यम से इन देशों को दीर्घकालिक और टिकाऊ समाधान प्रदान करे, ताकि प्राकृतिक संसाधनों और पारिस्थितिकी तंत्र को बचाते हुए लोगों की खाद्य आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।

(लेखक बीएचयू में शोधार्थी हैं)

मेलबाक्स

शोध एवं नवाचार को मिले विस्तार

'शोध और नवाचार है उन्नति का आधार' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में डा. जयंतीलाल भंडारी ने सही कहा है कि भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य हासिल करने के लिए आवश्यक है कि विभिन्न विकसित देशों की तरह बौद्धिक समझ, शोध एवं नवाचार पर अधिक धनराशि व्यय करने की रणनीति अपनाई जाए। विश्व के विकसित एवं समृद्ध देशों ने इसी नीति को अपनाया और निजी क्षेत्र की संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों के सहयोग से शोध एवं नवाचार के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए हैं। हमारे देश में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है और हमारे युवा उत्साही, परिश्रमी एवं प्रतिभाशाली भी हैं। बस आवश्यकता है तो केवल समग्र प्रयासों की। इसके लिए पर्याप्त धनराशि खर्च करनी होगी, जो केवल सरकार के स्तर पर संभव नहीं है। सरकार को निजी क्षेत्र से तालमेल स्थापित कर इस दिशा में रणनीति तैयार करनी होगी। हमारे देश में विश्वस्तरीय वस्तुएं तैयार हों, उनकी कीमत प्रतिस्पर्धी हो, इसके लिए हमें शोध एवं नवाचार पर फोकस करना ही होगा। इस मुद्दे पर कोई राजनीति नहीं होनी चाहिए। फ्रीबीज पर नियंत्रण रखकर हम जीडीपी के अनुपात में पर्याप्त राशि इस क्षेत्र के लिए आवंटित कर सकते हैं। हमें ऐसे उपाय करने होंगे कि हमारे संस्थानों से पढ़कर निकलने वालों का लक्ष्य विदेश में जाकर बसना न हो। उन्हें अपने देश के उत्थान के लिए नवोन्मेषी कार्यसंस्कृति अपने ही संस्थानों में विकसित करनी होगी। शोध एवं नवाचार के माध्यम से प्राप्त परिणामों से ही हम अपने युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर प्रदान कर पाएंगे। इस दिशा में वर्तमान केंद्र सरकार गंभीरता से प्रयास कर रही है, जिन्हें और अधिक बढ़ाना होगा। इसमें राज्यों की भागीदारी भी अहम होगी।

योगराज, खरड़ (पंजाब)

लोकतंत्र के साथ प्रयोग

'एक और राजनीतिक प्रयोग' शीर्षक से प्रकाशित संपादकीय आलेख में शंकर शरण ने राजनीति में निरंतर हो रहे नए प्रयोगों और गठबंधनों के प्रभावों का समग्र विश्लेषण किया है, जो लोकतंत्र और विकास की दिशा को प्रभावित कर रहे हैं। उन्होंने इस अस्थिरता के कारण जनता और राजनीतिक दलों की जिम्मेदारियों पर भी प्रश्न उठाए हैं। आज की राजनीति में निरंतर प्रयोग और गठबंधन के खेल ने लोकतंत्र की जड़ों को हिला दिया है। हर चुनाव के साथ नए समीकरण बनते हैं, परंतु इसका दीर्घकालिक प्रभाव अधिकतर नकारात्मक रहा है। राजनीतिक दल जनता के हित के बजाय अपने स्वार्थों को साधने में लगे हुए प्रतीत होते हैं, जिससे राज्य और देश के विकास पर प्रश्नचिह्न लग जाता है। यदि हम बिहार या उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों को देखें, तो राजनीतिक अस्थिरता और बार-बार होने वाले गठजोड़ ने प्रशासनिक कार्यकुशलता को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। चुनावी वादों की लंबी फेहरिस्त अक्सर केवल कागजों तक सीमित रह जाती है, जबकि जमीन पर उन वादों का कार्यान्वयन नदारद रहता है। यह स्थिति न केवल सरकार की विश्वसनीयता पर चोट करती है, बल्कि जनता के विश्वास को भी कमजोर करती है। समस्या की जड़ में जनता की निष्क्रियता भी एक अहम भूमिका निभाती है। मतदाता अक्सर चुनावी वादों के बहकावे में आकर तात्कालिक लाभ की ओर आकर्षित हो जाते हैं। ऐसे में यह जरूरी है कि वे दीर्घकालिक सोच के साथ चुनाव करें, ताकि राजनीतिक दल जनता के वास्तविक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करें। राजनीतिक दल अपने चुनावी रणनीतियों के बजाय स्थायी नीतियों पर भी ध्यान दें। सिर्फ चुनावी लाभ के लिए नए वादों को लागू करना सही नहीं है। शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार जैसे मुद्दे प्राथमिकता बनने चाहिए, ताकि जनता का भरोसा सरकारों पर बना रहे और स्थिरता बनी रहे। राजनीतिक दलों को अपने व्यवहार में बदलाव लाने की आवश्यकता है। स्थायी और प्रभावी नीतियों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जो वास्तविक समस्याओं का समाधान कर सकें। जब तक राजनीति में स्थिरता और दीर्घकालिक दृष्टिकोण नहीं अपनाया जाएगा, तब तक देश का विकास बाधित होता रहेगा।

awanishg30@gmail.com

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए; नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****

संपादकीय जागरण

(12) बुधवार, 2 अक्टूबर, 2024 : आश्विन कृष्ण अमावस्या वि. 2081

योजना और लक्ष्य के बीच अनुशासन सबसे अहम कड़ी है

बुलडोजर कार्रवाई

यह अच्छा है कि सुप्रीम कोर्ट ने बुलडोजर कार्रवाई पर दिशानिर्देश जारी करने की बात कहते हुए यह भी कहा कि मंदिर हों या दरगाह, उनका निर्माण सड़क पर नहीं किया जा सकता। विडंबना यह है कि सड़कों के साथ रेलवे ट्रैक और अन्य सार्वजनिक स्थलों पर भी अवैध तरीके से धार्मिक स्थलों का निर्माण किया जाता है। यह किसी से छिपा नहीं कि किस तरह सरकारी या निजी भूमि पर कब्जे के लिए धार्मिक स्थलों का अवैध निर्माण किया जाता है। अब तो इसकी चपेट में वन भूमि भी आ रही है। चूंकि आस्था के नाम पर ऐसे अवैध स्थलों को हटाने से बचा जाता है, इसलिए उनका निर्माण बेरोक-टोक जारी है। तथ्य यह भी है कि सुप्रीम कोर्ट ने बहुत पहले यह आदेश दिया था कि यातायात में बाधक बनने वाले धार्मिक स्थलों को हटाया जाए, लेकिन उस पर अमल अब तक नहीं किया जा सका है। उचित यह होगा कि सुप्रीम कोर्ट यह देखे कि ऐसा क्यों है? अवैध तरीके से अथवा अतिक्रमण कर बनाई गई इमारतों के खिलाफ सख्ती दिखाई ही जानी चाहिए। इसी से अतिक्रमण और अवैध निर्माण की राष्ट्रव्यापी समस्या का समाधान किया जा सकता है। इस समस्या के लिए केवल अवैध निर्माण या अतिक्रमण करने वाले ही दोषी नहीं हैं। इसके लिए सरकारी विभाग भी दोषी हैं, जो नियम विरुद्ध निर्माण होने देते हैं। ऐसी कोई व्यवस्था बननी ही चाहिए, जिससे देश में अवैध निर्माण थमे-वह चाहे धार्मिक स्थलों के रूप में हो या फिर अन्य किसी तरह के निर्माण के रूप में। बीते कुछ समय से बुलडोजर कार्रवाई पर इसलिए सवाल उठ रहे हैं, क्योंकि कई राज्यों में संगीन अपराधों में लिप्त अभियुक्तों के घरों, दुकानों आदि पर बुलडोजर चलाए गए। इस पर संबंधित सरकारों और उनके पुलिस-प्रशासन की ओर से यह दलील दी जाती है कि इस तरह की कार्रवाई किसी व्यक्ति के अपराध में लिप्त होने के कारण नहीं, बल्कि इसलिए की जाती है कि उसका घर या व्यावसायिक स्थल बिना नक्शे के या अतिक्रमण करके बना पाया गया होता है। यह दलील निराधार नहीं, लेकिन सच यह है कि अपने देश में बड़ी संख्या में घर और अन्य इमारतें स्थानीय निकायों की ओर से स्वीकृत नक्शे के बिना बनाई जाती हैं। यह भी एक सच्चाई है कि जिस इलाके में किसी संदिग्ध अपराधी या अभियुक्त का घर अथवा व्यावसायिक भवन अवैध तरीके से बना होता है, वहीं अन्य लोगों के भी बने होते हैं, लेकिन वे बुलडोजर कार्रवाई से बचे रहते हैं। इसी कारण अनधिकृत निर्माण के खिलाफ बुलडोजर कार्रवाई को न्याय के मूल सिद्धांतों के खिलाफ कहा जाता है। बुलडोजर कार्रवाई के जरिये जब किसी अभियुक्त का घर गिराया जाता है तो उसके स्वजन भी सड़क पर आ जाते हैं। यह भी न्यायसंगत नहीं। आशा है कि सुप्रीम कोर्ट इस पहलू को भी देखेगा और अवैध निर्माण एवं अतिक्रमण को भी सहन नहीं करेगा।

अनुभव से सीख

कोसी बराज से रिकार्ड छह लाख क्यूसेक से अधिक पानी डिस्चार्ज किया गया। 56 वर्ष बाद इतना अधिक पानी बराज से छोड़ा गया। गंगा, गंडक, बागमती समेत कई नदियों के उफान से राज्य के बीस जिले बुरी तरह प्रभावित हैं। इन बीस जिलों में करीब पौने दो सौ सड़कों के बर्बाद होने की रिपोर्ट मुख्यालय को मिल चुकी है। बाढ़ का पानी उतरने के बाद अभी कई और सड़कों के क्षतिग्रस्त होने की खबर सामने आएगी। दूसरी आधारभूत संरचनाएं भी इस विनाशकारी बाढ़ की भेंट चढ़ी हैं। लेकिन, इन तमाम नुकसानदायी खबरों के बीच राहत की बात यह है कि रिकार्ड वाटर डिस्चार्ज के बाद भी जनहानि न्यूनतम हुई। पूर्व में इससे काफी कम पानी छोड़ने के बाद भी बाढ़ का पानी फैलते ही जनहानि की दुखदाई खबरें सामने आने लगती थीं। यानी हम लड़ना सीख गए हैं। शासन ने सुनिश्चित किया है कि सैलाब रोकने के लिए पर्याप्त प्रबंध किए जाएं। स्पर और तटबंध बनाकर, सूचना तंत्र को मजबूत कर इलाके को सही समय पर खाली करवाकर यह सुनिश्चित किया गया कि बाढ़ से कोई जान न जाए। इक्का-दुक्का मामलों को छोड़ दें तो इसमें कामयाबी मिली भी। लोगों ने भी पूर्व के अनुभवों के आधार पर यह सीख लिया है कि बाढ़ की सूचना मिलते ही कैसे जरूरी सामान के साथ प्रभावित क्षेत्र से निकला जाता है। अनुभवों से मिली सीख के आधार पर आपदा से जीतने का हुनर सीखने की प्रशंसा की जा सकती है। राज्य सरकार केंद्र की मदद से प्रयासरत है कि कोसी पर मजबूत बराज बनाया जाए। उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल ने आश्वस्त किया है कि नए बराज के लिए शीघ्र ही डीपीआर बनाने की पहल होगी।

बाढ़ में न्यूनतम जनहानि बता रही कि हमें आपदा से लड़ने का कौशल आ गया है

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या कानपुर टेस्ट में नतीजा भारत के पक्ष में आ सकता है?

आज का सवाल
क्या विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में पहुंचने का भारत का दावा और मजबूत हो गया है?

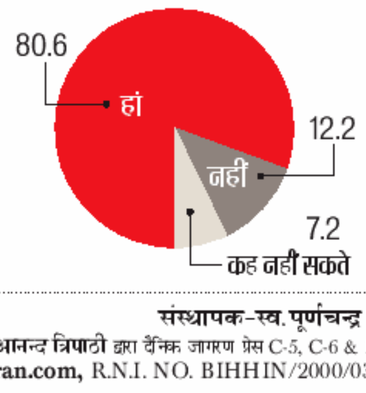

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

गांधीजी की कल्पना का भारत

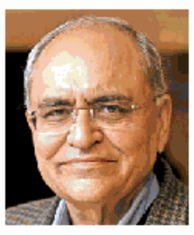

बलबीर पुंज

आज के गांधीवादी बड़ी चतुराई के साथ इसकी अनदेखी करना पसंद करते हैं कि गांधीजी गोसंरक्षण के पक्षधर और मतांतरण के प्रबल विरोधी थे

गांधीजी की 155वीं जयंती पर बापू का स्मरण स्वाभाविक है। स्वाधीनता तक उन्होंने देश की नियति और दिशा, दोनों निर्धारित की थीं। आज जब देश में उनके नाम पर राजनीति करने वाले भारत को एक राष्ट्र न मानकर राज्यों के समूह के तौर पर परिभाषित करते हैं, तब गांधीजी की कल्पना में 'भारत क्या है', उस पर विचार आवश्यक हो जाता है। गांधीजी ने 'हिंद स्वराज' में लिखा था...अंग्रेजों ने सिखाया है कि आप एक राष्ट्र नहीं थे और एक-राष्ट्र बनने में आपको सैकड़ों वर्ष लगेंगे। यह बात बिल्कुल निराधार है। दो अंग्रेज जितने एक नहीं, उतने हम भारतीय एक थे और एक हैं...।' इस संबंध में गांधीजी की विरासत पर दावा करने वालों के विचार में आए परिवर्तन का कारण, उनका वह औपनिवेशिक चिंतन और वामपंथी दर्शन है, जिसमें भारतीय सांस्कृतिक पहचान के प्रति अकूत घृणा और प्रत्येक विषय पर भारतीय दृष्टिकोण का गहरा अभाव है।

गांधीजी आस्थावान सनातनी हिंदू थे। वह 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदंति' के दर्शन से प्रेरणा पाते थे और उन्होंने रामराज्य को सुशासन का पर्याय माना। अक्सर वामपंथियों, स्वयंभू गांधीवादियों के साथ मुस्लिम नेताओं का एक वर्ग अयोध्या में विवादित ढांचे के ध्वंस को 'कलंक' बताता है। वास्तव में वह विशुद्ध गांधीवादी समाधान था। गांधीजी ने 'यंग इंडिया' में एक प्रश्न का इस प्रकार उत्तर दिया था, 'अगर 'अ' का कब्जा अपनी जमीन पर है और कोई शख्स उस पर कोई इमारत बनाता है, चाहे वह मस्जिद ही हो, तो 'अ' को यह अख्तियार है कि वह उसे गिरा दे। अगर उसे उखाड़ डालने की इच्छा या ताकत 'अ' में न हो, तो उसे यह हक बराबर है कि वह अदालत में जाए और उसे अदालत द्वारा गिरवा दे।'

गांधीजी ने सदैव भारतीय समाज को स्वावलंबी बनाने हेतु खादी और कुटीर उद्योग के लिए प्रोत्साहित करने के साथ गोसंरक्षण पर बल दिया। मतांतरण का विरोध किया। अपने बाल्यकाल का स्मरण करते हुए उन्होंने लिखा था कि कैसे ईसाई मिशनरी स्कूलों के बाहर खड़े होकर हिंदुओं और उनके देवी-देवताओं के बारे में अपशब्द बोलते थे और हिंदुओं को ईसाई बनाकर गोमांस खाने आदि के लिए विवश करते थे। विडंबना यह है कि वर्तमान समय में स्वयंभू गांधीवादी छल-बल-लालच प्रेरित मतांतरण के प्रत्यक्ष-परोक्ष समर्थन में, जबकि गोरक्षा के विरोध में खड़े नजर आते हैं। यह भी विडंबना है कि कथित गांधीभक्त यह बताना पसंद नहीं करते कि बापू हर किस्म के अन्याय के विरोधी थे।

कुछ आलोचक गांधीजी को विभाजन और उसकी रक्तरंजित विभीषका के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं। हालांकि सच यह है

अवधेश राजपूत

कि देश को इस त्रासदी से बचाने के लिए उन्होंने भरसक प्रयास किए थे। उनकी नीयत एवं दृष्टि निष्कलंक, परंतु नीति त्रुटिपूर्ण थी। वह सोचते थे कि तुष्टीकरण से विभाजन की पक्षधर मजहबी मानसिकता परास्त हो जाएगी, इसलिए उन्होंने खिलाफत आंदोलन का नेतृत्व करने के साथ जिन्ना को अविभाजित भारत का प्रधानमंत्री बनाने का प्रस्ताव तक दिया। जब इस्लाम के नाम पर विभाजन अपरिहार्य हो गया, तब उन्होंने दूरदर्शी नीति अपनाते हुए पाकिस्तान में बसने की इच्छा जताई थी। यदि ऐसा होता, तो तीन संभावनाएं बन सकती थीं। पहला, वह पाकिस्तान में आम नागरिक की भांति रहते। दूसरा, जिन्ना उन्हें गिरफ्तार करके जेल में डाल देते। तीसरा, किसी झूठे मामले में फंसाकर गांधीजी को फांसी पर लटका देते। इन तीनों सूरतों में पाकिस्तान कुछ वर्षों में ही बिखर सकता था, क्योंकि उस समय जिन क्षेत्रों को मिलाकर पाकिस्तान बनाया गया था, वहां तब मुस्लिम लीग से कहीं अधिक गांधीजी की स्वीकार्यता और लोकप्रियता थी।

आखिर गांधीजी ने विभाजन को क्यों स्वीकार किया? उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की भांति इच्छाशक्ति क्यों नहीं दिखाई? लिंकन ने अमेरिका में दासप्रथा के बजाय गृहयुद्ध को चुना? जब खिलाफत आंदोलन जनित सांप्रदायिक दंगों में हिंदुओं पर कई जगह जिहादियों का कहर टूटा, तब गांधीजी को शायद संकेत मिल गया था कि देश की अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने का वांछित सामर्थ्य, शौर्य और संकल्पबल तत्कालीन हिंदू समाज में नहीं था। इस संबंध में उन्होंने 'यंग इंडिया' के एक आलेख में हिंदुओं को 'दब्बू' और मुसलमानों को 'धौंग' कहकर संबोधित किया था। इसी पृष्ठभूमि में कांग्रेस से त्यागपत्र देकर डा. केशव बलिराम हेडगेवार ने भारतीय समाज को सुरक्षित और संगठित करने हेतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की थी।

इसमें संदेह नहीं कि गांधीजी ने स्वतंत्रता आंदोलन में महती भूमिका निभाई और उसके मुख्य कर्णधार रहे, परंतु इसका श्रेय अकेले उन्हें देना असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों के साथ अन्याय होगा। उन्होंने अपने बहुआयामी व्यक्तित्व के साथ नूतन प्रयोग करके न केवल स्वाधीनता की लौ जलाए रखी, बल्कि ब्रिटिश कुटिलता को कई अवसरों पर निष्प्रभावी भी किया। वर्ष 1932 का पूना समझौता इसका जीवंत प्रमाण है। तब दलित, शेष हिंदू समाज से अलग न हो, इसके लिए गांधीजी ने आमरण अनशन किया था। ऐसा करके उन्होंने हिंदू समाज को एकजुट किया। स्वतंत्र भारत में दलितों-वंचितों के लिए वर्तमान आरक्षण उसकी अभिव्यक्ति है। गांधीजी कभी स्वयं के लिए और अपने परिवार हेतु महत्वाकांक्षी नहीं रहे। इस पृष्ठभूमि में जो राजनीतिक दल गांधीजी की विरासत-चिंतन पर अधिकार जमाकर राजनीति करते हैं, उनकी स्थिति किसी से छिपी नहीं है। हाल के वर्षों में वामपंथी भी खुद को गांधीवादी बताने लगे हैं। जहां बापू भारत की एकता-अखंडता के पक्षधर रहे, वहीं वामपंथी इसके विरुद्ध थे। गांधीजी अहिंसक थे, तो वामपंथियों की कार्यशैली के केंद्र में आज भी हिंसा है। भारत छोड़ो आंदोलन में गांधीजी के लिए भी वामपंथियों ने ओछे शब्दों का उपयोग किया था। वामपंथियों द्वारा गांधीजी का नाम अलापना उनकी कुटिल और घटिया राजनीति का हिस्सा है, क्योंकि वे इसके माध्यम से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को कठघरे में खड़ा करना चाहते हैं, जो उनके भारत-हिंदू विरोधी एजेंडे की पूर्ति में अवरोध बना हुआ है। समग्रता में देखा जाए तो कांग्रेस सहित तमाम स्वयंभू गांधीवादियों के बजाय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं उसके सहयोगी संगठन और सत्तारूढ़ भाजपा के नीति-विचार बापू के सनातनी-राष्ट्रवादी दर्शन के कहीं अधिक निकट नजर आते हैं।

(स्तंभकार 'द्रिस्ट विद अयोध्या : डिकालोनाइजेशन आफ इंडिया' के लेखक हैं)

response@jagran.com

महंगी पड़ती राजनीतिक क्षुद्रता

राजीव सचान

जब पक्ष-विपक्ष जनता को बहकाने की राजनीति करने लगते हैं, तब आवश्यक सुधार करना और कठिन हो जाता है

राजनीति का काम है लोगों को दिशा देना और उन्हें जागरूक करना, लेकिन पिछले कुछ समय से अपने देश में इसके ठीक उलट हो रहा है। राजनीति लोगों को ऐसे विषयों पर गुमराह करने का जरिया बनी हुई है, जिनका कोई आधार ही नहीं बनता। इन दिनों पक्ष-विपक्ष के नेता देश की जनता को यह समझाने में लगे हुए हैं कि भारत का संविधान खतरे में है और प्रतिपक्षी दल आरक्षण खत्म करने की भी तैयारी में हैं। एक तरह से लोगों को यह यकीन दिलाया जा रहा है कि कौआ उनका कान ले गया है और उन्हें बिना यह देखे-समझे कौए के पीछे दौड़ना चाहिए कि उनका कान सलामत है या नहीं? संविधान और आरक्षण के खतरे में होने का शिगूफा लोकसभा चुनाव के समय छेड़ा गया था। बहुत से लोग इस शिगूफे का शिकार भी हुए। पता नहीं अब उन्हें भान हुआ या नहीं कि उनके सामने भय का भूत खड़ा किया गया था, लेकिन राजनीतिक दलों की लोगों को बहकाने की राजनीति अब भी जारी है।

लोकसभा चुनाव के समय संविधान और आरक्षण के लिए खतरा पैदा होने का हौवा कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों ने खड़ा किया था। इस दुष्प्रचार के चलते राजनीतिक नुकसान उठाने के बाद से भाजपा भी यह कहने में लगी हुई कि संविधान और आरक्षण को असली खतरा कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों से है। विडंबना यह है कि इस झूठे प्रचार पर अंध विरोधी और अंध समर्थक किस्म के कुछ लोग यकीन भी कर रहे हैं, जबकि सच यह है कि न तो संविधान खत्म किया जा सकता है और न ही आरक्षण समाप्त किया जा सकता है। कम से कम वर्तमान परिस्थितियों में तो यह संभव नहीं और किसी की ओर से ऐसी कोई कोशिश करने का मतलब है जानबूझकर राजनीतिक आत्मघात करना। देश का कोई भी दल इतना नादान नहीं हो सकता कि वह संविधान खत्म करने या फिर आरक्षण को समाप्त करने का सोचे और फिर भी यह समझे कि वह राजनीतिक रूप से प्रासंगिक बना रह सकता है।

निःसंदेह संविधान में संशोधन किया जा सकता है और देश, काल एवं परिस्थितियों को देखते हुए किया भी जाना चाहिए। ऐसा किया भी गया है और चूंकि कांग्रेस लंबे समय तक सत्ता में रही है, इसलिए उसने ही सबसे अधिक संविधान संशोधन

संविधान के समक्ष नकली खतरे का झूठा प्रचार ● फाइल

किए हैं। आपातकाल के जरिये संविधान को धता बताने का कलंक भी उसके माथे पर है, लेकिन दुष्प्रचार की राजनीति के जरिये वही यह प्रचारित कर रही है कि भाजपा संविधान के लिए खतरा बन गई है। संविधान के किसी प्रविधान की समीक्षा की मांग करने में कोई हर्ज नहीं, लेकिन आज जैसा राजनीतिक माहौल है, उसमें यदि कोई ऐसी मांग करे तो उसके विरोधी तत्काल उसे संविधान विरोधी करार देंगे। इसी तरह यदि किसी ने भूले से भी कह दिया कि आरक्षण की समीक्षा होनी चाहिए, ताकि वह अधिकाधिक पात्र लोगों को मिल सके तो उसे आरक्षण विरोधी करार देने में क्षण भर की भी देर नहीं की जाएगी। आखिर यह क्यों नहीं देखा जाना चाहिए कि आरक्षण का लाभ पात्र लोगों को सही तरह से कैसे मिले?

यह देखना दुखद है कि एससी-एसटी आरक्षण के उपवर्गीकरण की उचित मांग का जो भी समर्थन कर रहे हैं, उन्हें संविधान और सामाजिक न्याय विरोधी करार देने में संकोच नहीं किया जा रहा है। आखिर यह कैसा सामाजिक न्याय है कि एससी-एसटी समाज की जिन सबसे अधिक पिछड़ी जातियों को आरक्षण का लाभ देना सुनिश्चित किया जाना सभी दलों का साझा ध्येय होना चाहिए, उन्हें उससे वंचित करने को ही संविधानसम्मत बताया जा रहा है। वास्तव में यह सामाजिक अन्याय की ही मिसाल है। यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति इसीलिए बनी है, क्योंकि आरक्षण पर क्षुद्र राजनीति की जा रही है। जैसे आरक्षण के समक्ष नकली खतरा खड़ा कर दिया गया है, उसी तरह संविधान के समक्ष भी।

आज पक्ष-विपक्ष में से यदि कोई संविधान के किसी प्रविधान में संशोधन की न्यायसंगत मांग भी करे तो उसे फौरन ही संविधान का शत्रु करार दिया जाएगा। इतना ही नहीं, ऐसा करने वाले यह हल्ला मचाते हुए भीमराव आंबेडकर की फोटो के साथ सड़कों पर उतर आएंगे कि बाबा साहेब के बनाए संविधान को खत्म करने की साजिश रची जा रही है। 2014 में जब मोदी सरकार ने सत्ता में आने पर जजों की नियुक्ति की मौजूदा गैर-संवैधानिक व्यवस्था को खत्म कर न्यायिक नियुक्ति आयोग बनाने की पहल की थी तो सभी विपक्षी दलों ने उसका समर्थन किया था। संबंधित संविधान संशोधन विधेयक पर संसद और विधानसभाओं ने खुशी-खुशी मुहर भी लगा दी थी, लेकिन जैसी आशंका थी, सुप्रीम कोर्ट ने उसे असंवैधानिक करार दिया और जजों के द्वारा जजों की नियुक्ति की गैर-लोकतांत्रिक व्यवस्था बनाए रखी। यह किसी भी दृष्टि से संविधानसम्मत नहीं है, लेकिन आज कोई सोच भी नहीं सकता कि जजों की नियुक्ति की कलेजियम व्यवस्था में बदलाव की कोई पहल हो सकती है। यदि इसका कोई निष्कर्ष निकलता है तो यही कि जब पक्ष-विपक्ष के दल क्षुद्रता भरी राजनीति करने लगते हैं, तब आवश्यक सुधार करना और भी कठिन हो जाता है। हमारे राजनीतिक दल इन दिनों जनता को जानबूझकर बहकाने और सीधे शब्दों में कहें तो बेवकूफ बनाने वाली जैसी राजनीति करने में लगे हैं, उसे देखते हुए इसके आसार नहीं कि विभिन्न क्षेत्रों में जरूरी सुधारों की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है। आसार इसलिए कम हैं, क्योंकि दोनों ही पक्ष के शीर्ष नेता भी इसी राजनीति का परिचय देने में लगे हुए हैं। इससे भी खराब बात यह है कि मीडिया का एक हिस्सा और विशेषकर यूट्यूब के जरिये पत्रकारिता करने वाले इसमें सहायक बने हुए हैं।

(लेखक दैनिक जागरण में एसोसिएट एडिटर हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

राग-द्वेष से मुक्ति

इस समय संसार कलह से त्रस्त है। परस्पर प्रेम और सम्मान का अभाव हो तब ऐसा होना बहुत स्वाभाविक है। ऐसी स्थिति राग और द्वेष से उपजी जीवनशैली के कारण ही निर्मित हुई है। राग और द्वेष असल में मोह के दो पुत्र हैं, जिनसे पुनः घृणा और निंदा नामक दो विषाक्त पुत्री उत्पन्न होती हैं। उनके विषवमन से प्रेम, दया और करुणा आदि मानवीय मूल्य दग्ध हो जाते हैं। संसार के नश्वर पदार्थों में आसक्ति ही राग है और सत्य को जानते-समझते हुए भी उसकी उपेक्षा कर देना ही द्वेष है। राग-द्वेष के कारण ही मनुष्य सांसारिक प्रपंच में उलझकर परमार्थिक ज्ञान से वंचित हो जाता है।

जिस वस्तु-व्यक्ति आदि से राग हो जाए तो उसमें दोष होते हुए भी दिखाई नहीं देते और जिससे द्वेष हो जाए, उसमें सद्गुण होने पर भी उसे उपेक्षित कर दिया जाता है। जो संसार निरंतर गतिमान और परिवर्तित हो रहा है, उसे स्थिर मानने से ही राग-द्वेष जैसे विकार हमें विकृत करते रहते हैं। राग-द्वेष से किए गए कार्य का परिणाम कभी कल्याणकारी नहीं होता। राग-द्वेष काले सर्प के दो विषैले दांत हैं, जिनके दंश से सामाजिक जीवन की पारस्परिक संवेदना पर ग्रहण लग जाता है। इस भयावह विष के दुष्प्रभाव को केवल विवेक ही नष्ट कर सकता है, जिसकी प्राप्ति का मूल स्रोत है-सत्संग।

आज भौतिकतावादी जीवनशैली में व्यक्ति ऐसा त्रस्त-व्यस्त और भ्रमित हो गया है, जिसके कारण वह अपनी संस्कृति-संस्कार और सत्संग आदि से वंचित होकर केवल जीवन को पशुवत ढो रहा है। अंतःकरण में राग-द्वेष की विषबेल तभी पनपती है, जब परमार्थपथ भ्रष्ट हो जाता है। सत् का तात्पर्य है-जो शाश्वत और धर्मयुक्त है, उससे हमारा संग या योग हो जाए। ग्रंथों और महापुरुषों के लोकोपकारी सदुपदेशों को हम मन, वचन और कर्म में धारण करें, जिससे सर्वत्र मानवीय मानबिंदुओं के संरक्षण का सुंदर स्वरूप सबके आनंद का संवर्धन करे। राग-द्वेष रहित जीवनचर्या स्वयं को और समाज को अपार सुख प्रदान करती है।

आचार्य नारायण दास

पाठकनामा

pathaknama@pat.jagran.com

शोध एवं नवाचार को मिले विस्तार

'शोध और नवाचार है उन्नति का आधार' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में डा. जयंतीलाल भंडारी ने सही कहा है कि भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य हासिल करने के लिए आवश्यक है कि विभिन्न विकसित देशों की तरह बौद्धिक समझ, शोध एवं नवाचार पर अधिक धनराशि व्यय करने की रणनीति अपनाई जाए। विश्व के विकसित एवं समृद्ध देशों ने इसी नीति को अपनाया और निजी क्षेत्र की संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों के सहयोग से शोध एवं नवाचार के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए हैं। हमारे देश में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है और हमारे युवा उत्साही, परिश्रमी एवं प्रतिभाशाली भी हैं। बस आवश्यकता है तो केवल समग्र प्रयासों की। इसके लिए पर्याप्त धनराशि खर्च करनी होगी, जो केवल सरकार के स्तर पर संभव नहीं है। सरकार को निजी क्षेत्र से तालमेल स्थापित कर इस दिशा में रणनीति तैयार करनी होगी। हमारे देश में विश्वस्तरीय वस्तुएं तैयार हों, उनकी कीमत प्रतिस्पर्धी हो, इसके लिए हमें शोध एवं नवाचार पर फोकस करना ही होगा। इस मुद्दे पर कोई राजनीति नहीं होनी चाहिए। फ्रीबीज पर नियंत्रण रखकर हम जीडीपी के अनुपात में पर्याप्त राशि इस क्षेत्र के लिए आवंटित कर सकते हैं। हमें ऐसे उपाय करने होंगे कि हमारे संस्थानों से पढ़कर निकलने वालों का लक्ष्य विदेश में जाकर बसना न हो। उन्हें अपने देश के उत्थान के लिए नवोन्मेषी कार्यसंस्कृति अपने ही संस्थानों में विकसित करनी होगी। शोध एवं नवाचार के माध्यम से प्राप्त परिणामों से ही हम अपने युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर प्रदान कर पाएंगे। इस दिशा में वर्तमान केंद्र सरकार गंभीरता से प्रयास कर रही है, जिन्हें और अधिक बढ़ाना होगा। इसमें राज्यों की भागीदारी भी अहम होगी।

योगराज, खरड़ (पंजाब)

बंगाल सरकार को कड़ी फटकार

सुप्रीम कोर्ट ने बंगाल में अस्पतालों की सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने की दिशा में धीमी गति से कार्य करने पर सवाल उठाते हुए राज्य सरकार को कड़ी फटकार लगाई है। इससे प्रतीत होता है कि बंगाल सरकार की कार्यप्रणाली व मंशा ठीक नहीं है। सीबीआइ आरजी कर मेडिकल कालेज एवं अस्पताल की प्रशिक्षु महिला डाक्टर के साथ दुष्कर्म के बाद हत्या मामले की जांच कर रही है। इस मामले में पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष के करीबी कुछ जूनियर और सीनियर डाक्टरों की भूमिका कटघरे में है। जांचकर्ताओं के अनुसार घटना के दूसरे दिन नौ अगस्त को साक्ष्यों को नष्ट करने में संगठित होकर काम किया गया है। यह संगठित अपराध है। अब सीबीआइ आठ अगस्त की रात ड्यूटी पर तैनात जूनियर व सीनियर डाक्टरों के मोबाइल काल डिटेल व टावर लोकेशन की जांच कर रही है। इससे साफ हो जाएगा की वे कब, कहां थे और किसके फोन के माध्यम से संपर्क बनाए हुए थे। पता चला है कि कुछ डाक्टर वारदात के बाद सेमिनार हाल में उपस्थित थे। वे शव के आसपास से नमूने एकत्र करने और पोस्टमार्टम की निगरानी में भी शामिल थे। जो भी हो, इस कांड के दोषियों की पहचान होनी चाहिए और उन्हें सख्त से सख्त सजा दी जानी चाहिए। वहीं बंगाल सरकार को भी अस्पतालों की सुरक्षा यथाशीघ्र सुदृढ़ करनी चाहिए।

अभिषेक तिवारी, पटना

कौन दिखाएगा सच्ची उन्नति की दिशा

'एक और राजनीतिक प्रयोग' शीर्षक आलेख में शंकर शरण ने देश के सबसे गरीब राज्य बिहार को समृद्ध बनाने के लिए चुनावी रणनीति के जानकार प्रशांत किशोर की नई पार्टी जन सुराज पर कतिपय शंकाएं व्यक्त की है। यह विडंबना ही है कि देश की राजनीति को दिशा दिखाने का काम बिहारी नेताओं ने किया, परंतु 75 वर्षों में भी बिहार के माथे पर गरीब का तमगा लगा ही रहा। आलेख में बहुत बढ़िया बात कही गई है कि क्या पीके की जन सुराज बिहार जैसे बड़बोले, चंचल, संदेही, ईर्ष्यालु समाज को सच्ची उन्नति की दिशा दिखा सकेगी, जहां राजेन्द्र बाबू से लेकर जेपी, लालू तक कुछ विशेष सकारात्मक नहीं जोड़ सके? जेपी के आंदोलन के समय बिहार सहित देश के लोगों को लगा कि अब बदलाव होकर रहेगा। इस आंदोलन से निकले मुख्य रूप से लालू का क्या हुआ, यह सर्वविदित है। विश्वनाथ प्रताप सिंह देश का भ्रमण करते समय जब बिहार आए तो उनकी सभाओं में भीड़ का आलम यह होता था कि चींटी रेंगने की जगह नहीं होती थी। उस समय लालू प्रसाद यादव को किंग मेकर कहा जाता था। उस दौर में बिहार की गरीबी के नाम पर कोई प्रधानमंत्री बना तो कोई मुख्यमंत्री लेकिन बिहार तेजी से आगे बढ़ने की जगह रेंगता रह गया। 1990 से 2005 तक की सरकार ने सामाजिक न्याय को प्राथमिकता बताया। 2005 में फिर व्यवस्था बदली और नई सरकार का गठन हुआ। इस सरकार ने सामाजिक न्याय के साथ विकास को अपनी प्राथमिकता बताया।

युगल किशोर राही, छपरा, बिहार

पोस्ट

5,100 रुपये का नेग न मिलने पर एक नर्स ने अस्पताल में ही एक नवजात शिशु की जान ले ली। डेढ़ लाख रुपये का एक आइफोन मंगाकर दो लोगों ने डिलिवरी बाय की हत्या कर दी। ये सब सुनकर यही लगता है कि बेशर्म आदमी थोड़ा सा मनुष्य बन जाता, तो ये दुनिया ऐसी नहीं होती, जैसी है।

अतुल कुमार राय@AuthorAtul

कानपुर टेस्ट में जिस तरह से नतीजा निकला है, उसके लिए आइसीसी को बधाई देना भी बनता है। उसने विश्व टेस्ट चैंपियनशिप शुरू करके टीमों को जीतने के लिए प्रेरित किया है। इससे टीमों में अंक हासिल करने के लिए होड़ बढ़ी है।

शैलेश सिंह परमार@PShaileshsingh

यह भारतीय क्रिकेट का सबसे सुनहरा दौर है। तेजस्वी पेस बोलर्स और विकेट झटकने वाले स्पिनर्स का ऐसा संतुलन पहले कभी नहीं था कि टेस्ट में इतने छोटे से अंतराल के दौरान विपक्षी टीम के 20 विकेट हासिल कर जीत दिला सकें। अश्विन की बैटिंग देखकर कहा जा सकता है कि बल्लेबाजी क्रम में कितनी गहराई है। बीसीसीआइ देश में खिलाड़ी तैयार करने वाली सबसे प्रभावी संस्था है।

सुशील दोशी@RealSushilDoshi

जनपथ

टी ट्वेंटी का लो मजा टेस्ट मैच के बीच,
दो दिन में ही जीत को लो जबड़े से खींच।
लो जबड़े से खींच तभी कहलाए 'रो-हिट',
टीम इंडिया आज टेस्ट में है सबसे हिट।
प्रतिद्वंद्वी के हेतु बजे खतरे की घंटी,
जब रोहित की टीम खेलती ज्यों टी ट्वेंटी!

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान सम्पादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एजीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान सम्पादक -संजय गुप्त

जागरण प्रकाशन लिमिटेड के लिये आनन्द त्रिपाठी द्वारा दैनिक जागरण प्रेस C-5, C-6 & 15 इंडस्ट्रियल एरिया, पाटलिपुत्रा, पटना - 800013 से प्रकाशित एवं मुद्रित, सम्पादक (बिहार/प.बंगाल)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, स्थानीय सम्पादक - आलोक मिश्रा * दूरभाष : 0612-2277071, 2277072, 2277073
E.mail : patna@pat.jagran.com, R.N.I. NO. BIHHIN/2000/03097* इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी पटना जीपीओ रजि.नं. R-10/NP-18/14-16 समस्त विवाद पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे। वर्ष 25 अंक 171

****

दुनिया में अगर केवल खुशियां ही खुशियां हों तो हम बहादुर होना और धैर्यवान होना कभी भी सीख ही नहीं सकते।

– हेलेन केलर

अमन का पैगाम

पश्चिम एशिया के घटनाक्रम पर हमारे प्रधानमंत्री ने इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से बातचीत की। उन्होंने एक बार फिर दोहराया कि दुनिया में आतंकवाद का किसी भी रूप में समर्थन नहीं किया जा सकता, पर पश्चिम एशिया में शांति को लेकर भारत प्रतिबद्ध है। बंधकों की सुरक्षित रिहाई भी सुनिश्चित होनी चाहिए। भारत सदा से आतंकवाद के विरुद्ध रहा है। अमेरिका के विश्व व्यापार केंद्र पर आतंकी हमले के बाद जब दुनिया के अनेक देशों ने आतंकवाद के खिलाफ युद्ध छेड़ने की प्रतिबद्धता जाहिर की थी, तब भारत उनमें अगली कतार में शामिल था। मगर अभी तक दुनिया भर में चले अभियानों का इस दिशा में कोई उल्लेखनीय नतीजा नजर नहीं आया है। मगर भारत जहां भी मौका मिलता है, इस जरूरत को रेखांकित करता रहता है। पाकिस्तान और चीन का नाम लिए बगैर प्रधानमंत्री अंतरराष्ट्रीय मंचों से कह चुके हैं कि कुछ देश अपनी विदेश नीति में आतंकवाद का समर्थन करते और कुछ देश आतंकवादियों के खिलाफ कार्रवाई रोकने का परोक्ष प्रयास करते हैं। दरअसल, भारत खुद आतंकवाद से पार पाने की कोशिशों में जुटा हुआ है। इजराइल को उसके पड़ोसी फिलिस्तीन, लेबनान और यमन के आतंकी संगठनों से चुनौती मिलती रही है। इन दिनों वह उनसे आरपार की लड़ाई में जुटा हुआ है।

मगर जिस तरह इजराइल हमास, हिजबुल्लाह और हूती विद्रोहियों के खिलाफ हमले कर रहा है, उसमें बहुत सारे बेगुनाह लोग मारे गए हैं और मारे जा रहे हैं। उसमें अंतरराष्ट्रीय युद्ध नियमों की भी अनदेखी हो रही है। अस्पतालों, स्कूलों तक को निशाना बनाया जा रहा है। बहुत सारे रिहाइशी इलाके ध्वस्त किए जा चुके हैं। बीमार और लाचार लोगों तक जरूरी सुविधाएं भी नहीं पहुंच पा रहीं। हिजबुल्लाह के कमांड हसन नसरल्लाह को मार गिराने के बाद इजराइल ने अपना रुख यमन के हूती विद्रोहियों की तरफ केंद्रित कर दिया है। वहां भी वैसी ही तबाही की आशंका है, जैसी फिलिस्तीन के गाजा पट्टी और लेबनान के बेरूत में देखने को मिली है। इसमें सारी दुनिया की चिंता मानवाधिकारों के हनन को लेकर पैदा हो गई है। आतंकवादियों पर हमले से शायद ही किसी को एतराज हो, पर जिस तरह बेगुनाह लोग, स्त्रियां, बूढ़े और बच्चे मारे जा रहे हैं, फिलिस्तीन में बहुत सारे लोग बंधक बनाए गए हैं, वह स्वाभाविक ही परेशान करने वाली बात है। इसी संदर्भ में प्रधानमंत्री ने नेतन्याहू से शांति की अपील की है।

कुछ दिनों पहले अमेरिका और ब्रिटेन ने भी कोशिश की थी कि वे इजराइल को इक्कीस दिन के युद्ध विराम पर राजी कर लें, मगर नेतन्याहू ने उनके प्रस्ताव को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि जब तक वह आतंकी संगठनों का सफाया नहीं कर लेगा, तब तक उसका अभियान नहीं रुकेगा। संयुक्त राष्ट्र के मंच से भी नेतन्याहू ने यह बात स्पष्ट कर दी थी। अब उन्होंने ईरान के लोगों को सीधे संबोधित करते हुए कहा कि ईरान का शाह आप लोगों के साथ गद्दारी कर रहा है, वह जो पैसा आतंकवाद को पोसने पर खर्च कर रहा है, अगर वह वहां शिक्षा, स्वास्थ्य और दूसरे विकास कार्यक्रमों पर खर्च हो, तो तरक्की के नए आयाम खुलेंगे। इस तरह इजराइल ने ईरान को भी पहले से चेतावनी दे रखी है। ऐसे में भारत के प्रयासों से कुछ उम्मीद बंधती है, मगर पश्चिम एशिया में शांति बहाली कब और किन स्थितियों में हो पाएगी, फिलहाल दावा करना कठिन है।

तबाही की बाढ़

यह आशंका पहले से थी कि नेपाल में भारी बरसात का बिहार पर भी व्यापक असर पड़ सकता है। अब नेपाल में बांधों से बड़े पैमाने पर पानी छोड़े जाने के बाद बिहार में जैसी तबाही मची है, उससे गहरी चिंता पैदा हो गई है। बिहार के कई जिलों की नदियों में उफान आ गया है और अब बाढ़ का पानी जितने बड़े दायरे में फैल गया है, उसे देखते हुए राज्य में अतीत में आई बाढ़ की त्रासद स्मृतियां ताजा हो गई हैं। गौरतलब है कि नेपाल में इस बार की बरसात का दबाव इतना ज्यादा है कि वहां कोसी बांध के कई दरवाजे खोलने की नौबत आ गई। नतीजतन, बिहार में कई नदियों के तटबंध टूट गए और अब उन्नीस जिलों में बाढ़ का पानी का फैल चुका है, सैकड़ों गांवों में पानी भर गया है और दस लाख लोग बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। इससे पहले 2008 में समूचे कोसी क्षेत्र में भयावह बाढ़ आई थी, जिससे हुई व्यापक तबाही को इस बार याद किया जा रहा है, लेकिन बताया जा रहा है कि 1967 के बाद कोसी में और 2003 के बाद गंडक नदी में इतना पानी पहली बार आया है।

विडंबना यह है कि जब भी नेपाल में बारिश और बाढ़ अधिक होती है, तो इसकी मार अनिवार्य रूप से बिहार पर पड़ती है। अगर बांधों के दरवाजे न खोले जाएं, तो बांध के ही टूटने का खतरा बढ़ जाएगा, जिसके बाद की तबाही की कल्पना भी डरा देती है। करीब सात दशक पहले भारत और नेपाल के बीच बाढ़ को नियंत्रित करने के लिए कोसी नदी परियोजना की शुरुआत की गई, मगर अब भी यह त्रासदी कायम है। बरसात के मौसम में उफन कर जानमाल को व्यापक नुकसान पहुंचाने वाली नदियों को तटबंध बना कर नियंत्रित करने की कोशिश की गई, लेकिन बाढ़ के पानी के दबाव में जब ये तटबंध टूटते हैं, तब कई बार सामने पड़ने वाली समूची बस्तियां बह जाती हैं। सवाल है कि कई दशकों से कायम इस समस्या के समाधान के लिए सरकारों की ओर से कब कोई ऐसी योजना सामने आएगी, जिससे इतने बड़े इलाके में थोड़ी राहत महसूस की जा सके।

मिलावटी आहार से बढ़ती बीमारियां

'सेंटर फार साइंस एंड एनवायरमेंट' (सीएसई) की रपट के मुताबिक शहरों में रह रहे 93 फीसद बच्चे सप्ताह में एक दिन डिब्बाबंद खाद्य सामग्री खाते हैं, जबकि 53 फीसद बच्चे प्रतिदिन तुरंता आहार यानी 'जंक फूड' खा रहे हैं।

विनोद के शाह

पिछले कुछ समय में छोटे बच्चों और युवाओं में हृदय रोग, मधुमेह और कैंसर से मौत के मामले तेजी से बढ़े हैं। कवक यानी 'फंगस' और विषाणु से होने वाली खतरनाक बीमारियों का प्रकोप बढ़ा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रपट के मुताबिक 2022 में देश में कैंसर के 14.1 लाख नए मामले सामने आए, जिसमें नौ लाख से अधिक लोगों की मौत हो गई। रपट के मुताबिक वर्ष 2050 तक दुनिया भर में कैंसर की बीमारी और बढ़ेगी। कैंसर पर शोध की अंतरराष्ट्रीय संस्था आइएआरएसी के अनुसार पिछले वर्षों में मुंह, गला और स्तन कैंसर में बढ़ोतरी के अलावा पैंतीस प्रकार के कैंसर में वृद्धि हुई है। पेट, मलाशय, प्रोस्टेट, त्वचा और रक्त कैंसर में एकाएक वृद्धि हैरान करने वाली है। देश में जहां लोगों में मोटापा बढ़ रहा है, वहीं यह कैंसर के मामलों में बढ़ोतरी का कारण भी बन रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक 2035 तक भारत में कैंसर से मरने वालों की संख्या पैंतीस लाख प्रति वर्ष तक पहुंच जाएगी।

कैंसर का कारण मानव शरीर कोशिकाओं में असामान्य वृद्धि और उनका विभाजन है। रसायन युक्त भोजन सामग्री और खराब जीवन शैली भी इसकी वजह है। 'सेंटर फार साइंस एंड एनवायरमेंट' (सीएसई) की रपट के मुताबिक शहरों में रह रहे 93 फीसद बच्चे सप्ताह में एक दिन डिब्बाबंद खाद्य सामग्री खाते हैं, जबकि 53 फीसद बच्चे प्रतिदिन तुरंता आहार यानी 'जंक फूड' खा रहे हैं। शहरों से लेकर गांवों के गरीब बच्चों तक की दिनचर्या 'जंक फूड' से शुरू हो रही है। वर्ष 2011 से 2021 की अवधि में देश में 'जंक फूड' का कारोबार 13.37 फीसद की दर से लगातार बढ़ रहा है। इससे देश के ग्यारह फीसद बच्चे मोटापे का शिकार हो चुके हैं। 'लांसेट' पत्रिका की शोध रपट 2022 के मुताबिक देश में 1.25 करोड़ बच्चे अपेक्षित वजन से अधिक मोटे थे। यह संख्या वर्ष 1990 के आंकड़ों की तुलना में 25 गुना अधिक बढ़ रही है। इसकी वजह देश में बहुराष्ट्रीय कंपनियों को खानपान की सामग्री सहित सभी तरह के व्यापार की खुली अनुमति मिलना है। विदेश व्यापार को अनुमति मिलने के बाद से देश में प्रसंस्कृत डिब्बाबंद सामग्री का चलन बहुत तेजी से बढ़ा है।

गरीब से लेकर अमीर और छोटी से लेकर बड़ी उम्र तक के लोग डिब्बाबंद चीजों को तुरंत भूख मिटाने की खाद्य सामग्री मान चुके हैं। बड़ी संख्या में आम जन अब काम के दौरान घर से बना नाश्ता ले जाने के बजाय, बजार की खाद्य सामग्री पर आश्रित हो चुके हैं। देश में बीस वर्ष से अधिक उम्र के सात करोड़ से अधिक वयस्क, जिनकी दैनिक भोजन सामग्री में अति प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ शामिल हैं, स्वयं को तंदुरुस्त नहीं मानते हैं। डिब्बाबंद भोजन में अधिक नमक, शीतल पेय में कृत्रिम मिठास के साथ 'प्रिजर्वेटिव' की अत्यधिक मात्रा यकृत, गुर्दे की बीमारी, ब्रेन टयूमर आदि सहित कैंसर रोग के लिए जिम्मेदार हैं। कृत्रिम पेय पदार्थ, चाकलेट और डिब्बाबंद फलों के रस से मूत्र में संक्रमण की शिकायतें देश में तेजी से बढ़ी हैं। सीएसई के आंकड़े बताते हैं कि देश में 71 फीसद आबादी स्वस्थ आहार नहीं ले रही है। जिसकी वजह से देश में प्रतिवर्ष 17 लाख लोग मधुमेह, कैंसर, तपेदिक और हृदय संबंधी बीमारियों से मौत का शिकार हो रहे हैं।

अमेरिका के 'इंस्टीट्यूट फार हेल्थ मैट्रिक्स एंड पोल्यूशन' की रपट के अनुसार सिगरेट और शराब के बाद विश्व में अधिक मौत तय मात्रा से अधिक नमक खाने से होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन प्रति वयस्क प्रतिदिन .02 ग्राम से अधिक मात्रा की अनुमति नहीं देता है। 'टाक्सिक्स लिंक' नामक गैरसरकारी संगठन के एक शोध में दावा किया गया है कि देश में बढ़ते कैंसर और दिल के रोग की एक वजह नमक और चीनी में मौजूद प्लास्टिक के सूक्ष्म कण हैं। डिब्बाबंद सामग्री में चिंता का विषय नमक या शक्कर ही है।

> **भारतीय कानून में शिथिलता और जांच में देरी के कारण मिलावट करने संबंधी अपराध को कारगर रूप से रोका नहीं जा सका है। बावजूद इसके, सरकारी जांच में कसावट लाने, खाद्य सामग्री की गुणवत्ता और नागरिकों की सेहत पर कहीं कोई चिंता नहीं दिखती। बीते वर्षों में जनता की मांग पर राजस्थान और मध्यप्रदेश सहित कुछ राज्य सरकारों ने कानून में संशोधन कर मिलावट करने पर सजा तो बढ़ा दी है, लेकिन जांच प्रक्रिया को दुरुस्त नहीं किया सका है। जांच, सुनवाई की लंबी प्रक्रिया और भ्रष्टाचार अपराधी को दोषमुक्त करने में मददगार ही साबित हो रहे हैं।**

अमेरिका की एक सौंदर्य प्रसाधन कंपनी के विरुद्ध वहां की हजारों महिलाओं ने इस आरोप के साथ मामला दायर कराया है कि उसके उत्पाद से 'मेसोथेलियोमा कैंसर' फैल रहा है। जबकि भारत में इन उत्पादों को उच्च गुणवत्ता का बता कर धड़ल्ले से बेचा जा रहा है। शारीरिक सौंदर्य की उक्त सामग्री को शरीर पर अधिक समय तक टिकाऊ बनाने के लिए 'एस्बेस्टस' का उपयोग होता है। 'ब्रिटिश मेडिकल टेसबर्ड' की रपट के मुताबिक सौंदर्य सामग्री में एस्बेस्टस को उपलब्ध तकनीक से पकड़ना आसान नहीं है। इसलिए सौंदर्य प्रसाधन कंपनियां अपने उत्पादों को विषाणुमुक्त होने का दावा जरूर करती हैं, लेकिन सौंदर्य प्रसाधन में टेल्कम और बेंजीन की मात्रा होती है, जो कैंसरकारक है। देश में खाद्य सामग्री, दवाइयों सहित दैनिक उपयोग की सामग्री की निगरानी और जांच के लिए संबंधित विभागों के पास न तो पर्याप्त कर्मचारी हैं, न ही जांच प्रयोगशालाएं। राज्य सरकारों के पास ऐसे विभाग चलाने के लिए वित्तीय बजट की कमी है।

फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड अथारिटी आफ इंडिया' (एफएसएसआइ) के नियम अनुसार एक खाद्य निरीक्षक के पास अधिकतम दो हजार दुकानों की निगरानी का जिम्मा होना चहिए, लेकिन राज्यों में एक-एक खाद्य निरीक्षक पर पंद्रह हजार दुकानों तक की निगरानी का दायित्व है। वर्ष 2022 तक देश में मात्र 224 खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाएं थीं। जिसमें सरकारी प्रयोगशालाओं की संख्या सौ से ज्यादा नहीं हैं। प्रयोगशालाओं की कमी के कारण समय पर जांच न होने से मिलावट करने वाले दंड प्रक्रिया से बाहर हो जाते हैं।

बीते समय में हांगकांग और सिंगापुर के एक भारतीय मसाला कंपनी के आयात पर रोक के बाद भी भारतीय बाजारों में इन उत्पादों का विक्रय नहीं रोका गया, क्योंकि भारतीय प्रयोगशालाओं की स्पष्ट जांच रपट नहीं थी। जबकि कंपनी के उत्पाद पर कैंसरकारक 'प्रिजर्वेटिव' की अधिक मात्रा का उपयोग विदेशी प्रयोगशालाओं में पाया गया। भारतीय कानून में शिथिलता और जांच में देरी के कारण मिलावट करने संबंधी अपराध को कारगर रूप से रोका नहीं जा सका है। बावजूद इसके, सरकारी जांच में कसावट लाने, खाद्य सामग्री की गुणवत्ता और नागरिकों की सेहत पर कहीं कोई चिंता नहीं दिखती। बीते वर्षों में जनता की मांग पर राजस्थान और मध्यप्रदेश सहित कुछ राज्य सरकारों ने कानून में संशोधन कर मिलावट करने पर सजा तो बढ़ा दी है, लेकिन जांच प्रक्रिया को दुरुस्त नहीं किया सका है। जांच, सुनवाई की लंबी प्रक्रिया और भ्रष्टाचार अपराधी को दोषमुक्त करने में मददगार ही साबित हो रहे हैं।

भारतीय खाद्य सुरक्षा मानक प्राधिकरण ने गुणवत्ता और दोषपूर्ण उत्पादों की ब्रिकी, निर्माण और भंडारण पर रोक लगाने के उद्देश्य से चौदह अंकों के पंजीयन को अनिवार्य किया है, लेकिन आज भी साठ फीसद खाद्य सामग्री विक्रेताओं के पास लाइसेंस नहीं है। वजह, निगरानी तंत्र की कमी। सड़कों के किनारे धड़ल्ले से अस्वास्थ्यकर खाद्य सामग्री बिकती है। मिलावटी सामग्री से हादसा होने की दशा में प्रशासन को खोज पाना आसान नहीं है। सच तो यही है कि सरकारी तंत्र कोई भी घटना होने तक सोता रहता है।

खोने में छिपा पाना

महेश परिमल

दुनिया मेरे आगे

बचपन में हम सब एक खेल खेलते थे। खेल का नाम था- खो-खो। इस खेल में हम सब एक पंक्ति में विपरीत दिशा में चेहरा करके उकड़ूं बैठ जाते थे। एक साथी पीछे से आकर हमें 'खो' कहता, हम दौड़ कर दूसरे साथी को छूने की कोशिश करते। जिसे हम छू देते, वह 'बाहर' हो जाता। यहां पर खो का आशय अपने स्थान से उठकर 'खो' कहने वाले को अपना स्थान देना। बात खो की हो रही है। इससे बनने वाले शब्दों में खोना और खो जाना भी है।

खोना, यानी हमारे पास जो कुछ है, उसमें से कुछ हिस्सा हमसे अलग होना, जिसे अब हम प्राप्त नहीं कर सकते। कई बार अपने प्रयास से यह भले ही हमें प्राप्त हो जाए, पर उसके खोने का दर्द हमें हमेशा सालता रहता है। वास्तव में किसी चीज को पाने के बाद हमें जितनी खुशी मिलती है, उसके मुकाबले अधिक दुख हमें उसके खोने से मिलता है। खोने का दुख बहुत बड़ा होता है। इंसान अपनी जिंदगी में बहुत कुछ खोता है। कभी माता-पिता, भाई-बहन, दोस्त, रिश्तेदार- ये सभी कहीं न कहीं दिल से जुड़े होते हैं। कभी कोई शरीर का कोई अंग ही खो देता है, जैसे हाथ-पांव, आंख। ये भी अपने खोने के साथ इंसान को दुख दे जाते हैं।

समय के साथ कुछ के खोने पर हमें अफसोस होता रहता है, पर यह सब आगे चलकर भुला दिए जाते हैं। यह भी सच है कि जब भी हम कुछ खोते हैं, तो दूसरी ओर हम पाते भी हैं। हम क्या पाते हैं, इसका हमें पता नहीं चलता, क्योंकि हम खोने के गम से जुदा नहीं हो पाते। दरअसल, खोने के बाद जो हमें प्राप्त होता है, उसका आनंद कुछ और ही होता है। एक सज्जन दुर्घटना में अपनी एक आंख की रोशनी खो बैठे। एक आंख की रोशनी जाने के बाद वे अवसाद में चले गए। कुछ समय बाद धीरे-धीरे वे सहज होने लगे। अपना दोपहिया वाहन भी चलाने लगे। उन्होंने महसूस किया कि उनका एक कान कुछ अधिक ही संवेदनशील हो गया है। पीछे से आने वाले वाहन की सरसराहट को वे आसानी से महसूस करने लगे। पहले एक तरफ से आने वाले वाहनों से अक्सर उनकी टक्कर हो जाती, पर धीरे-धीरे उन्हें अपने एक कान के अतिसंवेदनशील होने की जानकारी हुई, तो वे अब कुशलता से दोपहिया वाहन चलाने लगे हैं। ये है खोने के बाद पाने का सुख। इसीलिए कहा गया है कि अगर एक रास्ता बंद होता है, तो दूसरे कई दरवाजे खुल भी जाते हैं। हमें पूरे संयम के साथ दूसरे दरवाजों को देखना होगा। कौन-सा दरवाजा हमारे लिए उपयुक्त होगा, यह भी समझना होगा। तभी हम सफलता के द्वार को खोल पाएंगे।

> **समय के साथ कुछ के खोने पर हमें अफसोस होता रहता है, पर यह सब आगे चलकर भुला दिए जाते हैं। यह भी सच है कि जब भी हम कुछ खोते हैं, तो दूसरी ओर हम पाते भी हैं। हम क्या पाते हैं, इसका हमें पता नहीं चलता, क्योंकि हम खोने के गम से जुदा नहीं हो पाते। दरअसल, खोने के बाद जो हमें प्राप्त होता है, उसका आनंद कुछ और ही होता है।**

खोना से मिलता-जुलता शब्द है 'खो जाना', जो एक मानसिक स्थिति भी है। इंसान जब कुछ सोचते-सोचते गहराई में चला जाता है या कोई मनपसंद काम करते हुए उसमें डूब जाता है, तो यह स्थिति भी 'खो जाना' कहलाती है। मनपसंद काम में डूब जाने का अर्थ ही है, अपने काम में इतना तल्लीन हो जाना कि दिन-दुनिया का ध्यान ही न रहना। इसमें हमारे भीतर का जज्बा हमें बाहरी दुनिया से अलग कर देता है। यही है खो जाने की स्थिति। यह ध्यान की एक मानसिक स्थिति है, जो हर किसी को प्राप्त नहीं होती। इस दौरान जब हमें कोई यह कहता है कि कहां खो गए, तब हमें आभास होता है कि हम किसी और ही दुनिया में पहुंच गए थे।

इस तरह खोना एक अच्छी स्थिति है। खोने का आशय यह नहीं लेना चाहिए कि हमसे कुछ आखिरी तौर पर अलग ही हो गया। अगर अलग भी हुआ है, तो हमें कुछ देकर ही जाएगा। क्या देकर जाएगा, यह परिस्थितिजन्य है। परिस्थितियों के अनुसार हमें कुछ ऐसा प्राप्त हो सकता है, जिसके जरिए भी हम अपना जीवन संवार सकते हैं। हेलन केलर का उदाहरण है, जिन्होंने बहुत कुछ खोया, पर उससे भी अधिक पाया। जो कुछ पाया, वह अप्रतिम है। उसके खोने का लाभ हम सबको मिला। सूरदास ने आंखें खोईं, हमें कृष्ण पर उत्कृष्ट साहित्य मिला। अरुणिमा ने अपने पांव खोए, मगर हमें हिमालय पर चढ़ने का जज्बा मिला। अगर यह सब अपने भीतर कुछ अलग या खो जाने पर अवसाद में ठहरे रहते, तो दुनिया को कुछ भी न मिलता। ऐसा अक्सर अपने आसपास भी कभी देखा जा सकता है कि अगर कोई व्यक्ति अपने किसी दुख में डूबा रहता है, तो वह तब तक दुखी ही दिखता है, जब तक कि वह उस भाव से बाहर नहीं निकलता। जैसे ही किसी खोई गई चीज का गम भुला कर वैसा नया बनाने का हौसला काम करना शुरू कर देता है, वह पहले की तरह सक्रिय हो जाता है, उसे नया कुछ हासिल होना शुरू हो जाता है।

इसलिए जब कुछ खो जाए, तो उसका गम करने की एक सीमा होनी चाहिए। खोने के बाद हमें जो कुछ भी नया मिल रहा है, उसका उपयोग करना सीखना चाहिए। बैसाखी पर चलने वालों के लिए वह एक सहारा ही नहीं, बल्कि एक हथियार भी है, जीवन को जी पाने का। हमें किसी के खोने का दुख होना चाहिए, लेकिन उस दुख में इतना अधिक नहीं डूब जाना चाहिए कि उसके बाद के जीवन के अवसरों को हम भुला दें। खोने से आगे कुछ नया पाने का रास्ता भी है। इस रास्ते को संभाल कर रखने की जरूरत है।

कौशल की छवि

देश के युवाओं के लिए रोजगार जुटाने और स्वरोजगार के अवसर पैदा करने के लिए ही मेक इन इंडिया अभियान की शुरुआत की गई थी, जो आज वैश्विक स्तर पर एक विशेष पहचान बना चुका है। भारत ने एक 'मैन्युफैक्चरिंग इनीशिएटिव' का रोडमैप तैयार किया है, जो किसी भी देश द्वारा शुरू की गई सबसे बड़ी पहल है। यह सार्वजनिक-निजी साझेदारी की परिवर्तनकारी शक्ति को दर्शाता है। इसके अलावा केंद्र सरकार विनिर्माण में तेजी लाने और भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करने के लिए देश भर में गलियारों का एक पंचकोण बना रही है। देश में सौर ऊर्जा 2024 में बढ़ कर साठ हजार मेगावाट से अधिक हो गई है। इसी तरह पवन ऊर्जा की क्षमता में भी बढ़ोतरी हुई है। देश में मान्यता प्राप्त नवउद्यमों की संख्या 1.33 लाख हो गई है। जीडीपी कल्याण माडल ने भारत के लिए अद्भुत काम किया है, जो लंबे समय से जीवन की मूलभूत सुविधाओं से भी वंचित था। समय आ गया है कि हम दुनिया के सामने कौशल भारत की छवि प्रस्तुत करें।

– युगल किशोर राही, छपरा, बिहार।

मनमानी का युद्ध

'इजराइल का निशाना' (संपादकीय, 30 सितंबर) में सही कहा गया है कि पिछले कुछ वर्षों में संयुक्त राष्ट्र युद्ध टालने और संघर्षरत देशों को बातचीत की मेज पर लाने में विफल रहा है। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध हो या इजराइल-हमास-हिजबुल्ला संघर्ष सभी में मानव संहार हो रहा है, लेकिन यह वैश्विक संस्था चिंता और अपील से आगे नहीं बढ़ पा रही है। संयुक्त राष्ट्र की कोई नहीं सुन रहा। देखा जाए तो इन संघर्षों को लंबा खींचने में पश्चिम की शक्तियों की अहम भूमिका है। वहीं दूसरी और ये युद्ध इन देशों के लिए अपने नए हथियारों की प्रयोगशाला बन गए हैं। आवश्यकता इस बात की है कि इस वैश्विक संस्था में जितनी जल्दी हो बुनियादी परिवर्तन किए जाएं। सुरक्षा परिषद में सदस्यों की संख्या बढ़ाई जाए ताकि कुछ देशों की चौधराहट कम हो। कुछ कद्दावर देशों की मनमानी के कारण अन्य महत्त्वपूर्ण देशों की भूमिका गौण हो गई है।

– विमलेश पगारिया, बदनावर, मप्र

वस्त्रों की यादें

'परिधान के रंग' (दुनिया मेरे आगे, 28 सितंबर) के माध्यम से नए और पुराने कपड़ों की बहुत सारी जानकारियां जुटाई हैं। इसे पढ़ने के बाद उन पड़ोसियों की यादें ताजा हो गईं, जिनके परिवार सदस्यों के बीच बड़े बच्चों के कपड़े उनसे छोटे बच्चों के काम आते रहते थे। और मजेदार बात तो यह थी की पड़ोस के एक सज्जन के यहां आठ-दस सदस्यों के परिवार के लिए एक ही तरह का कपड़े का थान आता था। मां-बाप के साथ-साथ, उस परिवार के सभी लड़के-लड़कियों को एक ही तरह के कपड़ों में लोग देखते थे। पहले के जमाने मे सांस्कृतिक कार्यक्रम में विभिन्न किरदारों को निभाने के लिए किराए पर परिधान उपलब्ध हुआ करते थे। उन्हें पहनने वालों को हम कौतूहलवश देखा करते थे। अब जमाना बदल गया है। परिवारों में होने वाले हर कार्यक्रम और हर धार्मिक आयोजन के लिए परिधान किराए पर मिलने लगे हैं जिनके चलते अब कपड़ों की कमी किसी को भी महसूस नहीं होती है।

– नरेश कानूनगो, देवास

सफाई का तकाजा

उत्तर प्रदेश और उसके बाद फिर हिमाचल में दुकानदारों, ढाबों, होटलों और रेस्तरां के मालिकों को अपनी दुकानों के आगे अपने नाम की पट्टिका लगाने का मुद्दा सुर्खियों में रहा। सही है कि सभी दुकानदार शुद्ध खाद्य पदार्थ तैयार नहीं करते। लेकिन क्या ढाबे और होटल के आगे नाम और फोन नंबर लिखने से संबंधित दुकानदार अच्छी गुणवत्ता का खाद्य पदार्थ बनाना शुरू कर देगा? क्या वह मिलावट नहीं करेगा? हमने खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता पर बहुत ठोस कानून नहीं बनाया। लोगों की आदत पड़ गई है इन खाद्य पदार्थों को खाने की। क्यों वहीं खाने की तरफ लोग भागते हैं, जबकि इनमें पौष्टिकता भी नहीं है। जो पौष्टिक चीजें हैं, वे हम खाते नहीं। कुछ पौष्टिक खाद्य पदार्थों को बेचने वाले दुकानदार भी मिलावट कर सामान बेचते हैं जैसे जूस की दुकान। इन लोगों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए।

– वेद सिंह यादव, लखनऊ

www.readwhere.com

चिंतन

जम्मू-कश्मीर में शांतिपूर्ण मतदान बदलाव के संकेत

जयंती संदेश
उमेश चतुर्वेदी

जम्मू-कश्मीर में शांतिपूर्ण मतदान सरकार की बड़ी उपलब्धि है। तीनों चरण के मतदान समाप्त हो गए। पिछले दस वर्ष के बाद विधानसभा चुनाव हुए हैं, नतीजे जो भी आए, सरकार जिस दल या गठबंधन की बने, लेकिन बड़ी बात है कि अलगावादियों, आतंकियों व उपद्रवियों की एक न चली, और चुनाव आयोग ने कठिन से कठिन क्षेत्र में भी चुनाव सफलतापूर्वक कराए। धारा 370 हटने के बाद यह पहला चुनाव है, इसमें भाजपा, कांग्रेस व एनसी गठबंधन, पीडीपी व कुछेक छोटे दल प्रमुखता से शिरकत कर रहे हैं। परिसीमन के बाद जम्मू कश्मीर में विधानसभा सीट 83 से बढ़कर 90 हो गई है। चुनाव के दौरान आतंकी हिंसा की आशंका थी, पर सभी चरणों में मतदान शांतिपूर्ण हुआ। इस बार अनेक ऐसे मतदाताओं ने वोट डाले जो अब तक मतदान से वंचित थे। अनुच्छेद 370 इस बार चुनाव में बड़ा मुद्दा है, कांग्रेस व एनसी इसी मुद्दे पर चुनाव मैदान में हैं। आठ अक्टूबर को नतीजे आएंगे, पर यह चुनाव याद रखा जाएगा। तीनों ही चरण में बंपर वोटिंग हुई है, कई जगहों पर मतदान का रिकार्ड टूटा है। तीसरे चरण में 7 जिलों की 40 विधानसभा सीटों पर औसत 65.65 फीसदी वोटिंग हुई। सबसे ज्यादा उधमपुर में 72.91% व सबसे कम बारामूला में 55.73% मतदान हुआ। तीसरे फेज की 40 सीटों में से 24 जम्मू डिवीजन और 16 कश्मीर घाटी की हैं। तीसरे फेज में 169 प्रत्याशी करोड़पति हैं। इस फेज में संसद हमले का मास्टरमाइंड अफजल गुरु का बड़ा भाई एजाज अहमद गुरु भी चुनावी मैदान में है। एजाज गुरु सोपोर सीट से निर्दलीय प्रत्याशी है। 18 सितंबर को पहले फेज की 24 विधानसभा सीटों पर वोटिंग हुई थी। इस दौरान 61.38% वोटिंग हुई। दूसरे फेज में 25 सितंबर को 6 जिलों की 26 विधानसभा सीटों पर 57.31% मतदान हुआ था। अनुच्छेद 370 के हटने से पहले आतंकवाद के दौर में औसत 30 फीसदी के करीब वोटिंग होती थी, आतंकी गुट सीधे तौर पर मतदाताओं को डराते थे। अतीत में आतंकी खौफ के साये में चुनाव होते थे। आज सरकार के प्रयास से सामान्य स्थिति में चुनाव हुए हैं। मतदान का प्रतिशत बता रहा है कि पाक प्रायोजित आतंकवाद का कुछ नहीं चल रहा है, वोट डालने लोग घरों से बाहर निकले, मतदान के प्रति स्थानीय नागरिकों में उत्साह दिखा। यह नया कश्मीर है, आतंक के डर से मुक्त कश्मीर। यह बदलाव सकारात्मक है। अनुच्छेद 370 के हटने के बाद जम्मू-कश्मीर के लोगों को लग रहा है कि कि वे भारत का हिस्सा हैं। क्षेत्र में काफी शांति है, आर्थिक गतिविधियां और पर्यटन तेजी से बढ़ रहा है। जम्मू-कश्मीर में ऐसी दूरदर्शी सरकार बने जो सुरक्षा, शांति व स्थिरता के लिए मजबूती से काम करे। अब पीछे लौटने का वक्त नहीं है। राजनीति के लिए प्रदेश में अलगाववादी तत्वों को मजबूत होने का अवसर न मिले। यह कोशिश नई सरकार करे। अभी सरकार को जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की संवैधानिक प्रक्रिया भी पूरी करनी है। इस खूबसूरत प्रदेश में नई सरकार पर्यटन, शिक्षा, रोजगार एवं चहुंमुखी विकास के लिए काम करे, जनता की मुश्किलों को कम करने के लिए काम करे। दरअसल, जम्मू-कश्मीर की नई सरकार को दूरदर्शी होना होगा, ताकि प्रदेश आतंकमुक्त हो और वहां के लोग शांति की हवा में सांस ले सकें। प्रदेश में विभाजनकारी व पाकपरस्त राजनीतिक सोच के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। इस विधानसभा चुनाव ने साबित किया है कि कश्मीर में शांतिपूर्ण चुनाव संभव है।

स्वच्छता के दस वर्ष, गंदगी से मुक्ति नहीं

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहले राजनेता हैं, जिन्होंने अहम जिम्मेदारी संभालते हुए स्वच्छता और शौचालय क्रांति की बात की। शायद ही किसी ने सोचा होगा कि कोई प्रधानमंत्री लालकिले की प्राचीर से शौचालय क्रांति की बात करेगा। लेकिन मोदी ने न सिर्फ शौचालय क्रांति की, बल्कि इसके डेढ़ महीने बाद गांधी जी की जयंती पर 2 अक्टूबर 2014 को खुद ही फावड़ा और झाड़ू उठा लिया। इसके साथ ही देश के सामने एक नया अभियान आया, 'स्वच्छ भारत अभियान'। स्वच्छ भारत अभियान का एक दशक पूरा हो गया है। भारत के प्राचीन ग्रंथ,सामाजिक व्यवस्था और मंदिर संस्कृति की परंपराएं स्वच्छता की भारतीय धारा की गवाह हैं।

साल 1901 के कोलकाता के कांग्रेस अधिवेशन में दक्षिण अफ्रीका से हिस्सा लेने पहुंचे गांधी जी को अजीब अनुभव हुआ। प्रतिनिधियों के ठहरने वाले शिविर में सफाई की हालत बेहद खराब थी। कई प्रतिनिधि ऐसे थे, जिन्होंने उन कमरों के बाहर बने बरामदे को ही शौचालय के रूप में इस्तेमाल कर दिया। दुर्गंध और गंदगी के बावजूद दूसरे प्रतिनिधियों को इस पर कोई ऐतराज नहीं था। लेकिन गांधी जी से बर्दाश्त नहीं हुआ। तब तक वे पश्चिमी वेशभूषा में रहते थे। अधिवेशन में सहयोग के लिए तैनात स्वयंसेवकों से गांधी जी ने स्वच्छता की बाबत बात की, तो उन्होंने टका-सा जवाब दे दिया था, 'यह हमारा काम नहीं है, यह सफाईकर्मी का काम है।' गांधी जी ने अपने कपड़े उतारे, झाड़ू मंगवाई और वहां मौजूद गंदगी को साफ करने में जुट गए। सफाई के बाद वे फिर से कोट-पैंट में आ गए। भारतीय राजनीति में तब तक गांधी जी का सितारा बहुत नहीं चमक पाया था। लेकिन उन्होंने राजनीति की दुनिया में सफाई के विचार का बीज रोप दिया। कोलकाता अधिवेशन में दिखी गंदगी का ही असर कह सकते हैं कि बाद के दिनों में उन्होंने विचार दिया, स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी स्वच्छता है।

गांधी जी के रचनात्मक शिष्यों यथा विनोबा, ठक्कर बापा आदि ने स्वच्छता और सफाई के इस गुर को बहुत आगे बढ़ाया। लेकिन जिसे मुख्यधारा की राजनीति कहते हैं, उसने स्वच्छता के गांधीवादी दर्शन को उसी रूप में बाद में शायद ही स्वीकार किया। इन संदर्भों में देखें तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहले राजनेता हैं, जिन्होंने अहम जिम्मेदारी संभालते हुए स्वच्छता और शौचालय क्रांति की बात की। शायद ही किसी ने सोचा होगा कि कोई प्रधानमंत्री लालकिले की प्राचीर से शौचालय क्रांति की बात करेगा। लेकिन मोदी ने न सिर्फ शौचालय क्रांति की, बल्कि इसके डेढ़ महीने बाद गांधी जी की जयंती पर 2 अक्टूबर 2014 को खुद ही फावड़ा और झाड़ू उठा लिया। इसके साथ ही देश के सामने एक नया अभियान आया, 'स्वच्छ भारत अभियान'। स्वच्छ भारत अभियान का एक दशक पूरा हो गया है। इस दौरान स्वच्छता के मोर्चे पर देश ने बहुत कुछ हासिल किया है। ऐसा नहीं कि भारत में स्वच्छता की अवधारणा नहीं रही है। भारत के प्राचीन ग्रंथ,सामाजिक व्यवस्था और मंदिर संस्कृति की परंपराएं स्वच्छता की भारतीय धारा की गवाह हैं। यह कह सकते हैं कि बाद के दिनों में भारतीय स्वच्छता सिर्फ व्यक्तिगत स्वच्छता तक सीमित होकर रह गई थी। भारतीयों के एक बड़े वर्ग की सोच सफाई को लेकर ज्यादा निजी थी। शायद ही कोई भारतीय घर होगा, जहां रोजाना झाड़ू न लगती हो। स्वच्छ भारत अभियान के पहले होता यह था कि झाड़ू लगती तो थी,लेकिन कूड़ा गली में या सड़क पर या सार्वजनिक जगहों पर फेंक दिया जाता था। प्रधानमंत्री मोदी के स्वच्छ भारत अभियान के शुरू करने के बाद इस सोच में बदलाव आया है। वैसे मानव स्वभाव कोई बिजली का बल्ब नहीं है कि बटन दबाया और जल या बुझ जाएगा। उसमें बदलाव आने में देर होती है। बदलाव को वह जल्दी से स्वीकार नहीं कर पाता। इसीलिए स्वच्छता के मोर्चे पर हम देखते हैं कि सौ प्रतिशत सफलता हासिल नहीं की जा सकी है। रेलवे लाइनों के किनारे पड़े कूड़े के अंबार अब भी बने हुए हैं। लेकिन स्वच्छ भारत अभियान के दस वर्षों में यह सोच

जरूर विकसित हुई है कि निजी ही नहीं, सार्वजनिक स्वच्छता जरूरी है। नई पीढ़ी के बच्चे तो अब बड़े-बड़ों को सार्वजनिक गंदगी के लिए टोक देते हैं।

स्वच्छता को लेकर महात्मा गांधी ने कहा था, 'मैं किसी को भी अपने दिमाग़ से गंदे पैर लेकर नहीं गुज़रने दूंगा।' गांधी के इस दर्शन पर भी चलते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वच्छ भारत अभियान शुरू करते हुए कहा था, 'न मैं गंदगी करूंगा, न मैं गंदगी करने दूंगा।' सार्वजनिक समारोहों में उनकी यह सोच अक्सर परिलक्षित होती है। किताब आदि के विमोचन के दौरान रैपर आदि को वे मोड़कर अपनी जेब में रख लेते हैं। इससे देश के अधिसंख्य लोगों ने प्रेरणा ली है और उस पर अमल भी कर रहे हैं। स्वच्छता अभियान की सफलता ही कहेंगे कि देश के बारह करोड़ घरों में शौचालय बन चुके हैं। स्वच्छ भारत अभियान की एक दशक की यात्रा में न केवल शौचालय कवरेज में भारी वृद्धि हुई है, बल्कि खुले में शौच की कुप्रथा तकरीबन खत्म हो गई है। स्वच्छता का मतलब सिर्फ सफाई ही नहीं, खाने-पीने की चीजें भी स्वच्छ होनी चाहिए। इस लिहाज से हर घर नल जल योजना को भी स्वच्छ भारत अभियान से जोड़ सकते हैं। जिसके तहत पाइप से स्वच्छ पानी की आपूर्ति की कवरेज दस सालों में 16 प्रतिशत से बढ़कर 78 प्रतिशत हो गई है। देश में धुएं के प्रदूषण से महिलाओं को रोजाना दो-चार होना पड़ता था। उज्ज्वला योजना के जरिए इस दिशा में स्वच्छ भारत अभियान को सफल कहा जा सकता है।

इस योजना के तहत 11 करोड़ घरों में रसोई गैस का कनेक्शन पहुंच चुका है। स्वच्छ भारत अभियान से स्वास्थ्य के मोर्चे पर बड़ा बदलाव आया है। हाल ही में विश्व प्रसिद्ध पत्रिका नेचर में स्वच्छ भारत अभियान के बाद आए भारत में बदलावों के शोध पर आधारित एक लेख छपा था। इससे पता चलता है कि स्वच्छ भारत अभियान गेम चेंजर बन गया है। नेचर पत्रिका में प्रकाशित आलेख कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान और ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी के एक शोध पर आधारित है। जिससे पता चलता है कि खुले में शौच की कुरीति खत्म होने के बाद और शौचालय क्रांति से देश में शिशु मृत्यु दर में कमी आई है। शोध पत्र में कहा गया है कि खुले में शौच की कुरीति के खत्म होने से हर वर्ष करीब 60 हजार से 70 हजार शिशुओं की मृत्यु को रोकने में सफलता मिली है। स्वच्छता अभियान के चलते 2014 से 2019 के बीच डायरिया से होने वाली मौत के करीब तीन लाख मामले कम हुए, जो इसके पहले की अवधि में ज्यादा थे। इसी रिपोर्ट के मुताबिक, खुले में शौच की कुरीति खत्म होने से हर परिवार के स्वास्थ्य पर होने वाले करीब 50 हजार रूपए सालाना के खर्च की बचत हुई है। इसके साथ ही भूजल की गुणवत्ता भी पहले की तुलना में बेहतर हुई है। शौचालय क्रांति के चलते अब करीब 93 प्रतिशत महिलाएं अपने घरों में ज्यादा सुरक्षित महसूस करती हैं। क्योंकि अब उन्होंने शौच के लिए बाहर नहीं जाना पड़ा। स्वच्छ भारत अभियान साल 2020 से संपूर्ण स्वच्छता अभियान में तब्दील किया जा चुका है।

इस कार्य के लिए एक लाख चालीस हजार करोड़ की रकम आवंटित की गई है। जाहिर है कि स्वच्छता के मोर्चे पर देश ने बहुत कुछ हासिल किया है। लेकिन यह कहना अभी जल्दबाजी होगी कि देश ने इस दिशा में सबकुछ हासिल कर लिया है। अब भी देश के कुछ इलाके ऐसे हैं, जहां का मानस सार्वजनिक स्वच्छता को लेकर पूरी तरह प्रतिबद्ध और सचेत नहीं हो पाया है। इस वर्ग को पूरी तरह प्रतिबद्ध और सचेत करना है। स्वच्छता में ढिलाई बरतने वाले तंत्र के दंडात्मक विधान की व्यवस्था करनी होगी, तभी आज का भारत प्राचीन भारत की तरह पूरी तरह स्वच्छ हो पाएगा।

(लेखक राजनीतिक समीक्षक हैं, ये उनके अपने विचार हैं।
लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **edit@haribhoomi.com** पर दे सकते हैं।

गांधी जयंती

आर .के . सिन्हा

गांधी के रास्ते पर चलने वाली पांच शख्सियतें

हम भारतीय चाहें जितना भी गर्व कर सकते हैं कि महात्मा गांधी जैसी पवित्र शख्सियत का संबंध भारत से है। हालांकि, उनके प्रति सम्मान और आदर का भाव तो सारी दुनिया ही रखती है। वे अपने जीवनकाल और उसके बाद भी करोड़ों लोगों को अपने सत्य और अहिंसा के विचारों से प्रभावित करते हैं। अब भी सारी दुनिया में अनगिनत लोग गांधी जी को ही अपना आदर्श मानते हैं। इसी तरह से न जाने कितने लोग गांधी जी के रास्ते पर चलते हुए अपने-अपने ढंग से संसार को बेहतर बनाने की कोशिशें कर रहे हैं। उनमें भी अब गांधी जी की छवि दिखाई देती है। कात्सू सान उन गांधीवादियों में शामिल हैं जो विश्व बंधुत्व, प्रेम और शांति का संदेश देने के लिए भारत के गांवों, कस्बों, शहरों और महानगरों में घूमती हैं। आप चाहें तो 88 साल की कात्सू सान को देश की सबसे खास गांधीवादी व्यक्तित्वों में एक मान सकते हैं। कात्सू सान राजघाट पर होने वाली सर्वधर्म प्रार्थना सभाओं में बुद्ध धर्म ग्रंथों से प्रार्थना पढ़ती हैं।

कात्सू सान मूलतः जापानी नागरिक हैं। वह 1956 में भगवान बुद्ध के देश भारत में आईं थीं, ताकि उन्हें वे और गहराई से जान लें। एक बार यहां आईं तो उनका गांधीवाद से ऐसा साक्षात्कार हो गया कि उसके बाद तो उन्होंने भारत में ही बसने का निर्णय ले लिया। वह कहती हैं कि भारत के कण-कण में पवित्रता है। भारत ही वास्तव में संसार का आध्यात्मिक विश्व गुरु है। इसी प्रकार, गांधी जी की दर्जनों मूर्तियां बनाने वाले महान मूर्ति शिल्पकार राम सुतार बचपन से ही गांधी के रास्ते पर चलने लगे थे। वे जब गांधी जी की किसी प्रतिमा को शक्ल दे रहे होते हैं,तो उन्हें लगता है मानों वे गांधी से संवाद कर रहे हों। संसद भवन के प्रांगण में लगी उनकी बनाई गांधी जी की मूर्ति तो बेजोड़ है। यह असाधारण मूर्ति 17 फीट ऊंची है। इसी तरह ब्रदर सोलोमन जॉर्ज भी पक्के गांधीवादी हैं। वे गांधी जी को ही अपना मार्गदर्शक मानते हैं। उन्हें गांधी जी इसलिए भी अपने लगते हैं क्योंकि वह 12 मार्च 1915 को अपनी पहली राजधानी यात्रा के दौरान सेंट स्टीफंस कॉलेज में ही ठहरे थे। ब्रदर सोलोमन बताते हैं कि गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में ईसाई मिशनरी जोसेफ डोक से भी मिले थे , जिन्होंने उनकी पहली जीवनी लिखी। वहां उनकी दीनबंधु सीएफ एंड्रयूज से भी मुलाकात हुई। उन्हें लगता है कि गांधी जी विश्व भर में शांति के सबसे बड़े प्रेरक हुए हैं, जिन्हें दुनिया ने बुद्ध और ईसा मसीह के बाद देखा है। गांधी जी आज के दौर में भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कि वे अपने जीवनकाल में थे। डॉ. विनय अग्रवाल में भी गांधी जी की छाया नजर आती है। पेशे से मेडिसिन के क्षेत्र से जुड़े हुए डॉ. अग्रवाल अपने स्तर पर लगातार वाल्मीकि समाज के नौजवानों को रोजगार और उन्हें शिक्षित करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। उन्हें दलितों के हक में गांधी जी के किए काम प्रभावित करते हैं। डॉ. अग्रवाल ने वाल्मीकि समाज की बदहाली को अपनी आंखों से देखा। उसके बाद वे जब सक्षम हुए तो उन्होंने वाल्मीकि समाज के लिए ठोस काम करने शुरू किए। इसकी प्रेरणा उन्हें गांधी जी से ही मिली। वे कहते हैं कि गांधी जी की आत्मकथा पढ़ने वाले भली-भांति जानते हैं कि वे बचपन से ही अस्पृश्यता को नहीं मानते थे। अब 62 वर्षीय कृष्णा विद्यार्थी को ही लें। वे राजधानी के पंचकुइयां रोड पर स्थित वाल्मीकि मंदिर का काम-काज देखते हैं। वाल्मीकि मंदिर और गांधी जी का गहरा संबंध रहा है। वे इसी मंदिर परिसर के एक साधारण से कमरे में 1 अप्रैल 1946 से लेकर 10 जून 1947 तक रहे। कृष्ण विद्यार्थी बीते चालीस सालों से उस कमरे को रोज सुबह साफ-स्वच्छ करते हैं, जिसमें गांधी जी रहते थे।

वाल्मीकि समाज से रिश्ता रखने वाले कृष्ण विद्यार्थी कहते हैं कि गांधी जी वाल्मीकि समाज की दशा को सुधारने के लिए जीवन पर्यंत सक्रिय रहे। गांधी जी ने वाल्मीकि परिवारों के बच्चों को यहां पढ़ाया भी। उन्हें इस बात का अफसोस है कि जब गांधी जी 7 सितंबर, 1947 को अंतिम बार दिल्ली आए तो उन्हें वाल्मीकि बस्ती की बजाय बिड़ला हाउस में लेकर जाया गया। तब कहा गया कि वाल्मीकि बस्ती उनके लिए असुरक्षित है। पर जो जगह कहने को सुरक्षित थी, वहां पर ही उन्हें मार डाला गया। कृष्ण विद्यार्थी के नेतृत्व में यहां पर हरेक 2 अक्तूबर और 30 जनवरी को सर्वधर्म प्रार्थना सभा भी आयोजित होती है। वे खुद गांधी जी के विचारों के प्रसार-प्रचार के लिए देश के कोने-कोने में जाते रहते हैं। बेशक, ये सब महान शख्सियतें गांधी जी के विचारों को देश-दुनिया में लेकर जा रही हैं। देश-दुनिया में इनके जैसे अनगिनत गांधीवादी सक्रिय हैं। इनमें हमें गांधी जी के दर्शन होते हैं।

(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

मन में निर्भयता लाती है मां दुर्गा की भक्ति साधना

संकलित
दर्शन

वैसे तो हिंदी वर्षानुसार वर्षा, शरद, शिशिर, हेमंत, वसंत व ग्रीष्म- छह ऋतुएं होती हैं, लेकिन मुख्य रूप से दो ही प्रधान हैं- सर्दी व गर्मी। इन दोनों प्रधान ऋतुओं की संधि बेला को नवरात्रि की संज्ञा दी गई है। दिन और रात्रि के मिलन को संध्याकाल कहते हैं। इस महत्वपूर्ण समय को ईश्वर की आराधना, भजन, संध्या, वंदन व आध्यात्मिक साधना में लगाया जाना चाहिए, क्योंकि यह समय अत्याधिक लाभदायी और कम श्रम से अधिक फल देने वाला माना गया है। संध्या काल को पुण्य पर्व भी कहा गया है। आरोग्य शास्त्र के विद्वानों को विदित है कि आश्विन व चैत्र मास में जो सूक्ष्म परिवर्तन होता है, उसका प्रभाव शरीर पर कितनी अधिक मात्रा में पड़ता है। यह बदलाव स्वास्थ्य पर कई प्रकार से प्रभाव डालता है। अनेकानेक रोग, ज्वर, चेचक आदि मनुष्य पर हावी होने लगते हैं। वैद्य जानते हैं कि वमन, विरेचन, स्वेदन, वस्ति, रक्त मोक्षण आदि शरीर शोधन कार्यों के लिए आश्विन और चैत्र का महीना ही सर्वाधिक उपयुक्त होता है। ऐसे समय में ही साधना का महत्वपूर्ण पर्व आता है। हिंदू परंपरा के अनुसार, भारतीय पर्व और त्योहारों में नवरात्रि पर्व का अत्यधिक महत्व है। यह वर्ष में दो बार आता है। दुर्गावतरण की पावन कथा भी इसके साथ जुड़ी हुई है। देवत्व के संयोग से असुर निकंदिनी महाशक्ति के उद्भव का महत्व हर युग में रहा है। युग की भयावह समस्याओं से त्राण पाने के लिए युग शक्ति के उद्भव की कामना हर मन में उठती है। अधिकांश लोग व्रत, उपवास एवं अनुष्ठान करते हैं।

ब्राह्मण का सपना

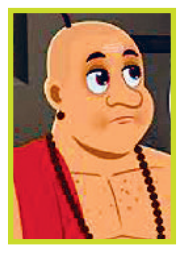

संकलित
प्रेरणा

एक नगर में कोई कंजूस ब्राह्मण रहता था। उसने भिक्षा से प्राप्त सत्तुओं में से थोड़े से खाकर शेष से एक घड़ा भर लिया था। उस घड़े को उसने रस्सी से बांधकर खूंटी पर लटका दिया और उसके नीचे पास ही खटिया डालकर उसपर लेटे-लेटे विचित्र सपने लेने लगा, और कल्पना के हवाई घोड़े दौड़ाने लगा। उसने सोचा कि जब देश में अकाल पड़ेगा तो इन सत्तुओं का मूल्य 100 रुपए हो जाएगा। उन सौ रुपयों से मैं दो बकरियां लूँगा। छः महीने में उन दो बकरियों से कई बकरियां बन जाएंगी। उन्हें बेचकर एक गाय लूंगा। गौओं के बाद भैंसे लूंगा और फिर घोड़े ले लूंगा। घोड़ों को महंगे दामों में बेचकर मेरे पास बहुत सा सोना हो जाएगा। सोना बेचकर मैं बहुत बड़ा घर बनाऊँगा। मेरी सम्पत्ति को देखकर कोई भी ब्राह्मण अपनी सुरुपवती कन्या का विवाह मुझसे कर देगा। वह मेरी पत्नी बनेगी। उससे जो पुत्र होगा उसका नाम मैं सोमशर्मा रखूंगा। जब वह घुटनों के बल चलना सीख जाएगा तो मैं पुस्तक लेकर घुड़शाला के पीछे की दीवार पर बैठा हुआ उसकी बाल-लीलाएं देखूंगा। उसके बाद सोमशर्मा मुझे देखकर मां की गोद से उतरेगा और मेरी ओर आएगा तो मैं उसकी मां को क्रोध से कहूँगा- 'अपने बच्चे को संभाल।' वह गृह-कार्य में व्यग्र होगी, इसलिए मेरा वचन न सुन सकेगी। तब मैं उठकर उसे पैर की ठोकर से मारुंगा। यह सोचते ही उसका पैर ठोकर मारने के लिए ऊपर उठा। वह ठोकर सत्तु-भरे घड़े को लगी। घड़ा चकनाचूर हो गया। कंजूस ब्राह्मण के स्वप्न भी साथ ही चकनाचूर हो गए।

अंतर्मन

आज की पाती

स्वच्छता को अपना कर्तव्य समझें

महात्मा गांधी ने एक पत्र में स्वच्छता के लिए लिखा था कि, 'वह जो सचमुच में भीतर से स्वच्छ है, अस्वच्छ बनकर नहीं रह सकता।' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश को स्वच्छ बनाने के लिए स्वच्छ भारत अभियान चलाया है। उसे दस साल हो गए। 2 अक्तूबर 2014 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महात्मा गांधी के स्वच्छता के सपनों को पूरा करने के लिए स्वच्छ भारत अभियान चलाया था। इसके लिए केंद्र सरकार ने राज्यों की आर्थिक सहायता करने के लिए काम किया। तब से सभी राज्यों में स्वच्छता सर्वेक्षण भी होता आ रहा है। कुछ राज्य इस सर्वेक्षण में अच्छा प्रदर्शन करते भी पाए जा रहे हैं, लेकिन कुछ राज्य अभी भी स्वच्छता के मामले में फेल हैं। स्वच्छता को हर नागरिक को अपना कर्तव्य समझना चाहिए।

– मुरली चव्हाण, महासमुंद

ट्रेंड

सरहद की आवाज सुने केंद्र

जो लोग शांति से डरते हैं, वो अंदर से डरे हुए लोग होते हैं। भाजपा सरकार पर्यावरण रक्षक व लद्दाख हितैषी सोनम वांगचुक जी की शांतिपूर्ण दिल्ली यात्रा को बाधित करके कुछ भी हासिल नहीं कर सकती। केंद्र अगर सरहद की आवाज नहीं सुनेगा तो ये उसकी राजनीतिक श्रवणहीनता कहलाएगी।

-अखिलेश यादव, सपा सांसद

ये अच्छी बात नहीं

मैं प्रधानमंत्री को कहना चाहता हूं कि मैं बहुत छोटा आदमी हूं आप तो शक्तिशाली हो। आपके पास तो केंद्र में बहुत पैसा है, आप केजरीवाल को गिरफ्तार करके स्कूल और मोहल्ला क्लीनिक के काम को रोकना चाहते हो, ये अच्छी बात नहीं है।

-अरविंद केजरीवाल, आप प्रमुख

सकारात्मक परिवर्तन

हम सहयोगियों के लिए स्वेच्छा से अपने सबसे मूल्यवान व्यक्तिगत संसाधन व अपना समय - सामुदायिक परियोजनाओं के लिए दान करने के अवसर बनाते हैं जो सकारात्मक परिवर्तन लाते हैं...।

-आनंद महिंद्रा, उद्योगपति

प्रेरणास्रोत हैं मिथुन दा

बधाई हो मिथुन दा !! आपको दादा साहब फाल्के पुरस्कार मिलने की कितनी अच्छी खबर है। आप एक प्रेरणास्रोत रहे हैं और मैं हंसी और खुशी से भरे हमारे क्षणों को संजोकर रखता हूं।

-अक्षय कुमार, फिल्म अभिनेता

करंट अफेयर

चीन में कम्युनिस्ट पार्टी के शासन के 75 वर्ष पूरे

आर्थिक चुनौतियों और सुरक्षा संबंधी खतरों के बीच चीन 'कम्युनिस्ट पार्टी' के शासन की 75वीं वर्षगांठ मना रहा है। 'तियानमेन स्क्वैयर' पर मंगलवार को ध्वजारोहण समारोह के अलावा, इस अवसर पर कोई और उत्सव मनाने की घोषणा नहीं की गई है। इससे पहले पार्टी के शासन की 60वीं और 70वीं वर्षगांठ पर सैन्य परेड और देश की आर्थिक ताकत का प्रदर्शन करने वाले समारोह आयोजित किए गए थे। दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, कोविड-19 महामारी के बाद गति हासिल करने के लिए संघर्ष कर रही है। संपत्ति के क्षेत्र में लंबे समय से मंदी का, निर्माण से लेकर घरेलू उपकरणों की बिक्री तक अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों पर असर पड़ा। चीन के केंद्रीय बैंक ने संपत्ति क्षेत्र में मंदी से निपटकर सुस्त अर्थव्यवस्था को गति देने के उद्देश्य से कई कदम उठाने की पिछले सप्ताह घोषणा की थी। उसने बैंकों के लिए आवश्यक आरक्षित दर (रिजर्व रेट) में कटौती करने की घोषणा की की। पार्टी नेता और राष्ट्राध्यक्ष शी जिनपिंग ने महामारी के बाद से विदेश यात्रा से मुख्य रूप से परहेज किया है। उन्होंने अपने देश में उन शीर्ष अधिकारियों की छंटनी की है, जो उनके पर्याप्त रूप से वफादार नहीं माने जाते या जिन पर भ्रष्टाचार का आरोप है।

ऑफ बीट

पक्षियों के लिए स्वर्ग बना गुजरात, 20 लाख पक्षी

गुजरात में करीब 18 से 20 लाख पक्षी निवास करते हैं और अकेले देवभूमि द्वारका जिले में 400 से अधिक प्रजातियां मौजूद हैं। राज्य वन एवं पर्यावरण विभाग द्वारा जारी एक रिपोर्ट में यह जानकारी सामने आई। 'पक्षी विविधता रिपोर्ट 2023-24' के अनुसार, कच्छ जिले में 161 प्रजातियों के 4.56 लाख पक्षियां रहती हैं, जो राज्य में सबसे अधिक है। रिपोर्ट के मुताबिक, विविधता के मामले में देवभूमि द्वारका जिले में सबसे अधिक 456 प्रजातियां निवास करती हैं। यह रिपोर्ट, वन विभाग द्वारा 'ईबर्ड' एप्लीकेशन का उपयोग कर किए गए सर्वेक्षण पर आधारित है।सर्वेक्षण के दौरान, विभाग ने पक्षियों की 300 प्रजातियों का दस्तावेजीकरण किया, जिनमें 13 संकट के कगार पर, चार संवेदनशील, सात लुप्तप्राय और एक गंभीर रूप से लुप्तप्राय प्रजाति शामिल हैं। राज्य के वन एवं पर्यावरण मंत्री मुलुभाई बेरा ने कहा कि गुजरात देश में पक्षियों के लिए 'स्वर्ग' के रूप में उभरा है, जिनकी आबादी लगभग 18 से 20 लाख है। कच्छ के बाद जामनगर में 221 प्रजातियों के 4.11 लाख से अधिक पक्षी निवास करते हैं जबकि अहमदाबाद में 256 प्रजातियों के 3.65 लाख से अधिक पक्षी अपना घर बनाए हुए हैं।

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से **hbcgpati@gmail.com** पर भेज सकते हैं।